शाहजहाँनामा

मुंशी देवीप्रसाद कृत

रघुवीर सिंह
मनोहर सिंह राणावत

विषयानुक्रम

वक्तव्य

इतिहास के गभीर विद्वान् तथा परिश्रमी सत्यशील सशोधक सदैव ही समकालीन प्रामाणिक ऐतिहासिक आधार सामग्री की खोज मे रहे हैं। शाहजहा के शासनकाल का इतिहास उस दृष्टि से भी एक महत्त्वपूर्ण अद्वितीय दुर्लभ-भण्डार वन गया है। अत मुगल साम्राज्य के इस स्वर्ण युग से यत्किंचित् भी सम्वन्धित इतिहास के जिज्ञासु विद्वान् तथा तद्विपयक अध्यवसायी गहन सशोधक उन समकालीन प्रामाणिक इतिहास-ग्रथो के अनुशीलन तथा उनमे प्राप्य जानकारी की गहराई तक जाच-पडताल करने को लालायित होते हैं। परन्तु उस दुर्लभ रत्न-भण्डार तक पहुच कर उसकी सारी रत्न-निधि की देख-भाल कर सकने का सौभाग्य किसी विरले को ही प्राप्त हो पाता है।

शाहजहा के शासन-काल विपयक शासकीय, समकालीन अथवा प्राथमिक महत्त्व के अन्य फारसी इतिहास-ग्रथ अव भी अधिकतर अप्रकाशित ही हैं, जिनकी हस्तलिखित प्रतिया वहुधा दुर्लभ हैं। सन् 1866–1872 ई० मे छपा हुआ अब्दुल हमीद लाहोरी कृत 'पादशाह-नामा' का सस्करण अव अप्राप्य हो गया है, और उन छपी हुई प्रतियो के पत्ते भगुर होकर टुकडे-टुकडे होने लगे हैं। इस 'पादशाह-नामा' के पुनर्मुद्रण और शाहजहा के शासन-काल के कुछ अन्य इतिहास ग्रथो के प्रकाशन की चर्चाए प्रारभ अवश्य हुई है, परन्तु उनको कार्यान्वित करने मे कितने वर्ष लग सकते हैं, यह कौन जानता है ?

पुन शाहजहा के शासन-काल विपयक किसी भी प्रकाशित या अप्रकाशित इतिहास-ग्रथ का पूरा अनुवाद अद्यापि प्रकाशित नहीं हुआ है। ईलियट और डासन कृत 'हिस्ट्री आफ इण्डिया' के सातवें खण्ड मे लाहोरी कृत 'पादशाह-नामा' तथा मुहम्मद ताहिर कृत 'मुलख्खस' के कई चुने हुए अशो के अनुवाद सकलित किये गये हैं। परतु उनमे न तो शाहजहा के शासन-काल के इतिहास की पूरी रूप-रेखा स्पष्ट होती है और न तव की विभिन्न महत्त्वपूर्ण घटनाओ का पूरा वृत्त ही ज्ञात हो पाता है।

उधर ईसा की 19वी शताब्दी के अतिम वर्षों तथा 20वी शती के प्रारभिक युगो मे उत्तरी भारत के अन्य प्रातो की अपेक्षा राजस्थान क्षेत्र मे अग्रेजी पढे-लिखो की सख्या कही अधिक नगण्य थी। किंतु ईसा की 19वी सदी के अतिम युग मे अगेजी विद्यालयो मे पढे राजस्थानी नवयुवको मे भी अनायास एक नई चेतना अकुरित होने लगी थी, तथा स्वाभिमान की भावना से प्रेरित हो वे अपने देश-प्रदेश के विगत इतिहास को यथासभव जानने के लिए व्यग्र होने लगे थे। अत मुशी देवीप्रसाद ने राजस्थानी इतिहास के अनेको प्रमुख वीरो की सक्षिप्त किंतु यथासभव प्रामाणिक जीवनिया हिंदी-उर्दू मे लिख कर तब प्रकाशित की। साथ ही उसने महान् मुगल सम्राटो के जीवन-वृत्त भी हिंदी मे सकलित कर छपवाए, जिनमे सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण तथा विशेष रूप से उल्लेखनीय उसका यह 'शाहजहा-नामा' ही है। मूल फारसी इतिहास-ग्र थो मे से 'जरूरी-जरूरी मतलब को ले कर' शाहजहा के शासन-काल की 'तवारीख के इस खुलासा' के द्वारा मुशी देवीप्रसाद ने शाहजहा-कालीन इतिहास के सुलभ समुचित आधार-ग्र थ के कितने बडे अभाव को बहुत-कुछ पूरा किया था, इसका पता एक-मात्र इसी बात से चलता है कि फारसी से अनभिज्ञ कई एक अन्य विशिष्ट इतिहासकारो की ही तरह डा० गौरीशकर हीराचन्द ओझा को भी तत्कालीन इतिहास-विषयक प्रामाणिक जानकारी के लिए मुशी देवीप्रसाद कृत इसी 'शाहजहा-नामा' का सहारा लेना पडता था और आधार-ग्र थ के रूप मे पाद-टिप्पणियो मे इसी ग्र थ की पृष्ठ-सख्याओ का उल्लेख किया है।

इन पिछले चालीस वर्षों मे शाहजहा के शासन-काल अथवा उस काल से सबधित विषयो या उसके कुछ अश अथवा पहलू विशेष को ले कर कुछ प्रामाणिक ग्रथ अग्रेजी मे प्रकाशित हुए हैं। तथापि अब तक मुशी देवीप्रसाद कृत 'शाहजहा-नामा' जैसा तद्विषयक कोई भी विस्तृत अग्रेजी या हिंदी आधार-ग्र थ सामने नही आया है, और उसके शीघ्र ही सुलभ हो सकने की कोई भी सभावना नही दीख पड रही है। लाहोरी कृत समूचे 'पादशाह-नामा' का अग्रेजी अनुवाद करवाने के प्रस्ताव किये जा रहे थे, परतु उस सबधी कोई सतोपजनक प्रबध अथवा सुनिश्चित निर्णय के समाचार अब तक नही मिले हैं। यदि कभी कही यह अग्रेजी अनुवाद तैयार कर छपवा भी दिया गया तो आज के कितने उत्तर भारतीय सशोधक उससे कहा तक लाभान्वित हो सकेंगे, यह ज्वलत प्रश्न तब भी यथावत् बना रहेगा। अब तक चली आ रही पुरातन परपरानुसार सचालित अग्रेजी भाषा का अध्ययन जिस तेजी से लुप्त होता जा रहा है, और अग्रेजी भाषा मे लिखे गये ग्र थो को समझ सकने की आज के सशोधको की निरतर बढती हुई असमर्थता को देखते हुए यह सभव नहीं

जान पडता है कि फारसी के किन्ही समकालीन आधार-ग्रथो के ये प्रस्तावित अग्रेजी अनुवाद उनके लिए किसी प्रकार विशेष उपयोगी हो सकेंगे।

अतएव वहुत सोच-विचार के वाद यह सर्वथा अनिवार्य जान पडा कि मुशी देवीप्रसाद कृत इस 'शाहजहा-नामा' के तीनो भागो का नया सशोधित सुसम्पादित मस्करण यथासभव शीघ्र ही प्रकाशित किया जाए। यह विचार सन् 1972 ई० के अतिम महीनो से ही मेरे मन मे घुमड रहा था, परतु तव तक मुशी देवीप्रसाद का देहात हुए पूरे पचास वर्ष नही हुए थे। साथ ही दूसरी उत्कट समस्या थी मुशी देवीप्रसाद कृत 'शाहजहा-नामा' के पूर्व-प्रकाशित पहिले और तीसरे भाग की अत्यावश्यक प्रतियो को प्राप्त करने की, क्योकि वे मेरे निजी सग्रह मे सुलभ नही थी। यत्र-तत्र पूछ-ताछ करने पर पहिले भाग के प्रथम सस्करण की प्रति कुअर देवीसिंह, मण्डावा (जयपुर), के पास से प्राप्त हुई। उसी के दूसरे सस्करण की प्रति राजस्थानी शोध-सस्थान, चौपासनी (जोधपुर), के सग्रह से मिली। उन्हे प्राप्त कर इस समूचे पहिले भाग की एक हस्तलिखित प्रतिलिपि मैंने अपने सग्रह के लिए तैयार करवा ली। परतु तव भी उसके तीसरे भाग की प्रति की खोज चलती रही, क्योंकि अत्यधिक दुर्लभ होने के कारण वह कही भी मिल नही रही थी। सयत्न उनका तत्कालीन पता ज्ञात कर मुशी देवीप्रसाद के पौत्र, गोविन्दप्रसाद माथुर से भी सपर्क साधा, परतु उन्होंने न तो इस तीसरे भाग की प्रति सुलभ की और न मुशी देवीप्रसाद कृत 'शाहजहा-नामा' के प्रस्तावित पुन प्रकाशन के आयोजन मे कोई रुचि ही दिखाई। अत मे यह पता लगने पर कि साहित्य सस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर, के सग्रह मे तीसरे भाग की प्रति कही दवी-पडी मिली है, सो उसे प्राप्त कर इस समूचे तीसरे भाग की भी एक हस्तलिखित प्रतिलिपि अपने सग्रह के लिए करवा ली गई। जिन महानुभावों ने अपने निजी अथवा अपने अधीन सस्थाओ के सग्रहों से अतिदुर्लभ पहिले और तीसरे भागो की ये प्रतिया सुलभ की, उन्होंने इस महत्त्वपूर्ण उपयोगी आयोजन की परिपूर्ति मे जो उल्लेखनीय योगदान दिया, उसके लिए उन्हें किन शब्दो मे धन्यवाद दिया जावे, क्योकि उसके विना इस ग्रथ का पुन-प्रकाशन कदापि सभव नही था।

इस ग्रथ के सशोधन और सपादन के लिए अपने अत्यावश्यक उपयुक्त सहयोगी सपादक के रूप मे मनोहरसिंह राणावत को चुन लेने मे मुझे यत्किचित् भी झिझक या हिचकिचाहट नही हुई। जून 1971 ई० से जुलाई 1972 ई० तक के चौदह महीनो के काल मे मेरे पास रह कर उन्होंने अपनी पुस्तक 'शाहजहा के हिंदू मनसवदार' ही तैयार नही की थी, किंतु अव तक अप्रकाशित 'जोधपुर हुकूमत री वही' के सशोधन और सपादन मे भी उन्होंने मेरा वहुत-

कुछ हाथ बटाया था। यो ऐतिहासिक शोध और सपादन, आदि के लिए अत्यावश्यक यथेष्ट बहुविध प्रशिक्षण उन्हे दिया जा चुका था। अतएव विजयसिंह पथिक श्रमजीवी महाविद्यालय, अजमेर, में इतिहास के अस्थायी व्याख्याता के रूप मे लगभग नौ-दस माह काम करने के बाद वहा से पद-मुक्त होकर जब वे पुन मेरे पास लौटे तब मैंने यह सारा कार्य-भार उन्हें सौंप दिया।

मुशी देवीप्रसाद कृत 'शाहजहा-नामा' का यह नया सस्करण तैयार करने में कई एक कठिनाइयो का सामना करना पडा था। प्रथम तो उस ग्र थ के उर्दू पाठ मे दी गई हिजरी तारीखो को हिन्दी पाठ मे समाविष्ट करना पडा था। उधर हिन्दी पाठ में हिजरी तारीखों के मुताबिक केवल हिन्दी तिथिया दी गई थी, जिन्हें तब मुशी देवीप्रसाद ने उन वर्षों के चण्डू पचागो के आधार पर बनाई गई अपनी जत्री की सहायता से निर्धारित किया था। परतु यो निर्धारित इन तिथियो मे यदा-कदा पाये जाने वाले एकाध दिन के फरक को भी यथासभव दूर कर देने की आवश्यकता को अनुभव कर तदर्थ समुचित प्रयत्न किये गये। पुन मुशी देवीप्रसाद ने अपने इस ग्र थ मे हिजरी तारीखो और उनके मुताबिक हिन्दी तिथियो पर पडने वाले ईसवी वार, तारीख और माह आदि का कहीं भी समावेश नही किया था। परतु आज के सशोधको अथवा इतिहास-प्रेमियो के लिए हिजरी तारीखो और हिन्दी तिथियो के साथ ही तदनुरूप ईसवी वार, तारीखें, महीने आदि भी देना अनिवार्य जान कर सावधानी के साथ पूरी जाच-पडताल करके यो निश्चित ईसवी वार, तारीख, महीना आदि यथास्थान जोड दिये गये हैं। शाहजहा के राज्यकाल की कई एक घटनाओ के जो ईसवी वार और तारीखें 'शाहजहां-नामा' मे दिये गये हैं, वे सभवत अब तक साधारणतया सर्वमान्य एव अधिकतर इतिहास-ग्र थो मे प्रयुक्त ईसवी वार और तारीखो से भिन्न हो। परतु उनके बारे मे यह आग्रहपूर्ण अनुरोध है कि जो ईसवी वार और तारीखें इस सशोधित सस्करण मे दी जा रही है, वे सही हैं, और यो ये सशोधित तारीखें ही अब तक अधिकतर मान्य किंतु गलत तारीखो के स्थान पर भविष्य मे प्रयुक्त की जानी चाहिए।

यह एक कठोर सत्य है कि हिजरी सन् तथा अकबर द्वारा प्रारभ किये गये इलाही सन् की तारीखो के मुताबिक सही ईसवी वार, तारीख, माह आदि निश्चित करना इतिहासकारो और सशोधको के लिए सदैव एक उलझी हुई कठिन समस्या रही है, और 'इण्डियन एफीमेरीज' आदि विभिन्न जत्रियो से पूरी सहायता लेने पर भी यदा-कदा दो-एक दिन का फरक रह ही जाता है। अतएव उन दोनो सनो की तारीखो के मुताबिक ईसवी वार, तारीख और

महीने आदि निकालने की सुगम विधियो के विवरण और उनके कुछ सीधे-सादे नियम प्रस्तावना के अतिम प्रकरण मे दे दिये गये हैं, जिनसे इतिहासकारो और सशोधको की तत्सबधी बहुत कुछ कठिनाइया दूर हो जावेंगी।

दूसरे, मुशी देवीप्रसाद ने अपने 'शाहजहा-नामा' मे उसके शासनकाल के वर्षों की गणना हिजरी सन् के ही अनुसार, अर्थात् मुहर्रम से जिल्हिज तक की है, जो अब्दुल हमीद लाहोरी मुहम्मद वारिस, मुहम्मद ताहिर, कम्बू आदि द्वारा अनुसरित शाहजहा के आदेशानुसार ही 1 जमादि-उस्-सानी से गिने जाने वाले जुलूसी सनो के आधार पर की गई वर्ष-गणना से सर्वथा विभिन्न और पूर्णतया असम्बद्ध होने के कारण सशोधको तथा इतिहासकारो के लिए बहुत ही अटपटी और उलझन पैदा करने वाली थी। अतएव उसे बदल कर समूचे शासनकाल की सारी घटनावली को तारीख 1 जमादि-उस्-सानी से प्रारभ होने वाले जुलूसी सनो मे ही विभक्त कर दिया गया है। यो लाहोरी आदि इन उपर्युक्त इतिहासकारो द्वारा अनुसरित जुलूसी सनो के काल-विभाग से पूर्णतया सम्बद्ध हो जाने के कारण इस सशोधित 'शाहजहा-नामा' मे सशोधको आदि के लिए तत्सबधी कोई कठिनाई या उलझन अब नहीं रह गई है।

तीसरे, ईसा की 19वी शती के अतिम वर्षो मे जब मुशी देवीप्रसाद ने अपना यह 'शाहजहा-नामा' लिखा था, तब तक राजस्थान मे स्वतत्र हिन्दी लेखन-शैली का समुचित विकास नही हो पाया था। उर्दू भाषा और लिपि तब भी राजस्थान मे, विशेषतया जोधपुर और जयपुर राज्यो मे, बहुत अधिक छाई हुई थी, जिससे मुशी देवीप्रसाद की भाषा ही नही उसके हिन्दी शब्दो के देवनागरी वर्तनी पर भी उर्दू शब्दावली तथा उर्दू वालो के विशिष्ट उच्चारणो का बहुत असर दिखाई देता है। यो मुशी देवीप्रसाद द्वारा प्रयुक्त अरबी-फारसी भाषाओ से व्युत्पन्न सब ही शब्दो को पूर्णतया बदल देना न तो सभव था और न उचित ही होता। पुन उसकी शब्द-योजना और उसके वाक्य-विन्यास मे भी फारसी-उर्दू शैली का अटपटा प्रभाव तथा असम्बद्ध समिश्रण बहुत मात्रा मे अनेकानेक उलट-पटल शब्द बधो वाले लम्बे वाक्यो के रूप मे पाया जाता है। अतएव 'शाहजहा-नामा' की इस भाषागत विचित्रता को यथासभव दूर करने का भी थोडा-बहुत अत्यावश्यक प्रयत्न किया गया है। इस 'शाहजहा-नामा' मे मुशी देवीप्रसाद की मूल भाषा के उदाहरणो के रूप मे प्रस्तुत करने के उद्देश्य से सन् 1899 ई० मे लिखा गया उसके तीसरे भाग के अत मे 'खातिमा' और उसके प्रथम भाग के दूसरे सस्करण के प्रारभ मे दी गई सन् 1917 ई० मे लिखी गई 'शाहजहा-नामे की भूमिका' की भाषा आदि को यथावत् रहने दिया गया है। उनमे आवश्यक विराम चिह्नो के

अभाव को यथोचित ढग से दूर करने का प्रयत्न निस्सदेह किया गया है। मुशी देवीप्रसाद की कृतियो मे पाई जाने वाली भाषागत विचित्रता कालातर मे कम होती गई थी। 'शाहजहा-नामा' की शब्दावली, उसके शब्द-बधो तथा वाक्य-विन्यास, आदि मे यत्र-तत्र किये गये फेरफारो की आवश्यकता और उनके परिमाण के सबध मे भाषा-विज्ञो तथा पाठको का मतैक्य होना कदापि सभव नही है, परतु आशा यही की जाती है कि यो सशोधित भाषा अधिक सुगम और सुबोध ही प्रमाणित होगी।

चौथे, 'हिन्दू राजाओ और मनसबदारो के कामो का पूरा ब्यौरा' प्रस्तुत करने को उत्सुक मुशी देवीप्रसाद ने अब्दुल हमीद लाहोरी कृत 'पादशाह-नामा' के दोनो भागो के अत मे दी गई शाही मनबदारो की सूचियो मे से शाहजहा के शासनकाल के पहिले और दूसरे दस-दस वर्षों के हिन्दू मनसब-दारो के नामो को सकलित कर उनकी पदानुक्रमिक दो तालिकाए अपने 'शाहजहा-नामा' के दूसरे भाग के अत मे दी हैं। इन दोनो ही नामावलियो को मेरे सह-सम्पादक मनोहरसिंह राणावत ने अपने ग्रथ 'शाहजहा के हिन्दू मनसबदार'[1] मे पहिले ही प्रकाशित कर दिया है, अतएव 'शाहजहा-नामा' के इस सशोधित सस्करण मे उन्हे सम्मिलित नही करने का निर्णय लिया गया। इसलिए पाठको से यही आग्रह है कि उपर्युक्त 'शाहजहा के हिन्दू मनसबदार' को इस ग्रथ का सम्पूरक ही समझें। इस 'शाहजहा-नामा' के तीसरे भाग के 'शेष-सग्रह' के अतर्गत दी गई 'मनसबदारो की अतिम सूची' को अवश्य ही रहने दिया गया है, क्योकि मुहम्मद ताहिर द्वारा दी गई इस सूची को 'शाह-जहा के हिन्दू मनसबदार' मे सम्मिलित नही किया जा सका था।

पाचवे 'शाहजहा-नामा' के पाठ मे यत्र-तत्र हुई विभिन्न प्रकार की अशुद्धियो, भूलो, आदि को ठीक करने तथा उसमे पाई जाने वाली कमियो को दूर करने के लिए भी सावधानी-पूर्ण विशेष प्रयत्न करने पड़े हैं। जैसा कि पहिले ही सकेत किया जा चुका है, इस 'शाहजहा-नामा' मे प्राय आवश्यक विरामचिह्नो का अभाव ही है, अत समुचित विरामचिह्न यथास्थान लगा दिये गये हैं। छापे की अशुद्धियो अथवा भूलो को सुधार दिया गया है। फारसी ग्रंथो मे उनकी लिपि विशेष मे लिखे गये व्यक्तिगत तथा भौगोलिक नामो को पढने अथवा उनके सही उच्चारण निर्धारित कर उन्हे देवनागरी लिपि मे लिखने मे जो-जो भूलें अथवा असगतिया हुई थी, उन्हें ठीक करने के लिए सबधित ख्यातो-वशावलियो तथा क्षेत्रीय मानचित्रो अथवा गजेटियरो, आदि की सहायता लेनी पडी थी।

---

1 शाहजहां के हिन्दू मनसबदार, सपादक मनोहरसिंह राणावत, 1973, हिन्दी साहित्य मदिर, गणेश चौक, रातानाडा, जोधपुर (राजस्थान)।

मुशी देवीप्रसाद कृत 'शाहजहा-नामा' के इस सशोधित सस्करण को यह वर्तमान स्वरूप देने तथा उसकी प्रेस-कापी तैयार करवाने के लिए मेरे सह-सपादक मनोहरसिंह राणावत को छ माह से भी अधिक काल तक निरतर अथक परिश्रम करना पडा है, क्योकि इसका अधिकतर कार्य उन्होने ही किया है। इडियन काउसिल आफ हिस्टारिकल रिसर्च, नई दिल्ली, के तत्त्वावधान मे आयोजित 'जोधपुर राज्य की ख्यात' के सपादन की योजना के अंतर्गत तदर्थ मेरे वरिष्ठ शोध सहायक पद का कार्य-भार सभालने के वाद तो अति-रिक्त अवकाश-काल मे ही 'शाहजहा-नामा' के सशोधन, आदि का काम किया जा सका था। अत इसे पूरा करने मे अनिवार्यरूपेण अपेक्षाकृत कुछ अधिक समय लगना स्वाभाविक ही था।

यहा मुझे यह स्वीकार करते यत्किचित् भी सकोच नही होता है कि मुशी देवीप्रसाद कृत 'शाहजहा-नामा' का यह सशोधित सस्करण तैयार करने का पूरा श्रेय मेरे सह-सपादक, मनोहरसिंह राणावत को ही है। यो मेरे निर्देशा-नुसार ज्यो-ज्यो यह सस्करण तैयार होता गया, त्यो-त्यो मैं उसे वरावर देखता गया था, तथा यदा-कदा उठने वाली तत्सवधी विवादास्पद वातो पर अतिम निर्णय मैंने ही लिया है। अतएव इस ग्र थ मे हुई या रह गई भूलो का सारा उत्तरदायित्व मेरा ही है। अत यदि सुविज्ञ पाठक, खोजी सशोधक और विद्वद् वृन्द उनकी सूचना देंगे तो मैं उनका विशेप अनुगृहीत हूगा।

अत मे हम विश्व-विख्यात 'दि मैकमिलन कपनी आफ इण्डिया लिमिटेड' के अधिष्ठाताओ के अनुगृहीत हैं कि उन्होने इस ग्र थ के प्रकाशन का भार उठाया है। यदि यह ग्र थ सशोधको, इतिहासकारो तथा इतिहास-प्रेमी पाठको को उपयोगी तथा सहायक हो सका तो इसके सपादको का सारा परिश्रम सफल हो जावेगा।

—रघुबीर सिंह

'रघुबीर निवास'
सीतामऊ, (मालवा)
स्वाधीनता दिवस,
1975 ई०

'शाहजहां-नामा' मुंशी देवीप्रसाद कृत

संशोधन और परिवर्द्धन

1. पृ० 70, प० 3 मे '14 जमादि-उल्-अव्वल' के स्थान पर पढो '19 जमादि-उल्-अव्वल'।
2. पृ० 70, प० 4 मे 'आदिल खा को' के बाद जोडो 'सजा देने को आसिफ खा को'।
3. पृ० 70, प० 7 मे 'जुझारसिंह बुदेला भी था' के स्थान पर पढो 'जुझारसिंह बुदेला और राजा भारतसिंह बुदेला भी थे'।
4. पृ० 149, नीचे से प० 5 मे '1 मुहर्रम' के स्थान पर पढो '2 मुहर्रम'।
5. मूल उर्दू पाठ का जो उल्लेख हिन्दी अनुवाद मे छूट गया है, उसे पृ० 191, प० 1 के बाद जोडो

   '17 शव्वाल (पोष वदि 4=शनिवार, दिसम्बर 7, 1644 ई०) को अब्दुल्ला खा फिरोज जग सत्तर वरस का होकर मर गया'।

प्रस्तावना

1 शाहजहां के राज्य-काल विषयक फारसी ऐतिहासिक आधार-ग्रंथ

मुगल साम्राज्य का स्वर्ण युग, शाहजहा का शासन-काल, समकालीन फारसी इतिहास-लेखन की दृष्टि से भी अतीव महत्त्वपूर्ण और सर्वथा समृद्ध रहा है। उस शासन-कालीन इतिहास विषयक शासकीय ही नही अशासकीय इतिहास-ग्रंथ भी फारसी भाषा में अनेको लिखे गये थे, जिससे तत्सबंधी समकालीन और कुछ ही पश्चात्कालीन ऐतिहासिक आधार-सामग्री बहुतायत से सुलभ है।

अकबर-कालीन अबुल फजल की परपरा का अनुसरण कर समकालीन शासकीय इतिहास-लेखन का कार्य शाहजहा के शासन-काल के प्रारंभ मे ही तदर्थ नियुक्त मुशियो को सौंपा गया था। सन् 1634 ई० (सन् 1044 हि०) के लगभग मिर्जा जलालुद्दीन तबातबाई को भी तदर्थ उन्ही में नियुक्त कर दिया गया। वह तब ही इस्फहान से भारत आया था और फारसी-लेखन की नई शैली मे वह दक्ष था। अत उसने तब एक 'पादशाह-नामा' लिखना प्रारभ किया, जिसकी प्रतिया अब सर्वथा अप्राप्य हैं, उसके एकमात्र अब भी सुलभ अश की इनी-गिनी प्रतियो मे सौर गणना के अनुसार नौरोज से प्रारभ होने वाले शाहजहा के जुलूसी सन् 5 के आदि (शनिवार, मार्च 10, 1632 ई०) से जुलूसी सन् 8 के अत (बुधवार, मार्च 9, 1636 ई०) तक का ही विवरण है। इतना कुछ लिख जाने के बाद अपने प्रतिद्वन्द्वियो की ईर्ष्या से खेद-खिन्न होकर तबातबाई ने तब अपना यह 'पादशाह-नामा' लिखना बन्द कर दिया, और यो वह इतिहास-ग्रंथ अपूर्ण ही रहा।[1]

उधर तब शासकीय इतिहास-विभाग के मुशियो के लेखन से शाहजहा

---

1 कम्बू, आमल-इ-सालेह, 3, पृ० 435-436, जरनल आफ रायल एशियाटिक सोसाइटी, लदन, 1868, पृ० 463, स्टोरी, पर्शियन लिट्रेचर, खण्ड 1—विभाग 1, पृ० 565-566। सुलभ प्रतिया—ब्रिटिश म्यूजियम, लदन, अर्थांक-ओरियण्टल 1676, आसफिया लायब्रेरी, हैदराबाद, 1, क्रमाक 933 (पृ० 359-360), स्टेट लायब्रेरी, रामपुर।

सतुष्ट नही था, एव वह अधिक सुयोग्य लेखक की खोज करने लगा। तब उसे मुहम्मद अमीन कजवीनी द्वारा लिखित 'फतह विलायत बुदेला' देखने को मिला। उसकी लेखन-शैली आदि से प्रभावित होकर शाहजहा ने जनवरी 9, 1636 ई० को मुहम्मद अमीन कजवीनी को अपना शासकीय इतिहासकार नियुक्त कर उसे आदेश दिया कि वह उसके शासन-काल का इतिहास लिखकर प्रस्तुत करे। शाहजहा के बीसवें जुलूसी सन् (1645–1646 ई०) में उसने अपना जो 'पादशाह-नामा' शाहजहा को भेंट किया, उसमे शहरेवर 31, हिजरी सन् 1047, अर्थात् 3 जमादि-उल्-अव्वल, जुलूसी सन् 10 (मगलवार, सितम्बर 12, 1637 ई०) तक का ही विवरण है। यद्यपि कजवीनी की लेखन-शैली तबा-तबाई जैसी अति विस्तारपूर्ण नही है, फिर भी उसके पश्चातकालीन इतिहास-कारो की तुलना मे काफी क्लिष्ट और गूढ ही है, जिससे इस ग्रथ का कभी अधिक प्रचार नहीं हुआ, तथा इधर उसके प्रकाशन अथवा अनुवाद का विचार भी किसी को नहीं आया। इस ग्रथ की सुन्दर प्रामाणिक प्रतिया आज भी अधिकतर हस्तलिखित ग्रथ-सग्रहो मे सुलभ हैं।

इन दोनो 'पादशाह-नामो' के सदर्भ मे यह बात विशेषरूपेण उल्लेखनीय है कि उनमे शाहजहा के जुलूसी सनो का प्रारभ सौर-गणना के अनुसार नौरोज से ही किया गया है, जो तब भी प्रचलित थी। कजवीनी के अनुसार सन् 1637 ई० में शाहजहा ने आदेश दिये थे कि शासन के दूसरे दौर, अर्थात् इग्या-रहवें जुलूसी सन् के प्रारभ से ही चान्द्र-गणना को अपनाया जावे, जिससे इग्यारहवें जुलूसी सन् का प्रारभ 1 जमादि-उस्-सानी (मगलवार, अक्तूबर 10, 1637 ई०) से ही माना गया।[1]

शाहजहा को 'अकबर-नामा' मे प्रयुक्त अबुल फजल की विशिष्ट शैली और शब्दों की अनोखी व्यूह-रचना बहुत पसद थी, और वह अपने शासन-काल का शासकीय इतिहास भी उसी प्रकार की भाषा-शैली मे लिखवाने को बहुत ही समुत्सुक था। सभवत मुहम्मद अमीन कजवीनी की लेखन-शैली तथा भाषा शाहजहा को अपने वाञ्छित स्तर और प्रकार की प्रतीत नही हुई होगी। कारण कुछ भी रहा हो, उसके चाहने पर भी शाहजहा ने अपने शासन-काल के दूसरे दौर का इतिहास लिखने का भार कजवीनी को नही सौंपा। परतु अपने निवास-स्थान पर अवकाशपूर्ण शातिमय जीवन बिता रहे अब्दुल हमीद लाहौरी को वहा से आमन्त्रित कर यह महत्त्वपूर्ण कार्य-भार उसके सुपुर्द कर दिया गया।

अब्दुल हमीद लाहौरी ने तब शासन-काल के दूसरे दौर का इतिहास ही

1 रीऊ, कैटेलाग आफ पर्शियन मेनुस्क्रिप्ट्स इन ब्रिटिश म्यूजियम, 3, पृ० 933-ब, 1, पृ० 259-अ।

नही लिखा, परतु कजवीनी द्वारा लिखे गये पहिले दौर के समूचे विवरण को भी उसने अपने ही ढग से पुन लिखकर अपने इस 'पादशाह्-नामा' मे प्रारभ से लेकर राज्य-शासन के वीसवें जुलूसी सन् के अत तक का पूरा-पूरा विस्तृत इतिहास लिख डाला, जिसके वारे मे अधिक विवेचन आगे किया जायेगा।

तव तक अब्दुल हमीद लाहौरी वहुत वूढा हो गया था, अतएव उसके वाद का इतिहास लिख सकना उसके लिए सभव नही था। अतएव अब्दुल हमीद लाहौरी के इस 'पादशाह्-नामा' के ही क्रम मे शाहजहा के शासन-काल के तीसरे दौर का विस्तत इतिहास लिखने के लिए अब्दुल हमीद लाहौरी के शिष्य और सहायक, मुहम्मद वारिस को आदेश दिया गया, जो तव अपनी अनुपम लेखन-शैली के लिए सुज्ञात हो चुका था। तव तक शाहजहा के सुयोग्य विश्वस्त विद्वान् वजीर सादुल्ला खा का भी देहान्त हो चुका था, अत शाहजहा ने वारिस को आदेश दिया कि राज्य-शासन-काल के तीसरे दौर का अपना यह इतिहास-ग्रथ वह मुल्ला अला-उल्-मुल्क तूनी फाजिल खा को दिखा लेवे, जो तव मीर-सामान पद पर काम कर रहा था। अत अब्दुल हमीद लाहौरी की ही शैली में मुहम्मद वारिस ने उसी प्रकार पूरे विस्तार के साथ तीसरे दौर (तीसवें जुलूसी सन्) के अत (शुक्रवार, मार्च 6, 1657 ई०) तक का वहुत ही प्रामाणिक इतिहास लिख डाला। सभवत अपने इस विस्तार तथा वहुल पृष्ठ-सख्या के कारण ही पादशाह्-नामा' की मुहम्मद वारिस कृत इस तीसरी जिल्द को प्रकाशित करने का अब तक कहीं भी आयोजन नहीं हुआ और न अव भी सोचा जा रहा है।

यो शाहजहा के तीसवें जुलूसी सन् के अत तक के तीन विभिन्न विस्तृत शासकीय इतिहास-ग्रथ क्रमश तव शाहजहा के शासन-काल मे ही उसी के निर्देशानुसार लिखे गये थे। शासकीय इतिहास-ग्रथो की यह परपरा यहीं समाप्त हो जाती है अत शाहजहा के शासन-काल के अतिम सवा वर्ष (शनिवार, मार्च 7 1657 ई० से वुधवार, जून 9, 1658 ई० तक) के ऐतिहासिक विवरण के लिए तव ही लिखे गये अशासकीय इतिहास-ग्रथो का सहारा लेना अनिवार्य हो जाता है।

शाहजहा के शासन-काल सवधी ऐतिहासिक विवरण को लेकर तीन विभिन्न शायरो ने फारसी मे अलग-अलग मसनविया (पद्यात्मक इतिवृत्त) लिखने का प्रयत्न किया था। शाहजहा का विशेप कृपा-पात्र कवि और शाही दरवार का 'मलिक-इ-शुअरा', अवू तालिव 'कलीम' हमदानी, शाहजहा के राज्य-काल के ऐतिहासिक इतिवृत्त को लेकर 'पादशाह्-नामा' अथवा 'शाहशाह्-नामा' शीर्षक से एक लम्वी मसनवी लिखने लगा था, जो सन् 1651 ई० में काश्मीर में उसकी मृत्यु के कारण पूरी नही हो सकी। कलीम ने कोई

14,948 छदो मे शाहजहा के शासन-काल के प्रथम दस जुलूसी वर्षों का विवरण लिखा है। कलीम की एक मनसवी 'फतह मुल्क जुझारसिंह बुदेला' विषयक भी मिलती है, जो सभवत वास्तव मे उपर्युक्त 'पादशाह-नामा' का ही अश होगी।[1]

स्वय भी शाही दरबार मे 'मलिक-इ-शुअरा' पद पाने को समुत्सुक तथा तदर्थ प्रयत्नशील कवि, हाजी मुहम्मद जान कुदसी ने अपनी अपूर्ण मसनवी 'जफरनामा-इ-शाहजहानी' के कोई 8,000 छद लिखे थे।[2] शाही ग्रथागार का किताबदार (अध्यक्ष) मीर मुहम्मद याह्या 'काशी' भी अपनी मसनवी 'पादशाह-नामा' लिखने लगा, परतु उसके 4,583 छद ही लिख पाया था कि वह शाही कृपा से वचित हो गया और तदनन्तर उसके आगे उसने वह मसनवी नही लिखी। इस अपूर्ण मसनवी के कुछ ही अश की एकमात्र प्रति ब्रिटिश म्यूजियम, लदन, मे सुलभ है।[3]

राज्य-शासन के इतिहास की विवरणात्मक ये तीनो ही मसनविया यो अपूर्ण ही रही। इनके अतिरिक्त शाहजहा अथवा उसके शासन-काल सबधी कुछ और भी मसनविया हैं, जिनमें ये दो उल्लेखनीय हैं। एक अज्ञात कवि ने 'हुलिया-इ-शाहजहा' शीर्षक एक मसनवी मे शाहजहा के रग-रूप आदि शारीरिक वैशिष्ट्य का वर्णन किया है, जो सभवत सन् 1646–1647 ई० मे लिखी गई थी।[4] शाहजहा के शासन-काल के दूसरे दौर में मुहम्मद कुली सलीम तेहरानी ने 'जग-इ-इस्लाम खा' अथवा 'दर फतह-इ-बगाला' शीर्षक से एक मसनवी लिखी थी, जिसमें उसने अपने प्रतिपोषक बगाल के सूबेदार इस्लाम खां मशहदी (1635–1639 ई०) की कोच हाजो तथा आसाम मे विजयो का विवरण लिखा है।[5] राजनैतिक इतिहास विषयक आधार-सामग्री के रूप मे

---

1 खलील कृत 'खुलासात्-उल्-कलाम', 2, पृ० 218-अ (खुदावख्श लायब्रेरी, बांकीपुर, ग्रथाक 705–40, केटेलाग, भाग 8, पृ० 144–145), रीऊ० 2, पृ० 686-687, स्टोरी० 1–1, पृ० 572–574।

2. खलील० 2, पृ० 172-अ (खुदावख्श० ग्रथांक 705–37, केटेलाग० 8, पृ० 144), खुदावख्श० ग्रथाक 308–1 (केटेलाग० 3, पृ० 77–83), स्टोरी० 1-1, पृ० 568-569।

3 खलील० 2, पृ० 500 अ (खुदावख्श० ग्रथाक 705–68, केटेलाग० 8, पृ० 146–147), ब्रिटिश म्यूजियम, लदन-ग्रथाक-ओरियण्टल 1852 (रीऊ० 3, पृ० 1001 ब-1002 अ), स्टोरी० 1-1 पृ० 569–570।

4 खुदावख्श० ग्रथाक 325 (केटेलाग० 3, पृ० 111), स्टोरी० 1–1, पृ० 570।

5 स्टोरी० 1–1, पृ० 567।

इन मसनवियो का कोई विशेष महत्त्व नही हो सकता है। उस शासन-काल के सास्कृतिक तथा साहित्यिक पक्ष को उद्भासित करते हुए वे अवश्य ही यह स्पष्ट करती हैं कि उस वैभवपूर्ण समृद्धिशाली शाही दरबार मे शाहजहा अथवा उसके प्रमुख अधिकारियो की कृपा प्राप्त करने को समुत्सुक फारसी शायरो की कैसी भीड लगी हुई थी और यो तब फारसी साहित्य कहा तक कैसा समृद्ध हुआ था।

अकबर के शासन-काल की ही तरह शाहजहा के समय मे भी शाहजहा के समूचे शासन-काल विषयक कई एक महत्त्वपूर्ण अशासकीय फारसी इतिहास-ग्रथ लिखे गये थे, जिनमे कुछ तो विशेषरूपेण उल्लेखनीय हैं। इन सब ही मे शाहजहा के समूचे शासन-काल का इतिहास वर्णित है और प्राय आगरा के किले मे उसको कैद किये जाने के साथ ही वे समाप्त हो जाते हैं। शाहजहा के शासन-काल के तीसवें जुलूसी सन् के अत तक का उनमे दिया गया इतिहास तो मुख्यतया उपर्युक्त समकालीन शासकीय इतिहास-ग्रथो पर ही आधारित है।

इन अशासकीय इतिहास-ग्रथो में सबसे अधिक उल्लेखनीय और विशेष समादृत ग्रथ है, मुहम्मद सालेह कम्बू कृत 'आमल-इ-सालेह'। शाहजहा के शासन-काल के अतिम सवा वर्ष के इतिहास के लिए प्राय इसी ग्रथ में दिये गये विवरण को ही सम्मिलित किया जाता है। शाहजहा के बन्दी-जीवन और मृत्यु विषयक सक्षिप्त विवरण इस ग्रथ मे उसी ने सभवत बाद मे जोड दिया था। अपने इस इतिहास-ग्रथ में कम्बू ने 'अपनी तौर के शब्दाडबर और मुशीगिरी' का पर्याप्त प्रदर्शन किया है, तथापि आधुनिक काल मे 'आमल-इ-सालेह' का विशेष प्रचार हुआ है। बगाल एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ता, ने इस समूचे ग्रथ को अपनी 'बिबलोथिका इण्डिका' माला में प्रकाशित किया है। उजबक शासक नजर मुहम्मद के विरुद्ध शाहजादा मुराद बख्श और अलीमर्दान खा की चढाई और बल्ख पर मुगल विजय (1646 ई०) का कम्बू ने आलकारिक कल्पनापूर्ण विस्तृत विवरण अलग से भी लिखा था जो सही तथ्यो की उपेक्षा के कारण प्रामाणिक नही है।[1]

मुहम्मद ताहिर 'आशना' इनायत खा कृत 'मुलख्खस' एक समय मे बहुत लोकप्रिय रहा था और उसकी बहुत सी प्रतिया यत्र-तत्र सुलभ थी। इस ग्रथ के बारे मे आगे अधिक विस्तार से विवेचन किया जावेगा। सादिक खा कृत 'तवारीख-शाहजहानी' अथवा 'शाहजहा-नामा' मे समूचे शासन-काल का विवरण सीधी-सादी भाषा मे सक्षेप मे लिखा है। इसकी इनी-गिनी प्रतिया

1 ब्रिटिश म्यूजियम, ग्रथाक-ओरियण्टल 1683 (रीऊ० 3, पृ० 934 ब), स्टोरी० 1-1, पृ० 581।

ही प्राप्य हैं, अत अब तक यह इतिहास-ग्रथ प्राय उपेक्षित ही रहा है। सादिक खा प्रारभ से ही शाहजहा के अतरग वर्ग से सबधित रहा और शाहजहा के प्रति उसकी स्वामि-भक्ति अत तक सर्वथा अडिग रही। अत यो अपनी व्यक्तिगत जानकारी अथवा पूर्णतया विश्वस्त प्रामाणिक आधार-सूत्रो से ज्ञात विवरणो पर निर्धारित यह ग्रथ विशेष महत्त्वपूर्ण और उपयोगी है। इसी कारण अपने लब्ध-प्रतिष्ठ इतिहास-ग्रथ मुन्तुखब्-उल्-लुबाब मे खाफी खा ने इस ग्रथ का प्रचुर प्रयोग किया है।[1] इसी सदर्भ मे कम्बू के बडे भाई और गुरु शेख इनायतुल्ला कम्बू लाहोरी कृत 'तारीख-इ दिलकुशा' का भी उल्लेख अनिवार्य हो जाता है, यद्यपि उस ग्रथ की प्रतिया सर्वथा अप्राप्य हो गई हैं।[2]

इस शासन-काल के दो स्फुट समकालीन आधार-ग्रथ विशेषरूपेण महत्त्वपूर्ण हैं। प्रथम तो राय चन्द्रभान ब्राह्मण कृत 'चार चमन-इ-बरहमन' है, जिसमे सुविख्यात लेखक ने शाही दरबार के विभिन्न उत्सवो-आयोजनो तथा उसके अनोखे वैभव, शाहजहा की दिनचर्या और मुगल साम्राज्य की नवनिर्मित राजधानी, शाहजहानाबाद तथा साम्राज्य के अन्य प्रमुख नगरो और सूबो का विवरण है। इस ग्रथ तथा 'इशा-इ-ब्राह्मण' मे सगृहीत राय चन्द्रभान के पत्र भी ऐतिहासिक आधार-सामग्री के रूप मे बहुत ही उपयोगी हैं। दूसरे,

---

1 सुज्ञात अथवा सुलभ प्रतिया —ब्रिटिश म्यूजियम, ग्रथांक—ओरियण्टल 174 (रीयू० 1, पृ० 262 अ-263 अ), ईलियट सग्रह की प्रति (ईलियट० 7, पृ० 133) और रामपुर स्टेट लायब्रेरी की प्रति। इनमें से पिछली दोनों प्रतियों के उत्तर भाग मे अवश्य ही औरगजेब के समूचे शासन-काल का भी विवरण मिलता है, जो वस्तुत अबुल फजल मामूरी कृत औरगजेब के शासन-काल का सर्वथा विभिन्न इतिहास है, जिसे खाफी खा ने अपने सुप्रसिद्ध ग्रथ 'मुन्तुखब्-उल्-लुबाब' मे प्राय यथावत् समाविष्ट कर लिया है। जरनल आफ रायल एशियाटिक सोसाइटी, लदन, 1936, पृ० 279–283, स्टोरी० 1–1, पृ० 577।

इसी सदर्भ में ब्रह्मदेवप्रसाद अम्बष्ठ (पटना) से प्राप्त नई जानकारी के अनुसार रामपुर स्टेट लायब्रेरी मे सुलभ सादिक खा कृत 'शाहजहा-नामा' की प्रति मे केवल शाहजहा के ही शासन-काल का वृत्तात है। साथ ही वहा अबुल फजल मामूरी कृत एक और 'शाहजहां-नामा' भी सगृहीत है, जो सर्वथा विभिन्न ग्रथ है। इसमें शाहजहा के शासन-काल से लेकर औरगजेब के शासन-काल के अत तक का इतिहास है। इसमे लिखा हुआ शाहजहा के शासन-काल का विवरण मूलत सादिक खां कृत 'शाहजहा-नामा' पर आधारित होते हुए भी उसकी शब्दावली तथा उसके इतिवृत्तो की कई एक छोटी-मोटी बातो मे यत्र-तत्र विभिन्नता पाई जाती है।

2 कम्बू० 3, पृ० 379, 439–441, स्टोरी० 1–1, पृ० 578।

रशीद खा अथवा मुहम्मद वादी कृत 'लताइफ-उल्-अखवार' मे दारा शिकोह के सेनापतित्व मे कधार के तीसरे विफल घेरे (1653 ई०) का विस्तृत विवरण है। मुगल सेना, मुगलो की युद्ध व्यवस्था, उसकी त्रुटिया और शक्तिहीनता आदि पर सुस्पष्ट प्रकाश पडता है। तत्कालीन समाज के अध-विश्वासो, शाही दरवार के जोड-तोड तथा प्रपच-पूर्ण घातक वातावरण की भी जानकारी मिलती है।

शाहजहा के राज्य-काल के अतिम छ महीनो मे मुगल राज्य-सिहासन के लिए उसके पुत्रो मे जो गृह-युद्ध प्रारभ हुआ, वह शाहजहा के राज्य-सिहासन से उतार दिये जाने के वाद भी कुछ समय तक चलता रहा था, अतः तद्विषयक वाद मे लिखे गये विभिन्न इतिहास-ग्रथ शाहजहा के राज्य-कालीन इतिहास के उपसहार की अपेक्षा औरगजेव के शासन-काल की प्रस्तावना और प्रारभ के रूप मे कही अधिक सामने आए हैं एव उनकी चर्चा यहा नही की जा रही है। पुन इस विवेचन के विस्तार को अधिक नही वढाने के उद्देश्य से भी शाहजहा के शासन-कालीन इतिहास पर यत्र-तत्र अन्य पक्षीय विशेष प्रकाश डाल सकने वाले दूरस्थ राज्यो के क्षेत्रीय समकालीन इतिहास-ग्रथो अथवा तव की गई लिखा-पढी सवधी अनेकानेक महत्त्वपूर्ण पत्र-सग्रहो, आदि का भी यहा उल्लेख नही किया जा रहा है।[1]

2. मुंशी देवीप्रसाद और उसका शाहजहां-नामा

मुशी देवीप्रसाद जाति से गौड कायस्थ था। उसका घराना मूलत दिल्ली-निवासी था, परतु उसका एक पूर्व-पुरुष, सभवत मुशी नरसिहदास, दिल्ली के पतनोन्मुख शाही दरवार को छोड कर भोपाल चला गया, और वहा नवोदित भोपाल राज्य की सेवा करने लगा। उसका पौत्र तथा मुशी आलमचंद का पुत्र, मुशी घासीराम वहुत ही सुयोग्य मुशी और उल्लेखनीय खुशनवीस था। अत जव मुशी घासीराम के पुत्र मुशी किशनचद का विवाह इतिहास मे सुज्ञात नवाव अमीर खा के वख्शी दौलतराम की पुत्री से हो गया, तव अमीर खा ने मुशी घासीराम की नियुक्ति अपने आधीन सिरोज परगने मे कर दी। अत मुशी घासीराम भोपाल से कोई 60 मील उत्तर-पूर्व-उत्तर मे स्थित सिरोज

1 तदर्थ देखें—वनारसीप्रसाद सक्सेना कृत 'शाहजहा आफ देहली', इट्रोडक्शन, पृ० X-XX।

नगर सकुटुम्ब चला आया, और वहा उसकी पुत्र-वधू ने शनिवार, अगस्त 14, 1819 ई० को मुशी देवीप्रसाद के पिता, मुशी नत्थनलाल को जन्म दिया। परतु अग्रेजो के साथ हुई नवम्बर, 1817 ई० की सधि के बाद जब अमीर खा अपने सद्य मान्य राज्य की राजधानी, टोंक में रहने लगा, तब उसके आदेशानुसार मुशी किशनचद सकुटुम्ब टोक चला आया और वही बस गया। मुशी नत्थनलाल जब पढ-लिख कर होशियार हुआ, तब वह अमीर खा के छोटे बेटे अब्दुल करीम खा की सेवा करने लगा। अपने बडे भाई, नवाब वजीरुद्दौला, से विरोध हो जाने के कारण सन् 1843 ई० मे जब अब्दुल करीम खा अजमेर में रहने लगा, तब मुशी नत्थनलाल भी उसके साथ ही अजमेर चला आया।

मुशी नत्थनलाल का विवाह जयपुर राज्य के चोकी-नवीस, मैया हीरालाल के पुत्र हकीम शकरलाल की पुत्री से हुआ था। मुशी देवीप्रसाद का जन्म अपने नाना के घर जयपुर मे माघ सुदि 14, स० 1904 वि० (शुक्रवार, फरवरी 18, 1848 ई०) के दिन हुआ था। अपने घराने की तत्कालीन शैक्षणिक परपरा के अनुसार तथा क्षेत्रीय आवश्यकताओ के अनुरूप उसे अरबी, फारसी और उर्दू की अच्छी शिक्षा उसके पिता ने ही दी थी। मुशी देवीप्रसाद ने तब अपने पिता से हिन्दी भी पढ़ी थी। वह प्रारभ से ही बडा प्रतिभाशाली था और सोलह वर्ष की ही अवस्था मे अपने पिता, मुशी नत्थनलाल की परपरा का अनुसरण करता हुआ अब्दुल करीम खा के पुत्र के आधीन नौकरी करने लगा। वहा वह सन् 1878 ई० के मध्य तक सेवा-रत रहा, तथा अपने स्वामी के साथ ही वह कभी टोक मे कभी अजमेर मे रहता रहा। मुशी देवीप्रसाद प्रारभ से ही स्वतन्त्र प्रकृति का व्यक्ति था और मूलगत बातो पर किसी भी तरह से समझौता करना उसके स्वभाव से विपरीत था। अतएव सोलह वर्ष तक वहा नौकरी करने के बाद मुशी देवीप्रसाद की नौकरी ही नहीं छूटी, परतु राजाज्ञा के कारण उसे टोक भी छोड देना पडा। सभवत इसी समय से उसने समाचार-पत्रो आदि मे लिखना भी प्रारभ कर दिया।

मुशी देवीप्रसाद का छोटा भाई बाबू बिहारीलाल जोधपुर मे नियुक्त अग्रेज रेजीडेण्ट के दफ्तर में सहकारी क्लर्क था। अतएव उसके द्वारा जोधपुर राज्य-शासन के प्रमुख अधिकारियो से सपर्क साध कर सन् 1879 ई० मे मुशी देवीप्रसाद जोधपुर राज्य की अपील कोर्ट का नायब-सरिश्तेदार नियुक्त हो गया। तदनन्तर वह जोधपुर मे ही बस गया था, जहा आषाढ सुदि 2, 1980 वि० (रविवार, जुलाई 15, 1923 ई०) को उसका देहान्त हो गया।

जोधपुर राज्य के आधीन अपने लगभग पच्चीस वर्षीय सेवा-काल मे मुशी देवीप्रसाद ने अनेको पदो पर रह कर कई महत्त्वपूर्ण उल्लेखनीय कार्य किये। सन् 1885 ई० मे वह मुन्सिफ (न्यायाधिकारी) नियुक्त किया गया और इस

पद पर वह लगभग एक युग तक काम करता रहा। 'मारवाड राज्य का इतिहास' तैयार करने के लिए जनवरी, 1888 ई० मे स्थापित किये गये, 'तवारीख का महकमा' (इतिहास-कार्यालय) के कार्य-सचालन के हेतु जब कुछ इतिहास-प्रेमी विद्वानों की एक समिति सगठित की गई, तब उसमे मुशी देवीप्रसाद को भी नियुक्त किया गया था। सन् 1891 ई० की जन-गणना के समय मुशी देवीप्रसाद मारवाड राज्य मे तदर्थ सहायक अधीक्षक नियुक्त हुआ। तब उक्त जन-गणना की उसने जो रिपोर्ट लिखी थी, उसके तीसरे भाग मे जोधपुर राज्य की प्रजा का विवरण लिख कर मारवाड मे बसने वाली सब ही प्रमुख जातियों का हाल, उनके व्यवसाय और उनके जीवन आदि की आवश्यक बातो की महत्त्वपूर्ण जानकारी कितने ही विशिष्ट चित्रो सहित प्रस्तुत की है।[1] सन् 1901 ई० की जन-गणना के समय भी मुशी देवीप्रसाद ने सहायक अधीक्षक के रूप मे अपना विशिष्ट योगदान दिया था। इनके अतिरिक्त कई अन्य विभागो मे भी मुशी देवीप्रसाद ने शासकीय आदेशानुसार कार्य किया था। इस सदर्भ मे यह बात विशेषरूपेण उल्लेखनीय है कि जिस किसी भी विभाग मे उसने कार्य किया, उसके काम मे उसकी योग्यता स्पष्ट-रूपेण देख पडी और उसकी सेवाओ की सब ही ने सदैव सराहना की। परिपक्वावस्था हो जाने पर उसने मारवाड राज्य के बडे काम छोड कर अपने निर्वाह के लिए पर्याप्त कुछ काम अपने पास रख लिये, और तब अपने अन्तिम समय तक उसने अपना सारा समय साहित्य-साधना में ही लगाया।

मुशी देवीप्रसाद को इतिहास का सदा से अनुराग रहा। यही कारण था कि अपने व्यक्तिगत अथवा राजकीय कार्य के लिए जब भी वह यात्रा करता, तब कुछ समय निकाल कर पुरानी बातें-पुराने ग्रथ, पुराने शिलालेख, पुराने कागज-पट्टे-परवाने और पुराने सिक्को आदि को सयत्न खोज कर उनका सग्रह करता रहता था। राजपूत जातियो, राजस्थान के विभिन्न राज्यो—विशेषतया मार-वाड—के इतिहास सबधी कई ख्यात-काव्य आदि, और भारत मे मुसलमानी राज्यो विषयक उर्दू-फारसी के छपे हुए अथवा हस्तलिखित ग्रथो के सग्रह द्वारा उसने अपने पास विविध प्रकार की विपुल ऐतिहासिक सामग्री एकत्र कर ली थी, जिसका कुछ परिचय उसने सन् 1905 ई० की जन्त्री मे दिया है। गौरीशकर हीराचद ओझा ने मुशी देवीप्रसाद के यहा के एक पुराने हस्त-लिखित गुटके तथा फुटकर सग्रह का विशेषरूपेण उल्लेख किया है, जिसमे वि० स० 1472

1 उक्त अग्रेजी रिपोर्ट के इस महत्त्वपूर्ण तीसरे भाग का बजरगलाल लोहिया कृत हिन्दी अनुवाद 'राजस्थान की जातिया' शीर्षक से स्वय अनुवादक ने मई, 1954 ई० मे कलकत्ता से प्रकाशित किया था।

अत 'राजस्थान का उज्ज्वल रत्न' मुशी देवीप्रसाद 'भारती का सपूत एवं सच्चा सेवक' भी माना गया।

मुशी देवीप्रसाद कृत 'शाहजहां-नामा'

'मुसलमान शासको के इतिहास (हिन्दी मे) बिल्कुल नही लिखे गये थे, एव मुशी देवीप्रसाद ने 'हिन्दुस्तान के नामी मुगल बादशाहो के इतिहास का सिलसिला अकबर बादशाह का सक्षिप्त इतिहास' लिख कर प्रारभ किया था। यो अपना 'अकबर-नामा' अर्थात् 'अकबर बादशाह की जीवनी' प्रकाशित कर देने के बाद मुशी देवीप्रसाद ने 'शाहजहां-नामा' अर्थात् 'शाहजहा की जीवनी' मे जहागीर बादशाह के मरने के बाद का वृत्तात लिखना प्रारभ किया और बुधवार, जून 9, 1658 ई० (17 रमजान) को औरगजेब द्वारा शाहजहा के कैद किये जाने तक के विवरण के साथ ही उसे भी समाप्त कर दिया। उससे पहले तथा बाद के शाहजहा के जीवन-वृत्त उसी के लिखे हुए 'जहागीर-नामा' और 'औरगजेब-नामा' मे सम्मिलित किये जाने के कारण उन्हें इस 'शाहजहा-नामा' मे भी दुहराना उचित नहीं समझा गया।

फारसी इतिहासकारो की तरह मुशी देवीप्रसाद ने भी शाहजहा के शासन-काल के दस-दस जुलूसी वर्षों के प्रत्येक दौर के इतिहास को लेकर अपने इस 'शाहजहा-नामा' को भी तीन भागो मे विभक्त किया। प्रथम भाग के प्रारभ मे उसने जहागीर की मृत्यु से लेकर शाहजहा के सिंहासनारूढ होने तक का वृत्तान्त जोड दिया। उसी प्रकार तीसरे भाग मे भी तीसरे दौर की समाप्ति के बाद के शाहजहा के सवा वर्षीय शासन-काल का इतिहास लिखकर उसने शाहजहा के शासनकाल के इतिहास को पूरा कर दिया। पुनः प्रत्येक भाग के अत मे परिशिष्ट के रूप मे कुछ उपयोगी बातें तथा सहायक सूचियाँ, आदि दे दी गई हैं। तीसरे भाग के अन्त मे 'शेष सग्रह' के अन्तर्गत शाहजहा के व्यक्तित्व, दैनिक जीवन और आचार-विचार आदि तथा तत्कालीन मुगल साम्राज्य, उसकी शासन-व्यवस्था, वगैरह सबधी विविध प्रकार की जानकारी से परिपूर्ण, जो फुटकर हाल मुशी देवीप्रसाद ने सविस्तार दिये हैं, वे आवश्यक और उपयोगी होने के साथ ही रोचक और तत्कालीन परिस्थितियो मे अतर्दृष्टि-दायक भी हैं।

मुशी देवीप्रसाद कृत 'शाहजहा-नामा' के ये तीन भाग क्रमश 1897 ई०, 1897 ई०, 1898 ई० मे प्रकाशित हुए थे। इन सब ही भागो में उसने समूचा ऐतिहासिक विवरण देवनागरी लिपि मे हिन्दी मे तथा उर्दू लिपि में उर्दू भाषा मे साथ-साथ छपवाया था। प्रत्येक पृष्ठ पर बाए अर्द्धांश मे हिन्दी पाठ दिया गया है और दाहिने अर्द्धांश मे उसी का उर्दू पाठ है। उर्दू पाठ मे

केवल मूल ग्रथ मे दिये गये हिजरी तारीख-माह-सन् और यदा-कदा इलाही तारीख-माह भी साथ मे दिये हैं। किन्तु हिन्दी पाठ मे केवल हिन्दी (विक्रमी) तिथि, महीने और वर्ष दिये हैं, जिन्हें मुशी देवीप्रसाद ने स्वय चण्डू पचाग से गणित करके अपने इन इतिहास-ग्रथो के लिए निकाले थे, और यो उसने कोई साढे तीन सौ वर्ष की अपनी इतिहास-सहायक जन्त्री बना ली थी, जिससे उसे बहुत सहायता मिली थी। सन् 1917 ई० मे मुशी देवीप्रसाद ने अपने उपर्युक्त 'शाहजहा-नामा' के पहिले भाग का दूसरा सस्करण प्रकाशित किया किन्तु इस सस्करण मे केवल हिन्दी पाठ ही दिया गया था। उसके प्रथम सस्करण के मूल हिन्दी पाठ मे एक उल्लेखनीय परिवर्तन यह किया गया कि सर्वत्र हिजरी तारीख, माह और सन का उल्लेख उसमे मुख्य रूप से कर दिया गया, और उनके मुताबिक निकाली गई हिन्दी तिथि, महीने और वर्ष उसके आगे कोष्ठक मे ही दिये गये हैं। विचार योग्य बात यह है कि केवल विभिन्न हिजरी सनो के प्रारम्भ और अन्त के दिनो के हिन्दी तिथि, माह और वर्ष के उल्लेखों के साथ ही उनके मुताबिक ईसवी तारीखें माह और सन् दिये गये हैं। अन्यत्र कही भी मुशी देवीप्रसाद ने ईसवी तारीखें आदि नही दी हैं।

अपने इस 'शाहजहा-नामा' के इस शीर्षक का स्पष्टीकरण करने हेतु उसका उप-शीर्षक दिया है 'मुगल सम्राट् शाहजहा बादशाह का जीवन चरित्र'। साथ ही आगे यह भी जोड दिया गया है कि उसने यह ग्रथ "बादशाह-नामे वगैरह की फारसी तवारीख की किताबो का सार लेकर हिन्दी में बनाया"। अपने इस 'शाहजहा-नामा' के आधार-ग्रथो का सुस्पष्ट उल्लेख करते हुए मुशी देवीप्रसाद ने स्वय लिखा है कि "पहिले दो भागों में तो मुल्ला अब्दुल हमीद के बनाए हुए 'बादशाह-नामो' की दोनो जिल्दो का साराश लिखा है, और इस तीसरे भाग मे मुल्ला जाहिद (ताहिर) के लिखे हुए पिछले दस वर्षों के हाल का खुलासा दर्ज किया है। और (इस तीसरे भाग मे) कहीं-कही खाफी खा की किताब से कुछ हाल ले लिया है।" अब्दुल हमीद तथा ताहिर कृत इन आधार-ग्रथो के सबध मे आवश्यक विस्तृत विवेचन आगे लिखा जा रहा है।

इन आधार-ग्रथो से किये गये सकलन के तरीके का 'शाहजहा-नामा' के पहिले भाग की भूमिका मे सक्षेप मे यही लिख दिया गया है "उसकी महत्त्व-पूर्ण आवश्यक बातो को लेकर(उन्हे इसमे)लिखा है।" परन्तु 'जहागीर-नामा' की भूमिका मे दिया गया इस सबधी यह स्पष्टीकरण यहा भी प्रसगानुकूल ही है। मुशी देवीप्रसाद ने लिखा है कि—"विस्तार-भय से हमने इसका अक्षर-अक्षर अनुवाद नही किया है। अधिक स्थानो मे साराश से काम लिया है,

और जहा अच्छा देखा है उसका पूरा आशय ले लिया है। तथा कही-कही (मूल) लेख का यथावत् अनुवाद भी किया है।" इसी सदर्भ मे मुशी देवीप्रसाद स्वीकार करता है कि इन दोनो ही आधार-ग्रथो में प्राप्य "हिन्दुओ के सबध की कोई भी बात नही छोडी है, बल्कि पूरी ले ली है" क्योकि "हिन्दू राजाओ और हिन्दू मनसबदारो के कामो का पूरा ब्योरा (प्रस्तुत करना भी) हमारे इस परिश्रम का मुख्य उद्देश्य है।"

जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है, अब्दुल हमीद लाहौरी ने उसके शासन काल के जुलूसी मनो की गणना शाहजहा के आदेशानुसार 1 जमादि-उस-सानी से ही की थी, और मुहम्मद ताहिर ने भी अपने ग्रथ मे इसी क्रम को अपनाया था। परन्तु मुशी देवीप्रसाद ने अपने 'शाहजहा-नामा' मे वर्षों की गणना हिजरी सनो के ही हिसाब से, अर्थात् 1 मुहर्रम से ही रखी थी। अत हिजरी माह आदि से अनभिज्ञ अधिकतर सशोधको को उसकी इस वर्ष-गणना का उक्त फारसी इतिहासकारो द्वारा प्रयुक्त जुलूसी सनो के साथ ताल-मेल बैठाने मे काफी असुविधा होती रही है।

मुशी देवीप्रसाद की भाषा सीधी-सादी, व्यावहारिक और शब्दाडम्बर-विहीन होती थी। उसकी शब्दावली मे हिन्दी के साथ ही उर्दू शब्दो का बहुतायत से सम्मिश्रण पाया जाता है, जिसके लिए उसने दो कारण दिये हैं, "एक तो, बादशाहो की तवारीख की भाषा मे हिन्दी और सस्कृत के शब्द ढूंढ कर प्रयोग करना विडम्बना से खाली नही है। दूसरे, अभी हिन्दुस्तान और खास करके राजपूताने के लोगो के समझ मे आने वाली यही खडी बोली है। इसलिए इस पुस्तक मे विशेष करके हिन्दी-उर्दू के वे ही शब्द रखे गये हैं जो रात-दिन बोले जाते हैं और दफ्तरो और कचहरियो मे भी लिखे-पढे जाते हैं। इनके सिवाय (कई) तवारीखी शब्द फारसी या अरबी भाषा के जरूरी समझे जाकर लिखने पडे हैं।" मुशी देवीप्रसाद की हिन्दी भाषा के वाक्य-विन्यास पर भी तत्कालीन उर्दू तथा फारसी मे वाक्य-गठन के तरीको का विशेष प्रभाव देख पडता है। भाषागत ये विचित्रताए देश-काल-जन्य होने के कारण ही मुशी देवीप्रसाद अन्त तक उनसे छुटकारा नहीं पा सका था। किन्तु अपने विषय के प्रतिपादन की उसकी शैली सादी और उसकी वाक्यावली सुलझी हुई होने के कारण ये विचित्रताए विशेष अखरती नही हैं, और उसे समझने में कोई विशेष कठिनाई भी नही होती है। पुन अपने विषय का एक-मात्र ग्रथ होने के कारण फारसी मे अनभिज्ञ और हिन्दी समझ सकने वाले तत्कालीन इतिहास के प्राय सब ही सशोधक अब तक मुशी देवीप्रसाद कृत इस 'शाहजहा-नामा' की प्रति सयत्न खोजकर यथासभव उसका पूरा-पूरा उपयोग कर उसके रचयिता के प्रति विशेष कृतज्ञता अनुभव करते रहे हैं।

3. अब्दुल हमीद लाहोरी और उसका 'पादशाह-नामा'

शाहजहा के सुविख्यात प्रमुख शासकीय इतिहासकार, अब्दुल हमीद लाहोरी, के व्यक्तिगत जीवन अथवा उसकी किसी अन्य कृति के बारे मे कही कुछ भी जानकारी प्राप्य नही है। परतु 'आमल-इ-सालेह' मे कम्बू ने लिखा है कि अब्दुल हमीद लाहोरी अबुल फजल का शिष्य था।[1] लाहोरी अबुल फजल के अद्वितीय शब्द-सौष्ठव, असाधारण पद-लालित्य और अनूठे वाक्य-विन्यास, आदि का अनन्य प्रशसक था, अत उसने उनका गहरा अध्ययन कर यथा-सभव उन्हें इतना अधिक अपना लिया था कि अपनी अनोखी सुन्दर लेखन-शैली के लिए तब वह स्वय भी विख्यात हो गया था। उसकी इसी प्रसिद्धि से प्रभावित होकर ही शाहजहा ने उसे उसके निवास-स्थान पटना (अथवा थट्टा)[2] से साग्रह आमन्त्रित कर 'पादशाह-नामा' लिखने का महत्त्वपूर्ण उत्तर-दायित्व उसे सौंपा था। तब अब्दुल हमीद लाहोरी ने दो जिल्दो मे अपना 'पादशाह-नामा' लिखा, जिसमें उसने शाहजहा के शासन-काल मे बीसवें जुलूसी सन् के अत तक का इतिहास सविस्तार लिख दिया था। लाहोरी के शिष्य मुहम्मद वारिस के अनुसार जब यह 'पादशाह-नामा' लिखा जा रहा था, तब वह स्वय लाहोरी के सहायक के रूप मे उसके साथ कार्य करता रहा था। पुन जब यह ग्रथ पूरा लिखा जा चुका, तब शाहजहा के विश्वस्त वजीर अल्लामा सादुल्ला खा ने उसको सशोधित ही नही किया, किंतु रही-सही भूलो को ठीक करवाने के लिए उसने यह ग्रथ पढ कर स्वय शाहजहा को भी सुनाया था।

अपनी वृद्धावस्था के कारण लाहोरी उससे आगे का इतिहास नही लिख पाया। 26 शव्वाल, सन 1064 हि० (=मगलवार, अगस्त 29, 1654 ई०) के दिन अब्दुल हमीद लाहोरी की मृत्यु हो गई।[3]

अब्दुल हमीद लाहोरी कृत 'पादशाह-नामा'

ईलियट आदि कुछ अन्य विद्वानो की ही तरह मुशी देवीप्रसाद ने भी अब्दुल हमीद लाहोरी के इस बृहत् इतिहास का शीर्षक 'बादशाह-नामा' लिखा है, परन्तु उसकी यह मान्यता ठीक नही है, क्योंकि स्वय शाहजहा ने इसका

---

1 कम्बू० 3, पृ० 438–9।

2 लाहोरी कृत 'पादशाह-नामा' की प्राय सब ही प्रतियो मे प्राप्य और सर्वमान्य पाठ 'पटना' ही है (पा० ना०, बिब० इण्डिका, 1-अ, पृ० 10, रीऊ० 1, पृ० 260; ईलियट० 7, पृ० 3), परतु खुदाबक्श०, ग्रथाक 565 मे प० 35 ब पर 'पटना' के स्थान पर पाठातर 'थत्ता' मिलता है केटेलाग० 7, पृ० 68।

3 वारिस० 1, प० 2, 2, पृ० 69।

शीर्षक 'पादशाह्-नामा' लिखा है,[1] एव वही सही और मान्य होना चाहिए ।

अपने 'पादशाह्-नामा' की पहिली जिल्द मे अब्दुल हमीद लाहोरी ने तमूर से लेकर जहांगीर तक के शाहजहा के पूर्व-पुरुषो का विवरण अति सक्षेप मे दिया है । तदनन्तर जहांगीर की मृत्यु से लेकर शाहजहा के सिंहासनारूढ होने तक की घटनाओ का सक्षिप्त वृत्तात दिया है । उसके बाद पहिले दस जुलूसी सनो के शासन-काल का क्रमबद्ध विस्तृत इतिहास है । इस ग्रथ की दूसरी जिल्द मे उसी प्रकार ग्यारहवें जुलूसी सन् के प्रारभ से लेकर बीसवें जुलूसी सन् के अत तक का इतिहास सविस्तार लिखा गया है । दोनो ही जिल्दो मे प्रत्येक के अन्त में शाहजादो की सूचिया तथा उक्त दौर के अत मे उनके मनसब आदि की जानकारी दी गई है । पुन उस दौर के अत तक के अमीरो, सरदारों तथा पाच सदी तक के सब ही मनसबदारो की सूचिया और प्रत्येक के अतिम मनसब के आकडे क्रमानुसार दिये गये हैं । उस दौर विशेष के शेखों, विद्वानो, हकीमो और कवियो के भी तब उसमे सक्षिप्त उल्लेख कर दिये गये हैं ।

अपने ग्रथ की प्रथम जिल्द लिखते समय अब्दुल हमीद लाहोरी ने मुहम्मद अमीन कजवीनी कृत 'पादशाह्-नामा' मे सगृहीत जानकारी का पूरा-पूरा उपयोग किया था । शाहजहा के शासन-काल के उन दस वर्षों की काल-गणना के दोनों के तरीके अवश्य ही भिन्न हैं, जिसका उल्लेख पहिले ही किया जा चुका है । पुन कजवीनी द्वारा वर्णित घटनाओ का वृत्तात भी लाहोरी ने अपने ही ढग से अपने ही शब्दो में लिखा है ।

मुगल साम्राज्य के वजीर द्वारा सशोधित तथा स्वय मुगल सम्राट् द्वारा अनुमोदित, लाहोरी कृत यह 'पादशाह्-नामा' शाहजहा के शासन-काल के प्रथम बीस जुलूसी सनों के शासकीय इतिहास के रूप मे बहुत ही महत्वपूर्ण, विशेष उपयोगी तथा मान्यता-प्राप्त प्रामाणिक कृति है । यही कारण था कि मुहम्मद सालेह् कम्बू आदि शाहजहा के शासन-काल के प्राय सब ही पश्चात्-कालीन इतिहासकारो के इतिहास-ग्रथो में इन बीस वर्षों के विवरण मूलतः लाहोरी के इसी 'पादशाह्-नामा' पर आधारित हैं ।

उसकी लेखन-शैली के सबध मे यह कहना अप्रासगिक नही होगा कि कल्पनात्मक विवरणों, अनुप्रेरक घटनाओ, भावोत्तेजक विषयो तथा विचारोत्पादक विवेचनो के सदर्भ मे लिखते समय लाहोरी अपने पूज्य आदर्श अबुल फजल की लेखन-शैली का अनुकरण करते हुए आडम्बर पूर्ण आलकारिक शब्दावली,

---

1 ईलियट० 7, पृ० 3–5 । एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ता, का सग्रह, प्रथाक डी-33, पृ० 1v, पर शाहजहां का हस्तलेख और हस्ताक्षर , व्लाडोमीर इवानो, डिस्क्रिप्टिव केटेलाग आफ पर्शियन मेनुस्क्रिप्ट्स, क्रमाक 194, पृ० 46, जरनल एशियाटिक सोसाइटी आफ बगाल, 1870, खड 39–अक 1, पृ० 272 । स्टोरी० 1–1, पृ० 575 पा० टि० ।

अतिशयोक्तिमय वर्णनो और विस्तार-वर्षक उलझे हुए वाक्य-विन्यासो का भरसक प्रयोग करता है, जिससे 'पादशाह-नामा' के कई एक वृत्त प्राय बनावटी, ऊबा देने वाले और नीरस पाण्डित्य-प्रदर्शन अथवा शाही दरबार के खुशामदी मुसाहिब की दिखावटी अनुचित चाटुकारिता मात्र प्रतीत होते हैं। सतोप की बात यही है कि अधिकतर सामान्य घटनाओ का उल्लेख लाहोरी ने सीधी-सादी भाषा मे ही किया है और वहां आलकारिकता के ऐसे उद्रेक बहुत ही कम तथा सीमित मात्रा मे ही मिलते हैं।

पुन. अपने इस बृहत् इतिहास मे लाहोरी ने शाही दरबार की घटनाओ तथा अमीरो, शाही अधिकारियो अथवा राज-दरबारियो विषयक विभिन्न प्रकार की शाही आज्ञाओ, आदि का बहुत अधिक समावेश कर दिया है, जो सर्वसाधारण अथवा इतिहास के सशोधक के लिए बहुत उपयोगी नही हैं। उन से विभिन्न व्यक्तियो अथवा विशिष्ट घरानों के इतिवृत्तो की अवश्य ही विशेष जानकारी मिलती है। परतु साथ ही लाहोरी ने इस 'पादशाह-नामा' मे विविध प्रकार की बहुत सी ऐसी उपयोगी ऐतिहासिक जानकारी सकलित कर दी है, जिससे तत्कालीन शासन, समाज और जीवन के विभिन्न पहलुओ पर पर्याप्त प्रकाश पडता है।

"बादशाह (शाहजहा) की देख-भाल मे बादशाही दफ्तर के वाकयो (समाचारो) से लिखा गया" अब्दुल हमीद लाहोरी का यह 'पादशाह-नामा' ही तद्विपयक सारे इतिहास-ग्रथो में सबसे महत्त्वपूर्ण और विशेष प्रामाणिक माना जाता रहा है। पुन. उसकी दोनों जिल्दों को एशियाटिक सोसाइटी आफ बगाल, कलकत्ता, ने अपनी 'बिबलोथिका इण्डिका' ग्रथमाला मे क्रमश सन् 1866–1872 ई० में प्रकाशित कर दिया था, जिससे वह सर्वसाधारण के लिए सुलभ हो गया था। अतएव अपने 'शाहजहा-नामा' के पहिले दो भागो मे मुशी देवीप्रसाद ने अब्दुल हमीद लाहोरी के ही इस 'पादशाह-नामा' की सारी "महत्त्वपूर्ण आवश्यक बातो को लेकर" उन्हें ही सकलित कर दिया है। पुन. 'पादशाह-नामा' के दोनो भागो के अंत मे दी गई शाहजहा के शासन-काल के दोनो दौरो के शाही मनसबदारो की सूचियो मे से केवल हिन्दू मनसबदारो की सूचिया सकलित कर वे उसके दूसरे भाग के अन्त में दे दी हैं। मुशी देवीप्रसाद ने सारी उपयोगी मुख्य बातें यथासभव सीधी-सादी भाषा में लिख दी हैं, जिससे वे ऐतिहासिक शोध करने वालो के साथ ही साधारण जिज्ञासु पाठको के लिए भी यो सुलभ हो गई है।

4 मुहम्मद ताहिर 'आशना' इनायत खां और उसका 'मुलख्खस' 'शाहजहां-नामा'

अब्दुल हमीद लाहोरी कृत 'पादशाह-नामा' शाहजहा के शासन-काल के दूसरे दौर के अत के साथ ही समाप्त हो जाता है। एव शाहजहा के शासन-काल के बाकी रहे वर्षों के प्रामाणिक विवरण के लिए मुशी देवीप्रसाद को तत्कालीन इतिहास विषयक किसी अन्य उपयुक्त प्रामाणिक इतिहास-ग्रथ की खोज करनी पडी। सभवत मुहम्मद वारिस कृत उस काल के शासकीय इतिहास-ग्रथ 'पादशाह-नामा' की प्रति उसे सुलभ नही हो पाई होगी। पुन उसमे 'अपनी तौर के शब्दाडबर और मुशी-गिरी के प्रदर्शन' के कारण ही मुशी देवीप्रसाद ने मुहम्मद सालेह कृत 'आमल-इ-सालेह' को तदर्थ उपयुक्त नही समझा होगा। उधर उसे मुहम्मद ताहिर[1] कृत 'मुलख्खस' अर्थात् 'शाहजहा-नामा' की हस्तलिखित प्रति आसानी से सुलभ हो गई थी तथा उसकी लेखन-शैली सुगम और सुस्पष्ट थी, एव मुशी देवीप्रसाद ने शाहजहा के शासन-काल के तीसरे दौर के इतिहास के लिए इसी ग्रथ को अपना मुख्य आधार बनाया।

मुहम्मद ताहिर, जफर खा ख्वाजा अहसनुल्ला का पुत्र और ख्वाजा अबुल हसन तुरबती[2] का पौत्र था। कहा जाता है कि शाहजहा के सिहासनारूढ होने के लगभग उसका जन्म हुआ और कोई सात वर्ष की आयु में ही उसे उपयुक्त मनसब मिल गया था। अपने पिता की ही तरह मुहम्मद ताहिर भी कवि था। उसका उपनाम 'आशना' था। सन् 1649–50 ई० में उसे 'इनायत खा' की उपाधि मिली। वह कई बरसो तक शाही दरबार मे दारोगा-इ-हुजूर के पद पर कार्य करता रहा, जिस पद पर विश्वसनीय व्यक्ति ही नियुक्त किये जाते थे।

---

1 अपने 'शाहजहा-नामा' के तीसरे भाग में मुशी देवीप्रसाद ने यत्र तत्र उसके मुख्य आधार-ग्रथ के रचयिता का नाम 'मुल्ला जाहिद' दिया है, जो ठीक नही है। 'मनसबदारों की अतिम सूची' देते समय अवश्य 'मुल्ला ताहिर' का नाम दिया है। पुन इसी तीसरे भाग के अत में लिखे गये 'खातिमा' की पाद-टिप्पणी मे उसके आधार-ग्रथ के रचना-काल के जो सन्-सवत् दिये हैं, उनसे भी इसी बात की पुष्टि होती है कि इस मुख्य आधार-ग्रथ के रचयिता का सही नाम 'मुहम्मद ताहिर' ही था, 'मुल्ला जाहिद' नहीं। मुल्ला जाहिद कृत 'शाहजहा-नामा' की रचना सन् 1225 हि० (1810 ई०) में हुई थी, तथा उसमे लाहोरी कृत 'पादशाह-नामा' का ही साराश प्रस्तुत किया गया है, ब्रिटिश म्यूजियम, ग्र थाक—ओरियण्टल 2052, पृ० 204–205 (रीऊ० पृ० 1048 ब–IX), ईलियट० 7, पृ० 132 टिप्पणी–न० 1।

2 जफरखा ख्वाजा अहसनुल्ला की जीवनी—मासिर-उल्-उमरा (हिन्दी), 3, पृ० 650–255।

3 ख्वाजा अबुल हसन तुरबती की जीवनी—मा० उ० (हिन्दी), 2, पृ० 90–92।

शाहजहा के तीसरे दौर के अंत में इनायत खा का मनसब डेढ हजारी जात—दो सौ सवार का था। तदनन्तर रबी-उल्-अव्वल, 1068 हि० (नवम्बर-दिसम्बर, 1657 ई०) मे उसे दारोगा-इ-कुतुबखाना (शाही पुस्तकालय का दारोगा) नियुक्त किया गया। वह इस पद पर कोई पाच वर्ष तक रहा। परतु उसके पिता की तरह मुहम्मद ताहिर के स्वभाव मे भी दुनियादारी नही थी, अत सन् 1663 ई० के प्रारभ मे यह पद त्याग कर एकातवास के लिए वह काश्मीर चला गया। तब 17 जीकाद, 1073 हि० (रविवार, जून 14, 1663 ई०) को औरगजेब ने रु० 24 000) की वार्षिक वृत्ति उसके लिए नियत कर दी। परतु मुहम्मद ताहिर उससे बहुत समय तक लाभान्वित नही हो सका था, क्योकि सन् 1077 हि० (1666–67 ई०) में काश्मीर मे ही उसका देहात हो गया।[1]

मुहम्मद ताहिर फारसी गद्य-पद्य लिखने मे निष्णात ही नही था, परतु वह बडा साहित्य-मर्मज्ञ भी था। अत जब वह शाही पुस्तकालय का दारोगा नियुक्त किया गया, तब उसने वहा अब्दुल हमीद लाहोरी, मुहम्मद अमीन कजवीनी और मुहम्मद वारिस द्वारा लिखे गये तीन विभिन्न इतिहास-ग्रथ देखे, जिन सबमे मिला कर शाहजहा के शासन-काल के तीन दौरो (तीसवें जुलूसी सन् के अन्त तक) का विस्तृत इतिहास है। उन सब ही ग्रथो की लेखन-शैली दुरूह और विस्तारी होने के कारण वह मुहम्मद ताहिर को साधारण पाठक के लिए अनुपयुक्त जान पडी। अतएव उसने स्वय सीधी-सादी और सुस्पष्ट शैली मे शाहजहा के शासन-काल का इतिहास लिख कर उसमे अब्दुल हमीद लाहोरी आदि इतिहासकारो के विवरणो को सक्षेप मे प्रस्तुत करने का निश्चय किया, तथा तब सन् 1658 ई० मे उसने अपना 'मुलख्खस' (सक्षिप्त) 'शाहजहा-नामा' लिख कर तैयार किया।

अपने इस ग्रथ म मुहम्मद ताहिर ने जुलूसी सन् 1 से 3 तथा 11 से 20 तक का विवरण अब्दुल हमीद लाहोरी के 'पादशाह-नामा' से लिया। जुलूसी सन् 4 से 10 तक का विवरण मुहम्मद अमीन कजवीनी कृत 'पादशाह-नामा' से ही लिया गया है। अन वारिस के इस ग्रथ की ही तरह मुहम्मद ताहिर कृत 'मुलख्खस' भी शुक्रवार मार्च 6, 1656 ई० के दिन जमादि-उल्-अव्वल, 1067 हि० तथा शाहजहा के तीसवें जुलूसी सन् के अत के साथ ही समाप्त हो जाता है। तदनन्तर मुहम्मद ताहिर ने हिन्दुस्तान के सूबो की सक्षिप्त जानकारी तथा शाहजादो और शाहजहा के शासन-काल के मनसबदारो की सूचिया दी हैं। अत मे उसकी स्वरचित काव्य-रचनाओं का सकलन भी है।

---

1 मा० उ० (हिन्दी), 3, पृ० 254–255, वारिस० 2, पृ० 205, आलमगीर-नामा, पृ० 832, ईलियट० 7, पृ० 73–74, रीऊ० 1, पृ० 261–ब, 3, पृ० 1083–ब।

ससार के विशिष्ट हस्तलिखित फारसी-ग्रथ-सग्रहों मे सुरक्षित ताहिर कृत इस इतिहास-ग्रथ की प्राय सब ही प्रतियो मे ऊपर लिखे अनुसार शाहजहा के तीसवें जुलूसी सन् के अत तक का ही विवरण है। परतु ईलियट की सुलभ प्रति में सन् 1658 ई० मे औरगजेब के मुगल सम्राट् घोषित होने से पहिले तक का ऐतिहासिक विवरण होने का उल्लेख मिलता है।[1] स्पष्टतया शाहजहा के 31 वें जुलूसी सन् के प्रारभ के बाद का यह सारा विवरण स्वय मुहम्मद ताहिर का लिखा हुआ नहीं है, वरन् शाहजहा के शासन-काल के इतिहास को पूरा करने के लिए ही बाद मे उसमें जोड दिया गया होगा। सभव है इसी प्रकार की अत में परिवर्तित 'मुलख्खस' की प्रति मुंशी देवीप्रसाद को प्राप्त हुई हो, जिसके आधार पर ही उसने अपने 'शाहजहा-नामा' मे इस अतिम सवा वर्ष का विवरण लिखा होगा, क्योकि उसके आधार-ग्रथ के रूप में मुशी देवीप्रसाद ने किसी अन्य इतिहास-ग्रथ का उल्लेख नही किया है।

ईलियट के सग्रह की उक्त प्रति मे प्राप्य शाहजहां के तीसरे जुलूसी सन् से ले कर औरगजेब के राज्यारूढ होने तक के सारे विवरण का मेजर ए० आर० फुलर ने अग्रेजी मे अनुवाद किया था, जो ब्रिटिश म्यूजियम के ग्रथाक एडीशनल 30,777 मे सुरक्षित है। यह अनुवाद कुल 572 पत्रो मे पूरा हुआ है।[2] इस अग्रेजी अनुवाद को परिपूर्ण कर उसका सशोधित सुसपादित सस्करण शीघ्र ही प्रकाशित किया जाना चाहिए कि फारसी से अनभिज्ञ सशोधक अथवा विद्वान् उससे पूरा लाभ उठा सकें।

शासकीय इतिहास-ग्रथो के आधार पर लिखा गया होने के कारण 'मुलख्खस' मे दिया गया शाहजहा के शासन-काल के तीस वर्षों का विवरण प्रामाणिक तो अवश्य ही है, परतु अपने इस सक्षिप्त 'शाहजहा-नामा' के सकलनार्थ विभिन्न घटनाओ अथवा विविध जानकारी का चयन करने मे मुहम्मद ताहिर ने अपना विशिष्ट निजी दृष्टिकोण अपनाया था, जिससे उसमे ऐसे अनेको वृत्तो का समावेश नहीं हो सका, जिन्हे जान कर अपने 'शाहजहा-नामा' मे समाविष्ट करने को मुशी देवीप्रसाद स्वय विशेष समुत्सुक था।

---

1 केटेलाग० बुहार लायब्रेरी, 1, क्र० 70, पृ० 51, रीऊ० 1, क्रमाक ओरियण्टल 175, ईथे, केटेलाग० इण्डिया आफिस० 1, क्रमाक 331, पृ० 126–127, खुदाबख्श० केटेलाग० 7, क्रमाक 568, पृ० 76–78, स्टोरी० 1–1, पृ० 577–578, ईलियट० 7, पृ० 74–75।

2 रीऊ० 3, पृ० 1083-ब, ईलियट० 7, पृ० 75।

5 हिजरी तथा इलाही सनो के तारीख-महीनो के सही ईसवी वार, तारीख-महीने निकालने की विधि

हिजरी सन्

हिजरी सन् का प्रारभ इस्लाम धर्म के प्रवर्तक पैगम्बर मुहम्मद साहिब के मक्का से मदीने की 'सफर' से पूर्व के महीने की पहिली तारीख (अर्थात् तदनुसार जुलाई 16, 622 ई०) सध्या से माना जाता है। इस सन् का वर्ष विशुद्ध चांद्र वर्ष है, और इसके प्रत्येक मास का प्रारभ चद्र-दर्शन से होता है और दूसरे चद्र-दर्शन तक एक माम माना जाता है। प्रत्येक तारीख सायकाल से प्रारभ होकर दूसरे दिन के सायकाल तक मानी जाती है। इस सन् का प्रारभ मुहर्रम मास से होता है और जिल्हिज इसका अतिम बारहवा महीना है। हिजरी सन् का चाद्र वर्ष सौर वर्ष से 10 दिन, 53 घडी, 30 पल और 6 विपल (अर्थात् 10 दिन, 21 घण्टे, 1 मिनट और 12 सेकेण्ड) के लगभग कम होता है, जिससे ईसवी सन् अथवा विक्रमी सन् के साथ उसका कोई निश्चित अतर नही रहता है और उसका निश्चय गणित से ही हो सकता है।[1] अत हिजरी सन्, माह आदि सबधी कुछ मूल तथ्यो को सक्षेप मे जान लेना अनिवार्य हो जाता है।

चाद्र वर्ष 354 दिन, 8 घण्टे और 48 मिनट का होता है, जिसे बारह महीनो मे विभक्त करने पर प्रत्येक चाद्र माह का औसत काल 29 दिन, 12 घण्टे, 44 मिनट और लगभग 3 सैकण्ड आता है। इन लगभग तीन सैकण्डो की उपेक्षा कर बाकी रहे औसत काल को ही ध्यान मे रखकर हिजरी जंत्री को व्यवस्थित किया गया। प्रत्येक वर्ष के प्रथम महीने के 30 और दूसरे के 29 दिन रखे गये और इसी क्रमानुसार आगे के महीनों के भी एकांतर से 30–29 दिन निश्चित किये गये। परतु तब भी चांद्र माह के औसत काल मे से बाकी रहे 44 मिनटो को भी समुचितरूपेण समाविष्ट करने के लिए अत्यावश्यक 'नसी' (अतिरिक्त) दिन का प्रावधान करने का सुझाव प्रारम्भ मे अमान्य किये जाने पर भी सर्वथा निरस्त नही किया जा सका, क्योकि तब उससे 30 वर्षों मे पूरे 11 दिनो की कमी के कारण सारी काल-गणना चान्द्र माह के वास्तविक क्रम से पूर्णतया असम्बद्ध हो जाती। अतएव प्रत्येक तीस हिजरी वर्षों के काल को एक आवर्तक चक्र के रूप मे मान्य करके उसमे

---

1 ओझा, प्राचीन लिपिमाला, पृ० 190–191, इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका, 14 वा सस्करण, 4, पृ० 569, 583, 5 पृ० 663।

प्रत्येक दूसरे या तीसरे वर्ष के अंतिम माह जिल्हिज मे एक दिन और बढ़ा देने की व्यवस्था की गई।[1]

यो तीस वर्ष के निर्धारित आवर्तक चक्र के अत मे अवश्य ही काल-गणना मे कही कोई यत्किचित् कमी नही रह जाती है। निर्धारित नियमानुसार अतिरिक्त दिन को जोड कर प्रत्येक वर्षांत के समय में निरतर बढती हुई इस कमी को यथासभव लगभग आधे दिन से अधिक न बढने देने का यों भरसक आयोजन किया गया है। परतु इन नियमों के अनुसार बनाई गई हिजरी सन्, माह और तारीखों की जन्त्री चन्द्र की वास्तविक गति अथवा स्थिति से बहुत कुछ असम्बद्ध ही होती है।

उधर चन्द्र की गति सदैव घटती-बढती रहती है, जिससे चान्द्र मासो के वास्तविक काल औसत चाद मास-काल से 14 घटे अधिक से लेकर 14 घटे कम तक के हो सकते हैं। पुन. प्रत्येक पिछले हिजरी माह का अत तथा नये हिजरी माह का प्रारभ अनिवार्यरूपेण एकमात्र नव चद्र-दर्शन से ही निर्धारित होता है और उसी के अनुसार प्रत्येक माह की वास्तविक तारीखो की गणना होती है।[2] नव-चद्र दर्शन से तब निर्धारित इन्ही वास्तविक तारीखो का प्रयोग तत्कालीन कागज-पत्रो अथवा इतिहास-लेखनो मे मिलता है। चान्द्र माह के वास्तविक काल की उपर्युक्त घटती-बढती के कारण ही इतिहासादि मे प्रयुक्त ये वास्तविक हिजरी तारीखें यदा-कदा जन्त्रियों में दी गई हिजरी तारीखो से एक-दो दिन आगे-पीछे हो जाती हैं। अपने सुविख्यात तथा अतीव उपयोगी ग्रथ 'इडियन एफीमेरीज' मे अग्रेजी तारीखो, हिन्दी तिथियो आदि के साथ हिजरी तारीखें देते हुए स्वामी कन्नू पिल्लई ने ऊपर दिये गये निश्चित नियमानुसार बनाई गई हिजरी सनो की अन्य सर्वसाधारण जन्त्रियो को ही यथावत् दुहरा दिया है, जिससे कई एक महीनो की उसमे दी गई हिजरी तारीखें नव चन्द्र-दर्शन से सर्वथा असम्बद्ध ही रही हैं, और यो वे सब उन महीनो की वास्तविक तारीखो तथा उन तारीखो के वास्तविक ग्रेवारो से अनिवार्यरूपेण एक-दो दिन आगे-पीछे हो गये हैं।

हिजरी तारीखों के मुताबिक अग्रेजी तारीखें निकालने या उन्हें निर्धारित करने के लिए सब इतिहासकार अथवा सशोधक अन्य हिजरी जन्त्रियो की ही तरह उक्त 'इंडियन एफीमेरीज' का भी उपयोग करते हैं, तब वे प्राय न तो आवश्यक सावधानी बरतते हैं, और न समुचित सूझ-बूझ से काम लेते हैं,

---

1 ब्रिटानिका० 5, पृ० 663, पिल्लई, इण्डियन एफीमेरीज, 1-1, पृ० 69-70, मार्टिन० म० अनुवाद, द्वितीय सस्करण, 2, पृ० 27-28।

2. पिल्लई० 1-1, पृ० 23, 3, 80।

जिससे नव-चन्द्र-दर्शन से यो असम्बद्ध हिजरी तारीखो के मुताबिक उनकी निर्धारित अंग्रेजी तारीखें तथा उनके वार यदा-कदा सही नही होते हैं। पुन फारसी इतिहास-ग्रथो मे कई वार हिजरी तारीख के साथ वार भी दिया रहता है, परन्तु प्राय जाने या अनजाने उम वार की भी उपेक्षा की जाती है। इसके दो-एक उदाहरण पर्याप्त होगे। अपनी आत्मकथा मे बावर ने स्वय लिखा है कि खानवा का निर्णायक युद्ध शनिवार, 13 जमादि-उस-सानी को लडा गया था। परन्तु उसके प्रामाणिक अनुवाद मे ए० एस० वेवरिज ने उसकी अंग्रेजी तारीख मार्च 17, 1527 ई० दी है,[1] जिस दिन रविवार था। उस युद्ध की सही अंग्रेजी तारीख, शनिवार मार्च 16, 1527 ई० है। इसी प्रकार शाहजहा के शासन-काल के अंतिम महीनो मे हुए उत्तराधिकार संघर्ष के विशेष महत्त्वपूर्ण धरमाट युद्ध की हिजरी तारीख प्राय. केवल 22 रजब, 106॰ हिजरी मिलती है, जिस पर से आचार्य यदुनाथ सरकार ने उम युद्ध की अंग्रेजी तारीख अप्रैल 15, 1658 निर्धारित की थी। उस समय उनके ध्यान मे यह बात नही आई कि अप्रैल 15, 1658 ई० के दिन 'गुरुवार' था, किन्तु आलमगीर-नामा' आदि कुछ समकालीन आधार-ग्रन्थो के अनुसार यह युद्ध 'शुक्रवार' के दिन हुआ था। कालातर मे इस बात की ओर ध्यान दिलाने पर उन्होंने स्वय मान्य किया था कि 'पुनर्विचार के बाद मैं सहमत हू कि महीने की तारीख की अपेक्षा सप्ताह के दिन का उल्लेख करने में भूल की संभावना कम ही थी। एव ईसवी तारीख अप्रैल 15 नही होकर अप्रैल 16 ही होनी चाहिए।'[2]

प्राय यह कहा जाता है कि किसी घटना विशेष की हिजरी तारीखों से यो निर्धारित अंग्रेजी तारीखो में यदि एक-दो दिन की भूल रह जाये तो उससे इतिहास-क्रम आदि पर कोई दुष्प्रभाव नही पड़ता है। कई अशो में यह बात सही हो सकती है, परन्तु इससे शोधकीय अनुशासन-विद्या मे प्रशिक्षित किसी भी गभीर सशोधक की कदापि आत्मतुष्टि नही हो सकती है, और वह इस बात के लिए व्यग्र हो उठता है कि इस दो-एक दिन की भूल को भी यथा-संभव दूर कर दिया जाये। ऐसे ही अध्यवसायी गहन सशोधको की सहाय-तार्थ तत्सबंधी कुछ उपयोगी सुझाव प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

ऊपर दिये गये सारे विवेचन से यह बात स्पष्ट हो गई है कि किसी भी हिजरी तारीख के सही वार, अंग्रेजी तारीख आदि को निकालने के लिए यह

1 वेवरिज, दी बावर-नामा इन इग्लिश, 2, पृ० 558।

2 सरकार, हिस्ट्री आफ औरगजेब, 1-2, पृ० 348, वचनिका राठौड रतनसिंघजी री महेसदासोत री खिडिया जगारी कही, सपादक काशीराम शर्मा और रघुवीरसिंह, भूमिका, पृ० 78-81।

सर्वथा अनिवार्य है कि सब से पहिले यह निर्धारित किया जाये कि उस तारीख के माह विशेष को प्रारम्भ करने वाला नव चन्द्र-दर्शन किस सध्या को हुआ था। इसके लिए 'इडियन एफीमेरीज' मे दी गई हिन्दी तिथियो की तालिकाए बहुत ही सहायक और विशेष उपयोगी हैं। उनमें प्रत्येक अग्रेजी वार और तारीख के साथ ही उस दिन की हिन्दी तिथि तथा उस तिथि विशेष की समाप्ति का उस दिन का आधी घडी तक का सही समय दशमलव के दो स्थानो तक की गणना के अको द्वारा दे दिया गया है।

नव चन्द्र-दर्शन किस सध्या को होगा या हो सकता है यह निर्धारित करने का जो नियम राबर्ट स्युएल और शकर बालकृष्ण दीक्षित ने 'इडियन केलेण्डर' मे दिया है। वह इस प्रकार है—"(हिन्दी) माह (के शुक्ल पक्ष) की प्रतिपदा तिथि सूर्यास्त से 5 घडी या उससे पहिले ही समाप्त हो जाती है, तो उसी दिन सध्या को बहुत करके चन्द्र-दर्शन हो जायेगा। परन्तु यदि (उक्त) प्रतिपदा तिथि सूर्यास्त से 5 घडी या अधिक समय बाद समाप्त होती है, तो चन्द्र-दर्शन बहुत करके अगले दिन सध्या समय ही हो सकेगा। जब प्रतिपदा सूर्यास्त से 5 घडी पहिले से लेकर 5 घडी बाद के काल मे समाप्त होती है, तो उस दिन चन्द्र-दर्शन के (सभावित) काल को निकालने के लिए बहुत लम्बा श्रम-सिद्ध गणित करना होगा।' पिल्लई के कथनानुसार अपितु यह मानना ही होगा कि विभिन्न अक्षाशो और देशातरो पर स्थित स्थानो मे सूर्यास्त तथा नव चन्द्र-दर्शन के स्थानीय समय की विभिन्नताओ के कारण भी सुदूर स्थानो मे यदा-कदा एक ही दिन नव चन्द्र-दर्शन की सभावनाए भी कम ही होती हैं।[1]

ऊपर अनुवादित उद्धरण तथा पिल्लई के तत्सम्बन्धी कथन आदि पर विचार करने के बाद यह बात स्पष्ट हो जाती है कि सूर्यास्त के पूर्व तथा बाद की पाच-पाच घडियो, अर्थात् कुल दस घडियो (दशमलवो मे 1667) के सदिग्धावस्थापूर्ण काल को छोड दें, तथा देश-काल के कारण होने वाली साधारण घटा-बढी को ध्यान मे रखते हुए इस सदिग्धावस्थापूर्ण काल के सभावित प्रारम्भ तथा अत की सीमाए मोटे तौर पर निश्चित करनी होगी। तदर्थ उज्जैन के देशातर और 'लका' के अक्षाश के केन्द्रीय समय की सारिणी मे विभिन्न ऋतुओ मे सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक के घटते-बढते दिनमान को ही स्थूलत लेना होगा, क्योंकि 'इडियन ऐफीमेरीज' मे दिनमान की गणना सूर्योदय से ही दी गई है। अतएव नव चन्द्र-दर्शन के इस सभावित सदिग्ध काल की प्रारम्भिक तथा अन्तिम सीमाओ सबधी कोई स्थूल विधि

1 पिल्लई० 1-1, पृ० 70।

कर सकने के लिए वर्ष मे न्यूनतम तथा अधिकतम दिनमान के साथ ही दोनो विपुव दिनो की भी ऐसी सभावित दोनो सीमाओ का निर्धारण आवश्यक हो जाता है।

दिसम्बर माह के अतिम 10-12 दिनों में दिनमान घट कर केवल 10 घण्टे और 41 मिनट (दशमलव में 45) का रह जाता है। तब इस सभावित सदिग्ध काल की प्रारम्भिक सीमा ·37 और अतिम सीमा 53 के लगभग आती है। प्रत्येक सितम्बर और मार्च महीने मे उनके मध्य के लगभग पडने वाले दोनो विपुव (एक्वीनाक्स) दिनो का दिनमान 12 घटे (दशमलव मे 50) के लगभग का हो जाता है। तब उक्त सदिग्ध-काल की प्रारभिक सीमा 42 और अंतिम सीमा 58 रह जाती है। जून के तीसरे सप्ताहात के लगभग अधिकतम दिनमान 13 घण्टे और 35 मिनट (दशमलव में 57) के लगभग हो जाता है। तब उक्त सदिग्ध काल की प्रारम्भिक सीमा 49 और अतिम सीमा 65 निश्चित की जा सकती है। इस सारी सदिग्ध कालावधि सम्बन्धी गणना के आधार नीचे लिखे कुछ नियम स्थूलत प्रस्तुत किये जाते हैं।

(1) समूचे वर्ष में जब भी शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा सूर्योदय से 37 (अर्थात 22 घडी और 12 पल अथवा 8 घटे और 53 मिनट) के लगभग बाद या उससे कब भी पहिले ही समाप्त हो जाती हैं तो उस दिन सध्या को अवश्य ही नव चन्द्र-दर्शन हो जावेगा, और उसी सध्या से नया हिजरी महीना अनिवार्यरूपेण प्रारभ हो जावेगा। समकालीन इतिहास-ग्रथो मे दी गई ऐसी अनेकानेक हिजरी तारीखें और उनके वारो आदि को 'इडियन एफीमेरीज' मे दिये गये उनके तत्सबधी दिनमानो को देखने के बाद भी इस नियम विशेष को यत्किचित् भी त्रुटिपूर्ण अथवा भ्रामक प्रमाणित कर सकने वाला कोई भी उदाहरण देखने को नही मिला।

इस सदर्भ में गहरी छान-बीन करते समय एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक परतु विचारणीय हिजरी तारीख अवश्य ही सामने आई, जिसका समुचित विवेचन आवश्यक जान पडता है, वह है जहागीर की जन्म तारीख, जो स्वयं जहागीर के लिखे अनुसार बुधवार, 17 रबी-उल्-अव्वल, सन् 977 हि॰ थी।[1] 'इडियन एफीमेरीज' के अनुसार उक्त 17 रबी-उल्-अव्वल को मगलवार, अगस्त 30, 1569 ई॰ था, तथा बुधवार के दिन तारीख 18 रबी-उल्-अव्वल लिखी है। अत स्वाभाविकरूपेण यह प्रश्न स्वत उठता है कि क्या 'इडियन एफीमेरीज' मे दी गई रबी-उल्-अव्वल की पहिली तारीख तदर्थ अत्यावश्यक नव चन्द्र-दर्शन से असम्बद्ध होने के कारण उसमे एक दिन का यह भ्रामक

1 जहागीर॰ पृ॰ 5, तुजुक॰ 1, पृ॰ 2।

अंतर आ गया है अथवा अपने जन्म-दिन का वार या हिजरी तारीख लिखने मे स्वयं जहांगीर ने ही भूल की है। 'इंडियन एफीमेरीज' के अनुसार भाद्रपद शुक्ला 1, शनिवार, अगस्त 13, 1569 ई० को सूर्योदय के बाद .36 (21 घडी, 36 पल अर्थात् 8 घंटे, 39 मिनट) को समाप्त हो गई थी, जिससे उसी दिन सध्या समय नव चन्द्र-दर्शन हो जाने के कारण तब तत्काल ही हिजरी तारीख 1 रबी-उल्-अव्वल, रविवार, प्रारंभ हो गई थी। अल् बदायूनी कृत 'मुन्तखब-उत्-तवारीख' के अंग्रेजी अनुवाद, भाग 2 की भूमिका (पृष्ठ x-xi) मे दी गई काल-सारिणी के अनुसार भी रबी-उल्-अव्वल, 977 हि० की पहिली तारीख रविवार (अगस्त 14, 1569 ई०) को ही थी। यों इन सब ही गणनाओं के अनुसार बुधवार (अगस्त 31, 1569 ई०) को हिजरी तारीख 18 रबी-उल्-अव्वल ही पडती है। अबुल फजल ने 'अकबर-नामा' मे जहांगीर के जन्म-दिन की हिजरी तारीख नही दी है, परन्तु उसके अनुसार उस दिन इलाही तारीख 18 शहरेवार (अर्थात् बुधवार, अगस्त 31, 1569 ई०) थी।[1] पुनः निजामुद्दीन कृत 'तबकात-इ-अकबरी' की जिस प्रति के अनुवादित महत्त्व-पूर्ण अंश ईलियट और डासन कृत 'हिस्ट्री आफ इण्डिया' मे सम्मिलित किये गये हैं, उसमे भी जहांगीर की जन्म-तारीख बुधवार, 18 रबी-उल्-अव्वल दी है।[2] इस सारे विवेचन से यही बात निश्चितरूपेण स्पष्ट हो जाती है कि अपने जन्म-दिन की रबी-उल-अव्वल की तारीख लिखने मे जहांगीर ने ही भूल की थी और निजामुद्दीन के लिखे अनुसार उस दिन वस्तुतः बुधवार, 18 रबी-उल्-अव्वल ही था।

(2) प्रत्येक मार्च और सितम्बर महीने में पडने वाले विषुव दिन नव चन्द्र-दर्शन के संभावित संदिग्ध-काल की ऊपरी सीमा बढ़ कर सूर्योदय से .42 (अर्थात् 25 घडी और 12 पल अथवा 10 घंटे और 4 मिनट) हो जाती है। मार्च विषुव दिन से दिनमान अधिकाधिक बढ़ता ही जाता है, और जून मे अधिकतम सीमा को प्राप्त कर पुनः घटते-घटते सितम्बर के विषुव दिन तक यह ऊपरी सीमा ऊपर लिखे अनुसार .42 ही रह जाती है। अतएव यह बात निश्चितरूपेण कही जा सकती है कि मार्च के विषुव दिन से लेकर सितम्बर के विषुव दिन के बीच मे पडने वाले छः महीने के लगभग के इस काल में जब भी शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा सूर्योदय से 42 के लगभग बाद या उससे कब भी पहिले ही समाप्त हो जाती है, तो उस दिन सध्या को अवश्य ही नव चन्द्र-

---

1 अकबर नामा (अंग्रेजी अनुवाद), 2, पृ० 50-504।

2 ईलियट० 5, पृ० 334। बी० दे के अनुसार इस ग्रंथ की अन्य प्रतियों मे रबी-उल्-अव्वल की 7 अथवा 17 तारीखें मिलती हैं (तबकात० अं० अ० 2, पृ० 357, पा० टि० 2)।

दर्शन हो जायेगा और उसी सध्या से नया हिजरी महीना अनिवार्यरूपेण प्रारम्भ हो जायेगा।

(3) समूचे वर्ष मे जब भी शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा सूर्योदय से 65 (अर्थात् 39 घडी अथवा 15 घटे और 36 मिनट) के लगभग या उससे कब भी बाद समाप्त होती हो तब नव चन्द्र-दर्शन उस दिन सध्या को कदापि नही हो सकेगा और उसके अगले दिन शुक्ला द्वितीया की सध्या को वह अवश्य ही हो जायेगा।

(4) प्रत्येक सितम्बर और मार्च महीने मे पडने वाले विपुव दिन नव चन्द्र-दर्शन के सभावित सदिग्ध काल की अतिम सीमा घट कर सूर्योदय से .53 (अर्थात् 31 घडी और 48 पल अथवा 12 घटे और 44 मिनट) ही रह जाती है। सितम्बर के विपुव दिन से दिनमान अधिकाधिक घटता ही जाता है और दिसम्बर मे न्यूनतम सीमा को प्राप्त कर पुन वढते-वढते मार्च महीने तक यह अतिम सीमा पुन 53 हो जाती है। अतएव एक सुनिश्चित नियम के रूप मे यह स्थापना की जा सकती है कि सितम्बर के विपुव दिन से लेकर मार्च महीने के विपुव दिन के बीच मे पडने वाले छ महीने के लगभग के इस काल मे जब भी शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा सूर्योदय से 53 के लगभग या उससे कब भी बाद समाप्त होती है तब नव चन्द्र-दर्शन उस दिन कदापि नही हो सकेगा और अगले दिन शुक्ला द्वितीया की सध्या को वह अवश्य ही हो जायेगा।

सक्षेप मे ये स्थापनाए की जा सकती हैं कि (1) मार्च के विपुव दिन से लेकर सितम्बर माह के विपुव दिन तक के छ माह के काल मे सभावित सदिग्ध-काल की ऊपरी सीमा 42 और अतिम सीमा 65 निश्चित रूप से निर्धारित की जा सकती है। (2) सितम्बर के विपुव दिन से लेकर मार्च के विपुव दिन तक के छ माह के इस काल मे सभावित सदिग्ध-काल की ऊपरी सीमा 37 और अतिम सीमा 58 सर्वथा असदिग्ध रूप से मान्य की जा सकती है।

आशा की जा सकती है कि इन सुस्पष्ट निर्विवादनीय नियमो की सहायता से अधिकतर हिजरी महीनो के प्रारम्भ को नव चन्द्र-दर्शन के साथ निश्चित-रूपेण सबद्ध कर सकने मे कोई कठिनाई या किसी प्रकार की त्रुटि की सभावना नही रह जायेगी। यह सत्य है कि दोनो विपुव दिनो के बीच के छ-छ माह के दोनो कालो मे निरतर घटते अथवा वढते दिनमान के अनुसार ये दोनों ही सीमाए भी तदनुसार वढती या घटती रहती हैं, जिनके सबध में स्थूलत कोई भी नियम प्रस्तुत नही किया जा सकता है, एव कुछ ऐसे भी हिजरी मासारम्भ हो सकते हैं, जिनके सम्बन्ध मे कोई स्पष्ट निर्णय कर सकना प्राय

कठिन हो जाता है। परन्तु ऐसी स्थिति मे समकालीन आधार-ग्रन्थो, कागज-पत्रो अथवा अखबार आदि मे यत्र-तत्र किये गये हिजरी तारीखो के साथ ही उस दिन के वार के उल्लेख बहुत ही उपयोगी तथा सहायक हो सकते हैं, अतएव तत्सबधी ऐसे सभावित उल्लेखो की अवश्य ही खोज की जानी चाहिए।

इलाही सन्

स्वय द्वारा सस्थापित इलाही सन् तथा उसके महीनो-तारीखो का राज्य-कार्य और शासकीय इतिहास-ग्रथो, आदि मे प्रयुक्त किये जाने का आदेश अकबर ने अपने शासनकाल के 29वें वर्ष के प्रारभ में दिया था। अकबर के राज्यारूढ होने (शुक्रवार, फरवरी 14, 1556 ई०) के तत्काल बाद की मेष सक्राति (बुधवार, मार्च 11, 1556 ई०) से इलाही सन् के प्रथम वर्ष और माह का प्रारभ माना गया।[1] अपने 'अकबर-नामा' मे अबुल फजल ने मुख्य-रूपेण इलाही सन्, महीनो और तारीखो को ही प्रयुक्त किया है। जुलूमी सनो की गणना प्रथम इलाही सन् के नौरोज से लेकर इलाही सनो के ही अनुसार होती थी। अपनी आत्म-कथा 'तुजुक-इ-जहागीरी' में यद्यपि जहागीर ने अनेको स्थलो मे हिजरी सन्, माह और तारीखो का भी उल्लेख किया है, उसके शासन-काल में इलाही माह और तारीखें पूर्ववत् प्रयुक्त होते रहे। शाहजहा ने अवश्य ही इलाही नौरोज से अपने जुलूसी सनो की गणना तथा राज्यकार्य आदि मे इलाही माह तारीखो का प्रयोग समाप्त कर दिया था, परतु तथापि उसके शासन-काल के शासकीय इतिहास-ग्रथो मे हिजरी सन् माह और तारीखों के साथ ही यदा-कदा इलाही माह और तारीखो का उल्लेख मिलता है। मु शी देवीप्रसाद ने अपने 'शाहजहा-नामा' मे इलाही माह और तारीखो के ये उल्लेख नही दुहराए हैं। तथापि सशोधको आदि के लिए उक्त इलाही माह तारीखो का सही ईसवी माह-तारीख निकालने के सुगम नियमो का स्पष्टीकरण कर देना उपयोगी और आवश्यक प्रतीत होता है।

इलाही सन् मूलत सौर वर्ष था, जो सूर्य की एक मेष संक्राति (अर्थात् मेष राशि मे सूर्य के प्रवेश) से अगले वर्ष की मेष सक्राति तक गिना जाता था। अमीर तैमूर के पौत्र, उलूग वेग की तालिकाओ में अत्यावश्यक सशोधन करके ही इलाही वर्ष का मान निर्धारित किया गया था, तथा किसी भी वर्ष में अतिरिक्त दिन जोडने का कोई भी प्रावधान उसमे नहीं था। वेदागराय के अनुसार इलाही वर्ष 365 दिन, 14 घडी, 33 पल, 7 विपल और 32 प्रतिपल (अर्थात 365 दिन, 5 घण्टे, 49 मिनिट, 15 सेकेण्ड और 48 फोर्थ-अश) का

1 अ० ना० (अ० अ०), 3, पृ० 644–645, 2, पृ० 5, 15, 17, 32, आईन० (अ० अ०), 2 (दूसरा सस्करण), पृ० 29–30।

होता था। इलाही वर्ष को सूर्य की बारह संक्रान्तियों के आधार पर बारह सौर महीनों मे विभक्त कर दिया और तदनुसार य इलाही महीने 29 से 32 दिनों तक के होते थे। उन बारह महीनों के नाम ईरानी ही रखे गये, जो क्रमश. (1) फरवरदीन, (2) उर्दिबहिश्त, (3) खुरदाद, (4) तीर, (5) अमरदाद, (6) शहरेवर, (7) मिहर, (8) आबान, (9) आजार, (10) दे, (11) बहमन और (12) इस्फंदारमज थे। इस इलाही सौर सन् की विशेषरूपेण उल्लेखनीय बात थी कि उसके अतर्गत इलाही तारीखो की गणना हिजरी तारीखों के समान एक सूर्यास्त से दूसरे सूर्यास्त तक की जाती थी।[1]

इलाही सन् के नव वर्ष क नौरोज तथा बाद के सब ही इलाही महीनो की प्रथम तारीख का निर्धारण उससे सबंधित सूर्य-सक्रांति से ही होता था। अतएव सूर्य-सक्रांति पर आधारित नय इलाही सौर माह के प्रथम दिन को निर्धारित करने क सुनिश्चित नियमो का स्पष्टतया जान लना अत्यावश्यक है, जिससे सब ही इलाही तारीखो के सही वार और ईसवी माह-तारीख सुगमता स निकाले जा सकें।

सूर्य-सक्रांति के आधार पर सौर नये महीने के प्रथम दिन को निश्चित करने का भारत मे सर्वत्र प्रचलित और मान्य नियम सूर्योदय से प्रारभ होने वाले दिनमान से ही सम्बद्ध है। किंतु इलाही सन् के अतगत तारीख का प्रारभ सूर्यास्त से ही गिना जाता था एव इलाही सौर मास के प्रथम दिन को निर्धारित करने के लिए उक्त नियम को तदनुकूल परिवर्तित कर दिया गया। यो यदि सूय-सक्रांत मध्याह्न अर्थात् पूर्व दिन के सूर्यास्त से 45 घडी से पहिले पडती थी ता उक्त नौरोज को गणना उसी इलाही दिन की सध्या से की जाती थी। यदि कोई सूय-सक्रांति उस इलाही दिन के मध्याह्न के बाद तथा सूर्यास्त से पहले पड़ती थी तब नौरोज का प्रारभ इस सूर्य-सक्रांति के तत्काल बाद होने वाले नये इलाही दिन की सध्या से गिना जाता था।[2] इन दोनो प्रकार के नव वर्षारभ के कई सुस्पष्ट उदाहरण हमे अकबर और जहांगीर के समकालीन इतिहास-ग्रंथो मे मिलते हैं, जिनमे से कुछ यहा दिये जाते हैं कि ऊपर दिये गय नियम का स्पष्टीकरण ही नही हो सके, परतु उसकी सत्यता भी प्रामाणित हो जाये।

(1) मध्याह्न से पूर्व सक्राति पडने पर उसी इलाही दिन को नौरोज अर्थात् तारीख 1 फरवरदीन मानना—इसके दो उदाहरण देने से सारी बात स्पष्ट हो जायेगी। (अ) मगलवार, 2 मुहर्रम, 986 हि० (मार्च 11, 1578 ई०)

1 अ० ना० (अ० अ०), 2, पृ० 15–18, 23, आईन० (अ० अ०), 2, (दूसरा स०), पृ० 29–31, बी० एस्० बेद्रे कृत 'तारीख-इ-इलाही' पृ० 7–10।

2 पिल्लई० 1–1, पृ० 3–4, बेद्रे० पृ० 11–12।

को सूर्योदय से 53 मिनट बाद सूर्य ने मेष राशि में प्रवेश किया। अतः मगलवार, मार्च 11, 1578 ई० को अकबर के 23वें जुलूसी सन् का नौरोज अथवा 23वें इलाही सन् के फरवरदीन महीने की पहली तारीख मानी गई थी।[1]

(आ) मगलवार, 4 जमादि-उल्-अव्वल, 997 हि० (सोमवार, मार्च 10, 1589 ई०) की रात्रि मे चार घण्टे और 36 मिनट बाद सूर्य ने मेष राशि में प्रवेश किया, अत अकबर के शासन-काल के 34वें वर्ष का नौरोज अथवा 34वें इलाही सन् के फरवरदीन महीने की पहली तारीख उसी सध्या से प्रारभ मान कर मगलवार, मार्च 11, 1589 ई० को दिन मे उसके उपलक्ष मे उत्सव मनाया गया।[2]

(2) जब किसी दिन मध्याह्न के बाद तथा उसी दिन के सूर्यास्त से पहिले सक्राति पडती थी, तब उसके बाद के इलाही दिन (अर्थात् इस सक्राति से तत्काल बाद) की सध्या से प्रारभ होने वाले इलाही दिन को ही नौरोज अथवा फरवरदीन महीने की पहिली तारीख माना जाता था। इसके निम्न-लिखित दो उदाहरणों से यह नियम भी स्पष्ट हो जायेगा।

(क) 'अकबर-नामा' के अनुसार मगलवार, 29 शाबान, 974 हि० (मार्च 11, 1567 ई०) को (सूर्योदय के बाद) आठ घण्टे और 15 मिनट (अर्थात् 20 घडी और 37½ पल) बीत जाने पर सूर्य ने मेष राशि मे प्रवेश किया और तदनन्तर अकबर का बारहवा जुलूसी सन् अथवा इलाही सन 12 प्रारभ हुआ। मेष सक्राति यो मगलवार, मार्च 11, 1567 ई० को दोपहर बाद ही पडी थी, अतएव नौरोज तथा नये माह फरवरदीन की पहिली तारीख का प्रारभ मगलवार, मार्च 11, 1567 ई० की सध्या से हुआ तथा बुधवार, मार्च 12, 1567 ई० को दिन मे उसका उत्सव मनाया गया। इसी गणना के अनुसार उसके बारह दिन बाद की तारीख 13 फरवरदीन सोमवार, 12 रमजान अथवा मार्च 23, 1567 ई० को पडी थी, जैसा कि 'अकबर-नामा' में स्पष्ट उल्लेख है।[3]

(ख) 'तुजुक-इ-जहागीरी' मे जहागीर ने लिखा है कि "इस्फदारमज महीने के अतिम दिन रविवार को जो 1 रबी-उल्-अव्वल (सन् 025 हि०) (अर्थात् मार्च 10, 1616 ई०) होता है जब पद्रह घडी दिन बीत गया था, तब मीन राशि से निकल कर सूर्य ने मेष राशि मे प्रवेश किया।" यो मेष सक्रान्ति मध्याह्न के बाद ही पडी थी एव नौरोज अर्थात् 1 फरवरदीन, सोमवार

1 अ० ना० (अ० अ०), 3, पृ० 337।
2 अ० ना०, (अ० अ०), 3, पृ० 816।

मार्च 11, 1616 ई० को ही मनाया गया था। इसी गणना के अनुसार उससे कोई दस दिन बाद तारीख 11 फरवरदीन, गुरुवार (मार्च 21, 1616 ई०) को पडी थी, जिसका समर्थन स्वय जहागीर के उस तारीख सबधी उल्लेख से होता है ।[1]

मेष सक्रांति के परिप्रेक्ष्य में नौरोज अथवा फरवरदीन की पहिली तारीख के सही वार और ईसवी तारीख को निर्धारित करने के इन्ही दोनो नियमो के अनुसार अन्य इलाही महीनो की पहिली तारीखो के वार और ईसवी तारीखें निकाली जा सकती हैं। यो इन सारे इलाही सनो मे अन्य सूर्य सक्रातियो के सही समय का उल्लेख तथा तत्सबधी विस्तृत काल-गणना की जानकारी किन्ही समकालीन इतिहास-ग्रथो अथवा अन्य पुस्तको मे सुलभ नही है, अत. इतिहासकारो की इस समस्या को दूर करने के लिए वी० एस० वेन्द्रे ने अपनी महत्त्वपूर्ण कृति 'तारीख-इ-इलाही के अत मे दी गई सारिणी क्रमाक 2 मे (पृ० 36–45) प्रथम इलाही सन् के प्रथम माह (मार्च 1556 ई०) से लेकर बाद के 120वें इलाही सन् के अतिम इस्फदारमज माह (फरवरी, 1676 ई०) तक के प्रत्येक इलाही माह के प्रथम दिन के ईसवी वार, तारीख और महीने की पूरी तालिका दे दी है। अधिकतर इलाही महीनो की पहिली तारीख सक्राति वाले दिन ही मानी गई थी परतु जिन इलाही महीनो की पहली तारीख उपर्युक्त नियमानुसार सक्राति से तत्काल बाद वाले दिन ही मानी गई थी उन सब ही वार-तारीखो को उक्त सारिणी मे वेन्द्रे ने ताराकित कर दिया है कि उससे सशोधको आदि को इस स्थिति विशेष की जानकारी हो सके।

परन्तु इन इलाही महीनो की आगे की तारीखो के वार और ईसवी तारीखो को निकालने के लिए ताराकित अथवा अताराकित वार-तारीखो के लिए एक-मात्र तरीका ही समानरूपेण अपनाया जाना चाहिए, जिसके कुछ उदाहरण यहा दिये जाते हैं कि उससे इस सुझाए गए तरीके का स्पष्टीकरण हो जाय।

अपने बारहवें जुलूसी (अर्थात् इलाही) सन् मे सुविख्यात चित्तौडगढ का घेरा डाल कर जब अकबर उसको जीतने के लिए अनेकानेक आयोजन करने लगा, तब चित्तौडगढ के परकोटे को तोडने के लिए मुगल आक्रमणकारियो ने इलाही तारीख 5 दै, तदनुसार बुधवार, 15 जमादि-उस्-सानी का सुरगें लगाई। इलाही माह दै की पहिली तारीख शनिवार, दिसम्बर 13, 1567 ई० को थी, जो वेंद्रे की सारिणी मे ताराकित है। अत उक्त ईसवी तारीख और वार में 4 दिन जोड देने से 5 दै की ईसवी तारीख आदि बुधवार, दिसम्बर 17,

1 जहागीर-नामा, (हिन्दी अनुवाद), अनुवादक पजरत्नदास, पृ० 383, 584, तुजुक० (अ० अ०), रोजर्स, 1, पृ० 317–318।

1567 ई० निकलती है, जो 'अकबर-नामा' मे दिये गये वार और हिजरी तारीख से बराबर मिलते हैं।[1]

आगे चल कर 'अकबर नामा' मे चित्तौडगढ के विजय की इलाही तारीख 15 इस्फदारमज तदनुसार मगलवार, 22 शाबान दी गई है। इलाही माह ईस्फदारमज की पहिली तारीख उक्त सारिणी के अनुसार मगलवार, फरवरी 10, 1568 ई० थी, जो ताराकित नही है। उसमे 14 दिन जोड देने से चित्तौड-विजय की ईसवी तारीख मगलवार, मार्च 24, 1568 ई० निकलती है। 'अकबर-नामा' मे दिये गये वार और हिजरी तारीख से उक्त ईसवी तारीख, वार का समर्थन हो जाता है।[2] इसी प्रकार 'अकबर-नामा' में हल्दी-घाटी के सुविख्यात ऐतिहासिक युद्ध की तारीख इलाही सन् 21 मे 7 तीर दी है।[3] उक्त इलाही सन् की तारीख 1 तीर, मगलवार, जून 12, 1556 ई० को थी, जो ताराकित नही हैं। इसमे छ दिन जोड देने से हल्दी-घाटी के युद्ध की तारीख सोमवार, जून 18, 1576 ई० निकलती है।

यो वेंद्रे द्वारा दी गई उक्त सारिणी की सहायता से इलाही माह और तारीखो के सही वार और ईसवी तारीख-माह निर्धारित करते समय इस बात का पूरा-पूरा ध्यान रखना आवश्यक होता है कि सबधित घटना उक्त सारिणी मे दिये गये वार और ईसवी तारीख के दिन सूर्योदय से पहिले तो नहीं हुई है, और अगर उस पूर्व रात्रि मे हुई है तो लगभग किस समय, क्योंकि उस रात्रि की घटनाओ के इलाही वार और तारीख तो वही रहेगे, परतु उसके मुताबिक निर्धारित किए जाने वाले ईसवी वार और तारीख मे अवश्य ही अत्यावश्यक परिवर्तन करने होगे, क्योकि उस पूर्व रात्रि मे अर्द्ध रात्रि से पहिले की घटनाओं की ईसवी वार-तारीख उक्त सारिणी के अनुसार निर्धारित ईसवी वार-तारीख से पूर्व दिन के ईसवी वार-तारीख ही सही माने जायेंगे। इसका भी एक उदाहरण दे देना असगत नही होगा।

औरगजेब का जन्म जहागीर के 13वें जुलूसी सन् में रविवार, 12 आबान की सध्या के बाद हुआ था।[4] इलाही तारीख 1 आबान बुधवार, अक्तूबर 14 1618 ई० को थी। उसमें 11 दिन जोड देने से 12 आबान के ईसवी वार-तारीख रविवार, अक्तूबर 25, 1618 ई० निकलते हैं। परतु औरगजेब का जन्म रविवार, अक्तूबर 25 से पर्व के दिन सूर्यास्त के बाद सध्या समय मे

1 अ० ना० (अ० अ०), 2 पृ० 468।

2 अ० ना०, (अ० अ०), 2, पृ० 471।

3 अ० ना०, (अ० अ०), 3, पृ० 245।

4 जहागीर-नामा, (हि० अ०), ब्रजरत्नदास, पृ० 557, तुजुक० (अ० अ०), रोजर्स, 2, पृ० 47।

हुआ था। अत औरंगजेब के जन्म की सही ईसवी तारीख शनिवार, अक्तूबर 24, 1618 ई० ही निर्धारित होती है।

यो यह बात स्पष्ट हो जाती है कि वेन्द्रे द्वारा दी गई उक्त सारिणी की सहायता से इलाही सनो के किसी भी महीने की कोई भी तारीख का सही ईसवी वार, तारीख, माह और सन् बहुत ही सुगमता से निकाला जा सकता है।

इसी संदर्भ में यह कह देना भी अत्यावश्यक जान पडता है कि 'अकबर-नामा', 'तुजुक-इ-जहागीरी' जैसे समकालीन महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक आधार-ग्रंथों की सुलभ प्रतियो या सस्करणो मे भी कही-कही वार अथवा तारीखों आदि की भूलें पाई जाती हैं, जो या तो कदाचित् मूलत. भ्रांतिवश लेखक ने ही की हो अथवा बहुत करके बाद के प्रतिलिपिकारो के प्रमाद के कारण हो गई और तदनन्तर वे भूलें निरतर दुहराई जा रही हो। इन भूलो की जाच-पडताल कर उन्हें सुधारने मे भी वेंद्रे की यह सारिणी बहुत ही उपयोगी और विशेषरूपेण सहायक हो सकेगी, क्योकि इस सारिणी में दिये गये वार, तारीख, माह, आदि सावधानीपूर्ण विस्तृत काल-गणना तथा सही सर्वमान्य नियमों पर ही आधारित हैं।

—रघुबीरसिंह
—मनोहरसिंह राणावत

मुंशी देवीप्रसाद कृत

शाहजहां-नामा

भाग 1—3

'शाहजहां-नामे' की भूमिका

सम्राट् शाहजहा जहागीर वादशाह के बेटे और अकबर वादशाह के पोते थे। सम्राट् अकबर ने अपना इतिहास शेख अबुल फज्ल से बडे विस्तार से लिखवाया है, जिसका नाम 'अकबर-नामा' है। और जहागीर शाह ने अपना इतिहास आप ही लिखा, जैसा कि उनके परदादा सम्राट् बाबर ने लिखा था, और बाबर के सरदार सम्राट्-शिरोमणि अमीर तैमूर भी अपना जीवन-चरित्र आप लिखा करते थे। मुगल घराने मे अपना इतिहास आप ही लिखने की चाल अमीर तैमूर से ही चली थी। इन तीनो विद्वान् सम्राटो के अपने-अपने लिखे हुए इतिहासो तथा जीवन-चरित्रो के नाम क्रम से 'तुजुक-तैमूरी,' 'तुजुक-बाबरी' और 'तुजुक-जहागीरी' हैं।

इन तीनो ग्रथो को 'अकबर-नामे' के साथ मिलाने से लिखने के ढग में वडा अतर पाया जाता है, और यह अतर ऐसा है, जो अपने और दूसरे या यो कहो कि मालिक और नौकर के काम मे होता है, और नौकर भी वह जो कवियो के समान खुशामदी हो। इसीलिए अबुल फज्ल ने अकबर वादशाह की वे घरू दु ख-दर्द और निज चाल-चलन की बातें नही लिखी हैं, या नही लिख सका है, जो तैमूर, बाबर और जहागीर ने थोडी बहुत लिख दी हैं। सम्राट् हुमायू, बाबर और अकबर के बीच में रह जाते हैं, परतु उन्होने अपना जीवन-चरित्र न आप लिखा न किसी से लिखवाया। शेख अबुल फज्ल ने ही उनका इतिहास 'अकबर-नामे' में उसी ढग से लिखा जैसा अकबर का है। परतु हुमायू वादशाह के आप न लिखने की कसर उनके एक खिदमतगार जौहर अक्बर ने बहुत कुछ पूरी कर दी है, जैसा कि हम 'हुमायू-नामे' की भूमिका में लिख चुके हैं।

सम्राट् शाहजहा जो अपना जीवन-चरित्र आप लिखते तो उनको भी वैसे ही उन विषयों मे कुछ न कुछ लिखना पडता, और वे शायद ऐसा नही करना चाहते थे। इसलिए उन्हे भी अपने इतिहास के वास्ते अबुल फज्ल जैसा एक जबरदस्त मुशी ढूढना पडा, जो उनके इतिहास को भी वैसे ही धूमधाम से लिखे, जैसा कि अबुल फज्ल ने 'अकबर-नामा' लिखा है। अबुल फज्ल वडा

जबरदस्त मुशी था। वह लिखने मे शब्दाडबर की ऐसी छटा दिखाता था, जो घटा के समान उमडी चली आती थी। विशेष करके बादशाही फरमानो, खिताबो और खतो मे तो अपनी कलम का जोर ऐसा जताता था, और अरबी फारसी के कठिन और भयकर शब्दो को ऐसी शानदार तरकीब से जोडता था कि पढने वालो को वीर रस का आवेश होकर रौद्र रस से दब जाता था। मैंने यहा तक सुना है कि ईरान का बादशाह शाह अब्बास सफवी कहा करता था कि "मैं जितना अबुल फज्ल की कलम से डरता हू उतना अकबर की तलवार से नही डरता।"

अबुल फज्ल निडर भी बहुत था। अपने बादशाह के सिवाय और किसी से नही डरता था, और जब ड्यूटी पर होता था, किसी की कुछ परवाह नही करता था। एक बार वह 'अकबर-नामे' के लिखने मे लगा हुआ था, उस वक्त मिरजा अबदुल रहीम खा खानखाना और मिरजा जानी उससे मिलने को गये। ये दोनों बड़े अमीर और अबुल फज्ल के प्यारे दोस्त थे, तो भी उसने इनकी तरफ आख उठा कर नहीं देखा, और अपने लिखने की धुन मे लगा रहा। जब वे खडे-खडे थक कर चले गये, तब भी उनके आने-जाने की कुछ सुध न ली। परन्तु दूसरी बेर फिर दोनो उसके पास गये तो बडी आव-भगत की, जिससे उनको बडा अचभा हुआ, और बिदा होने के पीछे मिरजा जानी ने खानखाना से कहा कि "देखा! आपने या उस दिन वह बेपरवाई थी, और या आज यह शिष्टाचारी। कहिये इसको क्या समझा जाये?" खानखाना ने कहा कि "जब तो बादशाही खिदमत मे लगा हुआ था, अब अपने आपे में था।"

अबुल फज्ल बादशाह के सिवाय किसी की खुशामद भी नही करता था, और खुल्लम-खुल्ला कहा करता था कि "मैं हजरत के सिवाय बादशाहजादों तक की भी परवाह नही रखता हू।" इसी से शाहजादे और अमीर-वजीर सब उससे नाराज रहते थे, और शाहजादे सलीम ने तो उसको मरवा ही डलवाया। जब अकबर ने यह सुना तो कहा कि "जो बादशाहजादे को बादशाही करना था तो मुझे मार डालता और शेख को जिंदा रखता।" इससे जाना जाता है कि अबुल फज्ल कैसा काम का आदमी था और बादशाह उसकी कदर कहा तक करते थे। शेख मुन्शी और कलम का बहादुर ही नही था, वरन् सिपाही और तलवार-बहादुर भी था। जब वह दक्खन से आता था और नरसिंहदेव बुदेले ने शाहजादे सलीम के कहने से जगल मे उस पर धावा किया तो उस वक्त शेख के पास बहुत थोडे आदमी थे, इसलिए उसके साथियो ने कहा कि "आप निकल जावें। हम इससे समझ लेगें।" शेख ने जवाब दिया कि "मैं एक फकीर-जादा था। जलालुद्दीन अकबर बादशाह ने मुझे अमीर बना दिया। जो आज

में इस चोर के सामने से भाग जाऊंगा तो दुनिया को क्या मु ह दिखाऊंगा और बराबर वालो मे किस इज्जत से बैठ सकू गा।" यह कहकर बरसिहदेव पर घोडा उठाया और लड कर बहादुरो की तरह से काम आया। अबुल फज्ल ने "आईन-अकबरी" मे जहा बुजुर्गान-दौलत अर्थात् बादशाही अमीरो, वजीरो, मनसब-दारो और राना-राव-राजाओ के नाम, मनसब लिखे हैं, वहा कहा है कि "मैं इनके भी हाल लिखना चाहता था, परतु दो बातो से बाज रहा, एक तो अकेली तारीफ लिखनी ही दिल पर गिरा गुजरी, और बादशाह की तारीफ करने वालो को दूसरे के तारीफ करने की कहा समाई। दूसरे भलाई दिखाने और बुराई से चुप रहे जाने की आज्ञा मेरे सच लिखने ने नही दी।"

यथार्थ बात भी यही है कि शेख अबुल फज्ल ने जो कुछ खुशामद की है तो अपने बादशाह की की है, जिसका दरजा वह अपने स्वामिधर्म से बाद-शाही के दरजे से भी बहुत ऊचा समझता था। और नौकरी की बात ही ऐसी है कि उसमे तो आदमी को बिक जाना ही पडता है। खुशामद तो दूर रही सिर तक भी दे देना पडता है, जिसके बारे मे एक उर्दू शाइर ने कहा है :—

"क्या सिपाही हैं बुरे भाग के सर बेचते हैं,
और फिर जाके खरीददार के घर बेचते हैं।"

ऐसी ही खुशामद भी लौकिक मे स्वामिधर्म की मुख्य सामग्री समझी गई है, जो अपने स्वामी के राजी रखने के वास्ते की जाती है। खुशामद से तो आदमी क्या देवता भी खुश हो जाते हैं। उर्दू के एक खरे शाइर ने तो देव-ताओ से भी आगे बढ कर खुदा को भी लपेट लिया है, और कहा है :—

"सच तो यह है कि खुशामद से खुदा भी खुश है।"

सम्राट् शाहजहा ने अबुल फज्ल की शब्द-व्यूह रचना को पसद करके अपनी तवारीख में भी उसी ढग की लिखवानी चाही। पहिले तो मिरजा अमीना कजवीनी को, जो ईरान का रहने वाला और बडा मुशी था, यह बडा काम सौंपा। उसने 10 वर्ष का हाल लिख कर सन् 20 जुलूसी सवत् 1704 मे नजर किया, जिसमे जन्म-दिन से सन् 10 जुलूसी तक का इतिहास और आखरी मे उस समय के बडे-बड़े सैयदो, शेखो, आलिमो और फाजिलो, शाइरो और हकीमो का भी हाल था।

जब यह 'बादशाह-नामा' सम्राट् की नजर से गुजरा, तो दरबार वालो ने अर्ज किया कि "शेख अबुल फज्ल का शागिर्द, मुल्ला अबदुल हमीद, जो पटना मे रहता है, बडा मुशी है, और अपने उस्ताद के ढग पर लिखने वाला है। जो उसको यह काम दिया जावे तो वह हजरत की पसद के मुआफिक कर सकता है।" विद्या और कीर्ति के लोभी सम्राट् ने बिहार के सूबेदार को लिख कर

मुल्ला को बुलाया, और 'बादशाह-नामा' लिखने की खिदमत पर नियत करके मिरजा अमीना को हालात जमा करने का हुक्म दिया।

मुल्ला अबदुल हमीद ने 'अकबर-नामे' को आगे रख कर 20 वर्ष का हाल 2 खडो मे लिखा है, जिसका हरेक खड 'दह-साला' मुल्ला अबदुल हमीद कहलाता है, क्योकि हरेक खड मे 10-10 वर्ष का हाल है। जब यह मुल्ला सन् 1065 हिजरी (सवत् 1711) में बूढा होकर मर गया, तो सम्राट् ने उसके शागिर्द मुहम्मद वारिस को यह काम सौंपा। उसने भी अपने उस्ताद के ढग पर पिछले दस वर्षों का सम्राट् शाहजहा का राज्य समाप्त होने तक लिख कर 'बादशाह-नामा' अर्थात् शाह का इतिहास पूरा कर दिया।

ये 'बादशाह-नामे' शब्दाडबरों, अन्योक्तियो और इबारतो के बनाव-चुनाव और फैलाव से बहुत कठिन और विस्तृत हो गये थे, साधारण लोग उसको सहज मे नही समझ सकते थे, इसलिए मुल्ला ताहिर ने, जिसका खिताब इनायत खा था, 'बादशाह-नामे' के तीनो खडो का सार 1 खड में लिख दिया और उसका नाम 'मुलख्खस (सूक्ष्म) बादशाह-नामा' रखा।

उसी जमाने मे शैख इनायतुल्ला लाहोरी ने भी एक इतिहास उस सौभाग्य-शाली सम्राट् का लिखा, जिसका नाम 'तारीख-दिलकुशा' है। फिर मुल्ला सालह लाहोरी ने भी एक 'बादशाह-नामा' शैख अबुल फजल के शब्दाडबर की कठिन और क्लिष्ट योजना को, जिसका निभाव हर किसी से नही हो सकता था, छोड कर सन् 1075 (सवत् 1722) मे लिखा। परतु यह भी अपनी तौर के शब्दाडबर और मुन्शीगिरी की चुना-चुनी से खाली नही है। इन 'बादशाह-नामों' के सिवाय 1 'बादशाह-नामा' मुल्ला जाहद का[1] है, वह कुछ सलीस और सुगम है। ऐसे ही एक 'बादशाह-नामा' एक हिन्दू मुशी भगवानदास का[2] भी लिखा हुआ है।

इतने 'बादशाह-नामो' की तो हमको खबर है, शायद और भी निकल आवें तो आश्चर्य नही। परतु सब मे मुल्ला अबदुल हमीद का 'बादशाह-नामा' मुख्य माना गया है, क्योकि वह बादशाह की देख-भाल मे बादशाही दफ्तर के वाकियो (समाचारो) से लिखा गया है, और दूसरे 'बादशाह-नामे' उसी के आधार पर बने हैं। इस वास्ते हमने भी यह अपना 'शाहजहा-नामा' उसी का

---

1 'शाहजहां-नामा' मुहम्मद जाहिद कृत, अब्दुल हमीद लाहोरी कृत 'पादशाह-नामा' का लघु सुगम सारांश, रचना काल—1225 हि० (1810 ई०)। ईलियट०, 7, पृ० 132–टिप्पणी क्र० 1। ब्रिटिश म्यूजियम, प्रथाक ओरियण्टल 2052–IX, पृ० 204–205 संक्षिप्त सूचना मात्र (रीऊ०, 3, पृ० 1048)। (स०)।

2 'शाहजहा नामा', भगवानदास कृत, आदम से प्रारम्भ होकर शाहजहां के पूर्व-पुरुषो की सूचनाओं का छोटा ग्रंथ। ईलियट०, 7, पृ० 132—टिप्पणी क्र० 3। (स०)।

जरूरी-जरूरी मतलब लेकर बनाया है, परन्तु हिन्दुओं के सबंध की कोई भी बात नहीं छोड़ी है बल्कि पूरी ले ली है, क्योंकि हिन्दुओं ने मुसलमानों के इतिहास बिलकुल नहीं लिखे हैं। और इस अभाव को पूरा करने के लिए ही हमने बाबर से औरंगजेब तक की तवारीखों के खुलासे अति परिश्रम से करके छपा दिये हैं।

शाहजहां का जन्म

सब 'बादशाह-नामे' मुसलमानी मंगलाचरण अर्थात् खुदा रसूल की स्तुति के पीछे, जो नये-नये रंग-ढंग से की गई है, सम्राट् शाहजहां के जन्म से शुरू होते हैं, जो रबी-उस्सानी, सन् 1000 हिजरी की चांद-रात, अर्थात् पहिली तारीख, गुरुवार की रात को[1] लाहौर में हुआ था। दिन बुध का था, क्योंकि मुसलमानी मत से तारीख रात से ही लग जाती है, और हिन्दुओं के हिसाब से वह रात भी बुध की ही थी, और इसीलिए हिन्दू ज्योतिषियों ने जो जन्म-पत्र बनाया था, उसमें बुधवार लिखा है। मुल्ला अब्दुल हमीद ने 'बादशाह-नामे' में जन्म-कुंडली नहीं दी है, परन्तु जन्म-लग्न तुल राशि लिख कर ग्रहों के फल का उल्लेख बहुत विस्तार से किया है, जिससे मालूम होता है कि फल लिखने में भी नजूमियों और ज्योतिषियों ने खुशामद ही की है, क्योंकि सारे फल अच्छे ही अच्छे लिखे या लिखाये हैं। शाहजहां ने जो बाप से बागी होकर उन पर चढ़ाई की थी, जिससे उनको बाप का राज्य छोड़ कर गोल-कुंडे के बादशाह कुतुबुलमुल्क की अमलदारी में बाप के जीने तक रहना और फिर बेटों के बागी हो जाने से राज्य छोड़ कर किले में कैद होना पड़ा था, सो इन होने वाली बातों का कुछ भी इशारा उन फलों में नहीं है, बल्कि बरखिलाफ इसके बेटों का पूरा ताबेदार होना लिखा है।

हिन्दू ज्योतिषियों ने जन्म-लग्न कन्या लिखा है, जैसा कि इस कुंडली में है, जो हमको जोधपुर के ज्योतिषियों के दफ्तर में से मिली है।

संवत् 1648 शाके 1513 माघ सुदी 1 बुधवारे उदयात् घटी 37–53 रवि स्पष्ट 8-7-26 पातशाह शाहजहां लाभपुरे जन्म।

इस जन्म कुंडली के इष्ट और ऊपर लिखे इष्ट में घड़ी-पल का कुछ फर्क है, सो यह फर्क ज्योतिषियों के गणित में रह ही जाता है। 'अकबर-नामे' और 'बादशाह-नामे' के इष्ट में ही फर्क है। 'अकबर-नामे में तो 4 घंटे 24 मिनट लिखे हैं और 'बादशाह-नामे' में 5 घंटे, 14 मिनट और 20 सेकिंड हैं। फिर 'बादशाह-नामों' में भी फर्क है, क्योंकि मुल्ला सालह ने 5 घंटे, 10 मिनट

1 गुरुवार, तारीख 26 दै, इलाही सन् 26 (अ० ना०, अ० अ०, 3, पृ० 1921), तदनुसार बुधवार, जनवरी 5, 1592 ई० की रात्रि के पूर्वार्द्ध में। (सं०)।

ही लिखे हैं, जिसके 12 घड़ी, 50 पल बताये हैं। खैर! हम ज्योतिष के झमेले को छोड कर आगे चलते हैं। जन्म-फल के पीछे शाहजहा के दादो-परदादा का थोडा-थोडा हाल अमीर तैमूर तक है। मुल्ला अबदुल हमीद ने तो अमीर

जन्म लग्न

तैमूरसे पीढिया चलाई हैं और मुल्ला सालह शाहजहा से अमीर तैमूर तक नीचे से ऊपर पीढिया ले गया है।

पीढियो के पीछे मुल्ला अबदुल हमीद ने तो जहागीर बादशाह के मरने पर शाहजहा के जुनेर से आने और तख्त पर बैठने से पहिले का हाल शुरू कर दिया है, और मुल्ला सालह 217 पेज तक तख्त पर बैठने से पहिले का हाल लिखता गया है। हम इस हाल का खुलासा हिंदी 'जहागीर-नामे' मे लिख चुके हैं, इसलिए यहा फिर न लिख कर जहागीर बादशाह के मरने से पीछे का हाल लिख चलते हैं।

वैशाख वदी 1, सवत् 1973 मुन्शी देवीप्रसाद मुनसिफ
सन् 1917, एप्रिल (8) जोधपुर—राजपूताना

पहिला भाग

राज्यारोहण से जुलूसी सन् 10 के अन्त तक

जहांगीर की मृत्यु के वाद का विवरण

28 मफर, रविवार, सन् 1037 हि० (कार्तिक वदि 30, सवत् 1684= अक्तूवर 28, 1627 ई०) को मुकाम राजोर में जहांगीर वादशाह का देहात हुआ, तव नूरजहां बेगम ने शहरयार को लाहोर से वुलाया। मगर उसका भाई यमीनुद्दोला आसफ खां, वजीर, जो खुर्रम का सुसर था, उसको वादशाह वनाना चाहता था। देश-काल देख कर खुसरो के वेटे बुलाकी को, जिसका दूसरा नाम दावरवख्श भी था, तख्त पर वैठा कर आसफ खां कई अमीरो और राजा वासू के पुत्र राजा जगतसिंह के साथ लाहोर की तरफ रवाना हुआ और नूरजहां वेगम को नजरवद करके वनारसी नामक एक हिन्दू को, जो वहुत तेज चलता था, खुर्रम (शाहजहां) के पास दक्षिण की तरफ रवाना किया और कहलाया कि वह जल्दी आगरा पहुचे। जव वुलाकी लाहोर के पास पहुचा तो शहरयार 11 रवी-उल्-अव्वल, रविवार, (कार्तिक सुदि 14= नवम्वर 11, 1627 ई०) को तीन कोस सामने आकर लडा और हार खाकर किले को भागा। आसफ खां ने शहर मे जाकर कब्जा करके शहरयार को पकडा और अधा करके कैद कर दिया।

19 रवी-उल्-अव्वल, रविवार, (अगहन वदि 6=नवम्वर 18, 1627 ई०) को वनारसी जुनेर पहुचा और महावत खां की मारफत शाहजहां से मिल कर आसफ खां की अगूठी दी और सव हाल कहा। शाहजहां वृहस्पतिवार, 23 रवी-उल्-अव्वल (नवम्वर 22, 1627 ई०) को जुनेर से रवाना हुआ और दक्षिण के सूवेदार खानजहां लोदी को वहुत सी खातिर तसल्ली लिखी, तो भी खानजहां ने निजामुलमुल्क से मिल करके वालाघाट का तमाम मुल्क उसको दे दिया। अहमदनगर के किलेदार सिपहदार खां के सिवाय उस तरफ के कुल वादशाही अमीर और जागीरदार भी जिन्होने खानजहां का हुक्म नही माना खानजहां के आदेशानुसार वे सव ही अपने परगने, थाने और जागीरें छोड़-छोड़ कर वुरहानपुर आ गये। तव खानजहां अपने वेटे और साथियो को वुरहानपुर मे छोड़ कर राजा जयसिंह और गजसिंह सहित, जो लाचारी से उनके साथ थे, माडू गया और वहां के सूवेदार मुजफ्फर खां को निकाल कर

वह स्वय वहा का मालिक बन बैठा ।

30 रबी-उल्-अव्वल (मगसिर सुदि 2=गुरुवार, नवम्बर 29, 1627 ई०) को नर्मदा उतर कर शाहजहा गाव सेनूर मे ठहरा । वहा उसको शहरयार की हार की खबर अहमदाबाद के सूबेदार नाहर खा की अर्जी से मिली । नाहर खा को उस लडाई का हाल गुजरात के उन हिन्दुओ के पत्रो आदि से मालूम हुआ था जो तब लाहौर मे थे ।

17 रबी-उस्-सानी (पौष वदि 4=रविवार, दिसम्बर 16, 1627 ई०) को शाहजहा अहमदाबाद पहुचा जहा सवा महीने तक रह कर गुजरात और सिंध का पूरा प्रबध करके ही वहा से रवाना हुआ ।

4 जमादि-उल्-अव्वल (पौष सुदि 6=बुधवार, जनवरी 2, 1628 ई०) को गाव गोगुदा मे राणा कर्णसिंह ने उपस्थित होकर शाहजहां को प्रणाम किया । शाहजहा ने उसका मुल्क और उसका पाच हजारी मनसब पूर्ववत् रखा ।

17 जमादि-उल्-अव्वल (माह बदि 5=मगलवार, जनवरी 15, 1628 ई०) को अजमेर पहुच कर अना सागर के बादशाही महलो मे उतरा और पैदल जाकर (ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ति की) जियारत की और वहा नई मस्जिद बनाने का हुक्म देकर महावत खा को अजमेर का सूबेदार बनाया । अनीराय, राजा भारतसिंह बुंदेला, सैयद बारहा और नूरुद्दीन कुली, जो जहागीर बादशाह के हुक्म से महावत खां के ऊपर नियुक्त होकर अजमेर मे ठहरे हुए थे, शाहजहा की सेवा मे उपस्थित हुए । राजा जयसिंह और गजसिंह भी शाहजहा का अजमेर मे पहुचना सुन कर खानजहां के पास से चल दिये । गजसिंह तो अपने वतन को गया और जयसिंह अजमेर में शाहजहा से आ मिला ।

22 जमादि-उल्-अव्वल (माह वदि 10=रविवार, जनवरी 20, 1628 ई०) को खिदमतपरस्त खा शाहजहा का खास रुक्का लेकर लाहौर में आसफ खा के पास पहुचा । आसफ खां ने उसी दिन शाहजहा के नाम की आन दुहाई फेर (खुतबा पढा) कर बुलाकी को कैद कर दिया । उसके तीसरे दिन रात के वक्त उसी रुक्के मे लिखे अनुसार शहरयार, बुलाकी, बुलाकी के भाई गुरशास्प और सुलतान दानियाल के बेटो, तहमूर्स और होशग को, जो शहरयार के शामिल थे, मरवा डाला ।

26 जमादि-उल्-अव्वल, जुमेरात (माह वदि 13=गुरुवार, जनवरी 24, 1628 ई०) को शाहजहा आगरा पहुचा ।

राज्यारोहण और जुलूसी सन् पहला

(जनवरी 28, 1628 ई० से जनवरी 16, 1629 ई० तक)

8 जमादि-उस्-सानी (माह सुदि 10=सोमवार, फरवरी 4, 1628 ई०) को शाहजहां तख्त पर बैठ कर अबुल मुजफ्फर शहाबुद्दीन मुहम्मद साहिब कीरान सानी शाहजहां बादशाह गाजी के नाम से मशहूर हुआ। सिजदा (साष्टांग दंडवत्) मोकूफ (बंद) होकर आदाब जमींबोस का तरीका बना रहा (अर्थात् बादशाह के हजूर में हाजिर होवे तब दोनों हाथ जमीन से लगा कर चूम लें)।

जुलूस के दिन बादशाह ने 60 लाख रुपये तो अपनी बेगमों, बेटो-बेटियों को और 12 लाख रुपये सैयदों और शेखों वगैरह को प्रदान किये। अमीरों के मनसब में इस प्रकार वृद्धि की :—

1 आसफ खां को मनसब सात हजारी से आठ हजारी—8 हजार सवार दो-अस्पा तीन-अस्पा, चाचा का खिताब, सल्तनत का कुल अधिकार (वकील) और बदर लाहरी जागीर में प्रदान किया।

2. महाबत खां को सात हजारी – सात हजार सवार का मनसब, खान-खाना का खिताब, और नक्कारा, निशान, तूमान-तोग और 4 लाख रुपये इनाम।

3 वजीर खां को पांच हजारी —3 हजार सवार और एक लाख रुपये इनाम।

4 सैयद मुजफ्फर खां —चार हजारी—तीन हजार सवार।

5 दिलावर खां बढ़ेच- चार हजारी—2500 सवार।

6 बहादुर खां रूहेला—चार हजारी—2000 सवार।

7 सरदार खां—तीन हजारी—2000 सवार, खिलअत-सिरोपाव, 30,000 रुपये इनाम, अलम (झंडा) और नक्कारा।

8 राजा बिट्ठलदास राजा गोपालदास गौड़ का बेटा—तीन हजारी—1,500 सवार, झंडा, खासा घोड़ा, हाथी और 30,000 रुपये इनाम।

9 मुजफ्फर किरमानी—3 हजारी - 1200 सवार।

10 राजा मनरूप, राजा जगन्नाथ कछवाहा का बेटा—3 हजारी—1000 सवार, झंडा, घोड़ा और 25,000 रुपये इनाम।

11 कुलीज खां—ढाई हजारी—2000 सवार।

12 ख्वाजा कासिम—ढाई हजारी—2000 सवार।

13 राजा बहादुर खिदमतपरस्त खां– 2 हजारी—1200 सवार।

14 यूसुफ मुहम्मद खां—दो हजारी—1000 सवार।

15 जांनिसार खां—दो हजारी—1000 सवार।

16 लुहरास्प, महावत खा का बेटा—दो हजारी—1000 सवार ।

2 हजारी से कम के मनसबदारो के नाम छोड दिये गये हैं, जिनमे इतने हिन्दू थे —

1 जगमाल, किशनसिंह राठोड का बेटा—डेढ़ हजारी—700 सवार और खिलअत ।

2 राजा द्वारकादास कछवाहा—1 हजारी—800 सवार और खिलअत ।

3. हरदेराम कछवाहा—1 हजारी—650 सवार ।

4 राजा वीरनारायण—1 हजारी—600 सवार ।

5 जैतसिह राठोड – 1 हजारी—500 सवार और 6000 रुपये इनाम ।

6 शिवराम गौड—1 हजारी 500 सवार ।

7 श्यामसिह सीसोदिया—एक हजारी—500 सवार ।

ये सब तो शाहजहा के साथी थे । जहागीर बादशाह के अमीरो में से, जो उस दिन हाजिर थे, उनके भी मनसव बहाल रहे और कुछ की वृद्धि भी की गई । जैसे —

1. खान आलम 6 हजारी—5000 सवार ।

2 कासिम खा—5 हजारी 5000 सवार ।

3 लशकर खा 5 हजारी—5000 सवार ।

4 राजा जयसिह, राजा मानसिह का पोता[1]—4 हजारी—3000 सवार।

5 सैयद दिलेर खा 4 हजारी –2500 सवार ।

6 राव सूरसिह भुरटिया बीकानेरी—3 हजारी से 4 हजारी और 2000 से 2500 सवार, हाथी, घोडा, नक्कारा और निशान ।

7 राजा भारत बुदेला—3 हजारी—2000 सवार, खिलअत, जडाऊ जमधर, घोडा और झडा ।

8 मिरजा खा, शाहनवाज खा का बेटा और अब्दुर रहीम खानखाना का पोता—3 हजारी—2500 सवार ।

9 मुस्तफा बेग—3 हजारी—1500 सवार ।

10 बालू खा किरानी—2 हजारी— 1200 सवार ।

11 सैयद वहवा—2 हजारी—1200 सवार ।

12 अलीकुली खा—2 हजारी – 1200 सवार ।

13 पहाडसिह बुदेला—2 हजारी—1200 सवार ।

14 नूरुद्दीन कुली—2 हजारी—700 सवार ।

इलाही वर्ष और महीने अकबर बादशाह के वक्त से जारी हुए थे; बाद-

---

1. राजा जयसिंह राजा मानसिंह का प्रपौत्र और मानसिंह के ज्येष्ठ पुत्र जगतसिंह के पुत्र महासिंह का लडका था ।(स०) ।

शाह ने उनका प्रयोग बंद करके हिजरी वर्ष और महीने फिर जारी किये और अपने जुलूसी वर्षों की गणना ता० 1 जमादि-उस्-सानी, सन् 1037 हिजरी (माह सुदि 2, संवत् 1684=सोमवार, जनवरी 28, 1628 ई०) से की जाने का आदेश दिया गया।

17 जमादि-उस्-सानी (फागुन वदि 4=बुधवार, फरवरी 13, 1628 ई०) को राजा गजसिंह अपने वतन जोधपुर से बादशाह के पास उपस्थित हुआ। बादशाह ने खासा खिलअत, जडाऊ खजर फूल कटारे समेत, जडाऊ तलवार, सुनहरी जीन का खासा घोडा, खासा हाथी और नक्कारा, निशान प्रदान कर के पाच हजारी—पाच हजार सवार का उसका मनसब, जो जहांगीर बादशाह के वक्त से था, पूर्ववत् रक्खा।

इन्हीं दिनो मे राणा कर्णसिंह के मरने की खबर पहुची। बादशाह ने उनके बेटे जगतसिंह को पाच हजारी—पाच हजार सवार का मनसब, राणा का खिताब, खासा खिलअत, जडाऊ जमधर (पुरानी किस्म की कटार) फूल कटारे समेत, जडाऊ तलवार, खासा घोडा, खासा हाथी सोने और चादी के सामान से और फरमान दिलासा का, राजा वीरनारायण के साथ भेजा, और जो कुछ मुल्क उसके वतन के रूप में उसके बाप को जागीर मे पाच हजारी जात और पाच हजार सवार के वेतन के अनुसार दिया गया था, वह उसको इनायत हुआ।

1 रजब (फागुन सुदि 3=बुधवार, फरवरी 27, 1628 ई०) को आसफ खा शाहजादो और बादशाही सेनाओं को लेकर लाहौर से आया। उस दिन बादशाह ने बडी खुशी की और अमीरो के मनसब बढाये, उनमे राजपूतो को नीचे लिखे अनुसार मनसब और खिलअत वगैरह मिले :—

1 बिहारीदास कछवाहा—खिलअत और डेढ हजारी जात—700 सवार का मनसब।

2 राजा रोज अफजू—खिलअत और डेढ हजारी—600 सवार का मनसब।

3 राजा गिरधर—खिलअत और 1 हजारी—500 सवार का मनसब।

4 जादोराय (जादव) काटिया—5 हजारी—5000 सवार का मनसब।

5 जुझारसिंह, राजा वीरसिंहदेव बुंदेला का बेटा—4 हजारी—4000 सवार का मनसब।

6. ऊदाजीराम दक्खिनी—4 हजारी—4000 सवार का मनसब।

7 राजा जगतसिंह, राजा बासू का बेटा—3 हजारी—500 सवार का मनसब।

8 मलवतराव दक्खिनी—2 हजारी—1000 सवार का मनसब।

9. रावल कल्याण जेसलमेरी—2 हजारी—1000 सवार का मनसव।

10 रावल पूजा– 1 हजारी—500 सवार का मनसव।

11 शत्रुसाल, माधोसिंह कछवाहा का वेटा—1 हजारी—हजार सवार का मनसव।

12 विक्रमाजीत, जुझारसिंह बुंदेला का वेटा—1 हजारी—हजार सवार का मनसव।

13. रावल समरसी—हजारी—हजार सवार का मनसव।

14. बलभद्र शेखावत—हजारी—600 सवार का मनसव।

15. किशनसिंह—हजारी—600 सवार का मनसव।

16. माधोसिंह, राव रतन हाडा का वेटा—हजारी—600 सवार का मनसव।

17. भारमल, किशनसिंह राठोड का वेटा—हजारी—500 सवार का मनसव।

18 गुरसेन (कुंवरसेन), किश्तवार[1] का राजा, हजारी—200 सवार का मनसव।

19 करमसी राठोड—हजारी—500 सवार।

8 रजव (फागुन सुदि 10=बुधवार, मार्च 5, 1628 ई०) को राव रतन हाडा अपने वतन से आकर वादशाह के पास हाजिर हुआ। वादशाह ने उस का 5 हजारी—5 हजार सवार का मनसव वहाल रखा और खिलअत, जडाऊ जमघर, नक्कारा, निशान सोने के साज का घोडा प्रदान किया।

इसी दिन भीम राठोड का मनसव डेढ हजारी—700 सवार और पृथ्वीराज राठोड का डेढ हजारी—600 सवार का हो गया।

राजा भारत बुंदेला को परगना इटावा की फौजदारी का खिलअत मिला।

पठानो ने कावुल के सूवेदार जफर खा को खेंवर के घाटे मे लड कर हरा दिया। इसलिए वादशाह ने लशकर खां को कावुल का सूवेदार नियुक्त करके 15,000 फौज के साथ भेजा।

12 रजव (फागुन सुदि 15=रविवार, मार्च 9, 1628 ई०) को सूरज मेष राशि मे आया। यह पहिला नौरोज था, इसलिए उसका उत्सव वडी धूमधाम से मनाया गया उसमे वडी-वडी वख्शिशें दी गईं और कृपा की गई, जिनके संवध मे 'वादशाह नामा' मे लिखा है कि "वादशाह ने तख्त पर वैठने के दिन से नौरोज तक 1 करोड 80 लाख रुपये का नकद, जिन्स, गहना और हथियार वगैरह सामान वख्शा था। उनमे से 1 करोड 60 लाख तो

1. किश्तवार हिमालय के पहाडो मे चद्रभागा नदी की घाटी में स्थित है। (स०)

मुमताज जमानी बेगम और शाहजादों को, और 20 लाख का अन्य सब सेवकों को मिला था।

नौरोज के दिन महाराजा भीमसिंह सीसोदिया का बेटा और राणा अमरसिंह का पोता रायसिंह उपस्थित हुआ। बादशाह ने उसके बाप की खिदमतों का ध्यान करके उसके उम्र में छोटे होने पर भी उसको बड़ा भारी खिलअत, जड़ाऊ, जमधर, दो हजारी—हजार सवार का मनसब, राजा का खिताब हाथी, घोड़ा और 20,000 रुपया नकद इनायत फरमाया।

24 रजब (चैत वदि 11, संवत् 1685=शुक्रवार, मार्च 21, 1628 ई०) को बादशाह ने वीरसिंहदेव बुंदेला के बेटे नरहरदास को पांच सदी—200 सवार का मनसब दिया।

18 शाबान (वैसाख वदि 5, संवत् 1685=रविवार, अप्रैल 13, 1628 ई०) को बादशाह ने दिलेर खां और राजा जयसिंह को खिलअत वगैरह देकर महावन के विद्रोहियों के विरुद्ध भेजा (संभवतः ये विद्रोही जाट थे)।

जुझारसिंह बुंदेला, राजा वीरसिंहदेव के बेटे ने अपने वतन से आकर दरबार में उपस्थित होकर हजार मुहरें और 1 हाथी नजर किये। बादशाह ने उसको जड़ाऊ जमधर फूल कटारे समेत, और नक्कारा, निशान इनायत फरमाया।

पहाड़सिंह, राजा वीरसिंहदेव के दूसरे बेटे को हाथी इनायत हुआ।

15 रमजान (जेठ वदि 2=शनिवार, मई 10, 1628 ई०) को महाबत खां खानखाना दक्षिण बरार और खानदेश का सूबेदार नियुक्त हुआ और यहां के पिछले सूबेदार खानजहां को मालवा की सूबेदारी दी गई।

बुखारा के खान इमामकुली के भाई, नजर मुहम्मद खां ने काबुल पर चढ़ाई की, रास्ते में जुहाक के किलेदार खजर खां ने लड़ कर उसको हराया, तब भी उसने 15 शव्वाल (आषाढ़ वदि 2=रविवार, जून 8, 1628 ई०) को काबुल घेर लिया।

18 शव्वाल (आषाढ़ वदि 4=मंगलवार, जून 10, 1628 ई०) की रात को जुझारसिंह बुंदेला अपने वतन की तरफ भाग गया।

3 जीकाद (आषाढ़ सुदि 4=बुधवार, जून 25, 1628 ई०) को कासिम खां और राजा जयसिंह महावन के फसादियों को सजा देकर आ गये।

4 जीकाद (आषाढ़ सुदि 6=गुरुवार, जून 26, 1628 ई०) को राजा वीरसिंहदेव बुंदेला के बेटों, चंद्रमन और भगवानदास प्रत्येक को हजारी जात और छः सौ सवारों के मनसब मिले।

8 जीकाद (आषाढ़ सुदि 10=सोमवार, जून 30, 1628 ई०) को

बिहारीदास कछवाहे का मनसब असल और इजाफे से डेढ हजारी—हजार सवार का हो गया।

बादशाह ने महाबत खा खानखाना, राव रतन हाडा, राजा जयसिंह, राव सूर भुरटिया, और मोतमिद खा को 20,000 सवारो से नजर मुहम्मद खा के विरुद्ध भेजा।

4 जिलहिज (सावन सुदि 6=शनिवार, जुलाई 26, 1628 ई०) को प्रताप उज्जैनिया को डेढ हजारी जात—हजार सवार का मनसब, राजा का खिताब और हाथी इनायत हुए।

7 जिलहिज (सावन सुदि 9=मगलवार, जुलाई 29, 1628 ई०) को करमसी राठोड पाच सदी जात—300 सवार के इजाफे से डेढ हजारी जात—800 सवार का मनसबदार हो गया।

खिलोजी भोंसला, निजामुल्मुल्क का सरदार, खानखाना के बेटे खानजमा के पास दक्षिण मे हाजिर होकर बादशाही नौकर हो गया। बादशाह ने उसके वास्ते पाच हजारी जात—पाच हजार सवार का मनसब, आश्वासनो से पूर्ण फरमान और खिलअत, जडाऊ जमधर, नक्कारा, निशान, हाथी और सुनहरी साज का घोडा भेजा।

राजा गजसिंह के बेटे अमरसिंह को हाथी इनायत हुआ।

राजा भारत बुदेले को नक्कारा मिला।

मुहर्रम 9, शुक्रवार (भादो सुदि 10=अगस्त 29, 1628 ई०) के दिन काबुल के सूबेदार लशकर खां ने धावा करके नजर मुहम्मद खा उजबक को भगा दिया। इस खबर के पहुचने पर बादशाह ने खानजहा को लौट आने का हुक्म लिखा, जिस पर वह सरहिंद से लौट कर 6 रबी-उल्-अव्वल (कातिक सुदि 7=शुक्रवार, अक्तूबर 14, 1628 ई०) को बादशाह के दरबार मे हाजिर हो गया।

बादशाह ने दोस्ती का खत और डेढ लाख रुपये की सौगात तूरान के मालिक इमाम कुली खा के पास हकीम हमाम के बेटे हकीम हाजिक के साथ भेजी।

जुझारसिंह बुदेला ने ओरछा पहुच कर लडाई की तैयारी की। बादशाह ने महाबत खा खानखाना को 10,000 सवार, 2000 बदूकची और 500 बेलदार देकर उसके विरुद्ध भेजा। सैयद मुजफ्फर खा, दिलावर खा, राजा रामदास नरवरी, भगवानदास बुदेला, जैत सूर वगैरह को उसके साथ भेजा, और मालवा के सूबेदार खानजहा लोदी को लिखा कि उस सूबे की सेना और राजा विट्ठलदास गौड, अनीराय सिहदलण, माधोसिंह कछवाहा के बेटे शत्रुसाल, बलभद्र शेखावत, राजा गिरधर और राजा भारत बुदेला के साथ (जिसके दादा से जहांगीर बादशाह ने ओरछा का राज्य छीन कर बीरसिंह देव को दे दिया था), चदेरी के रास्ते से ओरछा जावे। इस फौज मे 8000

सवार, 2000 पैदल और 500 बेलदार थे। कन्नौज के जागीरदार अब्दुला खा बहादुर के नाम भी पूरब की तरफ से सात हजार सवार, दो हजार पैदल और पांच हजार बेलदार के साथ ओरछा जाने का हुक्म पहुँचा। बहादुर खा रुहेला, राव सूर भुरटिया, पहाड़सिंह बुंदेला, किशनसिंह भदोरिया और आसिफ खा के दो हजार सवार इस फौज मे तैनात हुए। इस तरह कुल 27,000 सवार, 6,000 पैदल बंदूकची और 1,500 बेलदार तीन तरफ से ओरछा पर गये।

23 रबी-उल् अव्वल, सोमवार (मगसर वदि 10=नवम्बर 10, 1628 ई०) को बादशाह ने भी आगरे से ग्वालियर के लिए कूच किया।

18 रबी-उस् सानी (पोष वदि 5=शुक्रवार, दिसम्बर 5, 1628 ई०) को बादशाह ग्वालियर पहुचे। किले मे बहुत से कैदी थे। बादशाह ने इनके कसूरों की जाच करके, जो नहीं छोडने के लायक थे, उनको रख कर बाकी को छोड दिया।

जब खानखाना ग्वालियर से चल कर ओरछा से 16 कोस और खानजहां लोदी नरवर से गाव कछार तक, जो ओरछा से 3 कोस है, पहुचा। उधर अब्दुल्ला खा ने कालपी से चल कर एरछ का किला, जो ओरछा से 16 कोस है, फतह कर लिया, तब तो जुझारसिंह ने तग होकर महाबत खा को लिखा कि "जो मेरे कसूर माफ कर दो तो मैं अब उमर भर दरगाह मे हाजिर रह कर बदगी करूगा।" महाबत खा ने बादशाह को अर्जी लिखी और दूसरे अमीरो और वजीरो ने भी सिफारिश की तो बादशाह ने जुझारसिंह के कसूर माफ कर दिये। बहादुर खा और पहाड़सिंह बुंदेला को एरछ फतह करने के इनाम मे नक्कारे प्रदान किये।

निजामुल्मुल्क ने बादशाह का हुक्म पहुचने पर बालाघाट का मुल्क छोड दिया। मगर बीड का किला उनके किलेदार सैयद कमाल ने नहीं छोडा। तब खानजमा ने बुरहानपुर से जाकर उसको निकाल दिया।

शाहजी भोंसला निजामुल्मुल्क के कहने से छ सौ सवारो के साथ देवगढ के इलाके में आकर लूट-मार करने लगा, मगर दरया खा रुहेला ने धावदे मे जाकर उसको भगा दिया।

जुलूसी सन् दूसरा

(जनवरी 17, 1629 ई० से जनवरी 5, 1630 ई० तक)

23 जमादि-उस्-सानी (फागुन वदि 11=रविवार, फरवरी 8, 1629 ई०) को बादशाह ग्वालियर से कूच करके 1 रजब (फागुन सुदि 2=रविवार, फरवरी 15, 1629 ई०) को आगरा पहुचा। इसी दिन महाबत खा ने जुझारसिंह के गले मे रुमाल डाल कर उसे हाजिर किया, जुझारसिंह ने 1000 मोहरें और 15,00,000 रुपये जुरमाने के जमा कराये। उसको यह भी हुक्म हुआ था कि अपने तमाम हाथी हाजिर कर देवे, इसलिये 40 हाथी भी नजर से गुजराये। बादशाह ने दीवानो को हुक्म दिया कि इसके पास जो मुल्क हैं, उनमे से 4 हजारी—4 हजार सवार के मनसब के वेतन के बराबर तो बहाल रखें और बाकी खानजहा लोदी, अब्दुल्ला खा बहादुर, सैयद मुजफ्फर खा और पहाडसिंह बुदेला की तलब मे लिख देवें। जुझारसिंह को हुक्म हुआ कि 2000 सवार और 2000 हजार पैदल बदेलों को लेकर वह दक्षिण मे शाही सेवा करे और पडोसियों का, जो मुल्क उसने बलात् दबा लिया है, उसको छोड दे और फिर कभी उसकी तरफ न देखे।

1 रजब (फागुन सुदि 2=रविवार, फरवरी 15, 1629 ई०) को दूसरा जुलूसी सन् शुरू हुआ।[1] पहिले सन् मे बादशाह ने 4 लाख बीघे जमीन और 120 गाव खैरात किये थे।

14 रजब (चैत वदि 1=शनिवार, फरवरी 28, 1629 ई०) को खिलोजी के भाई परसूजी को तीन हजारी जात—डेढ हजार सवार का मनसब इनायत हुआ।

सफर 5 (आसोज सुदि 7=रविवार, सितम्बर 13, 1629 ई०) को आसफ खा वजीर तिरहुत के दो ब्राह्मणो को दरबार में लाया और अर्ज की कि ये दोनो दस-दस श्लोक, जो दस कवियो ने नये बनाये हो और किसी को भी सुनाये न हो, एक बार सुन लेने पर याद रख लेते हैं और फिर उनको उसी अनुक्रम से जैसे कि उन कवियों ने पढे हो सुना कर 10 श्लोक और अपनी तरफ से उसी चाल और उसी आशय के नये कह देते हैं। बादशाह ने उनके इस अद्भुत अभ्यास की परीक्षा ली तो जैसा सुना था वैसा ही उन्हे पाया। इसलिए दोनो को खिलअत और 1000 रुपये देकर विदा किया।

26 सफर, रविवार (कार्तिक वदि 13=शनिवार, अक्तूबर 3, 1629 ई०) की रात को खानजहा लोदी आगरे से भाग गया। बादशाह ने उसके पीछे

---

1 शाहजहां का जुलूसी सन् ता० 1 जमादि-उस्-सानी से ही बदलता था, ता० 1 रजब से नहीं। पा० ना० 1-अ, पृ० 110-112। (संपादक)।

ख्वाजा अबुल हसन को बहुत सी फौज देकर भेजा, जिसमें इतने राजपूत सरदार थे :—1. राजा जयसिंह, 2. राव सूर भुरटिया, 3. राजा विट्ठलदास गौड, 4. राजा भारत बुंदेला, 5. माधोसिंह हाडा, 6. भीम राठोड, 7. पृथ्वीराज राठोड, 8. राजा बीरनारायण, और 9. राय हरचंद पड़िहार।

सबसे पहिले सैयद मुजफ्फर खां, राजा विट्ठलदास गौड, खिदमतपरस्त खां, पृथ्वीराज राठोड धावा करके धौलपुर में उसके पास पहुंचे। खिदमतपरस्त खां तो मारा गया। राजा विट्ठलदास गौड का भाई गिरधरदास और राजपूतों के दूसरे लोग पैदल होकर व्यवस्थित रूप से लड़ने को खड़े हुए। दुश्मनों को मारा और स्वयं भी जख्मी हुए। राजा विट्ठलदास के दो भाई और 100 के लगभग मुगल और राजपूत काम आये। ठीक लड़ाई के वक्त पृथ्वीराज की, जो पैदल था और खानजहां, जो घोड़े पर सवार था, मुठभेड़ हो गई। दोनों बर्छी से लड़े और जख्मी हुए। आखिर में खानजहां भाग गया। राजा जयसिंह और खानजमां वगैरह ने उनका पीछा किया।

लौट आने का बादशाह का हुक्म घायलों को पहुंचा। जब वे हाजिर हुए तो राजा विट्ठलदास को जड़ाऊ जमधर, धोप, नक्कारा, चांदी के समान सहित घोड़ा और हाथी इनायत होकर 500 सवार का इजाफा हुआ, जिससे अब उसका कुल मनसब 3 हजारी—2 हजार सवार का हो गया।

पृथ्वीराज को खिलअत, हाथी, घोड़ा मनसब में 500 जात और 800 सवार का इजाफा हुआ।

रावत दखिनी दक्षिण के सूबेदार इरादत खां की प्रार्थना पर 2 हजारी जात—1500 सवार का मनसबदार बना दिया गया।

खानजहां चंबल नदी से उतर कर जुझारसिंह बुंदेला के मुल्क में गया और उसके बेटे विक्रमाजीत ने उसको अज्ञात रास्तों से अपने मुल्क से निकाल दिया।

मुल्ला फरीद दिल्ली वाले ने किताब 'जिज शाहजहानी'[1] तैयार की। बादशाह ने उसका हिन्दी में भाषान्तर करा कर हुक्म दिया कि इसके अनुसार पंचांग बनाए जावें। इससे पहिले फारसी पंचांग 'जिज उलूग बेगी' के अनुसार बनाये जाते थे।

खानजहां के बुंदेलखण्ड, गोंडवाना और बालाघाट होकर निजामुल्मुल्क के पास पहुंचने की खबर सुन कर बादशाह 8 जमादि-उल्-अव्वल, सोमवार (पौष सुदि 9 = दिसम्बर 14, 1629 ई०) को आगरा से दक्षिण की तरफ रवाना हुए। अमरसिंह का मनसब 2 हजारी जात—1300 सवारों का हो गया।

1. [illegible]

जुलूसी सन् तीसरा

(जनवरी 6, 1630 ई० से दिसम्बर 25, 1630 ई० तक)

20 जमादि-उस्-सानी (माह बदि 8=सोमवार, जनवरी 25, 1630 ई०) को बादशाह ने खानदेश पहुच कर याकूत हबशी को 1 लाख, खिलोजी को 50 हजार और ऊदाजीराम को 40 हजार रुपये इनायत किये और मालूजी को 5 हजारी—5000 हजार सवार का मनसब दिया।

20 रजब (चैत बदि 7=मंगलवार, फरवरी 23, 1630 ई०) को बादशाह ने आसेर से तीन फौजें तीन बड़े-बडे सरदारो के सेनापतित्व मे निजामुलमुल्क और खानजहा लोदी पर भेजी।

पहिली फौज का सेनापति दक्षिण के सूबेदार इरादत खा को बनाया गया, जिसमे इतने हिन्दू अमीर थे —1 जुझारसिह बुदेला, 2 राव दूदा चद्रावत, 3 माधोसिह कछवाहा का बेटा, शत्रुसाल, 4 करमसी राठोड, 5 राजा द्वारकादास कछवाहा, 6. बलभद्र शेखावत, 7. श्यामसिह सीसोदिया, 8. राजा गिरधर, 9. मलूकसिह राय मनोहर का पोता, 10 रामचन्द्र हाडा, 11 जगन्नाथ राठोड, 12. मुकददास जादो, 13 उदयसिह राठोड, 14. खिलोजी, 15 मनहाजी (?), मालू जी भोंसला का भाई और 16 परसूजी भोंसला। कुल 20 हजार सवार।

दूसरी फौज राजा गजसिह राठोड के नेतृत्व में, जिसमे इतने हिन्दू-मुसलमान अमीर थे —

1 नसरत खा, 2 बहादुर खा रुहेला, 3 राजा विट्ठलदास, 4 अनीराय बडगूजर, 5 राजा मनरूप कछवाहा, 6 जानिसार खा, 7 रावल पूजा, 8 शरीफ, 9 भीम राठोड, 10 राजा बीरनारायण बडगूजर, 11 अहदाद मुहम्मद, 12 खानजहा काकड, 13 खिजर खा, 14. उस्मान रुहेला, बहादुर खा का चाचा, 15 हबीब सूर, 16 मीर फैजुल्लाह, 17. गोकुलदास सीसोदिया, 18 नूर मुहम्मद अरब, 19 मुहमद शरीफ हुसैनी, 20 करीमदाद बेग काकशाल, 21. जयराम अनीराय का बेटा, 22 नरहरदास झाला, 23 राय हरचद पडिहार, 24 मुहम्मदशाह, 25 ऊदाजीराम और 26. बेलाजी (?), ऊदाजी का भाई। यो कुल 15,000 सवार।

तीसरी फौज शायस्ता खा के नेतृत्व मे, जिसमे इतने हिन्दू थे —

1 राजा जयसिह, 2 राव सूर भुरटिया, 3 पहाडसिह, 4 माधोसिह राव रतन का बेटा, 5 राजा रोज अफजू, 6 चद्रमन बुदेला, 7 राजा किशनसिह, 8 भगवानदास बुदेला, 9 नरहरदास बुदेला, 10 राव रतन, 11. राणा जगतसिह का चाचा, दुर्जनसिह, 500 सवारो से। कुल 15,000 सवार।

विदा होते वक्त बादशाह ने सब सरदारों को बहुत सी नसीहतें दीं। जुझारसिंह और ऊदाजीराम का हजारी जात और हजार-हजार सवार का इजाफा करके दोनों का पांच हजारी जात और पांच-पांच हजार सवारों का मनसब कर दिया।

पृथ्वीराज राठोड का मनसब असल और इजाफे से 2 हजारी—2 हजार सवार का हो गया।

12 शाबान (चैत सुदि 14, संवत् 1687=बुधवार, मार्च 17,1630 ई०) को राव रतन हाडा को, मनसबदारों, अहदियों, तीरन्दाजों और बर्कंदाजों के 10,000 सवारों के साथ तिलगाना की तरफ इस विचार से भेजा कि पायीन घाट के परगने बासम, इलाके बरार में, रह कर दुश्मनों का रास्ता बंद कर दें और मौका देख कर तिलगाना को भी जीत लें।

इस सेना मे इतने अमीर थे :—

वजीर खां, राजा भारत बुंदेला, सफदर खां, शाहबाज खां, फरहाद खां, राजा रामदास नरवरी, जैतसिंह राठोड, मुबारक खां न्याजी, अब्दुर्रहमान रुहेला, अमान बेग, इन्द्रसाल राव रतन का पोता, कासिम बेग, शमसुद्दीन, ईश्वरदास सीसोदिया और उदयसिंह।

24 शाबान (वैशाख वदि 11—सोमवार, मार्च 29, 1630 ई०) को राव दूदा असल और इजाफे से 2 हजारी—डेढ हजार सवार का मनसबदार हो गया। उसको झंडा भी इनायत हुआ। रूपचंद गुलेरी का मनसब हजारी—600 सवार का हो गया।

21 रमजान (जेठ वदि 9—रविवार, अप्रैल 25, 1630 ई०) को बादशाह ने ख्वाजा अबुलहसन को 8000 सवारों से नासिक, त्र्यम्बक और सगमनेर फतह करने को भेजा। पृथ्वीराज राठोड भी उसके साथ गया।

11 शव्वाल (जेठ सुदि 13=शुक्रवार, मई 14, 1630 ई०) को राजा भारत बुंदेला के 500 सवारों का इजाफा हुआ और अब उसका मनसब 3 हजारी—3 हजार सवार का हो गया।

12 शव्वाल (जेठ सुदि 14=शनिवार, मई 15, 1630 ई०) को शायस्ता खां की जगह अब्दुल्ला खां बहादुर बालाघाट का अधिकारी होकर गया और आजम खां के साथ अनबन के कारण से शायस्ता खां को पीछे बुला लिया गया।

23 शव्वाल (प्रथम आषाढ वदि 10=बुधवार, मई 26, 1630 ई०) को जुझारसिंह और पहाड़सिंह बुंदेला को राजा का खिताब मिला।

गनीम बादशाही फौज से लड़े और भागे। उस दिन मुल्तफित खां, राव दूदा, मनुलाल गढ़वाला, परमजी, बनवाड मेनावत और राजा गिरधर,

वगैरह राजपूत सरदार, जो चदावल मे थे, गोल अर्थात् मध्य फौज से 2 कोस दूर जा पडे। वहा विद्रोही खानजहा, दरिया खा, बहलोल और मुकर्रब खा 12,000 सवारो के साथ घात लगाये खडे थे। इनको असावधान देख कर उन पर वे टूट पडे। मगर कुछ मुगल और राजपूत उन से खूब लडे। मुगलो मे से जासिपार खा का बेटा इमाम कुली और शुजाअत खा अरब का बेटा रहमानुल्ला और राजपूतो मे से माधोसिह कछवाहा का बेटा और राजा मानसिह कछवाहा का भतीजा, शत्रुसाल, अपने दो बेटो भीमसिह, आनदसिह सहित और राव मालदेव के पुत्र चद्रसेन राठौड का पोता करमसी, बलभद्र शेखावत और राजा गिरधर, जगन्नाथ राठौड, जो केशवदास का बेटा और चित्तोड के जुझार (वीर-योद्धा) जयमल मेडतिया का पोता था, बहादुरी के साथ काम आये। राजा गिरधर शेखावत का पोता राजा द्वारकादास जख्मी हुआ। मुल्तफित खा, राव दूदा, जो राव चांदा का पोता था, और कुछ और भी अमीर मैदान छोड कर भाग खडे हुए। जो काम आये थे, उनके उत्तराधिकारियो को बादशाह ने मनसब और उनके वतन जागीर मे दिये। राजा द्वारकादास का मनसब बढा कर डेढ हजारी—हजार सवार का कर दिया।

23 जीकाद (द्वितीय आसाढ़ बदि 10=शुक्रवार, जून 25, 1630 ई०) को हरदेराम कछवाहा का मनसब असल और इजाफे से एक हजारी जात और 500 सवार का हो गया।

26 जीकाद (द्वितीय आसाढ बदि 13=सोमवार, जून 28, 1630 ई०) को मगूजी दक्खिनी 3 हजारी—डेढ हजार सवार और शत्रुसाल 6 सदी—300 सवार के मनसबदार हुए।

हाबाजी को हाथी इनायत हुआ। यह दक्खिनी सिपाहियो मे बडा बहादुर था।

23 जिलहिज (सावन बदि 10=शनिवार, जुलाई 24, 1630 ई) को बादशाह ने नसीरी खा को, जो पहिले गजसिह के साथ तैनात हुआ था, 4 हजारी—3 हजार सवार का मनसब और खिलअत देकर राव रतन हाडा की जगह तिलगाना लेने और कधार का किला फतह करने के लिए भेजा।

राजा गजसिह हुक्म पहुचने पर दरगाह मे हाजिर हो गया। जादोराय दक्खिनी, जो अपने भाई-बेटो-पोतो और सबधियो के साथ बादशाही दरगाह मे कुल 24 हजारी जात और 15 हजार सवारो का मनसबदार था और दक्षिण मे उमदा 2 जागीरें पाकर बडे आराम से रहता था। मगर इस वक्त अपने पुरातन मालिक निजामुल्मुल्क को उस पर बादशाही फौजो की चढ़ाइयो के कारण तकलीफ मे देख कर अपने सब भाई-बन्दो के साथ निजाम के पास चला गया। निजाम ने कुछ आदमियो को छिपा कर उसे बुलाया। वह अपने

पूरे खानदान के साथ वहा गया, तब उन आदमियो के साथ उनकी लडाई हुई। जादोराय अपने दो बेटो अचला और राघोराव तथा पोते यशवतराव समेत मारा गया। उसका भाई जगदेवराय, बेटा बहादुरजी और उसकी औरत गिरजावाई आदि सब दौलताबाद से भाग कर जालने के पास, जहा कि इनका वतन था और जादोराय ने किला बनाया था, चले गये और बादशाह को अर्जी भेजी। बादशाह ने आजम खा को लिखा कि "इनको बादशाही सेवको मे सम्मिलित कर लो और इनके वास्ते जो भी प्रार्थना करोगे वह स्वीकृत कर ली जायेगी।" आजम खा ने याकूत खा और ऊदाजीराम को उस हुक्म की नकल देकर जादोराय के मुखतार कुतबी (दोहेती) के साथ भेज कर उन लोगो को बुलाया। जब वे हाजिर हुए तो याकूत खा, ऊदाजीराम और खिलोजी भोंसला को पेशवाई के लिए भेजा। वे उनको सेना मे ले आये। बादशाह ने आजम खा की प्रार्थना पर 4 हजारी जात—3 हजार सवार का मनसब जगदेवराय को और 3 हजारी—डेढ हजार सवार का मनसब, जो यशवत राय का था, उसके भाई तिलगराय (पतंगराय) को दिया और उनके दादा के नाम पर उसका नाम भी जादोराय रक्खा। अचला जी का मनसब 2 हजारी —हजार सवार का उसके बेटे विठोजी को दिया और 1 लाख 30 हजार रुपये खर्च के लिए इनायत करके दक्षिण, बरार और खानदेश में अच्छी-अच्छी जागीरें दी। जादोराय की जमींदारी भी बहाल रखी, ताकि इनकी जमैयत तितर-बितर न होने पायें।

जमाल खा रुहेला, खानजहा लोदी के लिखने से बगश, तिराह, यूसुफजई और तारीकी वगैरह बहुत से पठानो को लेकर 12 जिल्हिज (आसाढ सुदि 14=मगलवार, जुलाई 13, 1630 ई०) को पेशावर पर चढ आया, लेकिन पेशावर और कोहाट के हाकिम सईद खा ने उसको हरा कर भगा दिया।

4 सफर (भादों सुदि 6=गुरुवार, सितम्बर 2, 1630 ई०) को राव रतन वासम से बादशाह के पास लौट आया।

7 सफर (भादो सुदि 8=रविवार, सितम्बर 5, 1630 ई०) के दिन अनीराय को राजा का खिताब इनायत हुआ, क्योंकि इसका पिता राजा हरनारायण मर गया था। अनीराय का असली नाम अनूपसिंह था। उसको अनीराय सिंहदलण की पदवी जहागीर बादशाह ने दी थी, जब कि उसने एक शेर को बड़ी बहादुरी से मारा था।

निजाम का नौकर रवीराय नारूजी तिलगाना की सेना में आ मिला। बादशाह ने नसीरी खा की अर्ज से उसको 2 हजारी जात—हजार सवार का मनसब दिया।

जुलूसी सन् चौथा

(दिसम्बर 26, 1630 ई० से दिसम्बर 14, 1631 ई०)

पीरा उज्जैन और सिरोज होकर बुंदेलो के देश मे कालपी तक पहुचा। अब्दुल्ला खा और मुजफ्फर खा उसके पीछे लगे हुए थे। पहिले पीरा आगरा से भागा था, तो जुझारसिंह के बेटे विक्रमाजीत ने उसको अपने राज्य में से राह दे दी थी, जिससे वह दक्षिण पहुच गया था और इसलिए जुझारसिंह पर बादशाह बहुत क्रुद्ध हो गये थे। अब पीरा पुन इधर आया तो विक्रमाजीत ने वह पिछली लज्जा मिटाने के लिए 17 जमादि-उस्-सानी (माह वदि 4=मगलवार, जनवरी 11, 1631 ई०) को उसका पीछा किया और उसके चदावल (पिछली सेना) के सरदार दरिया खा को जा मिलाया। दरिया खा को तो बड़ा घमड था। वह कब बुंदेलो को खयाल मे लाता था। तत्काल घोडे मोड कर विक्रमाजीत का सामना किया, मगर एक गोली ने उसका काम तमाम कर दिया, और उसका बेटा भी उसी जगह मारा गया। दरिया को पीरा समझ कर सब बुंदेले उसी के ऊपर टूट पडे और अवसर पाकर पीरा निकल गया। विक्रमाजीत ने दरिया का सिर बादशाह के पास भेजा। इस लडाई मे 400 पठान और 200 बुंदेले मारे गये। बादशाह ने विक्रमाजीत को जुगराज पदवी देकर एकदम से हजारी जात—1000 सवारो की वृद्धि कर दी, जिससे उसका मनसब दुगना हो गया। साथ ही उसके वास्ते सुन्दर ब्राह्मण कविराय के साथ खिलअत, जडाऊ तलवार, झडा और नक्कारा भेजा।

आजम खा ने घाट से उतर कर मुल्तफित खा और मालूजी भौंसले को धारूर का किला फतह करने को भेजा। फिर खाई के पास पहुच कर उसने राजा जुझारसिंह के बुंदेलों को हाथियो के पकडने के वास्ते भेजा, जो खाई मे दिखाई दिये थे। वहा पहुच कर वे 4 हाथी, घोडे, ऊट, बैल, और बहुत सा असबाब लूट लाये। इसी तरह दूसरी बार भी कुछ हाथी और बहुत से घोडे इन लोगो के हाथ लगे। आजम खा ने हाथी तो बादशाही सरकार के वास्ते रख लिये और घोडे वगैरह उन्ही के पास रहने दिए।

23 जमादि-उस्-सानी, सोमवार, (माह वदि 10=जनवरी 17, 1631 ई०) को आजम खा ने धारूर का किला निजाम के आदमियो से छीन लिया। इसके इनाम मे राजा जुझारसिंह को भी घोडा और खिलअत मिला। बादशाह के इशारे से आदिल खा ने उसकी सरहद से मिले हुए निजाम के मुल्को पर अमल करने के वास्ते अपने सेनापति रणदौला खा को भेजा, तब वह आकर आजम खा से मिला।

28 जमादि-उस्-सानी (माह बदि 30=शनिवार, जनवरी 22, 1631ई०) को इलाके रीवा के गाव नीमी[1] मे बादशाही फौज का पीरा से मुकाबला हुआ। उसमे राजा द्वारकादास बडी वीरता से लडता हुआ काम आया। पीरा के हाथियो मे से 20 बाघो के राजा अमरसिह के हाथ लगे, जो उसने बादशाह के पास भेज दिये।

1 रजब, सोमवार, (माह सुदि 2=सोमवार, जनवरी 24, 1631 ई०) को बादशाह ने द्वारकादास के बेटे नरसिहदास को पाच सदी जात—400 सवार का मनसब दिया। इसी दिन मुजफ्फर खा ने कालिजर के इलाके में सिंघ नदी के किनारे पर पीरा को जा लिया। माधोसिह हरावल मे था, सो मुकाबले के समय पीरा माधोसिह के बर्छे से मारा गया।

निजाम ने रणदौला को शोलापुर का किला देना तय करके बादशाही फौज से लडने को तैयार किया। वह आजम खा का साथ छोड कर चला गया। आजम खा बादशाह से और फौज मगवा कर परेंडा के लिए रवाना हुआ।

आजम खा जब परेंडा के पास पहुचा तो 1 कोस पर से उसने राजा जयसिह को आगे भेजा। उसने गाव तलौते को, जो परेंडा के किले से बायें तरफ था, जीत करके लूट लिया। इस गाव के गिर्द 3 गज गहरी खाई, 5 गज ऊची और 3 गज चौडी दीवार थी। उसे हाथी से तुडवा कर राजा अन्दर जा घुसा। जो बन्दूकची पहरा दे रहे थे भाग कर खाई मे जा घुसे। पीछे से आजम खा ने सलामत कूचे (सुरक्षित मार्ग) बना कर परेंडे को घेर लिया। नाज, चारा न मिलने और लडने के लिए निजामशाह और आदिलशाह के एक हो जाने से आजम खा घेरा उठा कर धारूर की तरफ रवाना हुआ। दुश्मनो ने पानसी घाटे से उतर कर आगे उनका रास्ता रोक लिया। आजम खा ने राजा जयसिह, राजा पहाडसिह, राजा अनूपसिह और दूसरे राजपूतो को, जो हरावल मे थे, उनका सामना करने के वास्ते भेजा। फिर मुल्तफित खा को भी चदावल से 200 सवारो के साथ इनकी मदद करने के लिए रवाना किया। इन सब ने लड़ कर गनीमो को भगा दिया।

12 शाबान (फागुन सुदि 13=रविवार, मार्च 6, 1631 ई०) को ईरान का वकील मुहम्मद अली बेग बुरहानपुर में बादशाह के पास पहुँचा।

इस वक्त गुजरात और दक्षिण में बहुत बडा अकाल पड रहा था, जिससे बहुत दिनो तक कुत्तों का मास बकरी के मास के नाम से और हड्डियो का चूरा आटे के साथ बिकता रहा। बादशाह ने जगह-जगह लगर जारी करके प्रत्येक सोमवार को 5000 रुपये खैरात करने का हुक्म दिया और 50,000

1 यह गांव इलाहाबाद से 30 मील है।

रुपये अहमदाबाद के गरीबों के वास्ते नाज खरीदने को दिये। खालसे की 2 करोड़ की आमदनी मे से 70 लाख रुपये रैय्यत को माफ किये। इस वक्त कुल बादशाही मुल्को की आमदनी 22 करोड रुपये की थी। अमीरों और सरदारो की जागीरो की आमदनी मे रैय्यत को जो छूट हुई, वह इससे सिवाय थी।

17 शाबान, शुक्रवार, (चैत वदि 4=मार्च 11, 1631 ई०) को नौरोज का उत्सव था। दूसरे दिन 3 लाख रुपये की सौगात (उपहार) ईरान के बादशाह की, 3 लाख रुपये की पेशकश आसफ खा वजीर की, 14 लाख रुपये की कुतुबुल्मुल्क की, एक लाख रुपये की शेख मुईनुद्दीन की (जो पेशकश लेने के वास्ते कुतुबुल्मुल्क के पास गया था और कुतुबुल्मुल्क ने 4 लाख रुपये उसको दिये थे), 2 लाख रुपये की पेशकश चादा के जमीदार किया की, बादशाह के नजर की गई।

इसी दिन राव रतन हाडा के बेटे माधोसिंह का मनसब पाच सदी जात और 200 सवारो के इजाफे से दो हजारी—1000 सवार हो गया और उसको झडा भी मिला।

5 रमजान (चैत सुदि 6, सवत् 1688=मगलवार, मार्च 29, 1631 ई०) मेष सक्राति के दिन 20 लाख रुपये की पेशकश बेगमो, शाहजादो और अमीरो की ओर से पेश हुई।

बादशाह ने दयानतराय गुजराती को जो कि नागर ब्राह्मण था और हिसाब और पुरानी हिन्दी किताबो से बहुत परिचित था, मनसब बढा कर उसे खालसा के कार्यालय का अधिकारी नियुक्त किया। जसवतराय को अहदियो का बख्शी नियुक्त किया।

बादशाह के हुक्म से ख्वाजा अबुलहसन शाह जी को नासिक में छोडकर शामगढ चला गया।

मेदिनीराय निजाम की नौकरी छोड कर बादशाही मनसबदार हो गया।

राजा बीरसिंह देव बुदेला के बेटे बेनीदास को पाच सदी जात—250 सवारो का मनसब मिला।

राजा विट्ठलदास गौड के पिता और भाई लडाई मे काम आये थे और स्वय उसने भी धौलपुर के पास पीरा से बडी लडाई की थी। इस कारण उसको राजा का खिताब मिला था। वह हमेशा किले का मालिक होने की इच्छा किया करता था, क्योकि राजपूतो मे बिना किले के राजा के खिताब की कोई प्रतिष्ठा नही होती थी। इसलिए बादशाह ने रणथभोर का प्रसिद्ध किला जिसकी हिफाजत किलेदार खा करता था, 22 रमजान (वैसाख वदि 10=शुक्रवार, अप्रैल 15, 1631 ई०) को राजा विट्ठलदास को प्रदान कर

दिया और खासा खिलअत देकर वहां जाने की आज्ञा दी। राणा उदयसिंह ने अपने विश्वासपात्र सरदार राव सुर्जन हाडा को इस दुर्ग का किलेदार नियुक्त किया था। चढ़ाई करके तोपो और बदूको की मार से अकबर बादशाह ने जब राव सुर्जन को त्रस्त कर दिया, तब उसने किला सौंप दिया था।

1 शव्वाल (वैसाख सुदि 2=शनिवार, अप्रैल 23, 1631 ई०) को वृद्धि हो जाने पर बिहारीदास कछवाहा 2 हजारी जात—दो हजार सवार का और बीरसिंह देव बुदेला का बेटा चन्द्रमन डेढ़ हजारी—700 सवार का मनसबदार हो गया। ये दोनो काबुल के सूबे मे नियुक्त थे।

तलतम के किले मे बादशाही अमल हुआ। सतोड़े का किला भी निजाम के आदमियो ने सौंप दिया।

खान बेग ने रणदौला और निजाम की फौज को हरा दिया।

नसीरी खा कधार के दुर्ग को लम्बे समय से घेरे हुआ था। अतः वहा के किलेदार सादिक खां ने राजा भारतसिंह बुदेला के द्वारा सधि करके 15 शव्वाल (जेठ वदि 2=शनिवार, मई 7, 1631 ई०) को किला सौंप दिया, और राजा के साथ जाकर वह नसीरी खा से मिला। इस किले में 16 तोपें हाथ आईं।

अब निजाम ने अबर के पुत्र फतह खा को कैद से छोड़ कर उसे फिर अपना वकील और पेशवा (प्रमुख मत्री) बना दिया। इस पर मुकर्रब खा, जो अब तक बादशाही फौज से लड रहा था, बुरा मान कर तामाजी डोडिया की मारफत आजम खा से आ मिला और बादशाह ने उसको पाच हजारी मनसब दिया। मगर रणदौला और निजाम के दूसरे सरदार बादशाही फौज के एक हिस्से को हटा कर बहादुर खा और यूसुफ मुहम्मद खा को पकड ले गये। आजम खा ने उनको लडाई में हराया, लेकिन बरसात हो जाने से कधार को लौटना पडा।

17 जीकाद, मगलवार, (आसाढ़ वदि 3=सोमवार, जून 6, 1631 ई०) की रात मे बादशाह की प्रिय बेगम मुमताजुल जमानी का देहात हो गया, जिसको प्राय लोग ताज बीबी कहते हैं। इसके साथ 9 रबी-उल्-अव्वल, वृहस्पतिवार, सन् 1021, (वैशाख सुदि 10, सवत् 1668=बुधवार, अप्रैल 29, 1612 ई०) की रात में बादशाह की शादी हुई थी। मृत्यु के समय उसकी आयु कुल 40 वर्ष की ही थी। इस अवधि में उसके 8 बेटे और 6 लडकिया नीचे लिखे अनुसार हुईं। जिनमें से 4 बेटे और तीन बेटिया उसके मरने के समय जीवित थीं। बेटियो में जहांआरा बेगम, जो बेगम साहिब कहलाती थी, बहुत प्रख्यात है।

1. हूरुल निसा बेगम—8 सफर, शनिवार, सन् 1022, (चैत सुदि 9,

स० 1670=मार्च 20, 1613 ई०) के दिन आगरा मे पैदा हुई और 3 वर्ष की होकर 24 रबी-उस्-सानी, सन् 1025, बुधवार, (जेठ बदि 11, स० 1673=मई 1, 1616 ई०) के दिन अजमेर मे मर गई।

2 जहाआरा बेगम—21 सफर, सन् 1023 (वैसाख बदि 7, स० 1671 =मगलवार, मार्च 22, 1614 ई०) को पैदा हुई।

3 शाहजादा दारा शिकोह—29 सफर, सोमवार, सन् 1024 (चैत बदि 30, स० 1671=रविवार, मार्च 19, 1615 ई०) की रात मे पैदा हुआ।

4. शाहजादा शुजा—18 जमादि-उस्-सानी, शनिवार (रविवार होना चाहिये)[1] सन् 1025 (सावण बदि 3, स० 1673=शनिवार, जून 22, 1616 ई०) को अजमेर में हुआ था।

5. रोशन आरा बेगम—2 रमजान, सन् 1026 (भादो सुदि 3, स० 1674=रविवार, अगस्त 24, 1617 ई०) को बुरहानपुर मे पैदा हुई।

6. शाहजादा औरगजेब—15 जीकाद, रविवार, सन् 1027 (मगसिर वदि 1, स० 1675=शनिवार, अक्तूबर 24, 1618 ई०)की रात में पैदा हुआ।

7 उमेद बख्श—11 मुहर्रम, बुधवार, सन् 1029 (मगसिर सुदि 12, स० 1676=दिसम्बर 8, 1619 ई०) को सरहिंद में पैदा हुआ, और रबी-उस्-सानी, सन् 1031 (फागुन—चैत वदि स० 1678=फरवरी-मार्च, 1622 ई०) मे बुरहानपुर मे मर गया।

8 सुरैया बानू बेगम—20 रजब, सन् 1030 (आषाढ़ वदि 6, संवत् 1678=गुरुवार, मई 31, 1631 ई०) की रात में पैदा हुई। और 23 शाबान, सन् 1037 (वैसाख वदि 9 स० 1685=शुक्रवार, अप्रैल 28, 1628 ई०) को 7 वर्ष की होकर मर गई।

9 एक लड़का माण्डू मे सन् 1032 हि० (स० 1679–80 =1622–23 ई०) मे पैदा होकर मर गया।

10 शाहजादा मुराद बख्श—25 जिल्हिज, मगलवार, सन् 1023 हि० (आसोज वदि 10, स० 1681=सोमवार, सितम्बर 27, 1624 ई०) की रात मे रोहतास मे पैदा हुआ।

11 लुत्फुल्ला—14 सफर, बुधवार, सन् 1036 हि० (कार्तिक सुदि 15, स० 1683=मगलवार, अतूक्बर 24, 1626 ई०) की रात मे पैदा हुआ, और 9 रमजान, सन् 1037 हि० वैसाख सुदि 13 स० 1684= सोमवार

---

1 'तुजुक-ई-जहागीरी' (रोजर्स० 1, पृ० 328, 476) के अनुसार शाह शुजा का जन्म रविवार, 12 तीर (तदनुसार 18 जमादि-उस्-सानी=शनिवार, जून 22, 1616 ई०) की रात्रि मे हुआ था। स्पष्टतया यहा वार लिखने में मुशी जी से भूल हो गई है। (स०)

मई 5, 1628 ई०) को मर गया।

12 दौलत अफजा—4 रमजान, मगलवार, सन् 1037 हि० (बैसाख सुदि 5 स० 1685=सोमवार, अप्रैल 28, 1628 ई०) की रात मे पैदा हुआ, और 20 रमजान, सन् 1038 (जेठ वदि 7, स० 1686=सोमवार मई 4, 1629 ई०) को मर गया।

13 एक लडकी 10 रमजान, सन् 1039 हि० (बैसाख सुदि 12, स० 1687= बुधवार, अप्रैल 14, 1630 ई०) को पैदा होकर मर गई।

14 गोहर आरा बेगम—17 जीकाद, मगलवार, सन् 1040 हि० (आषाढ़ वदि 3, स० 1688=सोमवार, जून 6, 1631 ई०) की रात मे बुरहानपुर मे पैदा हुई।

बादशाह के दो बेगमे और भी थी। एक तो ईरान के शाहजादा मुजफ्फर हुसेन मिर्जा की बेटी, जिसके साथ मुमताज महल की शादी से 20 महीने पहिले शादी हुई थी। और दूसरी अब्दुल रहीम खानखाना की पोती, जिसके साथ कोई साढे पाच वर्ष बाद किन्ही विशेष कारणो से शादी हुई थी। मगर मुमताज महल से बादशाह को बहुत प्यार था और हमेशा उसी को अपने पास रखते थे। मुमताज महल भी बहुत नेक और बादशाह की मर्जी जानने वाली थी। उसकी सिफारिश से वे काम हो जाते थे कि जो अन्य किसी की भी प्रार्थना-निवेदन से नहीं हो सकते थे। बहुत से ऐसे आदमी, जिनको गल (फासी) देने का हुक्म होता था, वे भी उसके कहने से बच जाते थे। बेगम की मौत गोहर आरा बेगम के पैदा होने की तकलीफ से हुई, जो पेट मे ही रोने लगी थी। मरते समय बेगम ने शाहजादी जहाआरा बेगम को भेज कर बादशाह को अपने पास बुलाया और कहा कि सब बच्चे मा के पेट से बाहर निकल कर रोते हैं। यह लडकी पेट मे ही रोती हुई पैदा हुई इस कारण मेरी जान की खैर नही है। आप मेरे बच्चो और मेरी मा का पूरा ख्याल रखना। बेगम का यह अन्तिम बोल था। बादशाह को बेगम के मरने का निहायत रज हुआ। उसके शोक मे उन्होंने सफेद, शाहजादो और अमीरो ने काले वस्त्र पहिने। बेगम की लाश को बुरहानपुर के पास तापती नदी के किनारे पर जैनाबाद बाग मे दफन किया गया। बादशाह गम के मारे एक सप्ताह तक दौलतखाना खास और आम के झरोखा-दर्शन मे नही आये और न कोई राज्य-कार्य किया, जिसकी उससे पहिले कभी नागा नही होती थी। वे यह ही कहते रहे कि जो सलतनत और रैय्यत की हिफाजत का बोझ मेरी गर्दन पर नहीं होता तो सारा मुल्क हिंदुस्तान का जो मेरा और मेरे बाप-दादों का फतह किया हुआ है, अपने बेटो को बाट कर बेगम की कब्र पर जा बैठता और बाकी रही उमर खुदा की बदगी मे पूरी करता। आखिर नवें दिन जुमेरात (गुरुवार,

जून 16, 1631 ई०) को बाहर निकले और नदी से उतर कर बेगम की कब्र पर गये और जब तक बुरहानपुर मे रहे, हर जुमेरात को जाया करते थे। बेगम का शोक पूरे दो वर्ष तक रक्खा। न कभी इत्र लगाया, न रंगीन वस्त्र अथवा जवाहर पहिने और न गाना ही सुना। ईद और खुशी के दिनो मे जब बेगमे महल मे एकत्रित होती थीं, तो बेगम की याद मे बादशाह की आखों मे आसू बहने लगते थे। फिक्र और गम के मारे बहुत जल्दी तमाम बाल सफेद हो गये। बेगम एक करोड से ज्यादा का जवाहर, सोना, चादी, जडाऊ जेवर और रुपया, अशरफी छोड कर मरी थी। बादशाह ने उसमे से आधा तो जहांआरा बेगम को बख्शा आधा दूसरे शाहजादों और शाहजादियो को दिया। जहांआरा बेगम को बेगम साहिब का खिताब और कुल खानगी कामो का अख्तियार सौंपा। उसकी वार्षिक आय भी छ लाख से बढ़ा कर दस लाख कर दी गई। कुछ दिनो बाद अपनी बड़ी मोहर भी, जो पहिले उसकी मा और पीछे उसके मामा आसफ खा वजीर के पास रहा करती थी, उसको सौंप दी गई। तब से पट्टों और फरमानों पर वही मोहर करने लगी।

फतह खा ने अपने पिता अबर चप्पू के समान निजामुल्मुल्क को कैद करके कुछ दिनो बाद बादशाह के हुक्म से उसे मार डाला और उसके बेटे हुसेन निजामशाह को, जो दस वर्ष का ही था, दौलताबाद मे गद्दी पर बैठा दिया। 4 सफर (भादो सुदि 6=सोमवार, अगस्त 22, 1631 ई०) को ख्वाजा अबुल-हसन की सेना मे से 2000 आदमी तोशकखाना (खाने-पीने की वस्तुओ का भण्डार) समेत नदी की बाढ मे बह गये।

24 सफर (आसोज वदि 10=रविवार, सितम्बर 11, 1631 ई०) को नसीरी खा कधार से आकर हाजिर हुआ। बादशाह ने भारतसिंह बुदेला के मनसब मे पाच सदी जात का इजाफा किया, जिससे उसका मनसब साढे तीन हजारी जात—3000 सवारों का हो गया।

5 रबी-उल्-अव्वल (आसोज सुदि 7=गुरुवार, सितम्बर 22, 1631 ई०) को बादशाह ने राव सूर भुरटिया के मरने की खबर सुन कर उसके बेटे करण को दो हजारी जात—पाच सौ सवारो का मनसब, राव का खिताब और बीकानेर का राज्य दे दिया। उसके भाई शत्रुसाल को पाच सदी जात—200 सवार का मनसब इनायत किया।

15 रबी-उस्-सानी (मगसिर वदि 2=सोमवार, अक्तूबर 31, 1631 ई०) को जादोराय के बेटे बहादुर जी ने हाजिर होकर 10 घोडे और 1 हाथी नजर किया। जादोराय का भाई जगदेवराय भी हाजिर हुआ। बादशाह ने बहादुर जी को खिलअत, जडाऊ खपवा, पाच हजारी—पाच हजार सवार का मनसब, सोने की जीन का घोडा, और हाथी बख्शे। जादोराय के पोते जादोराय को

(जिसका असली नाम तो पतगराय था, मगर वादशाह ने दादा के नाम पर उसका भी नाम जादोराय रक्खा था) खिलअत और जडाऊ खजर देकर 50–50 हजार रुपये भी हरेक को दिये ।

4 जमादि-उल्-अव्वल (मगसिर सुदि 6=शनिवार, नवम्बर 19, 1631 ई०) को खिलोजी और मालूजी के साथ विठोजी अपने भाई-वदो सहित हाजिर हुआ । वादशाह ने उसको भी खिलअत, जडाऊ खजर और हाथी, घोडा इनायत किया ।

16 जमादि-उल्-अव्वल (पौष वदि 3=गुरुवार, दिसम्वर 1, 1631 ई०) को वालाघाट के सैनिको की खवर देने वालों की सूचनाओ से राव रतन हाडा के मरने की जानकारी मिलने पर वादशाह ने उसके पाटवी पोते शत्रुसाल को 3 हजारी जात– दो हजार सवार का मनसव और राव का खिताव वख्शा । वूदी, खटकड और दूसरे परगने, जो राव रतन के वतन थे, वे सव उसकी जागीर मे रख कर उसके नाम हाजिर होने का फरमान भेजा । साथ ही उसके चाचा माधोसिह 5 सदी जात—500 सवारो के इजाफे से ढाई हजारी जात—1500 सवारो का मनसव देकर कोटा और पलायथा के परगने उसे जागीर मे दिये ।

राव शत्रुसाल का वाप गोपीनाथ दुवला-पतला था, तो भी उसकी ताकत इतनी थी कि किसी भी पेड की दो डालियो के वीच मे वैठ कर पीठ और पाव के जोर से वह उन दोनो को चीर डालता था । ये डालिया भी शामियाने की चोवो की सी मोटी होती थी । ऐसे ऐसे ही अनुचित वल प्रयोग करने से वह वीमार होकर वाप के जीवन-काल मे ही मर गया था ।

ऊदाजीराम दखिखनी को 40 हजार रुपये वादशाह ने इनायत किये ।

17 जमादि-उल्-अव्वल, शुक्रवार, (पौष वदि 4=दिसम्वर 2, 1631 ई०) को वादशाह ने वेगम की लाश वुरहानपुर से वडे जुलूस के साथ आगरा को रवाना की । शाहजादा शुजा को साथ भेजा । रास्ते मे रोज वहुत-सा खाना और रुपया, अशरफी गरीवो और फकीरो को वाटा जाता था ।

15 जमादि-उस्-सानी (माह वदि 1=गुरुवार, दिसम्वर 29, 1631 ई०) को वह लाश आगरा पहुची और शहर से दक्षिण मे एक वहुत ऊची जमीन मे, जहा पहिले राजा मानसिह रहता था, वह दफना दी गई । उसके वदले वादशाह ने खालसा की दूसरी उमदा हवेली राजा मानसिह के पोते राजा जयसिह को दे दी । वह तो खुशी से यो ही नजर करने को राजी था, परतु वादशाह ने धर्म सवधी विचारो से उसे ऐसे ही ले लेना उचित नही समझा और वदला देकर उसे लिया ।

वेगम की कब्र पर निहायत उमदा और ऊचा मकवरा 40 लाख रुपये

की लागत से तैयार हुआ, जो कारीगरी और खूबसूरती मे अपना जवाब नही रखता है। इसके खर्च के लिए 4 लाख रुपये वार्षिक निश्चित किये गये।

14 जमादि-उल्-अव्वल (पौष बदि 6 = रविवार, दिसम्बर 4, 1631 ई०) को बादशाह ने आदिल खा को बुरहानपुर भेजा, और उसके साथ राजा गजसिंह, राजा जयसिंह, पहाड़सिंह, ऊदाजीराम, खिलोजी, मालूजी भोसला और बहादुरजी भी भेजे गये। अब्दुल्ला खा बहादुर को भी तिलगाना की सेना समेत, जिसमे राजा जुझारसिंह बुंदेला भी था, आसफ खा की सेना मे शामिल होने का हुक्म लिख भेजा।

बादशाही बड़ी मोहर, जो 'मोहर उजक' कहलाती थी, और (मुमताज) बेगम के मरणोपरान्त शाहजादी रोशनआरा की अर्ज पर आसफ खा को सौंपी गई थी, अब उससे लेकर शाहजादी जहाआरा बेगम को दी गई, जो बेगम साहिब कहलाती थी। इस समय से फरमानो पर मोहर वह ही करने लगी।

जुलूसी सन् पांचवां

(दिसम्बर 15, 1631 ई० से दिसम्बर 3, 1632 ई० तक)

आसफ खा ने गुलबर्गा होकर बीजापुर पहुच कर राजा गजसिंह, राजा पहाड़सिंह बुंदेला, चन्द्रमन बुंदेला, अल्लावर्दी और सैयद आलम वगैरह को हरावल, राजा भारत बुंदेला, नसीरी खा और खुदावंद खा, वगैरह को 170 मनसबदारो से मिनकला[1] मे, खानजहा अमरोहे और बारहा के सैयदो को अलतमश[2] मे, आजम खा, राजा अनूपसिंह और दूदा दाहिनी, तथा ख्वाजा अबुल हुसैन खानजमा और जफर खा को बाई ओर की सेना मे, अब्दुल्लाह खा और राजा रोज अफजूं, वगैरह को दाहिनी ओर की सेना की सहायतार्थ, राजा जयसिंह को बाई ओर की सेना की सहायतार्थ, और राजा जुझारसिंह बुंदेला को चदावल मे[3] रख कर बीजापुर को घेरा। कई दिन तक लड़ाई चलती रही, परतु

---

1 हरावल के पीछे की सेना।

2 आगे चलने वाली सेना।

3 सेना की यह रचना रजवाड़ो मे 9 अनी की राड़ कहलाती है, क्योंकि 9 तरफ फौज के परे (योद्धाओं की पक्तियां) जमाये जाते थे। ऊपर 8 परो के नाम तो आ गए हैं। नवें परे का नाम नहीं आया है, जिसमें बादशाह या सेनापति रह कर फौजो को बढ़ाता और लड़ता था।

बीजापुर वालो ने अपना इलाका उजाड दिया था, जिससे सेर भर नाज 1) रुपये मे आता था। इसलिए बरसात प्रारभ होते ही आसफ खा घेरा उठा कर शोलापुर के किले के पास से होता हुआ बादशाही इलाके मे लौट आया। बीजापुर वालो के 15000 सवारो ने शोलापुर तक उसका पीछा किया।

3 रजब (माह सुदि 5=सोमवार, जनवरी 16, 1632 ई०) को राय काशीनाथ कसबा सरहिंद की दीवानी और अमीनी पर इजाफे मनसब के साथ नियुक्त हुआ।

12 रजब (माह सुदि 12=बुधवार, जनवरी 25, 1632 ई०) को राव सूर के बेटे राव करण ने अपने वतन बीकानेर से हाजिर होकर हाथी भेंट किया।

23 रजब (फागुन बदी 10=शनिवार, फरवरी 5, 1632 ई०) को फतेह खां हब्शी को सजा देने और दौलताबाद फतह करने के लिए बादशाह ने वजीर खा को भेजा। राजा बिट्ठलदास, माधोसिंह, राव करण और पृथ्वीराज को घोडे और सिरोपाव देकर उसके साथ बिदा किया। मगर फतेह खा ने नजराना भेज दिया, तब यह फौज वापस बुला ली गई।

8 शाबान (फागुन सुदि 9=रविवार, फरवरी 19, 1632 ई०) को राव शत्रुसाल हाडा ने बादशाह की खिदमत मे हाजिर होकर उसके दादा के जो 50 हाथी रह गये थे, उसने नजर कर दिये। ढाई लाख की कीमत के 18 हाथी, जिनमे से 8 खासा हाथियो मे दाखिल होने के लायक थे, बादशाह ने पसद करके रख लिये, बाकी उसी को बख्श दिये और खिलअत, चादी की जीन का घोड़ा, नक्कारा, निशान भी इनायत किया।

25 शाबान (चैत बदि 12=मगलवार, मार्च 6, 1632 ई०) (मगलवार की रात और मुसलमानी हिसाब से बुधवार की रात) को जसवतसिंह राठोड का बेटा किशनसिंह नूरुद्दीन कुली को, जब कि वह दौलतखाना खास से निकल कर अपने डेरे पर जाता था, मार कर चला गया, क्योंकि जसवतसिंह के बाप को नूरुद्दीन के आदमियो ने जहांगीर बादशाह के समय मे मार डाला था।

28 शाबान (चैत बदि 30=शनिवार, मार्च 10, 1632 ई०) को नौरोज के दिन बगलाना के राजा भेरजी ने अपने बेटे और भाइयो सहित हाजिर होकर 3 हाथी, 9 घोडे और कुछ जडाऊ गहने नजर किये।

16 रमजान (बैसाख बदि 3=बुधवार मार्च 28, 1632 ई०) को मेष सक्रांति के उत्सव में महाराज भीम के बेटे रायसिंह का इजाफा हजारी जात—दो सौ सवारो का हुआ, जिससे उसका मनसब 3 हजारी जात 1200 सवारों का हो गया।

राजा किशनसिंह राठोड के बेटे, हरीसिंह को हजारी जात—छ सौ सवारो का मनसब इनायत हुआ।

24 रमजान, वृहस्पतिवार (बैसाख बदि 11=अप्रैल 5, 1632 ई०) को बादशाह ने बुरहानपुर से आगरा को कूच किया। आजम खा के स्थान पर महावत खा को दक्षिण और खानदेश का सूबेदार नियुक्त किया, क्योकि आजम खा वहा का बदोबस्त अच्छी तरह से नहीं कर सका था।

5 शव्वाल (बैशाख सुदि 6=रविवार, अप्रैल 15, 1632 ई०) को कालीभीत के पास, जो बुरहानपुर और परेंडा के बीच मे है, डेरे हुए। उधर के जमींदार भीमसेन ने वहा हाजिर होकर 100 मोहरें और 2 हाथी नजर किये। बादशाह ने उसे खिलअत दिया।

बादशाह जब बुदेलो के देश मे पहुचे, तो राजा जुभारसिंह के बेटे जुगराज विक्रमाजीत ने उपस्थित होकर 1000 मोहरें, 2 हाथी नजर किये।

फिर बादशाह ने ग्वालियर के किले मे पहुचने पर 11 पुराने कैदी छोड़े। अकबर बादशाह और जहांगीर बादशाह की बनाई हुई इमारतो की मरम्मत करने और एक और नई इमारत बनाने का भी उसने हुक्म दिया, जो 1 साल मे 30 हजार रुपये की लागत से तैयार हुई।

1 जिल्हिज (आसाढ सुदि 3=रविवार, जून 10, 1632 ई०) को बादशाह आगरा पहुचे, उस वक्त हाथी पर सवार थे और शाहजादा दारा शिकोह खवासी मे बैठा हुआ, परम्परा के अनुसार रुपया और अशरफी उन पर निछावर करके लुटाता जाता था।

फतह खा ने दौलताबाद मे बादशाह के नाम का सिक्का चलाया और खुतबा भी पढाया था।

30 जिल्हिज (सावन सुदि 1=रविवार, जुलाई 8, 1632 ई०) को नजर मुहम्मद खा का वकील वक्कास हाजी बल्ख से आया। नजर मुहम्मद खा की सौगात के घोडे वगैरह 15 हजार के और दो दिन बाद 35 घोडे, 3 बकतर (कवच) और 10 खच्चर अपनी तरफ से नजर किये और 18 घोडे उस के बेटे ने भी नजर किये। बादशाह ने हाजी को पहिले दिन खिलअत और 4000 रुपये का जडाऊ खजर, और तीसरे दिन 30 हजार रुपये उसको तथा 10 हजार रुपये उसके बेटे को दिये।

दक्षिण की इस यात्रा मे बादशाह को निजामुलमुल्क की अमलदारी मे से 5 किले और 50 लाख रुपये का मुल्क हाथ आया।

22 मुहर्रम (भादो बदि 9=सोमवार, जुलाई 30, 1632 ई०) को कृपाराम गौड को चकला-हिसार की फौजदारी इजाफे मनसब के साथ इनायत हुई।

3 रबी-उल्-अव्वल (आसोज सुदि 4=शनिवार, सितम्बर 8, 1632 ई०) को बादशाह ने राय काशीदास को सरहिंद की फौजदारी से बदल कर सूबा लाहौर की दीवानी पर भेजा।

शाहजी भोसले ने बादशाही सेवा छोड कर नासिक, त्र्यम्बक और सगमनेर मे कोकरण की सरहद तक अमल कर लिया और फतह खा के विरुद्ध निजामशाही खानदान में से एक लडके को अपने पास रख कर खुद मुखतारी का झडा खडा किया।

राय मानीदास वूढा हो गया था, इसलिए उसकी जगह मीर अब्दुल लतीफ दफ्तर-इ-तन के पद पर नियुक्त हुआ। यह पद दीवान-कुल के नीचे था, जिसको 2 नायव दिये जाते थे। एक तो यही दफ्तर-इ-तन वाला, जिसके पास नोकरो की तलव और वेतन का काम था, और दूसरा नायब खालसा दफ्तर का काम करता था।

राय मानीदास का मनसव हजारी जात—150 सवार का था।

24 रवी-उल्-अव्वल (कार्तिक वदि 11=शनिवार, सितम्बर 29, 1632 ई०) को वगाल के सूवेदार कासिम खा के वेटे इनायतुल्ला ने 6 महीने तक फिरगियो (पुर्तगालियो) को घेरे मे रख कर वदरगाह हुगली से निकाल दिया। वदरगाह हुगली एक अरसे से उनके अधिकार मे था और उन्ही का वसाया हुआ था। उस पर अपना अधिकार जमा लिया। इस युद्ध मे 10 हजार फिरगी मारे गये और 4 हजार कैद हुए।

8 रवी-उस्-सानी (कार्तिक सुदि 11=शनिवार, अक्तूवर 13, 1632 ई०) को शाह ईरान के वकील मुहम्मद अली की विदाई हुई। जिस दिन से वह आया था तव से अव तक उसको 3 लाख सोलह हजार रुपया नकद और एक लाख का सामान उसे इनायत हुआ था। शाह को जो खरीता लिखा गया उसमे दक्षिरण की विजय का हाल भी था।

फतह खा से शत्रुता के कारण निजाम के किलेदार महमूद खां ने गालना का किला और 6 लाख रुपये की जमा के 8 परगने वादशाही आदमियो को सौंप दिये।

जूलूसी सन् छठवां

(दिसम्बर 4, 1632 ई० से नववर 22, 1633 ई० तक)

मानवा सूवा मे अपने किले कानाखेडा की मजवूती के कारण भागीरथ भील सूवेदारो का हुक्म नही मानता था। उसके पास आदमी भी वहुत थे, अत: वह लूट-मार भी किया करता था। नसीरी खा की सूवेदारी मे भी जव उसने इस समय फसाद किया तो नसीरी खा ने सारगपुर से उस पर चढाई की। ऐसे

लुटेरो पर उसकी धाक बहुत बैठी हुई थी, जिस कारण भागीरथ डर कर गन्नोर के जमीदार सग्राम के साथ खान (नमीरी खा) के पास उपस्थित हो गया। उमने अपना वह किला छोड दिया, जिसमें बहुत मुद्दत से उसको और उमके बाप-दादो को पनाह मिलती रही थी।

21 जमादि-उस्-सानी, सोमवार (माह बदि 8=दिसम्बर 24, 1632ई०) को किले मे दाखिल होकर खान ने मूर्तिया तोड डाली और मदिर गिरा दिये।

बादशाह ने यह सुन कर कि जहागीर बादशाह के जमाने में बनारस में बहुत से मदिर बनते-बनते रह गये थे, ग्रासूदा हिन्दू अब उनको सम्पूर्ण करना चाहते हैं। पहिले यह हुक्म दिया था कि क्या बनारस मे और क्या दूसरे बादशाही परगनो में जहा कही नये मदिर बने हो गिरा दिये जावें, सो अब सूबा इलाहाबाद के वकाए-निगार (समाचार-लेखक) की अर्जी से मालूम हुआ कि 76 मदिर बनारस मे गिरा दिये गये हैं।

शाहजादा दारा शिकोह की शादी

मुमताज बेगम की जिंदगी मे शाहजादा दारा शिकोह की शादी सुलतान परवेज की बेटी से, जो अकबर बादशाह के शाहजादा मुराद की नवासी (दोहित्री) थी, और शाहजादा शुजा की शादी ईरान के शाहजादे मिर्जा रुस्तम सफवी की लडकी से तय की जा चुकी थी और बेगम ने इन शादियो का सामान अहमदाबाद वगैरह मे तैयार करवाना शुरू कर दिया था। लेकिन उसके मर जाने से यह काम ढीला पड गया था। अब उस दुर्घटना को 40 महीने व्यतीत हो चुके थे, इसलिए बादशाह ने पहिले दारा शिकोह की शादी करने का हुक्म देकर 8 जमादि-उल्-अव्वल, रविवार (मगसिर सुदि 10= 11 नवम्बर, 1632 ई०) को 11 घडी दिन चढे पीछे एक लाख रुपया नकद और 5 लाख मे आधे के जवाहर और आधे के जेवर और कपडा "साचिक" (बरी)[1] के दस्तूर मे अफजल खा दीवान-कुल, और सादिक खा मीर बख्शी, वगैरह अमीरो और मुमताज बेगम की मा-बहिन और चाची वगैरह बेगमो के साथ शाहजादा परवेज की पत्नी जहाबानू बेगम के मकान पर, जो शाहजादा मुराद की बेटी और अकबर बादशाह की पोती थी, बडी धूमधाम से भेजा। उसने जनाने और मरदाने मे खुशी की महफिलें करके बाहर और भीतर के आदमियो को, जो बरी के साथ गये थे, बिना सिये हुए कपडो के तोरे[2], जैसे जिसके लायक थे, दिये।

---

1 निकाह से कुछ दिन पहले की रस्म, जिसमे दुलहा के घर से बरी का सामान मेहदी सुहाग-पुडा, तेल-इत्र, मेवा-मिश्री आदि कुछ आदमियो के साथ दुलहन के घर भेजा जाता है।

2 भेंट दिये जाने वाले खिलअत के बडे थान। (स०)

24 रजब, शुक्रवार (फागुन वदि 11=जनवरी 25, 1633 ई०) को बेगम साहिब (शाहजादी जहाआरा बेगम) ने, जो अपनी मा की जगह इस शादी की जिम्मेदार हुई थी, झरोखा-दर्शन से आगे के बादशाही महल में पर्दा कराके वह तमाम सामान और असबाब, जो कि उसकी मा और खुद उसने शाहजादे के वास्ते तैयार कराया था, सुबह से तीसरे पहर तक बादशाह को दिखाने के लिए बहुत अच्छी तरह से सजाया, जो 16 लाख रुपये का था। 7 लाख रुपये के तो जवाहरात और जडाऊ गहने थे, 4 लाख की सोने-चादी की चीजें, 4 लाख के हिन्दुस्तान, ईरान, रूम (तुर्की), चीन और फिरगिस्तान (यूरोप) के कीमती कपडे और रग-रग के मखमली बिछौने और जरी के पर्दे वगैरह थे और कई मुल्क के हाथी घोडे थे, जिनकी चादी-सोने की जडाऊ और जरी की झूलें थी और 1 लाख रुपया नकद था।

जब बादशाह देखने को आये तो बेगम साहिब ने डेढ लाख रुपयो की पेशकश जवाहरात और जडाऊ चीजों की नजर की। जो बादशाह ने कबूल की। तदनन्तर ऐसे उमदा और कीमती सामानो के तैयार कराने के लिए बेगम साहिब को शाबाशी दी और शाहजादियो, बेगमों और अमीरो की औरतो व लडकियो को 100 तोरे जो अधिकतर 8 पारचे[1] और थोड़े 7 पारचे के थे, और जिनमे अधिकाश के ऊपर कुछ-कुछ जडाऊ चीजें भी रखी हुई थी, इनायत किये। फिर शाम के वक्त बेगमो को तो महल में जाने की रुखसत दी और अमीरों की हाजिरी का आम हुक्म देकर, खास-खास अमीरों को बहुमूल्य बडे-बडे खिलअत भी दिये, जिनमे से यमीनुद्दौला आसफ खा का खिलअत 9 पारचे, चार कब्बा[2] सुनहरी, जडाऊ तलवार और खजर का था। शेष कुछ चार कब्बा सुनहरी, कुछ फर्जी[3] और कुछ जडाऊ खजर के थे, और कतिपय सादा खिलअत ही थे। इसी तरह गवैयो वगैरह को सिरोपाव और इनाम मिले। ये सब ढाई लाख रुपये की कीमत के थे।

दूसरे दिन ये सब शाहजादा दारा शिकोह के मकान पर बडे जुलूस से बेगमो के साथ भेजा गया। इसके पीछे दहेज का वह सामान भी था, जो जहावानू बेगम ने अपनी बेटी के वास्ते तैयार कराया था। उसकी प्रार्थना पर वह दौलतखाना खास और आम में चुना गया। जो सामान बेगम साहिब ने तैयार कराया था, उसकी तुलना में तो यह कुछ भी न था, तो भी बादशाह उसको देख कर बेगम पर बहुत कृपालु हुए, क्योकि जो कुछ धन-दौलत उसने

1. पोशाक के कपडे। (स०)

2 एक तरह का रुईदार रेशमी जामा। (स०)

3 जामा के ऊपर पहिनने का एक तरह का दूसरा रुईदार वस्त्र, जो सामने से प्राय खुला रहता था। (सं०)

इतने वर्षों मे सग्रह की थी और जो कुछ भी शाहजादा परवेज के घर मे था, वह सब उसमे लगा दिया गया था।

1 शाबान (फागुन सुदि 3=शुक्रवार, फरवरी 1, 1633 ई०) को दौलतखाना खास में मेहदी की मजलिस जुडी, जहा बहुत सी बत्तिया जडाऊ लगनो (पीतल की थालियो) मे रोशन की गई थीं। बादशाह ने वहा पधार कर बख्शियो को हुक्म दिया कि सब अमीरो और वजीरो को दर्जे से बैठावें और गवैयो को गाना गाने का हुक्म दिया, जो बेगम के मृत्यूपरात दो साल से बद था। फिर बीबियो (पत्नियों) ने कायदे के माफिक सब लोगो की उगलियो पर मेहदी लगा कर ऊपर जरी के रूमाल लपेटे और जरकशी के (सोने-चादी के तारो से बने हुए) पटके बाटे। बादशाही खिदमतगार पान, फूल, इत्र, नुक्ल (गजक, मिठाई) और मेवे तरह-तरह के सजा कर लाये। दुलहन की तरफ से जमुना के किनारे पर गडी हुई रग-रग की आतशबाजी छोडी गई।

दूसरे दिन बादशाह के हुक्म से शाहजादा शुजा, औरगजेब तथा मुराद बख्श, यमीनुद्दौला आसफ खा और बडे बडे अमीरो के साथ शाहजादा दारा शिकोह के मकान पर गये। वहा मजलिस जुडी और सब अमीरो ने अपने-अपने पद और सामर्थ्यानुसार शाहजादा को शादी की पेशकशें दी। इसके बाद शाहजादा को घोडे पर सवार कराके दौलतखाना खास मे बादशाह के पास लाये और सलाम कराया। बादशाह ने खिलअत, जडाऊ जमधर, जडाऊ तलवार, जिसका परताला जडाऊ था, मोतियो की माला, जिसमे लाल भी पिरोये हुए थे, सोने-चादी की जीन के दो घोडे और खास तबेले से 1 खासा हाथी-हथनी समेत शाहजादा को इनायत फरमाया। इन सब की कीमत 4 लाख रुपये की थी। हिंदुस्तानी रस्म के माफिक वह जडाऊ सहरा भी उसके सिर पर बाधा, जिसको कि जब बादशाह की शादी हुई थी तब जहागीर बादशाह ने उनके सिर पर बाधा था। इसमे पन्ने और लाल टके हुए थे। शाहजादा आदाब बजा लाया। इसी मजलिस मे यमीनुद्दौला और दूसरे बडे-बडे अमीरो को भी पदानुसार कीमती खिलअत और गवैयो को इनाम और सिरोपाव इनायत हुए। रात को दौलतखाना खास के पाईबाग और झरोखा-दर्शन के नीचे मैदान में रोशनी हुई और रोशनी की बहुत सी नावें जमुना मे भी छोडी गई। बादशाह की तरफ से भी जो आतिशबाजी जमुना के किनारे गाडी हुई थी, छोडी गई। इस तरह दो पहर और 6 घडी रात व्यतीत हो जाने पर निकाह का मुहूर्त आया, जो यूनानी और हिन्दी ज्योतिषियो ने निकाला था। बादशाह ने काजी मुहम्मद असलम को शाह बुर्ज मे बुलाया और उसने बादशाह की विद्यमानता मे निकाह पढाया और 5 लाख रुपये का

महर[1] तय किया, जो मुमताज बेगम के लिए भी तय किया गया था।

8 शाबान (फागुन सुदि 10=शुक्रवार, फरवरी 8, 1633 ई०) को शाहजादा दारा शिकोह ने अपने मकान से बादशाही दौलतखाना तक जरी के और सादे मखमल तथा डोरिया[2] के थान बिछा कर बादशाह को बुलाया और उनके सिर पर सोना चादी और जवाहरात निछावर करके 1 लाख रुपये की पेशकश नजर की, जिसमे सरफराज नामक एक इराकी घोडा जडाऊ जीन का भी था। बडे-बडे अमीरो और निजी शाही नौकरो के खिलअत भी बादशाह को दिखाये और बादशाह के हुक्म से हरेक अमीर को दिए गये। यमीनुद्दौला आसफ खा का खिलअत 2 पारचे का जड़ाऊ तलवार समेत था। बाकी मे से कुछ तो सोने के 4 कब्बा के, कुछ फरजी समेत और अन्य सादे थे। अमीरो ने पहिले बादशाह के दरबार में और फिर शाहजादा की खिदमत मे जाकर आदाब किया।

इस विवाह (निकाह) मे 32 लाख रुपये खर्च हुए थे, जिनमे से छ लाख बादशाही सरकार से, 16 लाख बेगम साहिब की सरकार से और 10 लाख दुलहन की मा की तरफ से व्यय हुए थे।

शाहजादा मुहम्मद शुजा की शादी

फिर बादशाह ने ज्योतिषियो के अधिकारी मकमत खा को, जो खुद भी ज्योतिष जानता था, शाहजादा शुजा की शादी का मुहूर्त निकालने का हुक्म दिया। उसने यूनानी और हिन्दुस्तानी ज्योतिषियो की सलाह से 23 शाबान (चैत बदि 9=शुक्रवार, फरवरी 22, 1633 ई०) की रात का विवाह का मुहूर्त निश्चित कर अर्ज की। बादशाह ने बेगम साहिब को हुक्म दिया। उसने बहुत जल्दी तदर्थ सब सामान तैयार कर लिया। 8 शाबान (फागुन सुदि 10=शुक्रवार, फरवरी 8, 1633 ई०) को 1,60,000 रुपये और एक लाख का सामान सादिक खा मीर बख्शी वगैरह अमीरो और कुछ बेगमो के साथ मिर्जा रुस्तम सफवी के मकान पर भेजा गया।

22 शाबान, बृहस्पतिवार (चैत बदि 7=बुधवार, फरवरी 20, 1633 ई०) की रात को मिर्जा के घर से मेहदी आई थी और शाह बुर्ज में उसकी रस्म अदा हुई। मिर्जा की तरफ से तरह-तरह की आतिशबाजी छोडी गई। इस मजलिस मे आसफ खा वजीर सभी बडे-बडे अमीरो के साथ बैठा था। सुबह को दौलतखाना खास मे पर्दा होकर शादी का सामान, जो कुछ भी बेगम तैयार कर सकी थी। और शेष बेगम साहिब ने बनाया था, बेगम

1 निकाह के समय दुलहन को दी जाने की रकम। (स०)

2 विशेष प्रकार का सूती कपडा जिसमें मोटे डोरे होते है। (स०)

साहिब के हुक्म से सजाया गया। यह 10 लाख रुपये की कीमत का था। हाथी और घोड़े दौलतखाना खास और आम मे खडे किये गये थे। बादशाह ने दो पहर पीछे आम खास के झरोखे से उस सब सामान को देखा। बेगम साहिब की अर्ज पर उसमे से 1 लाख के जवाहर और जडाऊ रकमें स्वीकार कर बेगमो को तौरे और अमीरो को जोडे पहिले के माफिक दिये। फिर वह सब सामान शाहजादा के मकान पर पहुचा दिया गया। शाम को रोशनी की गई। शाहजादा औरगजेब, मुराद बख्श और आसफ खा वगैरह जाकर शाहजादा शुजा को उसके महल से, जहा बादशाह शाहजादगी के दिनो मे रहा करते थे और जो जमुना पर बना था, नदी किनारे के रास्ते से हुजूर मे लाये। बादशाह ने 2 लाख रुपये का खासा खिलअत, जडाऊ हथियार, दो खासा घोडे और एक खासा जोडा हाथी का इनायत करके वही सेहरा, जो दारा शिकोह के बांधा था उसके सिर पर भी अपने हाथ से बाधा और उस वक्त आतिशबाजी छोडी गई। जब लग्न का समय आया तो काजी मुहम्मद असलम ने शाह बुर्ज में बादशाह के सामने निकाह पढा और 4 लाख रुपये का महर तय किया। आखिरी शाबान (चैत सुदि 1=शुक्रवार, मार्च 1, 1633 ई०) को बादशाह शाहजादा के मकान पर गये। शाहजादा ने पाअंदाज[1] और नजर निछावर करके बहुत से जवाहरात और जडाऊ सामान नजर किये। आसफ खा वगैरह को भी खिलअत बादशाह के हुक्म से दिये। बादशाह ने खाना भी वहीं खाया और सूर्यास्त से पहिले ही दौलतखाना को लौट आये।

बादशाह ने तरबीयत खा को एक लाख रुपये की सौगातें देकर उसे बल्ख के हाकिम नजर मुहम्मद खा के पास भेजा।

14 रमजान (चैत सुदि 15, सवत् 1690=शुक्रवार, मार्च 15, 1633 ई०) को राजा जयसिंह अपने वतन से आया।

22 रमजान (प्रथम वैसाख वदि 8=शनिवार, मार्च 23, 1633 ई०) को राजा गजसिंह ने वतन से हाजिर होकर 1 हाथी और कुछ जडाऊ वस्तुएं नजर कीं।

1 शव्वाल (प्रथम वैसाख सुदि 3=सोमवार, अप्रैल 1, 1633 ई०) को राजा विट्ठलदास खासा खिलअत पाकर अजमेर की फौजदारी पर मिर्जा मुजफ्फर किरमानी की जगह पर गया।

12 शव्वाल (प्रथम वैसाख सुदि 13 =शुक्रवार, अप्रैल 12, 1633 ई०) को पृथ्वीराज राठोड का मनसब, जो दक्षिण मे तैनात था, असल और इजाफे से दो हजारी जात और 500 सवार का हो गया।

---

1. पावडा, स्वागतार्थ मार्ग मे बिछाया गया कपडा। (स०)

25 शव्वाल (द्वितीय वैसाख वदि 12=गुरुवार, अप्रैल 25, 1633 ई०) को वादशाह ने सफर खां को 4 लाख की सौगातें देकर ईरान के वादशाह शाह सफी के पास भेजा।

17 जीकाद (जेठ वदि 3=गुरुवार, मई 16, 1633 ई०) को वादशाह ने नवाव मुमताज-उल्-जमानी वेगम के उर्स (वार्षिक तिथि) के दिन 40 हजार तोले सोने का 5 लाख रुपये की कीमत का एक सुनहला कठघरा उसकी कब्र पर चढाया।

आगरा में हैजा फैलने पर वादशाह की तजवीज से जहर-मोहरा खताई[1] के देने से वीमारो को फायदा पहुचा।

29 जीकाद, मगलवार, (जेठ सुदि 1=मई 28, 1633 ई०) के दिन वादशाह ने झरोखा-दर्शन के नीचे सूरत-सुदर और सिद्धिकर नामक दो जगी हाथियो को लडाया। शाहजादा दारा शिकोह, शुजा, औरगजेव, तीनो भाई घोडो पर सवार वादशाह की सवारी से कुछ आगे वढ कर तमाशा देख रहे थे। सिद्धिकर अपने जोडे से लडते-लडते एकाएक औरगजेव के ऊपर झपटा। औरगजव की आयु उस वक्त सिर्फ 15 वर्ष की थी, तो भी उसने हाथी के मस्तक पर भाला मारा, हाथी ने उसके घोडे के एक टक्कर मारी जिससे घोडा लुढका और औरगजेव भी गिर पडा। उस वक्त वडी गडवड मची। शुजा घोडा दौडा कर गया, लेकिन घोडे के गिर पडने से वह भी गिर पडा। तव राजा जयसिंह उस हाथी की तरफ दौडा, मगर उसका घोडा डरता था, इसलिए उसने दाहिनी तरफ से जाकर उसको वर्छा मारा। इतने मे सूरत-सुदर हाथी भी सिद्धिकर के ऊपर दौड कर आया। सिद्धिकर लौटा, परतु सूरत-सुदर पर मोहरा करने का अवसर नहीं पाकर भागा। शाहजादा वच गया। वादशाह ने अपनी सवारी वढ़ाई और दोनो शाहजादो को पोछ-पुचकार कर उनकी वहुत प्रशसा की।

2 जिल्हिज, शुक्रवार (जेठ सुदि 4=मई 31 1633 ई०) के दिन शाहजादा औरगजेव की 15वी साल गिरह थी। वादशाह ने उसे दौलतखाना खास मे सोने से तोला तव 5000 अशरफिया उसके वरावर चढी थीं। जो गरीवो को वाट देने के वास्ते उसी को इनायत कर दीं। खासा खिलअत, जडाऊ जीगा[2] समेत मोतियो की माला, जिसमे लाल और पन्ने लगे हुए थे, जडाऊ कडे, हीरो के भुजवद, लाल याकूत, हीरे और मोती की अगूठिया, जडाऊ खजर फूल कटारे समेत, जडाऊ तलवार, जडाऊ ढाल, जडाऊ वर्छी दो, तुरकी घोडे, जिनमे से एक तो जडाऊ और दूसरा सुनहरी मीनाकारी जीन का था, सिद्धिकर हाथी और हथनी भी औरगजेव को दे दिये गये। इन सवकी कीमत

1 उत्तरी चीन के खता नामक स्थान से प्राप्त जहर-मोहरा पत्थर। (स०)

2 पगडी पर वाधने का रत्न जड़ित आभूषण।

2 लाख रुपये थी। हिन्दी और फारसी शायरो ने शाहजादा के हाथी से लडने की दास्ताने नजम और नसर मे लिख-लिख कर इनाम पाये। सईदाय गिलानी को, जिसका खिताव वेदल खाँ था, इसी मजमून पर एक उमदा मसनवी (काव्य) बनाने के इनाम मे बादशाह ने चाँदी से तोला, तब उसके बरावर जो 5000 रुपये चढे थे, वे उसी को वख्श दिये गये।

'वादशाह नामा' मे लिखा है कि "जब बादशाह ने भी अपनी शाहजादगी के दिनो मे शेर को तलवार से मारा हो तो उनके शाहजादा से ऐसे काम होने मे क्या अचम्भा है।"

यह जहाँगीर वादशाह के वक्त की वात है। एक दिन परगना बाडी मे चीता का शिकार हो रहा था। अनूप बडगूजर, जो अकबर वादशाह के वक्त से खासे खिदमतगारो का मुख्य अधिकारी था, वाडा[1] (अर्थात् उन लोगो को जो शिकार मे वादशाह के पास हाजिर रहते थे) ला रहा था। उसने शेर की भाल सुनी और वहाँ जाकर वाडे वालो की मदद से उसको घेरा और जहाँगीर बादशाह को खवर भेजी। उस वक्त सूर्यास्त हो चुका था। शिकारी हाथी भी साथ नही थे, तथापि वादशाह शिकार के शौक से घोडे पर सवार होकर गये, और शेर को देखकर घोडे से उतर पडे और दो गोलिया मारी। मगर शेर के घातक घाव नही लगा था, अत वह जाकर एक नीची जगह मे बैठ गया। उस वक्त सूरज डूव चुका था और जहाँगीर वादशाह के पास इन वादशाह (शाहजहाँ), राजा रामदास कछवाहा, अनूपसिह वडगूजर, एतमादराय, हयात खाँ, दरोगा अवदार खाँ और कमाल किरावल के अतिरिक्त और कोई न था, तो भी उन्होने कई कदम आगे वढकर फिर एक गोली चलाई। गोली खाते ही शेर वादशाह के ऊपर लपका। वादशाह ने फौरन कमान खीच कर एक तीर मारा, मगर वह भी घातक नही लगा और गुस्से मे आकर शेर अनूप से, जो उस वक्त वादशाह की वदूक लिये खडा था, लिपट गया और उसको गिरा दिया। अनूप ने अपना एक हाथ तो मुँह मे दे दिया, और दूसरे से उसका गला पकड लिया। वादशाह (शाहजहाँ) ने जो शेर के दाहिनी तरफ कुछ आगे वढे हुए खडे थे, तलवार निकाल कर शेर की गर्दन पर मारनी चाही, मगर वहाँ अनूप के हाथ को देख कर कमर पर मारी और फिर उसी फुर्ती से अपनी तलवार म्यान मे कर ली कि हयात खाँ के सिवाय जो एतमादराय के साथ जहाँगीर वादशाह की दाहिनी तरफ खडा था और किसी को मालूम नही पडा। वाई तरफ राजा रामदास खडा था। उसने भी शेर के एक तलवार मारी और हयात खाँ ने भी कई लाठियाँ जडी, तब कही जाकर वह अनूप को छोड कर चल पडा। फिर तो लोगो ने घेर कर उसे मार डाला। हयात खाँ ने वादशाह (शाहजहाँ) की फुर्ती और वहादुरी की

1. 'बाडा' अथवा 'बाहा'—देखो तुजक०, रोजर्स० 1 पृ० 185 पा० टि०। (स०)

अर्ज जहांगीर बादशाह से की। उन्होंने अपने हाथ से खून भरी तलवार निकाल कर देखी और बहुत शाबाशी दी। अनूप को अनीराय सिंहदलण का खिताब दिया और मनसब भी बढा दिया। ईद के दिन (जेठ सुदि 11=शनिवार, जून 8, 1633 ई०) को बादशाह ने हरदेराम के बेटे जगराम को हाथी इनायत किया।

दक्षिण का हाल

फतेह खाँ का ताबेदार हो जाने से बादशाह ने वे सब किले और परगने, जो शाहजी को दिलाये थे, उससे वापस लेकर फतेह खाँ को दे दिये। इस बात से शाहजी नाराज होकर आदिल खाँ से जा मिला। आदिल खाँ ने उसके साथ एक सेना दौलताबाद जीत लेने के लिए भेजी। फतेह खाँ ने उसका आना सुन कर खानखाना (महाबत खाँ) से कहलाया कि "मैं किला तुमको दे दूंगा।" खानखाना ने अपने बेटे अब्दुल खानजमाँ को जुगराज और खिलोजी के साथ भेजा। घाटी मे आदिल खाँ की फौज रास्ता रोके हुए थी। मगर मुकाबले के वक्त आदिल खाँ की फौज का सेनापति रणदौला तो टल गया और शाहजी लडा। तब खानखाना ने खुद राव शत्रुसाल के साथ जाकर उसको हराया। फिर रणदौला और शाहजी ने फतेह खाँ से यह कौल किया कि "हम किला तुम्हारे ही पास रहने देंगे और साथ ही वहाँ रसद और रुपया भी पहुँचावेंगे।" इस पर फतेह खाँ उनसे मिल गया। खानखाना ने उसके बदल जाने से क्रुद्ध होकर अपने बेटे खानजमाँ को किला फतह करने का हुक्म दिया। उसने आक्रमण करके पहिले तो खिलोजी, मालूजी, भीखाजी और यशवतराय की सहायता से शाहजी को निजामपुर से भगाया। फिर दौलताबाद को घेर कर मोर्चे लगाये। बनाकछरी का मोर्चा, जो किले के पीछे था, राजा विक्रमाजीत जुगराज को सौंपा। घेरे की खबर सुन कर खानखाना भी वहाँ गया। पृथ्वीराज राठौड गोल मे और अपने भाईबदो सहित ऊदाजीराम चदावल मे थे।

14 रमजान (चैत सुदि 15, सवत् 1690=शुक्रवार, मार्च 15, 1633 ई०) को रणदौला वगैरह अपने उन आदमियो को, जो किले मे थे, रसद पहुँचाने के लिए आये। खानखाना ने अपने बेटे दिलेर हिम्मत को ऊदाजीराम, बहादुरजी और जुगराज बुंदेला के साथ उनसे लडने को भेजा। ये उनसे लडे तो भी आधी रात को रणदौला, फरहाद, बहलोल, शाहजी और अकस खान 4000 सवारो के साथ खानजमाँ के डेरे पर आ पड़े। खानजमाँ तो मोरचो पर गया हुआ था और राव शत्रुसाल को डेरे की रखवाली पर छोड गया था। सो राव शत्रुसाल, उसके राजपूतो और खानजमाँ के सिपाहियो ने बहादुरी से उनका सामना किया। बहलोल के भतीजे और बहुत से दक्षिणियो को मार डाला, और जो बाकी बचे थे उनको भगा दिया।

तीसरे दिन फिर दक्षिणी याकूत हब्शी के साथ दोपहर को दिलेर हिम्मत के डेरे पर चढ आये। दिलेर हिम्मत ने भी उनका सामना किया। उस वक्त एक सवार ने, जिसको बडा घमड था, शत्रु की सेना से निकल कर पृथ्वीराज राठौड को लडने के वास्ते बुलाया। पृथ्वीराज भी दिलेर हिम्मत की दाहिनी अनी से निकल कर उसके सामने गया। जब दोनो मे लडाई शुरू हो गई तब पृथ्वीराज ने तलवार से उसको मार डाला। इस पर रणदौला वगैरह पृथ्वीराज पर चढ आये। तब खानखाना के तीसरे पुत्र लुहरास्प ने अपनी सेना के साथ पृथ्वीराज के साथ शामिल होकर दुश्मनो को मार भगाया।

खानखाना ने जफरनगर से रसद लाने के लिए राव दूदा को मुबारिज खाँ के साथ भेजा और फिर दक्षिणियों का उस तरफ जाना सुन कर खानजमाँ को भी राव शत्रुसाल समेत भेज दिया। वह खिडकी पहुँच कर शाहजी और बहलोल वगैरह से लडा और उनको हटा कर रसद सेना मे ले आया।

23 रमजान (पहिला बैसाख वदि 10=रविवार, मार्च 24, 1633 ई०) को खिलोजी, जिसका मनसब पाँच हजारी जात—पाँच हजार सवार का था, इस विचार से कि दौलताबाद के फतह हो जाने से निजामशाह के लोग तबाह हो जावेंगे, याकूत हब्शी की तरह भाग कर उधर निजामशाह के पक्ष मे चला गया। लेकिन उसके भाई मालूजी और परसूजी खानखाना के पास ही रहे और खानखाना ने भी उनको खिलअत हाथी और खर्च वगैरह देकर प्रसन्न रखा।

27 रमजान (पहिला बैसाख वदि 14=गुरुवार, मार्च 28, 1633 ई०) को फिर दक्षिणी किले तक आ पहुँचे। परन्तु पहाडसिंह वगैरह कई अमीरो ने मोरचे वालो की मदद पर जाकर उनको भगा दिया। वे भागते हुए नाज की पोटें मुर्तजा खा और जुगराज के मोरचो मे इसलिए डाल गये कि अदर वाले आसानी से उठाकर उन्हें ले जावें। खानखाना ने जुगराज से कहलाया कि मोरचो को मजबूत करके ऐसा बदोबस्त करें कि रसद भीतर न जा सके। जुगराज ने ऐसा ही किया कि जब अदर वाले रसद ले जाने लगें तो उनको किले मे भगा कर रसद छीन ली। दक्षिणियो ने वापस लौटते हुए खानखाना के पोते खानजमा के बेटे शुक्रुल्लाह से फिर एक मुठभेड की। उसमे राव दलपत राठौड के बेटे महेश का दामाद जगन्नाथ, जो खानखाना के प्रतिष्ठित राजपूतो मे से था, बहादुरी के साथ लड कर काम आया।

ऊदाजीराम दक्खिनी, जो पाच हजारी—5 हजार सवार का मनसबदार था, मर गया। उसका पुत्र जगजीवन छोटा था, तो भी खानखाना ने उसको 3 हजारी जात—दो हजार सवार का मनसब दिलाने का प्रबध किया, जिससे ऊदाजीराम के सैनिक तितर-बितर न होने पावें।

6 शव्वाल (प्रथम बैशाख सुदि 8=शनिवार, अप्रेल 6, 1633 ई०) को

खानखाना ने खानजमां को राव शत्रुसाल हाडा और राव करण के साथ दुश्मनो के डेरे लूटने को भेजा। वह लड कर बहुत सी लूट ले आया।

8 शव्वाल (प्रथम वैसाख सुदि 9=सोमवार, अप्रेल 8, 1633 ई०) को सुरग से दौलताबाद किले की 26 गज दीवार उडाई गई। नसीरी खां किले मे जाने को विदा हुआ। खानखाना ने महेश राठौड को भी अपने नौकरो के साथ भेजा। किले वाले उस टूटी हुई दीवार पर आ डटे और वहां जम कर लडे। नसीरी खां घायल हुआ। उस वक्त बादशाही अमीरो ने बायें हाथ की तरफ से आक्रमण करके किले को अपने अधिकार मे कर लिया। खैरियत खां बीजापुरी भाग कर महाकोट की खाई मे जा छिपा।

खानखाना ने अबरकोट मे आकर महाकोट को घेरने के लिए सेना भेजी। राजा पहाडसिंह बुंदेला, राजा मारगदेव, बदनसिंह[1] भदोरिया और सग्राम उसकी बायी अनी मे थे। खानखाना ने मालूजी और जगजीवन को बाहर के मोरचे पर छोडा था। राव शत्रुसाल और राव करण को अबरकोट के बाहर उनके मोरचो मे रक्खा था। मगर जब सुना कि खिलोजी और बहलोल वगैरह बरार और तिलगाना की तरफ फसाद करने के विचार से जाना चाहते हैं, तो खानजमां ने राव शत्रुसाल और राव करण को उन्हें सजा देने और सेना मे रसद पहुँचाने के वास्ते भेजा।

17 शव्वाल (द्वितीय वैसाख वदि 4=बुधवार, अप्रेल 17, 1633 ई०) को रणदौला और शाहजी नाज की 3000 पोटें दुर्ग वालो के वास्ते लेकर आये। मगर मालूजी, राव दूदा, पृथ्वीराज और महेशदास वगैरह बादशाही अमीरो ने लड कर उनसे वह नाज छीन लिया।

28 शव्वाल (द्वितीय वैसाख वदि 14=शनिवार, अप्रेल 27, 1633 ई०) को खैरियत खां और दत्तूनाग पडित रात के वक्त मालूजी की मारफत खानखाना से कौलनामा लेकर महाकोट से उतर आये। खानखाना ने खिलअत देकर बादशाह का फरमान दिखाया, जिसमे लिखा था कि "जल्दी उधर कूच होगा", और उनको आदिल खां की तसल्ली करने के वास्ते भेजा। किले मे केवल फतेह खां और तानाजी रह गये थे। हमीरराव मोहनिया (मोहिते) शत्रु की सेना से बादशाही सेना मे हाजिर हो गया।

24 जीकाद (जेठ वदि 11=गुरुवार, मई 23, 1633 ई०) को आदिल खां के वजीर मुरारी पडित ने रणदौला और शाहजी को तो खानजमां से लडने को भेजा, और आप याकूत के साथ खानखाना के मोरचे पर आया। खानखाना ने राव दूदा और पृथ्वीराज से कहा कि "अपने मोरचो से बाहर निकल कर सवार खडे रहें" और दिलेर हिम्मत को चद्रभान के साथ भीतर के मोरचो मे

1 मूल में 'मदनसिंह' लिखा है, जो ठीक नही है। (स०)

छोडा और आप किले से वाहर आकर, जहाँ राव दूदा खडा था वहा आया। इतने मे उदयपुर के राणाजी के आदमी भी, जिनको खानजमा ने भोपत की सरदारी मे खानखाना की सहायतार्थ भेजा था, आ पहुँचे। गनीमो ने राव दूदा के पास लडाई शुरू की। खानखाना भी उनके विरुद्ध गया। मालूजी, परसूजी, राव दूदा और राणाजी के आदमी भी गये और गनीमो को भगा दिया। अव खानखाना ने मुवारिज खा और पहाडसिंह को गनीमो के विरुद्ध भेजा। और लुहरास्प पर मुरारी पडित के आक्रमण करने का हाल सुन कर वह स्वय जुगराज और राणाजी के आदमियो के साथ लुहरास्प की मदद को गया। राव चादा के पोते, राव दूदा चन्द्रावत के कई भाई-बन्द लडाई मे मारे गये। उनकी लाशें लाने के वास्ते उसने खानखाना से स्वीकृति मागी। खानखाना जानता था कि अभी शत्रुओ की सेना जगह-जगह खडी है और हर तरफ लडाई हो रही है, इसलिए उसने राव को जाने से मना किया। मगर उसकी मौत आ पहुँची थी। इसलिए उसने सिपहसालार का कहना नही माना और मालूजी के साथ अपने आदमियो की लाशें उठा लाने के लिए गया। ज्यो ही खानखाना की फौज नजर से ओझल हुई शत्रुओ ने अवसर पाकर वहुत सी फौज के साथ राव दूदा को आ घेरा। राव और उसके थोडे से आदमियो ने जव वचाव का रास्ता वन्द देखा, तव घोडो से उतर कर लडाई की और वहादुरी के साथ लडते हुए काम आए।

फिर याकूत अवर और खिलोजी खानखाना के साथ लडने के लिए आये। मुरारी पडित भी उनके पीछे-पीछे था। खानखाना ने राणा के भतीजे भोपत को याकूत के मुकावले पर भेजा। जुगराज पीछे आ रहा था, सो उससे कहलाया कि "जल्दी आकर शामिल हो।" उसने कहा—"नदी उतरने मे देर होगी।" मगर खानखाना ने आक्रमण कर दिया। वडी भारी लडाई हुई। गनीम हारे और याकूत हब्शी मारा गया।

25 जीकाद (जेठ वदि 12=शुक्रवार, मई 24, 1633 ई०) को खानखाना ने मुरारी पडित के 5 कोस पीछे हट जाने की खवर सुन कर खानजमा को निजामपुर की तरफ भेजा। तव रणदौला और शाहजी ने मुरारी पडित के हुक्म से पहाडी पर स्थित खानजमा के मोरचे पर अधिकार कर लिया। खानखाना ने लुहरास्प और पहाडसिंह को भेजा और जुगराज वुन्देला को भी कहलाया कि उसके डेरे के पास की घाटी के रास्ते से निकल कर दुश्मनो को सजा दे। फिर नसीरी खा, पहाडसिंह और लुहरास्प ने जाकर शत्रुओ को भगा दिया। फिर महाकोट की दीवार वारूद मे उडा दी गई। फौज अदर घुसी, जिसमे सग्राम भी था।

निजामशाह के एक अमीर महलदार खा ने, जो वनाती किले का किलेदार था, गालना दुर्ग मे आकर खानखाना से वनाती किला को सौंप देने को कह-

लाया । खानखाना ने जवाव दिया कि "शाहजी और रणदौला की छावनी वैजापुर मे है, जो तुम उसको लूट लो, तो हमे तुम्हारी शुभेच्छा पर विश्वास हो जावे ।" महलदार खा ने शाहजी की छावनी लूट कर शाहजी की औरतो और लडके-वालो को, जो उन्ही दिनो जुनेर से वहा आये थे, पकड लिया । 400 घोडे, डेढ लाख हुन और वहुत सा माल-असवाव तो शाहजी के डेरो से और 12 हजार हून रणदौला के डेरो से हाथ लगे । खानखाना ने उसको हुक्म लिखा कि शाहजी के कवीलो को किलेदार गालना के हवाले करके वह स्वय उपस्थित हो जावे ।

19 जिल्हिज (आसाढ वदि 6=सोमवार, जून 17, 1633 ई०) को फतह खा ने अनाज न मिलने, अकाल और मरी के कारण, जो उस क्षेत्र मे फैली हुई थी, दौलतावाद का किला खानखाना को सौप दिया और स्वय अपने वाल-वच्चो और हुसेन निजामशाह को लेकर, जिसकी वारवरदारी (भारवाहन) वगैरह के लिये खानखाना ने साढे दस लाख रुपये और कई हाथी दिये थे, वाहर आ गया । 26 जिल्हिज (आसाढ वदि 13=सोमवार, जून 24, 1633 ई०) को वादशाह ने यह खवर सुनी तो अमीरो को खिलअत और मनसव मे वृद्धि के फरमान भेजे । नसीरी खा को खानदौरा का खिताव दिया । राव दूदा के वेटे देवीसिंह को, जो वतन मे था, खिलअत, राव का खिताव और डेढ हजारी मनसव का फरमान भजा ।

खानखाना ने खानदौरा को तो दौलतावाद मे छोडा और स्वय निजाम और फतह खा को लेकर बुरहानपुर मे आ गया । मार्ग मे वीजापुर वालो ने जगह-जगह लडाइया लडी जिनमे तानाजी डोडिया मारा गया । दौलतावाद जैसे मजवूत किले पर इतनी शीघ्रता से अधिकार हो जाने के कारण वीमारी और अकाल ही थे । वादशाह ने शाह ईरान को खत लिखा कि इस दुर्ग से 1000 तोपें प्राप्त हुई और ढाई करोड की आमदनी का मुल्क फतह हुआ ।

राजा भारत वुदेला ने, जो तिलगाना की सुरक्षा के लिए नियुक्त था, वोला और सिदी मुफताह को वीकनोर[1] के किले मे से निकाल कर उस किले पर कब्जा कर लिया ।

महाराजा (भीम सीसोदिया) के वेटे रायसिंह को वादशाह ने हाथी इनायत किया ।

रणदौला और शाहजी वगैरह आदिलशाहियो ने खानखाना का पीछा छोड कर किले दौलतावाद को जा घेरा था । इसलिए खानखाना फिर उस तरफ गया । आदिलशाही लोग घेरा उठा कर नासिक त्र्यम्बक की तरफ चले गये ।

11 मुहर्रम (आसाढ सुदि 12=सोमवार, जुलाई 8, 1633 ई०) को

---

1 अब्दुल हामिद लाहोरी के अनुसार सही पाठ 'दिगलूर' है (पा० ना०, 1-अ, पृ० 534), जो नांदेड जिले में 18° 33' उ०, 77° 35' पू० में है। (स०)

कासिम खाँ का वेटा, इनायतुल्ला खाँ, फिरगियो मे से 400 आदमी औरतो को वादशाह के हुजूर मे लाया। बादशाह ने हुक्म दिया कि जो मुसलमान हो जावें, उन्हे तो छोड दें और जो न होवें वे कैद रहे। सो कुछ तो मुसलमान हो गये, बाकी कैद मे ही मर गये।

शाहजादा शुजा को दक्षिण भेजना

22 सफर, रविवार, (भादो वदि 9=अगस्त 18, 1633 ई०) के दिन वादशाह ने खानखाना के लिखे अनुसार शाहजादा शुजा को एक भारी खिलअत और 6 लाख रुपये इनाम देकर बहुत सा खजाना, तोपखाना और सेना के साथ दक्षिण को भेजा। राजा जयसिंह, राजा विट्ठलदास, माधोसिंह हाडा राव रतन का वेटा, चन्द्रमन बुदेला, राजा रोज अफजूं, भीम राठोड और राजा रामदास नरवरी भी शाहजादा के साथ भेजे गये। राजा जयसिंह और विट्ठलदास को वादशाह ने खास खिलअत और खासा तबेले मे से सोने की जीन के घोडे दिये।

24 रबी-उल्-अव्वल (आसोज वदि 12=गुरुवार, सितम्बर 19, 1633 ई०) को मालवा के सूवेदार खानदौरा के साथ गन्नोर का राजा सग्राम वादशाह की खिदमत मे हाजिर हुआ। राजा राजसिंह कछवाहा का पुत्र राजा बख्तावर मुसलमान हो गया था। उसको वादशाह ने खिलअत और 200 रुपये दिये।

राजा भारत बुदेला 500 जात—500 सवारो के इजाफे से चार हजारी जात—साढे तीन हजार सवारो के मनसब पर पहुँच कर शाहजादा शुजा के साथ दक्षिण गया।

राजा राजसिंह कछवाहा का पोता, पुरुषोत्तमसिंह, जो बादशाह की बदगी मे रहता था, मुसलमान हो गया। बादशाह ने उसको खिलअत, घोडा और 'सआदतमद' खिताब दिया।

इसी दिन इस्लाम खाँ, (हुसैन) निजामशाह, फतह खाँ और दौलताबाद की लूट को लेकर हाजिर हुआ। बादशाह ने निजाम को, जो कम उमर का था, ग्वालियर के किलेदार सैयद खानजहाँ के पास भेज कर लिख दिया कि जैसे वहादुर निजामशाह अहमदनगर की फतह के समय से गिरफ्तार होकर अब तक उस किले मे कैद है, उसी तरह इसको भी कैद रक्खे। उसका असबाव ज त कर लिया गया। फतह खाँ का अपराध क्षमा करके 2 लाख रुपया वार्षिक नियत किया, और उसकी जागीर और माल भी उसको लौटा दिये गये। निजामशाहियो की सल्तनत इस प्रकार खतम हो गई।

शाहजादो के वास्ते यह नियम था कि जब तक किसी सेवा मे नियुक्त न हो, मनसव नही दिया जावे। शाहजादा शुजा को तो दक्षिण जाते वक्त 10

हजारी मनसब मिल गया था, किन्तु शाहजादा दारा शिकोह, जो उससे बडा था, तब तक 1000 रुपये रोज पाता था। बादशाह उस पर सब बेटो मे सर्वाधिक कृपा रखते थे। इसलिए 11 रबी-उस्-सानी (आसोज सुदि 13=शनिवार, अक्तूबर 5, 1633 ई०) को उसे 12 हजारी मनसब, बडा भारी खिलअत, छत्र और लाल डेरा इनायत फरमा कर हिसार का परगना भी उसे प्रदान कर दिया, जो बाबर बादशाह के वक्त से वली अहदो (उत्तराधिकारियो) की जागीर मे रहा करता था।

12 जमादि-उल्-अव्वल (कार्तिक सुदि 15=मगलवार, नवम्बर 5, 1633 ई०) को दरबार मे सिकन्दर बादशाह की बात चली तो यमीनुदौला ने कहा कि आज तक किसी ने भी सिकन्दर के किसी काम और किसी बात पर कुछ भी कटाक्ष नही किया है। बादशाह ने कहा कि "यदि सिकन्दर का पैगम्बर होना सही हो, तब तो कुछ कहना नही है, नही तो हमको दो बातें कहनी हैं। प्रथम तो यह कि ऐसे बुद्धिमान् बादशाह का वकील बन कर नोशावा[1] के पास जाना ठीक नही था, क्योकि इसमे हतक इज्जत और जान जोखिम का कुछ इलाज न था। दूसरी यह कि जब दारा का वकील वही मामूली खिराज लेने को आया था, जो सिकन्दर का पिता सदैव दिया करता था, तब अपने बाप को मुरगा बता कर उसका यह कहना कि 'सोने के अडे[2] देने वाला वह मुरगा अब जाता रहा है'।"

जुलूसी सन् सातवां

(नवम्बर 23, 1633 ई० से नवम्बर 12, 1634 ई०)

1 रजब (पौष सुदि 3=सोमवार, दिसम्बर 23, 1633 ई०) को कल्याण झाला राणा जगतसिंह की तरफ से अर्जी और हाथी लेकर उपस्थित हुआ। बादशाह जब शाहजादा थे और राणा अमरसिंह से मुगलो की आधीनता स्वीकार करवाने के लिए उदयपुर मे रहा करते थे, तब अब्दुल्ला खां बहादुर फीरोजजग इस कल्याणसिंह को पकड कर लाया था, पर आपने जान-बख्शी करके छोड दिया था। अब वह राणा जगतसिंह के उमदा राजपूतो मे से था।

26 रजब (माह वदि 13=शुक्रवार, जनवरी 17, 1634 ई०) को राय

1 नोशावा—ईरान के आजरबाईजान राज्य की रानी।
2 उस खिराज मे सोने का एक अंडा भी होता था।

बनवालीदास के बेटे और फीलखाने के मुशरफ (हाथीखाने के अधिकारी) नित्यानद ने एक हाथी नजर किया।

29 रजब (माह सुदि 1=सोमवार, जनवरी 20, 1634 ई०) को शाहजादा दारा शिकोह के महल मे परवेज की बेटी से लडकी पैदा हुई।

पंजाब जाना

3 शाबान, बृहस्पतिवार (माह सुदि 5=जनवरी 23, 1634 ई०) को बादशाह आगरा से पजाब की तरफ रवाना हुए और हुक्म दिये गये कि एक तरफ तो तीरदाज अहदियो (विशिष्ट सैनिको) का बख्शी और दूसरी तरफ मीरआतिश बरकदाजो के साथ कूच करें, और खेती को खराब न होने दें। फिर भी जो नुकसान हो जावे तो उसके बदले मे नकद रुपया सरकार की ओर से रैय्यत और जागीरदारो को उनके हिस्सो के माफिक दे देवे।

20 शाबान (फागुन वदि 6=रविवार, फरवरी 9, 1634 ई०) को मथुरा मे मुकाम हुआ। यहा से कल्याण झाला को खिलअत और घोडा देकर विदा किया गया। राणा जगतसिंह के वास्ते कीमती खिलअत, जडाऊ उरवसी (एक प्रकार का गले का गहना), एक हाथी और दो खासा घोडे सोने-चादी की जीनो के उसके साथ भेजे गये।

24 शाबान (फागुन वदि 10=गुरुवार, फरवरी 13, 1634 ई०) को बादशाह दिल्ली पहुचे, और नूरगढ मे ठहरे, जो जहागीर बादशाह के हुक्म से बनाया गया था।

23 रमजान (चैत बदि 10=शुक्रवार, मार्च 14, 1634 ई०) को एत-मादुद्दौला की सराय मे, जो लाहौर के पास है, डेरे हुए। राजा बासू का बेटा जगतसिंह कागडा से आकर उपस्थित हुआ।

7 शव्वाल (चैत सुदि 9, सवत् 1691=गुरुवार, मार्च 27, 1634 ई०) को बादशाह ने लाहौर मे प्रवेश किया, और जहागीर बादशाह के दौलतखाने को नये सिरे से बनाने का आदेश दिया।

21 शव्वाल (बैसाख बदि 7=गुरुवार, अप्रेल 10, 1634 ई०) को बादशाह ने राजा भारत बुदेला के मरने की खबर सुन कर उसके बेटे देवीसिंह को 2 हजारी जात — 2 हजार सवार का मनसब और राजा का खिताब प्रदान किया।

काश्मीर को कूच

24 जीकाद (जेठ वदि 11=मगलवार, मई 13, 1634 ई०) को बादशाह लाहोर से काश्मीर की तरफ रवाना हुए। काश्मीर के लाहौर से 4 रास्ते हैं।

1 पखली होकर 35 मजिल, 150 कोस, 2 चौमुखे होकर 29 मजिल, 102 कोस, 3 पतोज होकर 23 मजिल, 99 कोस, 4 पीर पजाल होकर 20 मजिल, 60 कोस।

दक्षिण की लड़ाइयो का हाल

26 रवी-उस-सानी (कार्तिक वदि 13=गुरुवार, अक्तूबर 9, 1634 ई०) को शाहजादा शुजा ने परेंडे का किला फतह करने को बुरहानपुर से खानखाना के साथ कूच किया। खानजमा को बीजापुर को लूटने और घेरने के वास्ते पहिले से भेज दिया था। उसके साथ राजा जयसिंह, राव शत्रुसाल, राजा पहाड़सिंह, जुगराज बुदेला, राजा रोज अफजू और जम्मू का राजा सग्राम भी था।

शाहजी ने निजाम के घराने के एक व्यक्ति को, जो अजराही (अजनेरी) के किले मे कैद था, साथ लेकर अहमदनगर और दौलताबाद फतह करने का विचार किया। उधर आदिलखा ने किशनाजी दत्तू, रणदौला और मुरारी पडित को खजाना और सेना देकर उसकी मदद और किले की सुरक्षार्थ भेजा।

खानजमा ने विदा होकर राजा जयसिंह और राजपूतो को अपनी फौज का हरावल बनाया और जुगराज को चदावल करके परेंडे के किले को घेर लिया। फिर राजा विट्ठलदास गौड भी तैनात होकर खानजमा के पास आ गया।

शाहजी और रणदौला मिल कर लडने को आये। अपनी बारी पर एक दिन खानखाना खुद घास वगैरह की रसद लाने को गया। उसको 10 हजार शत्रुओ ने आकर घेर लिया। उस वक्त महेश राठौड, जो खानखाना के राजपूतो का सरदार और हरावल था, रघुनाथ भाटी और दूसरे राजपूतो समेत पाव जमा कर उनसे लडा और घायल होकर रणक्षेत्र मे गिर गया। खानखाना की जान पर भी आ बनी। घायलो को उठाने का उसे तो समय नही मिला। मगर तब ही मालवा का सूबेदार खानदौरा 12,500 सवारो से उसकी सहायतार्थ दौडा आया। पहिले महेश राठौड और दूसरे राजपूतो को उठा कर ले गये। उसके बाद मे वह खानखाना से जा मिला। महेश जिदा था, मगर बहुत घायल हो गया था। खानदौरा के पहुचते ही शत्रु भाग गये, जिससे उनके घेरे मे से निकल कर खानखाना सकुशल वापस लौट आया।

8 रमजान (फागुन सुदि 10=सोमवार, फरवरी 16, 1635 ई०) को 500 आदमी किले से निकल कर राजा पहाड़सिंह के मोरचे पर जा पडे। उस लडाई मे राजा के कई आदमी, कई असालत खां के और कई राजा रोज अफजू के काम आये। बहुत से दुश्मन मारे भी गये अथवा घायल भी हुए।

10 रमजान (फागुन सुदि 12=बुधवार, फरवरी 18, 1635 ई०) को खानखाना रसद लाने के वास्ते सवार हुआ। उसके साथ सैयद खानजहा, खानजमा,

राव शत्रुसाल, पृथ्वीराज, राजा जयसिंह, मुर्तजा खा, राजा विट्ठलदास, मालूजी और सैयद शुजाअत खा, वगैरह भी अपनी-अपनी फौज से चढे। 5–6 कोस चल कर रसद के पास पहुचे ही थे कि शत्रुओ ने आकर खानजहा पर हमला किया। यह खबर सुन कर खानजहा की सहायतार्थ खानखाना वहा पहुचा। राजा जयसिंह भी मदद को जा पहुचा और उसे सारे रास्ते पर दुश्मनो का सामना करना पडा। इस प्रकार रसद शाम को सेना मे पहुच गई।

18 रमजान (चैत वदि 4=गुरुवार, फरवरी 26, 1635 ई०) को खानजहा और खानदौरा वगैरह घास-चारा लेने के लिए गये। शत्रुओ ने वहा आकर एक बाण मारा, जिससे घास जलने लगी और जगल मे आग लग गई, तब उसमे दो हाथी और बहुत से भारवाहक जानवर जल गये। सेना अव्यवस्थित हो गई। यह सूचना पाकर खानखाना राजा विट्ठलदास और पृथ्वीराज के साथ उधर गया। शाहजादा ने भी तैयारी की। मगर शत्रु भाग गये। राजा विट्ठलदास और पृथ्वीराज को उनका पीछा करने को भेज कर खानखाना लौट आया। ये दोनो भी खानजमा के साथ कुछ दूर शत्रुओं का पीछा करके लौट आये। उस दिन खानजहा, खानजमा और राजा विट्ठलदास ने बहुत बहादुरी दिखाई थी।

19 रमजान (चैत वदि 5=शुक्रवार, फरवरी 27, 1635 ई०) को जब खानखाना और खानजमा घास-चारा लाने को गये थे, तब शत्रुओ ने पैदल होकर मोरचो पर हमला किया। बादशाही अमीरो ने बाहर निकल कर उनको हराया। इस लडाई मे जुगराज के बहुत राजपूत आहत हुए।

23 (सही तारीख 25) रमजान, बृहस्पतिवार (चैत वदि 10=बुधवार, मार्च 4, 1635 ई०) की रात को शाहजादा के हुक्म से बादशाही अधिकारियो और मनसबदारो ने गनीम के डेरो पर चढाई की। उनमे राजा जयसिंह, राजा विट्ठलदास, शत्रुसाल, राव करण और मालूजी दक्खिनी भी थे। मगर शत्रु सतर्क हो गये थे, अत हाथ नही आये। तब तो जगल जलाने के दिन, जो ऊट और बैल गनीम ले गये थे, बादशाही सैनिक उनको पीछे लौटा लाये। मगर राजा जयसिंह ने घोडे दौडा कर गनीम के बहुत से पैदलो को पकड लिया। मुरारी पडित का भाई माधोजी मुबारिज खा से लडा। सैयद खानजहा को राजा जयसिंह की मदद पर छोड कर खानजमा माधोजी पर गया और उसको मार कर उसने गनीमो को भगा दिया।

12 शव्वाल (चैत सुदि 5, स० 1691=सोमवार, मार्च 23, 1635 ई०) को खानखाना का नौकर कोका पडित घास-चारा लेने को गया। 4000 हब्शी उस पर आ पडे। शाहजादा को साथ लिया, तथा जुगराज और लुहरास्प को सेना की हिफाजत पर छोड कर खानखाना दुश्मनो के डेरे लूटने को गया। दुश्मन खबर पाकर बायीं तरफ से बाण मारने लगे। खानजमा और खानजहा

ने उन पर हमला किया। राजा जयसिंह और विट्ठलदास ने उनकी मदद पर जाकर शत्रुओ को भगा दिया। भागते समय मुरारी पडित घोडे मे गिर पडा। तब उसके एक नौकर ने अपने घोडे पर चढा कर उसको तो निकाल दिया, परतु वह स्वय मारा गया।

बादशाही अधिकारियो ने कई जगह सुरगें लगाई। मगर वे आगे नही चल सकी। कुछ को अदर वालो ने बद कर दिया और कई मे से पानी निकल आया। एक सुरग उडाई गई, किंतु तब भी जाने लायक रास्ता न हुआ। बादशाही अमीर और मनसबदार खानखाना के बुरे बर्ताव से नाराज हो गये। उधर खानदौरा के बारबार यह कहते रहने से कि "मैंने खानखाना की जान बचाई है", खानखाना उससे अदावत रखने लगा था। घास-चारा लाने पर हर रोज गनीमो से लडाई होती थी। इसलिए खानखाना ने 3 जिल्हिज (जेठ सुदि दूसरी 4=रविवार, मई 10, 1635 ई०) को किले का घेरा उठा कर शाहजादा सहित बुरहानपुर की तरफ कूच कर दिया।

7 जिल्हिज (जेठ सुदि 8=गुरुवार, मई 14, 1635 ई०) को जब बादशाही फौज घाटे से उतर रही थी, गनीम आकर बाण मारने लगे। शत्रुसाल, जुगराज और राव करण वगैरह को लेकर खानखाना का बेटा, खानजमा, उनसे लडने गया। उधर राजा जयसिंह दाहिने हाथ की फौज से उसकी मदद को पहुचा। गनीम भाग गये और बादशाही सेना 26 जिल्हिज (आसाढ बदि 12= मगलवार, जून 2, 1635 ई०) को बुरहानपुर मे पहुची।

किला फतह किये बिना ही शाहजादे को लौटा लाने पर बादशाह ने खानखाना पर बहुत क्रोध किया, और उसकी सेवा मे नियुक्त सभी अमीरो सहित अपने पास उपस्थित होने का हुक्म शाहजादा को लिख भेजा।

17 सफर (भादो बदि 4=गुरुवार, जुलाई 23, 1635 ई०) को बादशाह ने काश्मीर मे पृथ्वीराज राठौड का मनसब असल और वृद्धि को मिलाते हुए 2 हजारी जात—1600 सवारो का कर दिया।

काश्मीर से लौटना

3 महीने तक वहाँ ठहरे रहने के बाद 23 रबी-उल्-अव्वल्, रविवार, (आसोज बदि 11=सितम्बर 7, 1634 ई०) को बादशाह काश्मीर[1] से लाहौर को लौटे।

22 रबी-उस्-सानी (कातिक बदि 9=रविवार, अक्तूबर 5, 1634 ई०) को मुकाम भवर मे, जहा कि काश्मीर के पहाडो का सिलसिला खतम होना

1 'बादशाहनामा' में काश्मीर के पहाड़ों, बागो और रमणीय स्थानों वगैरह का [illegible] हाल लिखा है, जिनमें बादशाह सैर सपाटे करते रहे थे।

है, जगन्नाथ कलावत को 'कविराय' की उपाधि देकर उसको सम्मानित किया गया। हिन्दुस्तानी शायरी और गान विद्या मे उस समय उसके बराबर कोई भी हिन्दुस्तान मे नही था। लाहौर से आकर तव वह वहाँ उपस्थित हुआ। बादशाह के आदेशानुसार नये ध्रुपदो को बनाने के लिए वह लाहौर ठहर गया था। सो बादशाह के नाम से विभिन्न रागो में उसने जो बारह नये ध्रुपद बनाये थे, उन्हे अब उसने यहा पेश किया, जिनके बोल भी नये-नये थे। बादशाह ने उन नये ध्रुपदो को पसन्द करके उसको रुपयो मे तोला। जो 4500 रुपये उसके बराबर तुले थे, वे उसको इनायत किये गये।

भवर मे हिन्दू मुसलमान एक दूसरे के साथ सगाई-विवाह करते थे। मुसलमानो की जो लडकियाँ उनसे व्याही जाती थी, हिन्दू उनको जलाते थे और जो हिन्दू लडकियाँ मुसलमानो से ब्याही जाती थी, वे गाडी जाती थी। बादशाह ने इस बात को नापसद करके हुक्म दिया था कि जब तक हिन्दू मुसलमान न हो मुसलमान औरतें उनके घर मे रहने न पावें। इस पर वहा का जमीदार जोकू कुटुब समेत मुमलमान हो गया। बादशाह ने मेहरबानी करके उसका नाम राजा दौलतमन्द रक्खा।

जब बादशाह पजाब के गुजरात इलाके मे पहुँचे, तब मुसलमानो ने फरियाद की कि हिन्दुओ ने बहुत-सी मुसलमान औरतो को अपने घरो मे डाल लिया, और मसजिदे अपने घरो मे मिला ली हैं। बादशाह ने शेख महमूद गुजराती को तहकीकात का हुक्म दिया। और वह बात साबित होने पर उसने 70 मुसलमान औरतें हिन्दुओ से छीन ली ओर मसजिदो की जमीन अलग निकाल करके वहा मसजिदें बनाने के वास्ते जुरमाने मे रुपया लिया। बादशाह ने यहाँ भी भवर के माफिक हुक्म जारी किया कि मुसलमान औरतें तब तक हिन्दुओ के घरो मे न रहे, जब तक कि वे हिन्दू मुसलमान न हो जायें, नही तो मुसलमान औरतो के साथ उनके सम्बन्ध समाप्त करा दिये जावें। इस पर बहुत से हिन्दू तो अपनी मुसलमान औरतो के लिए मुसलमान हो गये और जो न हुए उनसे वे औरते छीन ली गईं। यही हुक्म तमाम बादशाही क्षेत्रो मे जारी होकर बहुत-सी मुसलमान औरतें हिन्दुओ से छीनी गईं और तब उनका निकाह मुसलमानो से हुआ।

24 जमादि-उल्-अव्वल (मगसिर वदि 11=गुरुवार, नवम्बर 6, 1634 ई०) को कागडा के पहाड के राजा बासू का बेटा, राजा जगतसिह, अपने राज्य से दरबार मे हाजिर हुआ। इसी दिन महाबत खा खानखाना के मरने का समाचार दक्षिण से आया।

जुलूसी सन् आठवां

(नवम्बर 13, 1634 ई० से नवम्बर 1, 1635 ई० तक)

5 जमादि-उस्-सानी (मगसिर सुदि 7=सोमवार, नवम्बर 17, 1634 ई०) को बादशाह लाहौर पहुँचे।

महाबत खा खानखाना बुरहानपुर मे मर गया था, इसलिए बादशाह ने मालवा की सरकार हडिया का वह हिस्सा जो कि नर्वदा के पार था और मालवा से दूर पडता था, खानदेश मे शामिल करके खानदेश और दक्षिण के दो हिस्से किये एक बालाघाट और दूसरा पाईघाट। बालाघाट मे कुल दक्षिण अर्थात् दौलताबाद, अहमदनगर, पटन, बीड, जालनापुर, जुनेर, संगमनेर, फतेहाबाद, कुछ बरार, और तमाम तिलगाना था। इसकी जमा 1 अरब और 20 करोड दाम की थी। पाईघाट मे तमाम खानदेश और बरार का बहुत-सा क्षेत्र था। इसकी जमा 92 करोड दाम की थी।

बालाघाट का सूबेदार तो खानखाना के बेटे खानजमा को और खानदौरा को पाईघाट का सूबेदार नियुक्त किया। इसके साथ ही हुक्म दिया कि "राजा जयसिंह, जुगराज और राव शत्रुसाल दौलताबाद मे रहे और पहाडसिंह बुंदेला और माधोसिह हाडा बुरहानपुर मे रहें।"

ऊदाजीराम का बेटा, जगजीवन, 3 हजारी जात—3 हजार सवारो का मनसबदार बना। वह 7 जमादि-उस्-सानी (मगसिर सुदि 9=बुधवार, नवम्बर 19, 1634 ई०) को शाहजादा शुजा के साथ दक्षिण मे आया था।

9 जमादि-उस्-सानी (मगसिर सुदि 12=शुक्रवार, नवम्बर 21, 1634 ई०) को बादशाह ने जहागीर बादशाह के मकबरे मे जाकर जियारत की और 10 हजार रुपये वहा के मुजावरो (दरगाह के सेवको) को दिये।

खटक के पठानो को सजा देने के वास्ते, जो वहा रहते हैं, 15 जमादि-उस्-सानी (पौष बदि 3=गुरुवार, नवम्बर 27, 1634 ई०) को राजा जगतसिंह को बगश की थानेदारी पर भेजा गया। विदाई के वक्त उसको खिलअत, जडाऊ खजर और चादी के साज का घोडा इनायत हुआ।

29 जमादि-उस्-सानी (पौष सुदि 1=गुरुवार, दिसम्बर 11, 1634 ई०) को राजा गजसिंह का बेटा अमरसिंह पाच सदी जात—200 सवारो के इजाफे से ढाई हजार जात—डेढ हजार सवारो का मनसबदार हुआ। उसको झडा, घोडा और हाथी भी मिला।

3 रजब (पौष सुदि 4=रविवार, दिसम्बर 14, 1634 ई०) को शाहजादा

औरगजेब को 10 हजारी मनसब और लाल डेरा इनायत हुआ । अब तक उसे प्रतिदिन 500 रुपये मिलते थे ।

24 रजब (माह बदि 11=रविवार, जनवरी 4, 1635 ई०) को तरबीयत खा, जो बल्ख के खान नजर मुहम्मद खा के पास भेजा गया था, वापस आया । वह वहा से घोड़े, खच्चर और कई और सौगातें भी लाया था, जिनमे एक चीज को देख कर बादशाह बहुत राजी हुए । वह सुल्तान मुहम्मद की बेटी, जहागीर मिर्जा की पोती और अमीर तैमूर की पड़पोती, शाद मलिक खानम द्वारा लिखित कुरान थी ।

3 शाबान को (माह सुदि 5=मगलवार, जनवरी 13, 1635 ई०) को महेशदास राठौड़, जो पहिले महावत खा का नौकर था, बादशाही नौकर हुआ । उसको 5 सदी जात—400 सवार का मनसब मिला ।

महाबत खा की मृत्यु के बाद शाहजी ने निजामशाह के कई नौकरो के साथ दौलताबाद के किले पर चढाई की थी । उसी समय खानदौरा मालवा से बुरहानपुर जा पहुचा और वहा माधोसिह और मीर फैजुल्ला खा को छोड़ कर वह स्वय दौलताबाद चला गया । मालूजी, परसूजी, राजा जयसिह और जुगराज बुदेला उसके साथ थे । शिव गाव मे जाकर लाम बाधा, आप स्वय बीच की अनी मे रहा, जयसिह को हरावल किया । शत्रु भाग गये । खानदौरा ने पीछा करके उनका डेरा लूट लिया । फिर वहा से प्रयाण कर अहमदनगर पहुचा ।

7 शाबान (माह सुदि 9=शनिवार, जनवरी 17, 1635 ई०) को लाहौर से लौट कर बादशाह ने चबा के राजा पृथ्वीचद को खिलअत और घोड़ा देकर निजाबत खा के साथ कागड़ा के पहाड़ की फौजदारी पर भेजा ।

2 रमजान (फागुन सुदि 3=मगलवार, फरवरी 10, 1635 ई०) को शाहबाद के पड़ाव पर राजा देवीसिह के मनसब मे वृद्धि कर ढाई हजारी जात—2000 सवारो का कर दिया गया ।

15 रमजान (चैत बदि 2=सोमवार, फरवरी 23, 1635 ई०) को बादशाह हुमायू बादशाह के मकबरे की जियारत करके दिल्ली में दाखिल हुए । 22 रमजान (चैत बदि 8=सोमवार, मार्च 3, 1635 ई०) को आगरा की तरफ कूच हुआ ।

30 रमजान (चैत सुदि 2, सवत् 1692=मगलवार, मार्च 10, 1635 ई०) को जमुना (नदी) के किनारे घाट स्वामी मे, जो नया बना था, अब्दुल्ला खा फीरोज जग विहार का सूबेदार, जो रतनपुर के जमीदार को सजा देने के वास्ते गया था, हाजिर हुआ । वहा के राजा बाबू लक्ष्मण और दूसरे जमीदारो को साथ लाया, जिन्होंने बादशाह को नजरें प्रस्तुत की ।

रतनपुर पर चढ़ाई का कुछ विवरण

जब अब्दुल्ला खां भागी घाटी से 4 कोस इधर पहुंचा, जहां से रतनपुर 60 कोस रहता है, तो बाघोगढ़ का राजा अमरसिंह अपनी सेना के साथ उससे आ मिला। जब वे सब उस घाटी में पहुंचे तो वहां के जमींदार ने तीर और बंदूक की लड़ाई शुरू कर दी। मगर खां ने उसको पीछे हटा दिया। तब वह तीनोथग, जो मजबूत किलों में से है, के अन्दर जा घुसा। खां ने वह किला भी फतह कर लिया। अपनी औरतों और लड़कों को आग में जला कर किले वाले स्वयं लड़ते हुए मारे गये। यों खां ने रास्ता साफ करके रतनपुर पर धावा किया, तब बाबू लक्ष्मण ने राजा अमरसिंह की मारफत सुलह चाही। खां ने सुंदर कविराय को, जो बादशाह के पास से उसके पास तैनात होकर आया था, राजा के आदमियों के साथ बाबू के पास भेजा। वह भी उसके पीछे-पीछे रवाना हुआ। सुंदर कविराय के पहुंचते ही बाबू खां के पास उपस्थित हो गया। 3 हाथी तो उसी वक्त लाया था, तथा 9 हाथी और 2 लाख रुपये 25 दिन में पेश करना कबूल करके खां के साथ बादशाह के पास हाजिर होने का इकरार किया।

26 रमजान, शुक्रवार (चैत बदि 12=मार्च 6, 1635 ई०) को गांव सुल्तानपुर, परगना पलवल, में शाहजादा दारा शिकोह के बेटा हुआ। बादशाह ने उसका नाम सुलेमान शिकोह रखा।

3 शव्वाल, शुक्रवार, (चैत सुदि 5, संवत् 1692=मार्च 13, 1635 ई०) को घाट स्वामी से आगरा पहुंच कर बादशाह ने मखमली डेरा आम खास दीवान के आगे खड़ा कराया, जो गुजरात के कारीगरों ने 1 लाख रुपये की लागत से तैयार किया था। तब उसके अंदर तख्त ताऊस पर जुलूस किया। यह तख्त 3 गज लंबा, 2½ गज चौड़ा और 5 गज ऊंचा था। उस पर 14 लाख रुपये का एक लाख तोला सोना और 86 लाख के जवाहरात थे। कुल मिला कर 1 करोड़ रुपये की लागत लगी थी, और वह 7 वर्ष में तैयार हुआ था। उस पर पन्नों के 2 मोर बनाये गये थे और उनके बीच में 1 जड़ाऊ पेड़ था। बादशाह ने इस तख्त पर बैठ कर बहुत-बहुत बख्शिशें दीं। शाहजादों और अमीरों ने भी लाखों रुपये की पेशकशें दीं, जिनका कुल मूल्य 24 लाख रुपये से कम नहीं था।

नरवर के राजा रामदास के मनसब में पांच सदी जात—300 सवारों का इजाफा होकर अब वह ढाई हजारी जात—डेढ़ हजार सवारों का हो गया।

19 शव्वाल (वैसाख बदि 6=रविवार, मार्च 29, 1635 ई०) को मेष संक्रांत के दरबार में राजा जयसिंह का मनसब हजारी जात इजाफा होकर पांच हजारी—4000 सवारों का हो गया। राजा विट्ठलदास को हाथी इनायत होकर अजमेर जाने को विदा दी गई।

20 जीकाद (जेठ बदि 6=मगलवार, अप्रेल 28, 1635 ई०) को नजर मुहम्मद खा का वकील, नावहर वे, बल्ख से 9 बाज, 2 शनकार (शिक्रा), 9 चर्ग (शिक्रा बाज), 100 घोडे, 50 ऊट-ऊटनी, 100 मन लाजवद (नीलम-वैदूर्य) पत्थर, कोह (पहाडी) तूरान के कपडे, समूर (विशेष नरम किस्म का चमडा), काली (कालीन का सामान), नमद (नमदा), तलातीन (सुगधित चमडा), और चीनी के बर्तन लेकर आया। यह सब 70 हजार रुपये का माल था। तीसरे दिन उसने 40 घोडे, 35 ऊट, और उस विलायत के कुछ कपडे अपनी तरफ से भी नजर किये। उसको खिलअत, जडाऊ छुरी, 400 तोले सोने की 1 मोहर, इतनी ही 400 तोला चादी का एक रुपया, और तहवीलदार को 1 मोहर और 1 रुपया 100-100 तोले सोने और चादी के इनायत हुए।

कागडा के फौजदार नजाबत खा ने श्रीनगर फतह करने का उत्तरदायित्व लिया था और तदर्थ 2000 सवार मागे थे, जो बादशाह ने उसको दिये थे। सिरमौर के जमीदार को साथ लेकर वह उस मुहिम पर गया। पहिले शेरगढ का किला, जो जमुना के किनारे पर अपनी सरहद मे श्रीनगर के जमीदार ने बनाया था, फतह किया। तदनन्तर कालपी का किला लेकर सिरमौर के जमीदार को दे दिया, क्योकि वह यथार्थ मे उसी का था। फिर सिरमौर वाले ने कहा कि "श्रीनगर के जमीदार ने मेरा बैराट का किला भी दबा रक्खा है, सो यदि मेरे साथ फौज भेजें तो उसे भी पुन हस्तगत कर लू।" नजाबत खा ने फौज भेज कर वह किला भी उसको दिलवा दिया। तदुपरान्त नजाबत खा ने कालपी से कूच किया और सातोर का किला फतह करके लक्खनपुर के जमीदार जगतू को वहा 100 सवार 1000 प्यादो से रक्खा। फिर आगे जाकर गगा के किनारे तक अधिकार कर लिया। जब हरिद्वार के पास गगा जी से उतरा तो सुना कि दुश्मन ने आगे के घाटे को रोक रक्खा है और मार्ग भी पत्थर और चूने से बद कर दिया है। यह घाटा श्रीनगर के पहाडो मे है।

गूजर ग्वालेरी (गुलेरी) और उदयसिंह राठौड को सेना की हिफाजत पर छोड कर खान आगे बढा और एक बडी लडाई लड कर उसने घाटे को फतह कर लिया। तब गूजर वगैरह को अपने पास बुला कर उसने श्रीनगर की ओर प्रयाण किया। जब श्रीनगर 30 कोस रहा, तो वहा के जमीदार ने वकील भेज कर 10 लाख रुपये बादशाह के लिए, 1 लाख नजाबत खा को देना कबूल किया और साथ मे शर्त रखी कि वे उसका मुल्क बरबाद न करें। खान ने स्वीकार किया। कुछ दिनो उपरात जमीदार का वकील कुछ चादी का सामान लेकर आया और बाकी को 15 दिन मे भेजने का वादा किया। मगर राजा ने उसकी सेना की कमी का मौखिक हाल सुन कर कुछ भी नही भेजा, और इकरार ही इकरार मे डेढ महीना निकाल दिया। इस अरसे मे राजा ने सभी रास्ते बद

कर दिये, जिससे रसद आना रुक गई और 1 रुपये का 1 सेर नाज मिलने लगा। खान ने असावधानी से कुछ बदोबस्त नही किया और गूजर ग्वालेरी को रसद लाने के वास्ते भेजा। वह अभी सेना से 5 कोस दूर ही गया था कि दुश्मन ने उस पर धावा कर दिया। वह बहादुरी से लडता हुआ अपने बेटो और साथियो समेत काम आया। तदनतर दुश्मन खान की सेना तक बढ कर गोफन और बदूकें मारने लगे। नजाबत खा लाचार होकर लौटा। आगे रास्ते बद थे, जिससे सेना के बहुत व्यक्ति पैदल ही इधर-उधर भागे, जो फिर जीवित नही लौटे। नजाबत खा थोडे से आदमियो के साथ बडी कठिनाई से जान बचा कर निकला। लेकिन रूपचद ग्वालेरी (गुनेरी) वगैरह गैरत और बेमरदानगी से इस तरह निकलना नही चाहते थे, अत लड कर वे वही काम आ गये। सेना का यह विनाश उस नादान सरदार (नजाबत खा) की अव्यवस्था से हुआ। इस बात से अप्रसन्न होकर बादशाह ने जागीर सहित उसका मनसब उतार लिया। शाहनवाज खा के बेटे और अब्दुल रहीम खानखाना के पोते मिर्जा खा को खिलअत देकर उसकी जगह कागडा की फौजदारी पर भेजा।

जुझारसिंह बुन्देला का विद्रोही होना

बादशाह ने जुझारसिंह के पूर्व अपराधो को सन् 2 जुलूसी (स० 1685= दिसम्बर, 1628 ई०) मे क्षमा कर दिया था। तब से वह दक्षिण मे तैनात था। पिछले दिनो मे वह महाबत खां खानखाना से छुट्टी लेकर वतन मे आ गया था और अपने बेटे विक्रमाजीत को दक्षिण मे छोड आया था। यहा उसने गढा के जमीदार प्रेमनारायण पर चढाई की, और धर्म-कर्म की शपथ देकर प्रेमनारायण को चौरागढ के किले से, जो उस मुल्क की राजधानी है, बाहर बुलाया और सब साथियो समेत, जो अधिकतर उसके भाई-बधु थे, मार कर चौरागढ का किला, उसका सब माल और खजाना ले लिया। प्रेमनारायण का बेटा, जिसको मालवा का सूबेदार खानदौरा नजराने के साथ लाया था, शाही दरबार मे हाजिर था। उसने यह सारा हाल बादशाह से अर्ज किया। बादशाह ने सुदर पत्रिराय के साथ जुझारसिंह को फरमान भेज कर लिखा कि उसने जो बिना किसी शाही हुक्म के प्रेमनारायण और उसके भाई-बंदो को मारा है, सो अब गढा का कुल मुल्क बादशाही नौकरो को सौप दे, और जो उसे अपनी जागीर मे वह चाहता हो तो अपने वतन मे अपने पास का उतना मुल्क वह छोड दे, और प्रेमनारायण के खजाने मे से 10 लाख रुपये भेज दे। इस हुक्म की खबर जुझारसिंह को पहिले ही उसके वकीलो की चिट्ठियो से मिल गई थी। इसलिए, उसने अपने बेटे विक्रमाजीत को बुलाया। तब वह [illegible] मे [illegible] [illegible] किया। वहा के सूबेदार खानजमा ने तो कुछ नहीं किया, लेकिन [illegible]

के सूबेदार खानदौरा ने जुझारसिंह के भाई राजा पहाड़सिंह और चद्रमन बुदेला, माधोसिंह हाडा, राव करण, नजर बहादुर और मीर फैजुल्लाह, वगैरह सब मनसबदारो सहित उसका पीछा किया और 5 दिन मे मालवा के आष्टा मुकाम के पास विक्रमाजीत को जा लिया। लडाई हुई, जिसमे विक्रमाजीत घायल होकर भागा और जगल के रास्ते से धामूनी मे अपने बाप से जा मिला। मालवा का सूबेदार अल्लाहवर्दी खा मार्ग में ही था, फिर भी उसने उसका पीछा नही किया और खानदौरा ने भी इसी प्रकार कुछ नही किया।

बादशाह ने यह खबर सुन कर तीन सरदारो को 20 हजार फौज से जुझारसिंह पर भेजा। पहिला, अब्दुल्ला खा फीरोजजग सूबेदार पटना, दूसरा, सैयद खानजहा, तीसरा, खानदौरा, जो मालवा मे हुक्म की प्रतीक्षा कर रहा था। गजसिंह का बेटा अमरसिंह, किशनसिंह भदोरिया, कृपाराम गौड, अनूपसिंह का बेटा जयराम, राव रतन हाडा का पोता इद्रसाल और जगन्नाथ कछवाहा का पोता रूपसिंह—ये सब खानजहा के साथ भेजे गये। अब्दुल्ला खा के साथ बाघोगढ का राजा अमरसिंह, चद्रमन बुदेला और राजा सारगदेव भेजे गये। अल्लाहवर्दी खा को बुरहानपुर जाने का हुक्म पहुचा। मालवा की सूबेदारी खानदौरा को इनायत हुई और हुक्म हुआ कि राव रतन के बेटे माधोसिंह हाडा, भारत बुदेला के बेटे राजा देवीसिंह, वगैरह मनसबदारो के साथ चदेरी के रास्ते से पिछोर (चदेरी से 32 मील उत्तर मे) को जावे और बरसात के निकलने तक वही रहे।

जुझारसिंह ने इन फौजो के आने मे अपना ही अहित देखकर खानखाना की मारफत बादशाह को अर्ज कराई कि "जो कोई बादशाही नौकर मेरे पास आवे तो मैं उसकी मारफत अपनी अर्ज मारुज करवाऊ।" बादशाह ने सुदर कविराय को भेज कर फरमाया कि जो 30 लाख रुपये नकद और चौरागढ के बदले बायावा (आगरा सूबा मे) का क्षेत्र नजर करे तो उसका कसूर माफ किया जावेगा, और फौज के सरदारो को हुक्म दिया कि जब तक सुदर कविराय लौट कर न आवे सब अपनी-अपनी जगह पर थमे रहे। इसके साथ ही आदेश दिया कि यदि जुझारसिंह हुक्म न माने तो ओरछा फतह करके उसकी हुकूमत और कौम बुदेलो की राजगी राजा देवीसिंह को दे दें, जिसके बाप-दादे कदीम से मालिक थे, मगर जहागीर बादशाह ने अबुल फजल के मार डालने के इनाम मे वीरसिंहदेव को इनायत कर दी थी।

सुदर कविराय गया और यह मालूम करके कि जुझारसिंह अपने मुल्क, माल, किलो और जगलो के भरोसे भूला हुआ है, पीछे लौट आया। तब तो बादशाह ने तीनो सेनापतियो को आक्रमण करने का हुक्म लिख दिया और सम्पूर्ण सेना का प्रधान सेनापत्य करने के वास्ते शाहजादा औरगजेब को 10

हजारी जात—10 हजार सवारो का मनसब देकर 15 रबी-उस्-सानी, सन् 1045 हि० (आसोज वदि 1, स० 1692=गुरुवार, सितम्बर 17, 1635 ई०) को रवाना किया। उसके साथियो मे राजा विट्ठलदास गौड, महाराजा भीम का बेटा राजा रायसिंह, गोकुलदास सीसोदिया और महेश राठौड थे।

बादशाह को बहुत ही पसद आए एक नया काव्य बनाने के इनाम मे 16 मुहर्रम (सावण वदि 2=सोमवार, जून 22, 1635 ई०) को उन्होंने जगन्नाथ कलावत को जिसका खिताब कविराय था, हाथी इनायत किया।

16 रबी-उल्-अव्वल (दूसरे भादो वदि 3=गुरुवार, अगस्त 20, 1635 ई०) को राजा देवीसिंह, को नक्कारा इनायत हुआ।

8 रबी-उस्-सानी (दूसरे भादो सुदि 9=गुरुवार, सितम्बर 10, 1635 ई०) को बादशाह ने बल्ख के राजदूत नाजर बे को 1 भारी खिलअत और 20 हजार रुपये देकर विदा किया। सवा लाख रुपये की सौगातें देकर उसके साथ अपना वकील भी नजर मुहम्मद के पास भेजा।

14 रबी-उस्-सानी (दूसरे भादो सुदि 15=बुधवार, सितम्बर 16, 1635 ई०) को राजा जयसिंह दक्षिण से आकर दरबार मे हाजिर हुआ। 18 रबी-उस्-सानी (आसोज वदि 4=रविवार, सितम्बर 20, 1635 ई०) को बादशाह ने रथ[1] मे बैठ कर दौलताबाद का किला देखने के लिए कूच किया।

ओरछा की फतह

जब बरसात हो चुकी तो बादशाही अमीर भाडेर मे जमा हुए। वहा से उन्होंने ओरछा की ओर प्रयाण किया। उसके पास पहुँचने मे 3 कोस जगल काटने पडे। जुझारसिंह 5 हजार सवार और 10 हजार पैदलो से ओरछा मे था। हर रोज उसके आदमी जगल मे से तीर और बदूकें छोडा करते थे। बादशाही फौज लडती-भिडती 29 रबी-उस्-सानी (कातिक सुदि 1=गुरुवार, अक्तूबर 1, 1635 ई०) को गाव खमरडानी मे पहुँची, जहाँ से ओरछा 1 कोस था। राजा देवीसिंह ने खानदौरा के साथ हमला करके वहाँ की पहाडी जुझारसिंह के आदमियो से छीन ली। तब तो जुझारसिंह ने अपने कबीलो और खजानो को ओरछा से धामूनी के किले मे भेज दिया। यह बहुत मजबूत किला उसके बाप का बनाया हुआ था, जिसके 3 तरफ दलदलें हैं, जिसके कारण सुरगें और सलामत कूचे नही बन सकते। पश्चिम की तरफ मैदान तो है, पर उधर 20 गज गहरी खाई खोद कर दलदलो से मिला दी है।

---

1 जहांगीर बादशाह भी हिन्दुओं के नियम के अनुसार रथ में बैठ कर दक्षिण की तरफ गये और उस यात्रा के हाल में उन्होंने लिखा है कि हिन्दू दक्षिण को रथ में बैठ कर जाते हैं।

वाद मे जुझारसिंह कुछ लोगो को ओरछे की रखवाली पर छोड कर आप भी विक्रमाजीत समेत भाग गया। तव 3 जमादि-उल्-अव्वल, सोमवार (आसोज सुदि 3=रविवार, अक्तूवर 4, 1635 ई०) की रात्रि मे वादशाही सिपाहियो ने कमद और निसेनियो से ऊपर चढ कर किला फतह कर लिया और एक रोज वहां ठहर कर वादशाही हुक्म के माफिक सारे इलाके समेत उसे राजा देवीसिंह को दे दिया। 4 जमादि-उल्-अव्वल (आसोज सुदि 5=मगलवार, अक्तूवर 6, 1635 ई०) को धारा नदी से उतर कर जुझारसिंह का पीछा किया। 14 जमादि-उल्-अव्वल (कार्तिक वदि 1=शुक्रवार, अक्तूवर 16, 1635 ई०) को धामूनी से 3 कोस पर पहुचने पर मालूम हुआ कि जुझारसिंह अपने वाल-वच्चो और खजानो को वहा से भी निकाल कर चौरागढ के किले मे ले गया है, जिसकी मजवूती का उसको ज्यादा भरोसा था, और धामूनी के कोट को गिरा कर रतना नामक एक व्यक्ति को अपने भरोसे के कुछ आदमियो के साथ वहा छोडा है। वादशाही फौज ने धामूनी को घेरा। किले वाले आधी रात तक वरावर तीर और वदूको से लडे। अत में सफलता की कोई आशा न देख कर खानदौरा के पास आदमी भेजे और लडाई वद कर दी। फौज के अफसरो का विचार सुवह के वक्त किले मे जाने का था, परतु लुटेरो ने उसी समय किले के भीतर घुस कर वहा लूट-मार मचा दी। खानदौरा उनको रोकने के लिए गया। लुटेरो की मशाल का एक फूल अचानक बुर्ज मे गिरा, जिससे वहा जो वारूद थी वह भभक उठी। उससे 20 गज चौडी 80 गज दीवार वुर्ज सहित उड गई। उसकी धमक और पत्थरो की चोट से वहुत से सिपाही मारे गये, जिनमे ज्यादा आदमी राजा गर्जसिंह के वेटे अमरसिंह के थे। खानजहा ने किले के माल और खजाने का बदोबस्त किया। दूसरे दिन कुछ लोगो ने जो घास-लकडी के वास्ते जगल मे गये थे, एक कुआ रुपयो से भरा पाया, और तलाश करने से दो-तीन कुए और भी मिले, जिनमे से कोई ढाई लाख रुपया हाथ आया। इससे मालूम हुआ कि जुझारसिंह ने जगल मे कुए खोद कर वहा अपना खजाना छिपा दिया था।

जुझारसिंह तव चौरागढ से 2 कोस दूर शाहपुर मे था। वहा से उसने अपना एक व्यक्ति देवगढ के जमीदार के पास भेजा कि उसे कह सुन कर वह जुझारसिंह के लिए वहा आश्रय प्राप्त कर लेवे। अपने रहने के वास्ते वह चौरागढ का किला भी सजा रहा था।

वादशाह का हुक्म आया कि सैय्यद खानजहा तो मुल्क के वदोवस्त और खजानो की तहकीकात के लिए वहा रहे तथा अव्दुल्ला खा और खानदौरा तमाम अमीरो को लेकर चौरागढ जावे। तव तो इन सव ने 25 जमादि-उल्-अव्वल (कार्तिक वदि 12=मगलवार, अक्तूवर 27, 1635 ई०) को वहा से कूच किया। इसी समय जुझारसिंह ने देवगढ के जमीदार के मर जाने की खवर

सुनी तो चौरागढ की तोपो को तोड-फोड कर, वहा जो माल-असबाब था, उसको जला दिया और प्रेमनारायण की इमारतो को, जो उस किले मे थी, उन्हे बारूद मे उडा कर अपने कबीलो और माल-असबाब समेत जमीदार देवगढ की सरहद मे लाजी और करोला के मार्ग से होकर उसने दक्षिण की ओर प्रस्थान किया।

बादशाही सेना जब चौरागढ की तलहटी मे पहुँची, तो खानदौरा ने अदर जाकर एक मदिर की छत पर बाग दी और कुछ मनसबदारो को, जिनमे गन्नौर के जमीदार का उत्तराधिकारी पुत्र भी था, वहा छोड कर अब्दुल्ला खा के साथ मिलने के लिए उसने शाहपुर की तरफ कूच किया।

करोला के चौधरी राघो ने खानदौरा के पास आकर कहा कि जुझारसिंह 2000 सवार और 4000 पैदलो के साथ जा रहा है। उसके साथ 60 हाथी और 40 हथनिया हैं, जिनमे से कुछ के ऊपर तो रुपया और चादी-सोना लदा हुआ है और कितनेक के ऊपर उसके बाल-बच्चे हैं। इस अत्यधिक भार के कारण वह हर रोज कठिनाई के साथ गोडवाना के 4 कोस चल पाता है, जो साधारणत आठ कोस के बराबर होते हैं। यह सुन कर बादशाही सरदार उसके पीछे दौडे। उनके पीछे-पीछे शाहजादा औरगजेब भी कूच करता हुआ धामूनी मे आ पहुचा।

अब्दुल्ला खा और खानदौरा गढ कटगा के राज्य और लाजी मे होकर, जो गोविंद गोड के इलाके मे थी, चादा की सरहद मे पहुचे। जुझारसिंह वहा जा रहा था, अत तब इनके वहा पहुचने की खबरें सुन कर वह जल्दी-जल्दी चलने लगा, लेकिन अब्दुल्ला खा के आगे चलने वाले सिपाही उसके पास जा पहुचे। अब्दुल्ला खा का हरावल बहादुर खा का चाचा, नेकनाम, अपना घोडा दौडा कर उस पर गया। तब जुझारसिंह और विक्रमाजीत कई औरतो को, जिनके घोडे थक गये, मार कर नेकनाम पर टूट पडे। नेकनाम मारा गया। यह देख कर रतन के बेटे माधोसिंह ने, जो खानदौरा के हरावल मे था, घोडा दौडा कर कई बुन्देलो को मारा। वे लोग उसके सामने से भाग कर चल दिये। अब खानदौरा भी बहादुर खा से आ मिला। जुझारसिंह और विक्रमाजीत पलट-पलट कर उन फौजो से लडते थे। आखिर जब उनके बहुत से साथी मारे गये, तब तोप, नक्कारा, 4 हाथी और [illegible] ऊट जिनके ऊपर रुपया लदा हुआ था, छोड कर वे झाडी मे जा घुसे। आसपास के जमीदारो ने बादशाही जसूसो के कहने से पता लगा कर खबर दी कि "जुझारसिंह अपने कबीलो और खजानो के आठ हाथियो को अपने बेटे उदयभान और [illegible] श्याम दवा के साथ गोलकुडा की तरफ रवाना करके वह स्वय भी उनके पीछे-पीछे जा रहा है।" इस पर अब्दुल्ला खा और खानदौरा ने उसका पीछा किया। जुझारसिंह के साथियो ने हाथियो के

पद-चिह्न बिगाड दिये थे, तथापि अटकल से वे उसके पीछे हो लिये। चलते-चलते मालूम हुआ कि उदयभान ने धोखा देने के वास्ते 6 हाथी गोलकुडा के रास्ते से चादा की तरफ रवाना कर दिये थे, और 2 हाथियो के ऊपर अपनी औरतें और बच्चो को लेकर वह जल्दी-जल्दी चला जा रहा है। ये भी उसके पीछे लग गये। आखिर एक दिन कुछ बुदेले नजर आये। खानदौरा ने अपने बेटे सैयद मुहम्मद और माधोसिंह हाडा को भेजा। वे लोग जौहर करना ही चाहते थे कि ये जा पहुचे। तब भी राजा बीरसिंहदेव की बडी रानी पार्वती और दूसरी औरतो और बच्चो को एक-एक हाथ तलवार और जमधर के मार कर वे भागने लगे। इसी समय बादशाही आदमियो ने पीछा करके उनको जा घेरा और मार डाला। जुझारसिंह का बेटा दुर्गभान और विक्रमाजीत का बेटा दुर्जनसाल पकडे गये। उदयभान और श्याम दवा गोलकुडा की तरफ भाग गये थे, परतु कुछ दिनो बाद वे भी गिरफ्तार कर लिये गये।

फिर बादशाही आदमी खानदौरा के हुक्म से रानी पार्वती और दूसरी आहत औरतो को उठा कर खजानो के हाथियो समेत अब्दुल्ला खा फीरोज जग के पास ले गये।

जुझारसिंह और विक्रमाजीत उसी जगह बादशाह के डर से जगल मे छिपे हुए थे। उधर के गोडो ने बादशाही सेना की फतह के समाचार सुन कर उनको बुरी तरह से मार डाला। खानदौरा के पास जब यह खबर पहुची तो वह उनकी लाशों के पास गया और दोनो के सिर काट कर उनकी अगूठियो और हथियारो समेत, जो उनको मारने वालो के पास थे, खान फीरोज जग के पास लाया। उसने ये सिर आदि बादशाह की खिदमत मे भेज दिये। बादशाह के डेरे 1 शाबान (पौष सुदि 2=गुरुवार, दिसम्बर 31, 1635 ई०) को सीहोर मे थे, जहा ये सिर पहुचे, और वहा सराय के दरवाजे पर लटकाये गये।

राजा बीरसिंहदेव ने बहुत से विकट जगलो और झाडियो मे कुए खोद-खोद कर उनमे रुपया इस उद्देश्य से गाडा था कि वह उसके वशजो के काम आवेगा। इस बात को उसके दो-एक खिदमतगारो के अतिरिक्त और कोई नही जानता था। जब जुझारसिंह गद्दी पर बैठा तो उसने उन खजानो को और बढाया, मगर आखिर में यही माल उसकी जान का जंजाल हो गया। उसके मारे जाने पर 1 करोड रुपया उसके खजानो से कई बार करके बादशाही खजानो मे पहुचा और 50 लाख रुपये का मुल्क फतह हुआ।

बादशाह ने ओरछा का राज्य देवीसिंह बुदेला को दे दिया, जिसके बाप-दादो से जहागीर बादशाह ने छीन कर राजा बीरसिंहदेव बुदेला को वजीर अबुल फजल को मारने के इनाम मे इनायत किया था।

बादशाही सरदारो ने, जो चादा राज्य तक पहुच गये थे, गन्नोर के जमी-

दार सग्राम को चादा के जमीदार कीया के पास भेजा, जो तमाम गोडवाना के जमीदारो मे बडा था। उसने बुदेलो का कुछ माल-असबाब, जो उसके राज्य-भर मे बिखरा हुआ था, इकट्ठा करके सग्राम के साथ पन्टेना नदी के किनारे पर बादशाही सरदारो से मुलाकात करके 5 लाख रुपये बादशाह के लिए और 2 लाख सेना के सरदारो के वास्ते देना करके दो बार मे पहुचा दिये, और 2 नामी हाथी (रूप-शृगार और भोजराज) नजर किये। आगे भी हर साल 25 हाथी और 15 हथनिया देना कबूल करके यह इकरार किया कि जिस साल न दे सके तो 80,000) नकद पहुचा दे और दौलताबाद मे उपस्थित होकर बादशाह से मुजरा करे। खान फीरोजजग और खानदौरा उससे इस बात का अहदनामा लेकर लौट आये।

बादशाह उस वक्त बाडी मे थे। शाहजादा औरगजेब ने ओरछा की अच्छी आबहवा और देश की आबादी, गुलजारी और शिकार बहुत होने की ऐसी तारीफ लिखी कि बादशाह वहा की सैर को, जो दक्षिण के सीधे रास्ते से सिर्फ 21 कोस पर था, 15 जमादि-उल्-अव्वल (कार्तिक वदि 2=शनिवार, अक्तूबर 17, 1635 ई०) को रवाना हुए। 21 जमादि-उल्-अव्वल (कार्तिक वदि 8=शुक्रवार, अक्तूबर 23, 1635 ई०) को झासी का किला फतह करने के वास्ते, जो जुझारसिह के नौकर बसत के पास था, मुखलिस खा और मअमत खा को भेज दिया।

20 जमादि-उल्-अव्वल (कार्तिक वदि 7=गुरुवार, अक्तूबर 23, 1635 ई०) को आदिल खा का वकील शेख दबीर बादशाह के हुजूर में हाजिर हुआ।

जुलूसी सन् नौवां

(नवम्बर 2, 1635 ई० से अक्तूबर 20, 1636 ई० तक)

1 जमादि-उस्-सानी, सोमवार (कार्तिक सुदि 3=नवम्बर 2, 1635 ई०) को 9वा जुलूसी वर्ष लगा।

जुझारसिह के मारे जाने के बाद बसत ने झासी का किला मअमत खा को सौप दिया। उसमे बहुत सी तोपें थी, जिनमे 10 बडी-बडी तोपें राजा वीरसिह देव की ढलाई हुई थी। वहा सीसा बारूद भी बहुत था। बादशाह ने राजा विट्ठलदास के भतीजे (भाई होना चाहिये) गिरधरदास को उस किले की किलेदारी पर भेजा।

18 जमादि-उस्-सानी (मगसिर वदि 6=गुरुवार, नवम्बर 19, 1635 ई०) को वादशाह दतिया पहुँचे। वहा के पहाड पर राजा वीरसिंहदेव की वनाई हुई इमारत देखने को गये, जो वहुत उमदा नहरो और हरियालियो मे थी, उसके 7 खड थे, वह 84 गज लवी और इतनी ही चौडी थी।

तानाजी दक्खिनी को 2 हजारी जात—2 हजार सवार का मनसव इनायत हुआ।

25 जमादि-उस्-सानी (मगसिर वदि 12=गुरुवार नवम्बर 26, 1635 ई०) को वादशाह ओरछा पहुँचे। किले और किले की इमारतो को देखकर एक वडा मदिर, जो वीरसिंहदेव ने अपने महलो के पास वहुत ऊँचा और मजवूत वनाया था, गिरवा दिया। राजा देवीसिह ने उपस्थित होकर मुजरा किया, नजर दी।

ओरछा मे राजा वीरसिंहदेव का वनाया हुआ वीर सागर तालाब वहुत अच्छा है, जिसका घेरा 5½ वादशाही कोसो का था। दूसरा तालाव समदर सागर परगना जतारा मे है, इसका गिरदाव 8 कोस का है, बीरसिंहदेव ने उस पर 1 मजवूत पुल और उमदा वाघ वनवाया है। जिस पर से पानी की चादर गिरती है। यह तालाव चौडाई और गहराई मे उस परगने के छोटे-वडे 300 तालावो से वढ-चढ कर है। पानी भी इसका वहुत साफ और मजेदार है। वादशाह कुछ दिन वहा रहे। परगने जतारा मे 800 गाव थे, और हासिल 8 लाख रुपये साल का था। वादशाह ने इसको लेकर इस्लामावाद नाम रक्खा। 48 लाख रुपये झासी के कुओ मे से निकले। 34 लाख रुपये धामूनी के जगल से प्राप्त हुए। वादशाह ने यह सब रुपया हाथियो पर लदवा कर आगरा भेज दिया।

3 रजव (मगसिर सुदि 5=शुक्रवार, दिसम्बर 4, 1635 ई०) को शाहजादा औरगजेव धामूनी से परगना जतारा मे वादशाह के पास हाजिर हो गया।

5 रजव (मगसिर सुदि 7=रविवार, दिसम्बर 6, 1635 ई०) को वादशाह ने सिरोज के रास्ते से दक्षिण को कूच किया। हरीसिंह राठौड का मनसव असल और इजाफे से हजारी जात—800 सवारो का हो गया।

12 शावान (पौष सुदि 14=सोमवार, जनवरी 11, 1636 ई०) को जन्मपत्री के हिसाव से वादशाह की 45 वी सालगिरह का तुलादान था, जिसके दरवार मे राजा गजसिंह के वेटे अमरसिंह के मनसव मे 500 सवारो का इजाफा हुआ, जिससे वह अव तीन हजारी जात—1500 सवारो का मनसवदार हो गया।

वीजापुर के आदिल खा ने तो निजामशाह के अमीर शाहजी वगैरह को

पनाह दी थी। कुतुवुल्मुल्क उससे मिला हुआ था और उसकी अमलदारी मे इमामिया मजहव की रिआयत से ईरान के वादशाह के नाम का खुतवा पढा जाता था। इसलिए वादशाह ने दोनो को समझाने के वास्ते वकील भेजना उचित समझ कर मक्रमत खा को तो वीजापुर भेजा और कुछ सोगात आदिल खा के वास्ते उसके साथ भेज कर कहलाया कि शाहजी वगैरह को निकाल कर अपनी सफाई कर ले, नही तो उस पर फौज भेजी जावेगी। शोलापुर का किला और उसमे लगा हुआ (वीदर तक का) इलाका, जिसकी जमा 8 लाख हून की थी, आदिल खा को देना करके उसके वदले मे मामूल से ज्यादा पेशकश मागी। उधर अव्दुललतीफ गुजराती को गोलकुडा मे कुतुवुल्मुल्क के पास भेजा और लिखा कि शाह ईरान के नाम का खुतवा अपने मुल्क मे न पढावे और दीवानो के हिसाव के माफिक जो पेशकश वाकी है, वह भेज दें।

15 शावान (माह वदि 2=गुरुवार, जनवरी 14, 1636 ई०) को खानदौरा चादा के मुल्क से आकर हाजिर हुआ। 5 लाख रुपये और वहा के जमीदार का भेजा हुआ रूप-शृगार नामक हाथी लाया। जुझारसिह की औरतें और उसके वेटे दुर्गभान और पोते दुर्जनसाल को भी प्रस्तुत किया। वादशाह ने हाथी का नाम तो महा-सुदर रखा। दुर्गभान और दुर्जनसाल को मुसलमान करके एक का नाम इस्लाम कुली और दूसरे का नाम अली कुली रखा। पार्वती रानी तो ज्यादा घायल होने से मर गई थी और दूसरी औरतो को मुसलमान करके हरम मे भेज दी।

खानदौरा के साथ माधोसिह भी आया था, उसके मनसव मे पाच सदी जात—100 सवार की वृद्धि हुई, जिससे उसका मनसव 3 हजारी जात—2,600 सवारो का हो गया।

20 शावान (माह वदि 7=मगलवार, जनवरी 19, 1636 ई०) को वादशाह ने वुरहानपुर के पास गाव करारा मे दो दिन शिकार खेल कर वुरहान-पुर को दाहिने हाथ पर छोड कर घाट की तरफ कूच किया। दौलतावाद के पास पहुचने पर राव रतन का पोता शत्रुशाल, पृथ्वीराज राठौड, राव दूदा का वेटा हरीसिह, मालूजी भोसला और परसूजी खानजमा के साथ हाजिर हुए।

वादशाह ने 20 रमजान (फागुन वदि 7=गुरुवार, फरवरी 18, 1636 ई०) का शाहजी को निकालने के वास्ते, जो निजामुल्मुल्क के खानदान के एक लडके को निजामुल्मुल्क वना कर कुछ मुल्क दवाये हुए था, खानदौरा और खानजमा को भेजा, और हुक्म दिया कि यदि आदिल खा सेना मे शामिल नही होवे तो उनका मुल्क भी वरवाद करें। खानदौरा की फौज मे राजा जयसिह, राजा विट्ठलदास, राव रतन का वेटा माधोसिह, राजा गजसिह का वेटा अमरसिह, गोकुलदास सीसोदिया, महेशदास राठौड, ऊदाजीराम का वेटा जगजीवन, और

20 हजार सवार थे। साथ ही यह भी हुक्म दिया कि राजा जयसिंह, राजा बिट्ठलदास, अमरसिंह और तमाम राजपूत हरावल मे, मुबारिज खा और पठान चदावल मे रहें। कधार और नान्देड की तरफ, जहा बीजापुर और गोलकुडा की सरहद है, वहा ठहर कर खानदौरा उदगिर और औसा को फतह कर ले। 20 हजार सवार खानजमा के साथ किये और उसको हुक्म दिया कि शाहजी के वतन चमारगोडा (श्रीगोण्डा) को, जो अहमदनगर के पास है, फतह करके कोकण भी उससे छीन ले। इस फौज मे राव शत्रुसाल, राजा पहाडसिंह बुदेला, पृथ्वीराज राठौड, रावत दयालदास झाला, मालूजी, पतगराय (जादोराय), बिठौजी, बहादुर का बेटा दत्ताजी, रुस्तम राव, हाबाजी, बीरबलराव और राणा जगतसिंह के सवार, जो उसके भतीजे के साथ थे, तैनात हुए। इस फौज के हरावल मे राव शत्रुसाल हाडा और तमाम राजपूतो को रक्खा गया और चदावल मे बहादुर खा वगैरह पठानो को रक्खा गया। साथ ही यह भी हुक्म हुआ कि आदिल खा का, जो इलाका उस तरफ है, उसमे भी लूट-मार करें।

आसफ खा के बेटे शायस्ता खा के साथ 8000 सवार जुनेर, सगमनेर, नासिक और त्र्यम्बक के किलो को फतह करने के लिए भेजे गये। राजा सग्राम, रावत राव (रावत राय), और मेदिनीराव इस फौज मे थे।

भीम राठौड का मनसब डेढ हजारी जात—800 सवार का हो गया।

गन्नोर के जमीदार सग्राम का मनसब हजारी जात—600 सवारो का हो गया।

24 रमजान (फागुन बदि 11=सोमवार, फरवरी 22, 1636 ई०) को बादशाह दौलताबाद से 2 कोस कतलू के हौज पर ठहरे। तीसरे दिन दौलताबाद के किले पर चढे।

शायस्ता खा ने रामसेज शाहजी के आदमियो से ले लिया। साबाजी निबालकर को 10 हजार रुपये इनाम के मिले।

7 शव्वाल (फागुन सुदि 9=शनिवार, मार्च 5, 1636 ई०) को कुतुबुल्मुल्क ने जुझारसिंह के बेटे उदयभान, उसके भाई और स्याम दवा को कैद करके दरगाह मे भेजा। बादशाह ने उदयभान के छोटे भाई को तो मुसलमान करने और विक्रमाजीत के बेटे के साथ रखने के लिए फिरोज खा नाजिर को सौंपा। उदयभान और स्याम दवा को मुसलमान होने के वास्ते कहा, और जब उन्होने न माना तो उन्हे मरवा डाला।

8 शव्वाल (फागुन सुदि 10=रविवार, मार्च 6, 1636 ई०) को बगलाना का जमीदार भेरजी अपने वतन से बादशाह की खिदमत मे आया।

आदिल खा ने उदगिर और औसा के किलेदारो को गुप्त रूप से मदद दी, और शाहजी की सहायता के लिए रणदौला को भेज दिया। इससे बादशाह ने

9 शव्वाल (फागुन सुदि 11=सोमवार, मार्च 7, 1636 ई०) को सैयद खानजहा को भी भेजा और हुक्म दिया कि खानजहा, खानदौरा और खान-जमा, तीनो तीन तरफ से आदिल खा के राज्य पर हमला करें। राव करण, हरीसिह राठौड, राजा रोज अफजू का वेटा वहरोज, राजा अनूपसिह का वेटा जयराम, राव रतन का पोता शत्रुसाल, मगूजी शिरजाराव, कृष्णाजी और जसवतराव खानजहा के साथ भेजे गये।

खैर दुर्ग के किलेदार सालहवेग निजामुल्मुल्की ने शाहजी के आदमियो को कैद करके वह किला परगने समेत शायस्ता खा को सौंप दिया।

12 शव्वाल, जुमेरात (फागुन सुदि 14=गुरुवार, मार्च 10, 1636 ई०) को नौरोज का दरवार था। उसमे कुतुवुल्मुल्क की पेशकश 1 लाख 20 हजार रुपये की वादशाह को नजर हुई। इसी दिन राजा गजसिह को खासा तवेले मे सोने की जीन का घोडा इनायत हुआ।

1 जीकाद (चैत सुदि 3, सवत् 1693=मगलवार, मार्च 29, 1636 ई०) मेष सक्राति के दिन राजा रायसिह का मनसव असल और इजाफे से 3 हजारी जात—डेढ हजार सवारो का हो गया।

चादा के जमींदार कीया ने हाजिर होकर 3 हाथी नजर किये। वादशाह ने खिलअत, जडाऊ सरपेच और घोडा इनायत किया।

4 जीकाद (चैत सुदि 6=शुक्रवार, अप्रैल 1, 1636 ई०) को आदिल खा की अर्जी और पेशकश मीर अवुलहसन और काजी अवू सैयद के हाथ पहुँची। आदिल खा 5 कोस तक पेशवाई करके वादशाह के फरमान को ले गया था। मगर मकमत खा ने उसकी चाल-ढाल से यह मालूम करके कि वह दिल से तावेदार नही है और मौका देख रहा है, सो इस वारे मे उसने वादशाह को अर्जी लिखी। उस पर वादशाह ने वीजापुर का मुल्क वरवाद करने के वास्ते अपने अमीरो को ताकीद की, मगर कुतुवुल्मुल्क ने खुतवा और सिक्का वादशाह के नाम के जारी करके कई सिक्के नजर के वास्ते भेजे।

7 जीकाद (चैत सुदि 9=सोमवार, अप्रैल 4, 1636 ई०) को वादशाह ने वगलाना के जमीदार भेरजी को खिलअत देकर अल्लाहवर्दी खा के पास धोडप वगैरह किलो को फतह करने मे मदद देने के वास्ते भेज दिया।

राजा देवीसिह ओरछा मे अपना अमल जमा कर हाजिर हुआ। वादशाह ने उसको खिलअत, जडाऊ खपवा और घोडा देकर सैयद खानजहा के पास भेजा।

वहादुर पठान, जो सौदागरी करता था, विक्रमाजीत वुदेला के वडे वेटे नरसिहदेव को वहलोल के पास लिये जा रहा था। अल्लाहवर्दी खा के वेटे जाफर ने उन्हे पकड कर वादशाह के हुजूर मे हाजिर किया। वादशाह ने

नरसिहदेव को मुसलमान बना करके उसका नाम हुसेन कुली रखा और बहादुर को मरवा डाला।

11 जीकाद (चैत सुदि 13=शुक्रवार, अप्रेल 8, 1636 ई०) को चादा के जमीदार कीया को बादशाह ने खिलअत, जडाऊ खपवा और कुछ दूसरी जडाऊ रकमे देकर वतन जाने की आज्ञा दी।

दक्षिण का हाल

अल्लाहवर्दी खा ने 16 शव्वाल (चैत वदि 3=सोमवार, मार्च 14, 1636 ई०) को चादोर का किला लडाई से और 19 शव्वाल (चैत वदि पहिली 6= गुरुवार, मार्च 17, 1636 ई०) को अजराही (अजनेरी) का किला गभीरराव किलेदार के हाजिर हो जाने से ले लिया। फिर कचन, मचन के किले घेरे। किले वाले गभीरराव के साथ उपस्थित हो गये और उन किलो मे भी अमल हो गया। इसी तरह रोला-जोला (रावल्या-जावल्या), अहिवत, कोल (कोल-धैर), पुसला (वुसरा ?=भूरागढ) और अचलगढ के किले भी हाथ आ गये। मगर राजबीर (राजधेर) के किले मे, जहा निजामुल्मुल्क के कुछ भाई कैद थे, किले वाले दो महीने तक लडे।

उधर शायस्ता खा ने सगमनेर के परगने शाहजी के आदमियो से 10 शव्वाल (फागुन सुदि 12=मगलवार, मार्च 8, 1636 ई०) को फतह कर लिये। तब वे लोग नासिक को और नासिक से कोकण को चले गये। शायस्ता खा ने जाकिर को उनके पीछे भेज कर आप बादशाह के हुक्म के अनुसार अहमदनगर गया और अली अकबर को जुनेर पर भेजा। उसने वह किला शाहजी के नौकरो से जीत लिया। शाहजी उस वक्त चमारगोडा मे था। उसका बेटा उसके पास से कुछ फौज अपने कबीलो को जुनेर से लाने के लिए ले गया। उसके साथ बादशाही लोगो की लडाई हुई। शायस्ता खा ने मदद के वास्ते 700 सवार भेजे। उन्होंने जुनेर पहुँच कर शत्रुओ का मुकाबला किया, लेकिन शत्रुओ ने उनको शहर मे घेर लिया। शायस्ता खा यह सुन कर खुद आया और दुश्मनो को भगा कर भीमडा नदी तक उनका पीछा किया। जुनेर के किले को मजबूत देख कर बाकिर को कोकण से बुला लिया। कुछ दिनो बाद सगमनेर और जुनेर के दोनो किले और 17 परगने, जिनकी जमा 2 करोड 60 लाख दाम की थी, बादशाही अमलदारी मे मिल गये।

बीजापुर का हाल

खानदौरा ने बीजापुर के क्षेत्र मे पहुँच कर लूट-मार मचा दी। विजरा (माजरा) नदी पर वहलोल और रणदौला उससे लडने के लिए आये। राजा

जयसिह ने हरावल की फौज के साथ आक्रमण करके उनको भगा दिया। दूसरी लडाई फिर आगे चल कर हीरापुर के पास भीमडा नदी पर हुई। कुछ बादशाही आदमी लडने को आगे बढ गये थे। राजा जयसिह ने जाकर उनकी मदद की। इस लडाई मे भी फतह हुई। उसके बाद यह बादशाही सेना फीरोजाबाद मे, जहा से बीजापुर 12 कोस रह जाता है, जा पहुँची, परन्तु मक्रमत खा के यह लिखने से कि बीजापुर वालो ने आगे अपना इलाका उजाड दिया है, दूसरी तरफ से कुतुबुल्मुल्क की सरहद तक लूट-मार करके यह सेना वापस हीरापुर को लौट आई। वहा बादशाह का हुक्म लूट-मार बद रखने और किले उदगिर और औसा को फतह करने का पहुँचा, तब वह सेना उधर चली गई।

खानजहा ने शाहगढ और बीड मे सेना छोड कर धारूर से किशनाजी (कृष्णाजी) शिरजाराव और सायाजी को सराधनू (शेराढोण) का किला फतह करने का आदेश दिया। 26 शव्वाल (चैत वदि 12=गुरुवार, मार्च 24, 1636 ई०) को वहा पहुँच कर इन लोगो ने अचानक आक्रमण कर दिया। किलेदार अबर, जो किले के बाहर आमो के बाग मे बैठा था, थोडा-सा लड कर किले मे जा घुसा। इन्होंने घेरा डाल कर तीसरे दिन उस किले को फतह कर लिया। तब अबर को खानजहा के पास भेज कर शिरजाराव को सराधनू के किले मे थाने पर रख दिया। 29 शव्वाल (चैत सुदि 1, सवत् 1693=रविवार, मार्च 27, 1636 ई०) को लूट-मार करके धारास्योन (धाराशिव—आजकल उस्मानाबाद) के किले मे अमल कर लिया, जिसको किलेदार वगैरह रसद समेत छोड गये थे। दूसरे दिन खानजहा ने कान्ती (कटी) के किले को, जो शोलापुर मे 6 कोस है, घेर कर फतह किया और देवगाव को लूटा। यहा रणदौला लडने को आया। खानजहा ने 5 जीकाद (चैत सुदि 7=शनिवार, अप्रैल 2, 1636 ई०) को लड कर उसको भगा दिया। रणदौला जख्मी भी हो गया था, तो भी वह 14 जीकाद (वैसाख वदि 1=सोमवार, अप्रैल 11, 1636 ई०) को गाव तुलजापुर मे लडा और खूब लडा। खानजहा पुन उसे भगा कर मुल्क लूटने के लिए गुलबर्गा की तरफ गया। तब फिर दुश्मनो से एक और लडाई 11 जिल्हिज (वैसाख सुदि 13=शनिवार, मई 7, 1636 ई०) को लड कर वह धारूर लौट आया, क्योंकि आगे का इलाका दुश्मनो ने उजाड रखा था।

1 जिल्हिज (वैसाख सुदि 3=बुधवार, अप्रैल 27, 1636 ई०) को बीजापुर वाले बादशाही छावनी (सैनिक पडाव) पर आकर सिपहदार खा और राजा देवीसिह से लडे और भाग गये। सिन्होजी भोसला भी उनके साथ था और बादशाही सेना से लडा था।

तब खानजमा अहमदनगर मे अपना सामान छोड कर एक सुसज्जित फौज के साथ जुनेर की तरफ गया। जब 6 कोस पर गाव अकुनेर (अकोलनेर) मे

पहुचा तो सुना कि शाहजी ने माहौली (माहुली) का किला वहा के किलेदार मीनाजी से ले लिया है, और मीनाजी को जुनेर मे रख कर परेंडा जाने का इरादा कर रक्खा है। खानजमा ने जब शाहजी का पीछा किया, तब जगल और पहाडो के मार्ग से भीमडा नदी को पार कर वह आदिल खा के इलाके मे पूना परगने मे चला गया। खानजमा ने बादशाह के हुक्म से भीमडा नदी पर डेरा करके बादशाह को अर्जी लिखी और शाहबेग खा को चमारगोंडा फतह करने के वास्ते भेजा। उसने तीन पहर तक लडाई करने के बाद किले वालो को अभय-दान देकर वह किला फतह कर लिया।

बादशाह ने अर्जी के जवाब मे आदिल खा के मुल्क को लूटने का हुक्म लिखा। तब खानजमा 18 शव्वाल (चैत वदि 5=बुधवार, मार्च 16, 1636 ई०) को उसके मुल्क मे दाखिल हुआ। 26 शव्वाल (चैत वदि 13=गुरुवार, मार्च 24, 1636 ई०) को जब यह सेना दूदावाई के घाट से उतर चुकी थी, शत्रुओ की एक बडी फौज ने राव शत्रुसाल पर, जो खानजमा के पीछे-पीछे आ रहा था, अचानक आक्रमण कर दिया। राव उसके बहुत से आदमियो को मार कर बादशाही सेना से जा मिला। इस झगडे मे कुछ राजपूत उसके भी काम आये। दूसरे दिन खानजमा ने कोल्हापुर का किला फतह कर लिया। शाहजी बीजापुर की फौज के साथ मिल कर किशन गगा (कृष्णा नदी) पर तीन दिन तक खानजमा से लडा। अन्त मे खानजमा ने उसको भगा कर मीरज और रायबाग को लूटा।

आदिल खा ने इन तीन तरफ के हमलो से त्रस्त होकर बादशाह का हुक्म मान लिया, और 20 लाख रुपये की पेशकश मक्रमत खा के साथ भेजी। साथ ही शाहजी के सबध मे उसने वादा किया कि यदि वह जुनेर वगैरह निजामुल्मुल्क के किले छोड देगा, तो उसको नौकर रख लूगा, नही तो बादशाही सेना के साथ होकर उन किलो के छुडाने की कोशिश करूगा।

बादशाह ने अपनी तस्वीर और अहद-नामा (सधि-पत्र), जिस पर हाथ के पजे की छाप थी, आदिल खा के पास भेजा। उसका सार यह था कि "जो मुल्क तुम्हारे बाप से तुमको मिला है, वह यथावत् तुमको इनायत करते हैं, और कोकण देश से 20 लाख हून का वह हिस्सा, जो कि निजामुल्मुल्क के अधिकार मे था, तुमको देते हैं। तुम जब तक शाही आदेशो का उल्लघन नही करोगे, कुछ भी नुकसान तुमको हम से और हमारी औलाद से नही पहुचेगा, और न कोई निजामुल्मुल्क हमारे और तुम्हारे बीच मे होगा। कुतुबुल्मुल्क ने हमारे और खलीफो के नाम का खुतबा और सिक्का जारी कर दिया है और 50 लाख रुपये की पेशकश भेज दी है। इसलिए हमने भी 2 लाख हून मे से, जो वह अनेक वर्षों से निजामुल्मुल्क को दिया करता था, 2 लाख हून उसको

माफ कर दिये हैं। तुम भी किसी तरह का नुकसान उसके मुल्क मे मत करना। उस लेने और देने के अतिरिक्त, जो पहिले से तुम्हारे और उसके पूर्वजो मे चलता रहा हो और कुछ ज्यादा उससे मत मागना। हमारा कोई नौकर भाग कर जावे तो तुम उसको अपने पास मत रखना, और ऐसे ही हम तुम्हारे नौकरो को न आश्रय ही देंगे और न बुलायेंगे।

"शाहजी को अब हम तो नौकर नही रखेंगे। वह अब तुम्हारी ही सेवा मे रहेगा। उससे कह देना कि जुनेर, त्र्यम्बक, राजदेवेर, त्रिगलवाडी और भीमगढ के किलों[1] को जल्दी हमारे नौकरो को सौंप दे। हमारे आदमी भी तोपो के अतिरिक्त और सब सामान उसके आदमियो को ले जाने देंगे। और जो शाहजी तुम्हारा नौकर न होवे तो उसको अपने मुल्क मे न आने देना, आवे तो बदी बना लेना या निकाल देना। और ऐसा ही व्यवहार औसा और उदगिर के निजामुल्मुल्क किले वालो से भी करना।" अन्त मे लिखा था कि "हम इस फरमान को अपने पजे के निशान और अपने खास दस्तखतो से सुशोभित करते हैं। खुदा और रसूल को बीच मे देते हैं, और खुलासा इसका सोने के पतरे पर खुदवा कर भेज दिया जावेगा।"

यह फरमान 24 जिल्हिज (जेठ वदि 11=शुक्रवार, मई 20, 1636 ई०) को इब्राहीम आदिलशाह के बेटे मुहम्मद आदिल खा के पास पहुचा और उसने भी ऊपर लिखे माफिक मजमून का अहद-नामा लिख कर 20 लाख रुपये की पेशकश के साथ मक्रमत खा के द्वारा भेज दिया।

आदिल खा बादशाह को जो अर्जी लिखता था उसके किनारो पर सोने के अक्षरो मे एक गजल हाफिज की लिखा करता था, जिसमे बादशाही ताबेदारी की बातें होती थी।

अल्लाहवर्दी खा ने राजाबीर (राजघैर) किला फतह करके निजामुल्मुल्क के कुटुबियो को कैद कर लिया, और मुहर्रम (आसाढ=जून, 1636 ई०) मे घोडप का किला भी भोजबल किलेदार को 1 लाख रुपये नकद और डेढ हजारी—800 सवार का मनसब दे कर ले लिया।

शायस्ता खा खानजहा और खानजमा वगैरह आदिल खा के मुल्क से लौट कर आ गये। अब बादशाह ने शाहजी को परास्त करने के वास्ते खानजमा को बहादुर का खिताब देकर भेजा।

1 सफर (आसाढ सुदि 3=शनिवार, जून 25, 1636 ई०) को कुतुबुल्मुल्क की पेशकश, जिसमे 40 लाख रुपये नकद, 100 हाथी, 50 घोडे, बहुत से

---

1 अंततः शाहजी ने ये किले मुगलों को सौंपे थे—जुनेर, त्र्यम्बक, हर्षगढ़ (हरीश—त्र्यम्बक से 4 मील पश्चिम में), जीवधान, चावण्ड और हडसर। (सरकार, हाउस आफ शिवाजी, तृतीय सं०, पृ० 45 पा० टि०)। (सं०)

जवाहरात और दूसरे उमदा तुहफे थे, अब्दुल लतीफ की मारफत बादशाह की नजर से गुजरी। कुतुबुल्मुल्क ने जो अहद-नामा लिख कर भेजा था, उसका विषय यह था कि "हमेशा खुतबा चार यार[1] और बादशाह के नाम का, और भेजे हुए सोने और चादी के सिक्के जारी रहेगे। जो खुतबा पहिले पढा जाता था, वह अब नही पढा जावेगा। जो 4 लाख हून निजामुल्मुल्क लेता था, उनमे से 2 लाख हून जिनके 8 लाख रुपये होते हैं प्रतिवर्ष भेजता रहूगा। आपके जुलूसी सन् 8 तक के 32 लाख रुपये मे से 8 लाख बाकी हैं, वे भी इन्ही दो लाख हून के साथ भेज दूगा। और गोलकुडा के भाव से हाथियो और जवाहरात की कीमत मे जो कमी होगी वह भी बिना किसी आपत्ति के दिया करूगा। हमेशा शुभेच्छु रहूगा और जो बादशाह के दुश्मन होगे, उनसे कुछ वास्ता नही रक्खूगा। मैं यह अहद-नामा मौलाना अब्दुल लतीफ के रूबरू कुरान के ऊपर हाथ रख कर करता हू। जो इसके खिलाफ करू तो हुजूर को मेरे मुल्क छीन लेने का अख्तियार है। मगर जो कभी आदिल खा या और कोई गनीम मेरे ऊपर चढाई करे तो दक्षिण के सूबेदार को मेरी मदद करनी होगी, और मेरे प्रार्थना करने पर भी यदि वह मदद न करेगा और आदिल खा जबरदस्ती मुझ से कुछ रुपये ले लेगा तो मैं उतना ही रुपया 8 लाख मे से काट लिया करूगा।"

बादशाह इस फतह और कामयाबी के बाद 17 सफर (सावन बदि 3= सोमवार, जुलाई 11, 1636 ई०) को दौलताबाद से माडू की तरफ कूच कर गये।

इस यात्रा मे 2 करोड रुपया नकद, 1 करोड की आय का मुल्क और बड़े-बड़े 40 किले हाथ आये। 50 बरस की चढाइयो के बाद अब यह मुहिम खतम हुई, जिसके वास्ते सिंहासन पर बैठने से पहिले भी बादशाह दो बार स्वय यहाँ आ चुके थे।

आदिल खा की पेशकश लेकर मकरमत खा बीजापुर से हाजिर हुआ। बादशाह ने बीजापुर की रियासत बहाल रखकर परेंडा का किला आधा मुल्क कोकण का भी, जो निजाम का था, आदिल खा को बख्श दिया और सोने की तख्ती, जिसके ऊपर अहद-नामा खोदा गया था, उसके पास भेज दी। इसके आखिर मे लिखा था कि "यह कौल करार सिकदर की दीवार की तरह मजबूत रहेगा।" तारीख 23 जिल्हिज सन् 1045 हिजरी, 9 खुरदाद, जुलूसी सन् 9 (जेठ बदि 10, सवत् 1693 = गुरुवार, मई 19, 1636 ई०) को फिर बादशाह ने दक्षिण

1 सुन्नी लोग खुतबे में अपने पैगम्बर के चार यार, अर्थात् खलीफा अबू बक्र अमर' उसमान और अली, का नाम लेते हैं। परतु शीया मत वाले अली के सिवाय किसी अन्य खलीफा का नाम नही लेते।

का कुल मुल्क जिसमे कि 4 सूबे अहमदनगर तिलगाना, खानदेश और वरार, 5 करोड रुपये की जमा के थे, और दौलतावाद तथा औसा जैसे वडे-वडे 64 किले भी थे, शाहजादे औरगजेव को सौंप दिया। साथ ही उसको नये फतह किये हुए 40 किलो मे से, उन 10 किलो को फतह करने का हुक्म किया, जो तव भी शाहजी वगैरह के अधिकार मे थे।

29 मुहर्रम (आसाढ सुदि 1=गुरुवार, जून 23, 1636 ई०) को शत्रुसाल का मनसव एक हजार सवारो के इजाफे से 3 हजारी जात—3 हजार सवारों का हो गया।

29 रवी-उल्-अव्वल (भादो सुदि 1=रविवार, अगस्त 21, 1636 ई०) को वादशाह माडू पहुचे और कुतुवुलमुल्क को भी अपनी तस्वीर और अहद-नामे की सुनहरी तख्ती भेजी, जिसके अत मे भी सिकंदर की दीवार वाली वात और तारीख 7 रवी-उस्-सानी सन् 1046 हिजरी, 17 शहरेवर, जुलूसी सन् 9 (भादो सुदि 8, सवत् 1693=सोमवार, अगस्त 29, 1636 ई०) को खुदाई गई थी।

7 रवी-उस्-सानी (भादो सुदि 9=सोमवार, अगस्त 29, 1636 ई०) को मांडू मे दत्ताजी का मनसव हजारी जात की वृद्धि होने पर 3 हजारी जात—1 हजार सवार का हो गया।

कल्याण झाला, जिसको राणा जगतसिंह ने इन विजयो की मुवारकवाद देने के वास्ते भेजा था, हाजिर हुआ, और जो पेशकश लाया था वह नजर की।

6 जमादि-उल्-अव्वल (आसोज सुदी 7=सोमवार, सितम्वर 26, 1636 ई०) को वादशाह ने तरवीयत खा को जैतपुर के जमीदार पर भेजा, जो लूट मार किया करता था। तरवीयत खां उसे लेकर सातवें दिन हाजिर हो गया।

8 जमादि-उल्-अव्वल (आसोज सुदि 9=वुधवार,[1] सितम्वर 28, 1636 ई०) को खानदौरा वहादुर ने उदगिर का किला सीदी मुफतास से फतह किया, जिसको उसने 25 मुहर्रम, रविवार (आसाढ वदि 11=जून 19, 1636 ई०) के दिन से घेर रक्खा था।

16 जमादि-उल्-अव्वल (कार्तिक वदि 2=गुरुवार, अक्तूवर 6, 1636 ई०) को वादशाह ने माडू से घाटे चादा और उज्जैन के रास्ते से आगरा को कूच किया।

24 जमादि-उल्-अव्वल (कार्तिक वदि 11=शुक्रवार, अक्तूवर 14, 1636 ई०) को वादशाह ने राणा जगतसिंह के वास्ते जडाऊ सरपेच और जडाऊ तलवार कल्याण झाला के हाथ भेजे।

---

1 पा० ना० (1-ब, पृ० 219) मे लाहोरी ने 8 जमादि-उल्-अव्वल के दिन गुरुवार होना लिखा है, जो सही नहीं है। (स०)।

29 जमादि-उल्-अव्वल (कार्तिक सुदि 1=बुधवार, अक्तूबर 19, 1636 ई०) को खानदौरा बहादुर ने औसा का किला भी 3 महीने के घेरे के बाद किलेदार भोजराज से ले लिया।

जुलूसी सन् दसवां

(अक्तूबर 21, 1636 ई० से अक्तूबर 9, 1637 ई० तक)

12 जमादि-उस्-सानी (कार्तिक सुदि 13=मगलवार, नवम्बर 1, 1636 ई०) को बादशाह के डेरे गाव खजूरी, परगने रामपुरा, के पास हुए। यहा राव हठीसिंह का वतन था, इसलिए उसने एक हाथी नजर किया, और बादशाह ने उसको खिलअत प्रदान की।

16 जमादि-उस्-सानी (मगसिर बदि 3=शनिवार, नवम्बर 5, 1636 ई०) को खैराबाद मे डेरे हुए और सेना पलायथा के परगने मे होकर निकली, जो माधोसिंह हाडा की जागीर मे था। उसके बेटे मोहनसिंह और जुझारसिंह ने हाजिर होकर एक हाथी नजर किया। बादशाह ने उनको खिलअत और घोडे दिये।

21 जमादि-उस्-सानी (मगसिर बदि 8=गुरुवार, नवम्बर 10, 1636 ई०) को परगना बडौद के गाव मडावर मे मुकाम हुआ, जिसके पास राव शत्रुसाल हाडा का वतन था। इसलिए उसके बेटे भावसिंह ने हाजिर होकर 1 हाथी नजर किया। बादशाह ने उसको भी घोडा और सिरोपाव प्रदान किया।

धन्धेड़े पर फौज भेजना

बादशाह ने धधेडे का मुल्क शिवराम गौड को प्रदान किया था, जो बलराम का बेटा और राजा गोपालदास का पोता था। वह वहा गया और वहा के पूर्व के जमीदार इन्द्रमन को निकाल कर राज करने लगा। कई दिन पीछे इन्द्रमन कुछ आदमी इकट्ठे करके उससे लडने को आया, और फिर पूर्व के अपने इस इलाके का मालिक हो गया। बादशाह ने राजा बिट्ठलदास गौड को उसके विरुद्ध भेजा और उसके अर्ज करने से उसके भतीजे, शिवराम गौड, मोतमद खा, सैयद अब्दुल मजीद, अनूपसिंह का बेटा जयराम, राजा रोज अफजू का पुत्र राजा बहरोज, ख्वाजा अबुल बका, फिरोज जग का भतीजा अब्दुल्ला खा बहादुर, सैयद चावन, राव रतन हाडा का बेटा हरीसिंह, शिताब खा, अमीर बेग,

दिलदार वेग और सैयद सआदतुल्ला को भी 600 तीरदाज और वरकदाज, अह्दी सवारो के साथ भेजा।

25 जमादि-उस्-सानी (मगसिर वदि 12=सोमवार, नवम्बर 14, 1636 ई०) को वादशाह ने राजा विट्ठलदास और मोतमद खा, वगैरह को यथायोग्य घोडा और खिलअत प्रदान करके विदा किया।

7 रजव (मगसिर सुदि 9=शनिवार, नवम्बर 26, 1636 ई०) को वादशाह अजमेर पहुचे और अना सागर तालाव पर दौलतखाने मे उतरे। जहागीर वादशाह ने इस तालाव के वदे पर सगमरमर की एक इमारत वनाई थी, उसमे वादशाह ने झरोखा, आम और खास दौलतखाना वहुत चौडा और खूवसूरत वनवाया, जिसमे 3 लाख रुपये व्यय हुए, डेढ लाख से कुछ कम जहागीर वादशाह के शासन-काल मे खर्च हुए थे।

वादशाह दौलतखाने से दरगाह तक पैदल जियारत करने को गये और 10,000) रुपये चढावे और खैरात के लिए देकर उस मसजिद मे पधारे, जिसको वनाने का हुक्म जुनेर से आने के वाद हुआ था, और जो तख्त पर वैठने के अनन्तर ही 40, 000) रुपये के खर्च से तैयार हो गई थी। वहाँ शाम की नमाज पढ कर दौलतखाने मे आ गये।

12 रजव (मगसिर सुदि 14=गुरुवार, दिसम्बर 1, 1636 ई०) को राणा जगतसिह के उत्तराधिकारी पुत्र राजसिह ने उपस्थित होकर 9 घोडे नजर किये। वादशाह ने उसको खिलअत, जडाऊ सरपेच और मोतियो की माला इनायत की।

दक्षिण का हाल

खानजमा वहादुर जव वादशाह के पास से विदा होकर अपने साथ वालो से मिला तो मालूम हुआ कि शाहजी आदिल खा की नौकरी स्वीकार करके जुनेर वगैरह किलो को सौंपने के लिये राजी नही है। अत शाहजी को परास्त करने और उसके पास से किले लेने के वास्ते आदिल खा ने रणदोला को भेजा है और कहा है कि "वादशाही अमीरो से मिल कर यह मुहिम पूरी करो"। खानजमा ने वहादुर खा, कारतलव खा, और राव हठीसिह को राणा जगतसिह के 1000 सवार और 1000 पैदल वरकदाज के साथ जुनेर का किला विजय करने के वास्ते भेजा, और शाहजी से लडने के लिए आप पूना गया। जव घोड नदी से उतर कर वह लोहगाव मे पहुँचा तो शाहजी, जो वहाँ से 17 कोस पर था, भाग कर कोण्डाना और पुरदर के पहाडो मे चला गया। खानजमा रणदोला से सलाह करने के लिए कुछ दिन इन्द्रायणी नदी के किनारे पर ठहरा रहा और उससे सलाह करके नदी के पार उतरा, और तीन फौजें वना कर घाटे के मार्ग से

चला। एक फौज का तो खुद सेनानायक रहा, दूसरी का राव शत्रुसाल को और तीसरी का पृथ्वीराज राठौड को सरदार बनाया। शाहजी कुभा घाटी से उतर कर कोकण मे गया, जहाँ उसको दडा, राजपुरी के थानेदार वगैरह से पनाह मिलने की आशा थी, लेकिन उन्होंने उसको वहा से निकाल दिया। तब वह उसी घाटी से उतर कर कोकण मे पहुच गया। रणदौला भी उस घाटी तक आ गया। शाहजी भाग कर माहुली की तरफ गया। खानजमाँ सेना को छोड कर उसके पीछे दौडा। रास्ते मे सुना कि शाहजी मुरजन (प्रबल) के किले मे पहुचँ गया है। खानजमा जब धावा करके उस किले से 3 कोस पर जा पहुचा, तो जल्दी से जितना कुछ असबाब आगे भिजवा सका उसे भिजवा कर आप भी पीछे से चल दिया, और बाकी असबाब किले मे ही छोड गया। रास्ते मे कीचड-कादा बहुत था और ठड भी कडाके की पडती थी, तथापि खानजमा ने 12 कोस तक उसका पीछा किया। मगर वह तब भी हाथ नही आया, साफ निकल गया। बादशाही अमीर उसके डेरे-खीमे, ऊँट, घोडे, नक्कारे, छत्री, पालकी और निजामुल्मुल्क के झडे लेकर लौट आये। यह निजामुल्मुल्क असल मे निजा-मुल्मुल्क का जमाई था, जिसको शाहजी निजामुल्मुल्क के नाम से अपने साथ लिये फिरता था।

शाहजी एक रात-दिन लगातार चल कर माहुली के किले मे जा पहुचा। वहाँ जो लोग उसका साथ देने को राजी हुए उनको अपने पास रखा और बाकी को जवाब देकर वह स्वय अपने बेटे (शभाजी) समेत लडने के इरादे से उस किले मे ठहरा रहा। दूसरे दिन खानजमा ने पहुच कर घेरा डाला और बडे दरवाजे के आगे के मोरचे राजा पहाडसिह बुदेला को सौंपे। तदनन्तर रणदौला भी आ गया। उसने दूसरी तरफ से किले को घेरा। आखिर शाहजी ने तग होकर बार-बार कहलाया कि मुझे "बादशाही अमीरो मे दाखिल कर लो"। लेकिन खानजमा ने यही जवाब दिया कि "आदिल खा की नौकरी कबूल करो, नहीं तो तुम्हारा बचना कठिन है।" तब उसने आदिल खा से अहद-नामा मागा, और जब अहद-नामा आया तो कई प्रार्थनाए और की और अपने इकरार से फिर गया। लेकिन जब देखा कि अब किला अपने अधिकार मे रहना कठिन है, तो बाहर निकल कर रणदौला से मिला और निजामुल्मुल्क के दामाद को उसके हवाले करके आदिल खा की नौकरी कबूल कर ली और जुनेर वगैरह किलों को बादशाही नौकरो के हवाले कर देने का इकरार किया। दूसरे दिन अपनी प्रार्थनाओ का एक लम्बा-चौडा विवरण अपने वकील और काजी अबू सैयद के साथ, जो आदिल खाँ का अहद-नामा लाया था, खानजमाँ के पास भेजा। खानजमा ने उसकी नकल अपनी अर्जी के साथ बादशाह की खिदमत मे भेजी। बादशाह ने उसकी वे सारी प्रार्थनाए कबूल कर ली, तब शाहजी ने

अपने भले आदमियो को काजी अबू सैयद के साथ किले जुनेर, त्र्यम्बक, त्रिंगलवाडी, हरीश (त्र्यम्बक से 4 मील पश्चिम मे), जोवन (जीवधन), जूंद (चावण्ड) और हरसाया (हडसर) सौंप देने की लिखावटें देकर खानजमा के पास भेजा। खान ने उनके साथ अपने आदमी उन किलो मे अमल करने के वास्ते भेजे और आदिल खा ने रणदौला को लिखा कि निजामुलमुल्क के दामाद को खानजमा के हवाले कर दो। इस पर रणदौला उसे खानजमा को सौंप कर शाहजी के साथ बीजापुर को चला गया। खानजमा दौलताबाद मे शाहजादा औरगजेब के पास उपस्थित हुआ। दक्षिण की मुहिम इस प्रकार खतम हो गई।

गोंडवाना की विजय

खानदौरा उदगिर और औसा विजय करने के बाद कुतुबुल्मुल्क के इलाके मे मुकाम कुभागिरि मे ठहरा हुआ था। जहा से उसने देवगढ के इलाके मे जाकर कतलक्षर और आष्टी के किले, जो बरार के जिले मे थे, और जहाँ के गोड सूबेदार के आदेशो को नही मानते थे, फतह किये। कनकसिंह बैस को देवगढ के जमीदार, कोकिया के पास पेशकश लेने को भेजा और उसके बाद वह खुद भी गया। जब नागपुर के पास पहुचा, तो कनकसिंह कोकिया के वकील को लेकर आया, और कहा कि "कोकिया तो पेशकश देने को तैयार नही है।" खान ने यह सुन कर नागपुर को घेरा, जो मजबूती मे दूसरे किलो से बढ कर था। जब मोर्चे खाई तक जा पहुचे, तो खान के बुलाने पर चादा का जमीदार कीया 1500 सवार और 3000 पैदल लेकर आया, और मेहमानदारी के हेतु 70000) रुपये भी लाया। इसी तरह गन्नोर का जमींदार सग्राम भी 2000 सवार, 5000 पैदल सिपाही लुटेरे और कोकिया के जो आदमी भाग कर पहाडो और जगलो मे जा छुपे थे, उनका बहुत-सा माल असबाव लेकर हाजिर हुआ। उसने अपना और कीया का वकील एक बार फिर कोकिया को समझाने के वास्ते भेजा। उसने 150 हाथियो की फर्द (सूची) भेज कर कहलाया कि "जो घेरा उठा लो तो ये हाथी नजर कर दूगा।" खान ने कहा कि "किला भी खाली करना होगा," जो कोकिया को मजूर न हुआ। तब तीन तरफ से सुरगो मे आग लगाई गई। एक सुरग राजा जयसिंह ने भी बनाई थी। सुरगो के उडने से एक बडा मार्ग खुल गया और राजा जयसिंह ने बहादुरी से किले मे घुस कर सब आदमियो को मार डाला, और देवजी किलेदार को पकड लिया। आखिर मे कोकिया ने देवगढ से 15 कोस चल कर खान से मुलाकात की। डेढ लाख रुपया, 170 हाथी और हथनिया नजर करके प्रति वर्ष 4 लाख रुपया खजाने मे दाखिल करने का इकरार किया। खानदौरा ने नागपुर का किला

उसको लौटा दिया। तब कालीभीत आकर वहाँ के जमीदार भीमसेन से १ हाथी हथनी सहित लिया, और फिर शाही दरबार को लौट गया।

दरबार का हाल

15 रजब (पौष वदि 2=रविवार, दिसम्बर 4, 1636 ई०) को बादशाह ने अजमेर से कूच करके जोगी तालाव पर डेरे किये। राजा जगतसिह को खासा खिलअत, खासा घोडा सुनेहरी जीन का, और हाथी इनायत किये।

राणा जगतसिह के बेटे राजकुंवर (राजसिह) को खिलअत, जडाऊ खपवा, मीना के काम की तलवार, हाथी, घोडा, इनायत हुए और उसके साथ के सरदारो मे से राव बल्लू चौहान, रावत मानसिह चूडावत, वगैरह को खिलअत और घोडे मिले, और तब उन सब को विदा दी गई। बादशाह ने राणा जगतसिह के वास्ते भी एक हाथी कुँवर को दिया।

18 रजब (पौष बदि 6=बुधवार, दिसम्बर 7, 1636 ई०) को मुअज्जमाबाद के पास डेरे हुए। यह कसबा राजा जयसिह की जागीर मे था, इसलिए राजा की तरफ से कई घोडे, एक हाथी और 60,000 रुपये नकद नजर हुए। बादशाह ने हाथी और घोडे तो रख लिये और रुपये वापस लौटा दिये।

8 शाबान (पौष सुदि 10=मगलवार, दिसम्बर 27, 1636 ई०) को बाढी के तालाब पर बादशाह के डेरे हुए। वहा जो महल दो साल मे 1,40,000 रुपये के खर्च से तैयार हुआ था, बादशाह उसमे ठहरे।

18 शाबान (माह बदि 6=शुक्रवार, जनवरी 6, 1637 ई० को बादशाह आगरा मे दाखिल हुए और अपनी सालगिरह का दरबार आम खास दौलतखाने मे किया और जमीन चूम (जमीबोस) कर आदाब बजा लाने का कायदा भी मौकूफ कर दिया। यह नित्य प्रति के सिजदे (धरती पर सिर लगाने) से मिलता हुआ था और उसकी जगह चौथी सलाम बहाल रखी। आम दौलतखाना, दर्शन का झरोखा, खास दौलतखाना और जनाने महल, ये सब ही लाल और सफेद पत्थर के नये बने थे। दौलतखाना खास सगमरमर का था, जो 15 गज लम्बा, 9 गज चौडा और 440 उगल ऊचा था, और जिसकी दीवारो और छतो में सोने-चादी के तख्ते बडी कारीगरी से जडे गये थे।

राजा विट्ठलदास और मोतमद खा ने, जो धधडे के जमीदार के विरुद्ध गये थे, उस किले को घेरा। किलेवालो ने कुछ दिनो बाद किला सौंप दिया और जमीदार भी हाजिर हो गया। मोतमद खा उसको बादशाह के पास लाया। उसने मुजरा के वक्त 1 हाथी नजर किया। बादशाह ने उसे मृत्यु-दण्ड नही देकर केवल जुनेर के किले मे कैद कर दिया।

19 शाबान (माह बदि 7=शनिवार, जनवरी 7, 1637 ई०) को राजा

विट्ठलदास के मनसब में हजारी जात—हजार सवारों की वृद्धि होने से अब वह 4 हजारी—3000 सवारों का मनसबदार हो गया और घघेडा उसको वतन बनाने के वास्ते दिया गया।

नीचे के बगश[1] की थानेदारी राजा जगतसिंह से उतर कर पुरदिल खां को मिली।

25 शव्वाल, सोमवार (चैत वदि 12=मार्च 13, 1637 ई०) को खानदौरा बहादुर बादशाह के हुजूर में हाजिर हुआ। राजा जयसिंह, राजा गजसिंह का बेटा अमरसिंह, और राव रतन का बेटा माधोसिंह, जो उसके साथ थे, शाही दरबार में उपस्थित हुए।

खानदौरा को 6 हजारी जात—6000 सवार दो-अस्पा और से-अस्पा का मनसब और नसरतजंग का खिताब मिला। मनसब के 12 महीने के वेतन के 27 लाख होते थे। गोंडवाने के जमींदारों और कुतुबुल्मुल्क से पेशकश भी वह लाखों रुपये की ही लाया था।

राजा जयसिंह को खिलअत खासा, फूल कटारा सहित जड़ाऊ खपवा, कवचाक, खासा तबेले से सोने की जीन समेत घोड़ा इनायत हुए, और परगना चाटसू, जो उसके वतन के पास बादशाही खालसा में था, जागीर में दिया गया।

अमरसिंह और माधोसिंह दोनों असल और इजाफे से तीन-तीन हजारी जात और दो-दो हजार सवारों के मनसबदार हो गये। दोनों को खिलअत और चांदी की जीन के घोड़े भी इनायत हुए।

26 शव्वाल (चैत वदि 13=मंगलवार, मार्च 14, 1637 ई०) को खानदौरा बहादुर की अर्ज से राजा देवीसिंह को झंडा और नक्कारा मिला।

12 जीकाद (चैत सुदि 14=बुधवार, मार्च 29, 1637 ई०) को मेष सक्रान्त के उत्सव में राजा विट्ठलदास को खिलअत और खासा तबेले से सुनहरी जीन का घोड़ा इनायत होकर घघेडे जाने की आज्ञा दी गई।

जम्मू के जमींदार संग्राम का बेटा भोपत बादशाही नौकर होकर कांगड़ा के फौजदार के पास तैनात था, और जब वह उसके पास आता, तो बहुत से आदमी लेकर आया करता था। शाहकुली थानेदार ने एक दिन उसको मारने का इरादा करके बहुत से आदमी अपने पास जमा करके उसको बुलाया। वह यह भीड़ देख कर लड़ा और अपने राजपूतों सहित मारा गया।

1 जिल्हिज (वैसाख सुदि 3=सोमवार, अप्रैल 17, 1637 ई०) को शाहजादा औरंगजेब दक्षिण से आया।

14 जिल्हिज (जेठ वदि 1=रविवार, अप्रैल 30, 1637 ई०) को बादशाह ने राजा जयसिंह को, जिसने कि दक्षिण की मुहिम में अच्छे-अच्छे काम

---

1 बगश के दो हिस्से हैं, एक ऊपर का बगश कहलाता है और दूसरा नीचे का।

किये थे, खासा खिलअत और हाथी देकर फरमाया कि अपने वतन आमेर मे जाकर यात्रा की थकावट से कुछ दिन आराम करे। उसके इलाके मे घर-जाये घोडे की कीमत 1,000 रुपये तक पहुँच गई थी। इसलिए उनके बच्चे बढाने के लिए 20 घोडिया उसको दी।

गन्नोर के जमीदार सग्राम का मनसब पाच सदी जात की वृद्धि से डेढ हजारी जात—600 सवारो का हो गया।

16 जिल्हिज (जेठ बदि 3=मगलवार, मई 2, 1637 ई०) को बादशाह ने कुछ उमदा सौगात और खरीता देकर ईरान के बादशाह शाह सफी के पास अपना वकील भेजा, जिसमे दक्षिण की विजय और राजा जुझारसिह के वध का हाल लिखा था।

26 जिल्हिज (जेठ बदि 12—गुरुवार, मई 11, 1637 ई०) की रात को शाहजादा औरगजेब की शादी बडी धूमधाम से मिर्जा शाहनवाज खा सफवी की लडकी के साथ हुई। 4 लाख रुपये का महर बाधा। बादशाह शाहनवाज खा के मकान पर गये। मगर शाहनवाज खाँ न आया, क्योकि हिन्दुस्तान की रस्म है कि लडकी का बाप निकाह की मजलिस मे हाजिर नही होता है। परतु दूसरे दिन उसने हाजिर होकर 1 लाख के जवाहरात नजर किये। इस शादी मे भी लाखो रुपये खर्च हुए थे।

बुदेलो ने जुझारसिह के खानदान से पृथ्वीराज नामक एक लडके को, जो जिदा बच गया था अपना राजा बना कर कई गावो और परगनो मे दुद मचा रखा था। इसलिए बादशाह ने 29 जिल्हिज (जेठ सुदि 1=सोमवार, मई 15, 1637 ई०) को मालवा के सूबेदार खानदौराँ को खजर इनायत करके उनके विरुद्ध भेजा।

प्रताप उज्जैनिया का मारा जाना

प्रताप ने बादशाह की बदगी करने से अपने मुल्क की हुकूमत पाई थी, जिसकी इच्छा वह बहुत दिनो से रखता था। मगर इधर बाद मे हुक्म नही मानने लगा, तब बादशाह के हुक्म से बिहार के सूबेदार अब्दुल्ला खाँ फीरोजजग ने उस पर चढाई की और भोजपुर के किले को, जो नदी पर तिखूटा बना है, घेरा। वह किला मजबूत था। उसके अदर बदूकची और तीरदाज बहुत थे और जगल भी पास ही था, इसलिए छ महीने तक लडाई होती रही। आखिर खान ने वह किला और उसके अतिरिक्त ग्यारह किले और फतह कर लिये। प्रताप अपने बाल-बच्चो को लेकर एक बाग मे चला गया, जो भोजपुर के किले मे था। वहाँ जबरदस्त खाँ के दो बेटे, मुजफ्फर बेग और फरेंदु बेग, पहले से पहुँच गये थे। प्रताप ने उनको मार डाला। बादशाही फौज ने उस बाग को भी घेर लिया। प्रताप ने [illegible] किये।

8 जिल्हिज, सोमवार (वैसाख सुदि 11—अप्रेल 24, 1637 ई०) को पहर भर दिन चढे से दूसरी सुबह तक उसने बराबर लडाई जारी रखी। मगर पानी न मिलने से और प्यास के मारे बुरा हाल हो जाने से उसने अब्दुल्ला खां को कहलाया कि "अब मैं तुम्हारी शरण हू।" और शरण लेने वालो के अनुसार हथियार और पोशाक खोल कर एक धोती बांधे और अपनी औरत का हाथ पकडे हुए उसके पास चला आया। अब्दुल्ला खां ने उसको कैद करके उसके साथियो को मार डाला और उसका माल-असबाब और हाथी, घोडे सब जब्त कर लिये।

1 मुहर्रम (जेठ सुदि 3=मगलवार, मई 16, 1637 ई०) को प्रताप उज्जैनिया के पकडे जाने की खबर बादशाह को पहुँची। उन्होंने हुक्म लिखा कि अब्दुल्ला खा उसको मार कर उसका माल भी ले ले और उसकी औरत पर भी कब्जा करे। अब्दुल्ला खां ने प्रताप का वध करा कर कुछ लूट तो अपने साथियो को दी और बाकी स्वय ले ली, और उसकी औरत को मुसलमान करके अपने पोते से उसका निकाह पढा दिया।

11 सफर (आसाढ सुदि पहिली 13=शनिवार, जून 24, 1637 ई०) को पृथ्वीराज राठोड का मनसब 2 हजारी जात—700 सवारो का असल और इजाफे मे हो गया।

23 रबी-उल्-अव्वल (भादो वदि 10=शनिवार, अगस्त 5, 1637 ई०) को खबर पहुँची कि समुद्र के बढ आने से थट्टा की तरफ बहुत से गावो में जान और माल का नुकसान हुआ और जमीन पर जहा-जहा समुद्र का पानी फिरा वह भी खारी हो गई और खेती-बाडी के योग्य नही रही।

23 रबी-उस्-सानी (आसोज वदि 10=रविवार, सितम्बर 3, 1637 ई०) को शाहजादा औरगजेब को, जो शादी के वास्ते आया था, दक्षिण जाने को विदा दी गई और उसकी प्रार्थना पर बगलाने का प्रदेश भी, जो बहुत आबाद है और जहा की आब-हवा अच्छी है, उसको प्रदान किया गया और हुक्म हुआ कि दौलताबाद पहुँच कर उसे फतह करने के लिए फौज भेजे। यह मुल्क बाप-दादो से भेरजी नाम के एक काफिर के कब्जे मे था। इसकी एक सीमा दक्षिण में खानदेश से और दूसरी सूरत और गुजरात से मिली हुई थी।

काश्मीर के सूबेदार जफर खा ने किस्तवार के राजा कुवरसेन की मदद से तिब्बत का मुल्क अलीराय के बेटे अब्दाल से छीन लिया।

तिब्बत विजय करने की लगन जहागीर बादशाह को हमेशा लगी रहती थी और उनके हुक्म से काश्मीर का हाकिम हाशम खा बहुत से सवार और पैदल लेकर वहा गया भी था। परन्तु कुछ काम न कर सका और बहुत से आदमियो को मरवा कर लौट आया था। परन्तु अब जो जफर खा बादशाह

के हुक्म से 8000 सवार और पैदल लेकर एक महीने मे शकरडू के पास पहुँचा, जो झेलम नदी के इधर तिब्बत की सरहद से लगता हुआ एक परगना है, तो अलीराय के किले के पास ठहर गया, जिसका नाम कहरपूछा (सभवत खरवी) है। अलीराय ने एक लम्बे पहाड पर दो मजबूत किले बनाए थे। एक तो यही कहरपूछा और दूसरा कहचना, जो पहिले से कुछ छोटा है, और दोनो का मार्ग पहाड मे होकर है।

अलीराय का बेटा स्वय तो कहरपूछा के किले मे रहा और अपने दीवान मुहम्मद मुराद को धन-माल समेत कहचना के किले मे रखा और कबीलो को शकर के किले मे भेज दिया, जो नीलाब के उधर एक बडे पहाड पर था।

जफर खा ने अब्दाल को कहरपूछे के किले मे घेर कर अपने दो नौकरो को और अब्दाल के भाई को 4000 फौज के साथ शकर पर भेजा, जिन्होंने तिब्बतियो को मार्ग से भगा कर उस किले को जा घेरा। अब्दाल का बेटा दौलत, जो 15 वर्ष का था, किले से निकल कर लडा और हार कर काश्मीर की तरफ भाग गया। बादशाही फौज ने 29 रबी-उल्-अव्वल (भादो सुदि 2=शुक्रवार, अगस्त 11, 1637 ई०) को किले मे घुस कर अब्दाल के कबीलो को पकड लिया। उधर मुराद ने भी किस्तवार के राजा कुवरसेन और सुलेमान पखलीवाल के समझाने से कहचना का किला भी 6 रबी-उस्-सानी (भादो सुदि 8=गुरुवार, अगस्त 17, 1637 ई०) को सौंप दिया। तब अब्दाल भी लाचारी से कहरपूछा का किला छोड कर शादमा के साथ जफर खा के पास चला आया। जफर खा दूसरे दिन अब्दाल को लेकर उस किले मे गया और बादशाह के नाम का खुतबा पढ कर सेना मे चला आया। बादशाह को फतह की अर्जी भेज कर काश्मीर को लौटा और तिब्बत का मुल्क मुहम्मद मुराद को सौंप आया। उसके साथ काश्मीर के पिछले हाकिम हबीब चक वगैरह भी, जो अकबर बादशाह के समय से तिब्बत मे भागे हुए थे, माफी माग कर काश्मीर मे आ गये। 29 रबी-उस्-सानी (आसोज सुदि 9=शनिवार, सितम्बर 9, 1637 ई०) को बादशाह के पास वह अर्जी पहुँची, परन्तु नये फतह किये हुए मुल्क को इतनी जल्दी छोड कर जफर खा का चला आना पसद नही आया।

तिब्बत का कुछ हाल

तिब्बत के दो मार्ग हैं। एक तो करज और दूसरा लार। जफर खा इन्ही दोनों से आया और गया था। करज का मार्ग लार से 4 मजिल दूरी का है। ऊचे पहाड और तग घाटे भी इसमे बहुत हैं, जिनमे एक ही सवार निकल

सकता है, परन्तु वर्फ और जाडा लार से इधर कम है, इसलिये इसी रास्ते से होकर तिब्बत जाते हैं।

लार पाम का मार्ग है। परतु सदा ही वर्फ और पाले के रहने से बडी तकलीफ और कठिनाइयो के साथ काटा जाता है। इस रास्ते मे एक पहाड आधा कोस ऊचा है, जो नीचे से ऊपर तक वर्फ से ढका रहता है। उस पर बहुत सा पानी वहा करता है। मार्ग चलने वाले बहुत मेहनत से उस पर चढते-उतरते हैं। फिर रास्ता समचौरस आ जाने से कई मजिलें सहज मे ही कट जाती हैं। लेकिन काश्मीर से 30 कोस पर एक घाटी है, जिसके बराबर दूसरी कठिन और विकट घाटी ससार मे फिरने वाले लोग बहुत कम बताते हैं। वह पीरपजाल से दूनी ऊची है और तग ऐसी है कि सवारी से उस पर चढ-उतर नही सकते। इन दोनो रास्तो मे खाना नही मिलता है। इस वास्ते जफर खा और उसके साथी इतनी रसद ले गये थे कि जो काश्मीर को लौटने तक काफी हुई थी।

तिब्बत मे 21 परगने और 37 किले हैं। पहाड और घाटिया अधिक होने से खेती कम होती है। कुछ गेहूँ और जौ हो जाते है।

उस मुल्क का पूरा-पूरा बदोवस्त न होने से ठीक-ठीक आमदनी मालूम नही हुई, परन्तु ऐसा सुनने मे आया है कि पूरे वर्ष की पैदा एक लाख रुपये से ज्यादा नही है।

उस देश मे पानी की एक नदी है, जिसके एक किनारे पर सोने के छोटे-छोटे टुकडे मिलते है, उनसे प्राय 2 हजार तोला सोना, जो कम खरा होने से 7 रुपया तोले से ज्यादा मोल का नही होता, उसके इजारे से मिलता रहता है।

ठडे देशो के अधिकतर मेवे वहा होते हैं, जैसे जरदालू, शफतालू, खरबूजा। वहा का अगूर बहुत रसीला और मीठा होता है। सेब भीतर से भी लाल निकलता है। शहतूत, चिनार, जरदालू, शफतालू, खरबूजा और अगूर एक ही मौसम मे होते हैं।

परिशिष्ट

(1)

'तुजुक तैमूरिया' से एक विवरण, जो बादशाह औरंगजेब को भेजा गया था

'तुजुक तैमूरिया' ग्रन्थ से उपदेश की एक दास्तान (कथा), जो अमीर तैमूर ने अपने पोते, जहागीर मिर्जा के बेटे, पीर मुहम्मद को काबुल, गजनी और कधार वगैरह की हुकूमत पर भेजते समय लिख कर दी थी, बादशाह ने नकल करा कर मेहरबानी से शाहजादा औरगजेब के पास भेजी थी, जो कुछ ही दिनो पहले दक्षिण की सूबेदारी पर विदा हुआ था।

'तुजुक तैमूरिया' अपने जीवन-चरित्र के वृत्तान्तो की तुरकी भाषा मे अमीर तैमूर की लिखी हुई किताब है। मीर अबू तालिब तुरबती ने यमन देश के हाकिम के पुस्तकालय से लाकर फारसी भाषा मे उसका अनुवाद किया है।

उस विवरण की नकल

इस समय मेरे जी मे ऐसा आया कि काबुलस्तान और हिन्दुस्तान की सीमा गजनी, बाख्त्र (बेक्ट्रिया) और कधार के प्रातो मे किसी काम जानने वाले को भेजा जावे जो लम्बे-चौडे प्रदेशो का बन्दोबस्त कर सके। तब अपने मन की बुद्धि से यह बात ठहराई कि अमीरजादो (शाहजादो) मे से किसी को यह काम सौंपा जावे। फिर यह विचार हुआ कि शायद उसके दिमाग मे राज्य-विद्रोह की हवा भर जावेगी, क्योकि यह ऐसी जगह है कि जो किसी सरदार को सौंपी जावे तो उसका भी मस्तिष्क भ्रमित हो जावे, अमीरजादो की तो बात क्या रही। मैं सोच ही रहा था कि दिल मे यह खयाल आया कि जब

तकरी ताला[1] (परमात्मा) ने मुझे बादशाही दी है तब किसकी ताकत है, जो विद्रोह की तरफ झुके, नही तो केवल बाहुबल मे क्या हो सके। उस अवसर पर जो मैंने फाल (शकुन) लेने के लिये 'बोस्तान' की किताब खोली तो ये बैतें (चौपाई) निकलीं—

"जब आसमान (दैव) ऐश्वर्य नही दे।
तो वही पुरुषार्थ से पकडने मे नही आवे॥
न तो किसी निर्बल से चींटी सताई जावे।
और न सिंह हाथ के जोर से दबाये जावे॥
खुदा नाव को जहा चाहे वही ले जावे।
"नाखुदा (खेवटिया) चाहे अपने बदन के कपडे फाड डाले॥"

इन बैतो से मेरी तबीअत खिल उठी और मैंने अपने मन मे कहा कि यही ठीक है कि हिन्दुस्तान की सरहद को सिंध तक और गजनी से काबुल और कंधार की हद तक जो सुल्तान महमूद गजनवी की सल्तनत है, वह अपने एक लड़के के हवाले करूँ। कदाचित् वह बागी भी हो जावेगा और मुझ पर चढ़ भी आवेगा तो मेरा ही कलेजा होगा, किसी और के बदन का तो अंश नही होगा। मैं अपने इस विचार पर पक्का हो गया और मैंने इन प्रदेशो की हुकूमत अमीरजादे पीर मुहम्मद को देनी ठहराई। जब मेरे बुलाने पर सोमनात[2], कथूनात[3] और हजारजात[4] के अमीर और सरदार आ गये, तो मैंने उस (पीर मुहम्मद) को बुलाया और अपने सिर का ताज उसके सिर पर रख कर खामा फरजी[5] भी पहिनाई और कहा कि "मैं तुझको इन पाच बातो का हुक्म देता हूँ—

"(1) जब तू सुल्तान महमूद के तख्त पर बैठे और उनकी बादशाही पर हुक्म चलावे, तो मुझे और अपने-आपको मत भूल जाना और अपनी मर्यादा से आगे पाव न बढाना।

"(2) अपने देश और पडोसियो के हाल से असावधान मत रहना।

"(3) राज्य-प्रबंध और प्रजा की रक्षा मे कभी आलस्य मत करना, क्योंकि तकरी ताला ने हमको अपनी भूमि इस वास्ते दी है कि गरीबों और अन्याय से सताये हुए लोगो के हाल से खबरदार रहे।

"(4) सेना सजाने के पूरे प्रयत्न करना। जो कोई तेरे पास आवे

---

1 'तकरी' तुरकी मे परमात्मा का नाम है और 'तआला' अरबी शब्द है, इसका अर्थ बड़ा है, अर्थात् बड़ा ईश्वर। दोनों भाषाओ के 2 शब्द मिल कर 'तकरी ताला' हुआ, जैसे फारसी अरबी के शब्द मिलकर 'खुदा ताला'।

2 जागीर। 3 सेना। 4 प्रजा वगैरह।

5 एक विशेष प्रकार का ऊपरी जामा।

उसको नौकर रख लेना, इसलिए कि तकरी ताला ने उसको रोटी देने का भार तुझ पर रखा है। सिपाही को जाने मत देना। जो जाना चाहे, और तू जान ले कि वह सिपाहगरी मे वैसा ही है, जैसा कि अच्छा सिपाही होना चाहिये, तब उस पर तुझे ऐसी कृपा करना चाहिये कि वह निश्चिन्त होकर तेरी सेवा मे रहे। क्योकि सिपाही अपनी जान बेचता है, और सिर देता है और तू जान रख कि राज्य की भीत (दीवार) सेना है, बल नही है।

"(5) मुसलमानी धर्म को शोभा देना, और खुदा ने जो कहा है और जो नही कहा है, उसके विपरीत मत करना, क्योकि राज्य की मजबूती इसी पर निर्भर है। सैयदो, आलिमो और नेक लोगो से अच्छा बर्ताव करना। कमीनो और बदमाशो से बचना।"

फिर दरबार मे सरदारो का एक दल बडी भारी सेना के साथ उसको दिया और अमीर सुलेमान शाह के चचेरे भाई कुतुबुद्दीन को दीवान बेगी,[1] राजदूत ख्वाजा बरसाल के बेटे इस्लाम ख्वाजा को मीर तुजुक[2] और बरात (? बरलास) के कलनाश को उसके भेदो का जानने वाला (निजी कर्मचारी अथवा सचिव) नियत किया और हुक्म दिया कि अमीरो मे से मीर मूसा, अली गानची, अमीर दरवेश, बरलास का बेटा बहलोल, तैमूर ख्वाजा आन का बेटा हुसैन सूफी, गयासुद्दीन तरखा का बेटा हुसैनी ख्वाजा, अमीर अब्बास बहादुर का दामाद इकबाल बरगूची, जोजकरा का बेटा शमसुद्दीन, और सोनज तैमूर तलबा, उसके दरबार मे बैठे।

फिर हरेक से एक-एक बात, जो उसके दिल का भेद बताये पूछी, तो अमीर कुतुबुद्दीन ने कहा कि "जो मेरी पीठ मजबूत हो तो पेट पर लकडी न खाऊ, और मेरी पीठ मजबूत करने वाला अमीर ही है, मैं दूसरे को नही पहचानता।"

इस्लाम ख्वाजा ने कहा कि "बात एक ही है, जिसके उजाला मे हम मार्ग मे चलते हैं, और हम अमीर को ही रौशन (ज्योतिर्मय) दीपक जानते हैं, और उसी के प्रकाश मे जीते हैं।"

अमीर अली गानची ने कहा कि "अमीर के पीछे हम जीते न रहें।"

इसी तरह हरेक अपनी राजभक्ति और सेवा की बातें कहता था। अमीरजादा ने निवेदन किया कि "जो मैं अमीर से फिरू तो खुदा के हुक्म से सिर फिराऊ, अपना धर्म हार जाऊ।" मैंने कहा कि "मैंने तुमको अपने राज्य का

1 माल का अधिकारी।
2 खानसामां।

चौथा भाग दिया है। तेरे भाई द्वेष और ईर्ष्या से तेरे लिए बातें बनायेंगे, परतु तुझमे नम्रता और दीनता के चिह्न सदा प्रकट होने चाहियें।" तदनन्तर उसको प्रेमपूर्वक छाती से लगा कर विदा किया।

(2)

हुगली मे फरंगी

छठे वर्ष के हाल मे जो फरगियो से हुगली का लिया जाना लिखा गया है, उसका कुछ हाल 'बादशाहा-नामा' से यहा इसलिए लिखा जाता है कि इस किताब के पढने वालो को यह भी मालूम हो जावे कि फरगी बगाल मे कैसे आये और क्यो कर हुगली बदरगाह मे जम गये थे और हुगली बदरगाह कैसे बना था और कैसे उसे फरगियो से छीना गया।

'बादशाह-नामा' मे लिखा है कि समुद्र मे पानी की एक धारा निकल कर राजमहल की तरफ बीस कोस तक आ गई थी। राजमहल पहिले 'आग-महल' कहलाता था, क्योकि वह हमेशा आग से जल-जल जाता था। जब राजा मानसिह बगाल का सूबेदार हुआ तो उसने अपने रहने के वास्ते उस शहर मे ईंट और मिट्टी का एक कोट बनाया। उसने तो उसका नाम राजमहल रखा था, परतु अकबर बादशाह ने अकबरनगर रख दिया। बगाल फतह होने के समय से यही गौड की जगह सूबेदार के रहने का मुख्य स्थान रहता आया है। बगाल और बिहार की सरहद राजमहल से सात कोस एक ऐसी जगह पर है कि जिसके पास ही उत्तर मे गगा दूसरी नदियो के साथ चौडी होकर बहती है और उसके दक्षिण मे एक लबा ऊचा पहाड है, इस जगह को गढी कहते है। गगा का पानी राजमहल के आगे से निकल कर समुद्र की इस धारा मे गिरता है। इस सगम से पाच कोस गगा की एक खाडी पर सातगाव बदरगाह है, सातगाव से नाव पाच दिन मे राजमहल पहुचती है।

बगालियो के समय मे फरग (यूरोपीय देश—पुर्तगाल) के व्यापारियो मे से कुछ व्यापारी, जो सदीप (सद्वीप) के रहने वाले थे, सातगाव मे आया और जाया करते थे। उन्होंने सातगाव से एक कोस चल कर इस धारा के किनारे बस्ती के वास्ते एक जगह पसद करके इस बहाने से कि लेन-देन के लिए एक मकान की जरूरत है, बगालियो की परवानगी से कई घर बना लिये, और फिर होते-होते बगालियो की मूर्खता और निश्चितता मे रहने से फरगियो ने बडे-बडे मजबूत मकान निर्माण किये, जिनको तोप, बदूक और लडाई के दूसरे सामानो से सजा लिया। फिर थोडे ही समय मे यहा एक बडी बस्ती बस गई, जिसका

नाम हुगली बदर हो गया। उसके एक तरफ तो समुद्र था और तीन तरफ खाई खोद कर उस धारा का पानी उसमे डाल दिया। इस बदर मे फरग के जहाज आने-जाने लगे और मडी भी लग गई। सातगाव का बाजार मदा पड गया। उसकी रौनक और पैठ जाती रही।

वे लोग वहा की बहुत सी प्रजा को तो जबरदस्ती और कुछ को लालच से ईसाई बना करके अपने जहाजो मे भेज देते थे। इजारे मे जो कसर पडती थी, उसको धर्म समझ कर व्यापार को नफे से भर देते थे। यह बात उनके एकाधिकार वाले परगने मे ही नही थी, वरन् समुद्र किनारे के परगनो के रहने वालो मे से जो मिल जाता था, उसी को पकड कर ले जाते थे। धार्मिक बादशाह (शाहजहा) को यह हाल तब ही मालूम हो गया था, जब कि तख्त पर बैठने से पहिले वे बगाल पधारे थे। हुगली बदर के ईसाई मुसलमानो के साथ जो बुरा बर्ताव करते थे, वह सब जान कर आपने तब ही यह इरादा कर लिया था कि जब बादशाह होंगे उस समय इस गुमराही के काटो की जड इस मुल्क से उखाड डाली जावेगी।

तख्त पर बैठने के बाद जब कासिम खा को बगाल की सूबेदारी पर भेजा तो फरमाया कि "बहुत दिनो से ईसाइयो के घरो, गिरजाओ और मूर्तियो के गिराने की लगन हमारे दिल मे लगी हुई है, सो तुम बगाल का बदोबस्त कर के मुसलमान योद्धाओ को तरी और खुश्की के मार्ग से भेज कर जल्दी इन लोगो का पाप काट देना।"

जाडा निकल जाने पर शाबान के महीने (फरवरी-मार्च, 1632 ई०) मे कासिम खा ने अपने बेटे इनायतुल्ला को अल्लाहयार खा के साथ उस सूबे के मददगार अमीरो के साथ हुगली बदर लेने को भेजा और अपने नौकर बहादुर कबू को अपनी फौज देकर मखसूदाबाद के खालसा की सभाल के बहाने विदा करके कह दिया कि उचित समय पर वह अल्लाहयार खा से जा मिले।

बादशाही फौज वालो ने यह सोच कर कि अपने ऊपर सेना आने की खबर पाकर कही फरगी जहाजो मे बैठ कर भाग न जावें यह अफवाह उडा दी कि "हम हिजली (के जमीदार को) लूटने जा रहे हैं," और बर्दवान जाकर ठहर गये, जो हुगली की तरफ है। जब शेर ख्वाजा, मासूम जमीदार, और सालेह कबू, जो फरगियो का मार्ग रोकने के लिए तैनात हुए थे, बदर श्रीपुर से निवाडो (विशेष प्रकार की छोटी नावो) के साथ हुगली की धारा के मुह पर पहुच गये और उधर बहादुर कबू ने भी मखसूदाबाद पहुच कर धारा और हुगली के बीच मे नावो का पुल बाध कर जहाज का मार्ग बद कर दिया। तब फौज वाले भी रात-दिन चल कर गाव हलदीपुर जा पहुँचे, जो हुगली बदर और सातगाव के बीच मे हैं।

2 जिल्हिज सन् 1041 (भासाढ सुदि 4, स० 1690=सोमवार, जून 11, 1632 ई०) को सेना और निवाड़ो ने दो तरफ से फरगियो पर धावा किया पहिले खाई मे, जिसको वाली कहते हैं, बहुत फरगी मारे गये, और फिर उनके जो इजारेदार गावो और सरगनो में थे, उन पर भी फौज गई। वहा भी वे सब फरगी मार डाले गये और इनके निवाडो के अमलावालो के बाल-बच्चे पकड़े गये, जो सब बगाली थे। यह देख कर 4,000 मल्लाह, जिनको बगाली 'गुर्राबी' कहते हैं, फरगियो को छोड कर बादशाही सेना मे भरती हो गये। किले का घेरा साढे तीन महीने लगा रहा। अदर वाले फरगी कभी तो लडते थे और कभी सुलह के सदेश भेजते थे। यथार्थ में फरगी मदद की बाट देख रहे थे। उन्होंने सुलह की साई में एक लाख रुपया भी पेशकश का भेज दिया, तथापि लडाई भी बद नही की।

उनके पास सात हजार बदूकची थे, जिन्होंने बदूकें मार-मार कर उन बागो के उन सब वृक्षों के पत्ते जला दिये, जिनमें बादशाही सेना ठहरी हुई थी। निदान गाजी मुसलमानो के बेलदारो से खाई के आगे गिरजाघर के पास गड्ढे खुदवा कर पानी निकाल लिया और अपने मोरचो में से सुरगें खुदवाई। खबर पाकर दो सुरगो को तो फरगियो ने पाट दिया। तीसरी सुरग मे, जो उनके रहने के मकानो के नीचे तक पहुच गई थी, बारूद भर दी गई। 4 रबी-उल्-अव्वल (आसोज सुदि 6, स० 1689=रविवार, सितम्बर 9, 1622 ई०) को बादशाही लोगो ने उसमे आग लगा कर धावा किया। सुरग के उडते ही बहुत से फरगी तो अपने मकानो के साथ उड़ गये। शेष बडी कठि-नाई से भाग कर अपनी नावो में जा बैठे। तब तो निवाडे के सिपाहियो ने पहुच कर उनको मार डाला। उनके एक बड़े जहाज मे 2000 के करीब आदमी औरतो के अतिरिक्त बहुत सा माल-असबाब भी था, उसको उन्होंने ही बाद-शाही आदमियो के हाथ मे पड जाने के डर से बारूद से उडा दिया। ऐसे ही बहुत से फरगी गुर्राबो (छोटे जहाजों) मे आग लगा कर जल मरे। उनके 64 बडे डोंगे, 57 गुर्राब और 200 जलियो (मल्लाह) में से एक गुर्राब, दो जलिये गोआ के थे। फरगियो की जलती हुई नावों की आग से पुन को भी कई नावो के जल जाने से मार्ग खुला पाकर वे सब निकल गये। जो आग और पानी से बचे, वे सब पकडे गये।

लडाई शुरू होने से अब तक आदमी-औरत, बाल-बच्चे जवान-बूढे सब मिला कर दस हजार फरंगी बारूद और पानी से मारे गये,होंगे, और 4 हजार 4 सो आदमी-औरत बदी हुए। परगनो की प्रजा मे से, जो 10 हजार आदमी उनकी कैद मे थे, वे छूट गये। बादशाही सेना में से एक हजार सिपाही शहीद हुए।

खुदा की मेहरबानी पैगम्बर की मदद और बादशाह की धर्म-निष्ठा से इतनी बडी विजय हुई। इन काफिरो की जड कट गई। शख (?) की जगह अजा की बाग सुनाई देने लगी।

(3)
शाहजहा बादशाह के खत

शाहजहा बादशाह ने जो खत ईरान और तूरान के बादशाहो के नाम लिखे थे उनकी नकलें भी 'बादशाह-नामा' में हैं, जिनसे जाना जा सकता है कि एक बादशाह दूसरे बादशाह को किस अनोखे ढग से और शब्दाडबर भरे खत लिखता था और खत में कैसी लबी-चौडी उपमाए और कितनी जोरदार बातें अपना दल-बल जताने और दुश्मनो पर फतह पाने की होती थी। इन विजयो से काफिरो अर्थात् हिन्दुओ और ईसाइयो पर फतह पाने का हाल तो मुसलमानों को जोश दिलाने के लिए मुसलमानी मत के ढग से और पक्षपात से पूर्ण खूब चढा-चढा कर लिखा जाता था जैसा कि राणा सागा पर फतह पाने पर बाबर का फतह-नामा 'बाबर-नामा' में है। परन्तु फारसी शब्दाडबर और अत्युक्तियो का पूरा सही चित्र हिन्दी भाषा में नहीं खींचा जा सकता है, और जो खीचा भी जाये तो भद्दा होने से कुछ काम का अथवा शोभा देने वाला नही होगा। इसलिए हम उसका नमूना और ढग दिखाने के लिए यहा दो खतो का सार लिखते हैं।

1. बल्ख के खान नजर मुहम्मद खा उजबक के नाम

खुदा पैगम्बर और खलीफों की स्तुति और प्रशसा के बाद उस बडाई के आसमान के चाद-सूरज और चगेज खा के बाग के फल को मालूम हो कि आपका कृपा-पत्र हाजी बक्कास के हाथ उस वक्त पहुचा जब कि हमारी सवारी पापी पठानों पर जीत पाकर दक्षिण से लौटी थी।

ये लोग बागी होकर निजामुलमुल्क के पास गये थे, और वहा 12 हजार के करीब जमा होकर और निजामुल्मुल्क को, जो हमेशा 20-30 हजार सवारों का मालिक रहता आया है, मिला कर फसाद करने लगे थे। तब हम स्वय उन्हे सजा देने को गये। इस मुहिम मे पाच बड़े किले, कधार, धारूर, गालना, तलतम और सतोडा, जो सुदृढता के लिए प्रसिद्ध थे, उसके राज्य से 50 लाख रुपये की जमा के मुल्क समेत हमारे प्रबल राज्य के नौकरो के हाथ आये।

जब हम अपनी राजधानी आगरा मे पहुचे, जो अरब अथवा ईरान के शहरो से आबादी और विशेषताओ मे बढा हुआ है, तो आपका कृपा-पत्र

पढ़ कर बहुत खुशी हुए। उसमे परम स्नेह की बातें और हमारे तख्त पर बैठने की मुबारकबादें भी थी। इससे हमारे तुम्हारे घराने की पीढ़ियो की प्रीति और अधिक सुदृढ़ हो गई।

हम हाजी वक्कास के साथ अपने विश्वासपात्र निजी नौकर तरबियत खा को भेजते हैं। कजलबाश[1] के बाबत आपने जो लिखा था, सो यह बडा लबा मामला है। इसके और दूसरे मुकदमो के वास्ते तरबियत खा से जबानी कह दिया है, सो उसके कहने से आपको मालूम हो जायेगा।

इन दिनो मे हुगली बदर फतह होने के शुभ समाचार पहुचे, जिसमें बहुत से फरगी (पुर्तगाली) मारे और पकडे गये हैं। ऐसी विजयो के हाल सुनने से मुसलमानो को पूरी-पूरी खुशी हुआ करती है, इस वास्ते हम उसका भी थोडा सा हाल इस खत के अत मे लिखते हैं, जिससे वह धर्मनिष्ठ खान (नजर मुहम्मद) और मुसलमानी (क्षेत्र) के गुबद (शिखर) बलख के रहने वाले भी राजी और प्रसन्न हो।

हुगली सातगांव के पास एक बदर है और सातगाव बगाल के मशहूर बदरो मे से है। वहा बहुत से उपद्रवी दुष्ट फरगी रहते थे, जिससे उस प्रदेश के मुसलमानो को बहुत तकलीफ पहुचती थी, क्योकि वे मुसलमानों को पकड-पकड कर जबरदस्ती ईसाई बना लेते थे। मुसलमान बादशाहो पर, जो पैगम्बर के दीन को चलाते हैं, काफिरो का दबाना और मिटाना कर्तव्य होता है। इसलिए बगाल के सूबेदार कासिम खा को उन लोगो की जड उखाड देने का हुक्म दिया गया था। उसने कुछ बादशाही बदो को उन लोगो के विरुद्ध भेजा। बगाल की नौ-सेना मे 1000 नावें हैं। हरेक नाव मे 70–90 मल्लाहो के अतिरिक्त हर प्रकार के बदूकची, तोपची, गोलदाज, तीरंदाज, बरछेत, तलवारिये, नकारची, नफीरची, करनाई, सुरनाई, सुथार-खाती, लुहार, वगैरह कारीगर और दूसरे लोग होते हैं।

ये सब करीब 70 हजार वेतन-भोगी हैं, जो अपना वेतन महीने के महीने बगाल के खजाने से पाते हैं। इनके सिवाय बहुत से दूसरे काम किये हुए सिपाही मनसबदार और अहदी भी इन नावो मे होते हैं। कासिम खा ने ऐसी 500 नावें भी उस सेना के साथ रवाना की। ये बहादुर मैदान और समुद्र मे 4 महीने तक उनसे लडे और उनको प्रति दिन नग करते रहे। इन्होने उनके मजबूत मकानो की दीवारो के नीचे तक सुरगें दौडा कर उडाई। चारो तरफ से आक्रमण करके उनको घेर लिया। वह बदर खारे समुद्र की एक खाडी के किनारे पर था। इसलिए तलवारो से बचे हुए फरगी (पुर्तगाली) जहाजो और गुराबो पर चढ़ कर भागे, परतु इन बहादुरो ने पीछा करके

1 ईरानी।

उन्हें जहाजो सहित पकड लिया। उनमे से कुछ तो मारे गये और बहुत से कैद हुए, जो 10 हजार के करीब थे। जगी फरगियो (पुर्तगालियों) के सिवाय उनके खिदमतगारों और सिपाहियो मे से 5 हजार आदमी और भी पकडे गये। 64 जहाज और गुर्राब बहुत सी लूट के साथ सैनिको के हाथ आये। काफिरो की जड उस प्रदेश से बिलकुल उखाड दी गई, और उनके गिरजाघरों की जगह हमारे हुक्म से मसजिदें बना दी गईं। गब्रो[1] के शख के बदले मुसलमानो की अजा की आवाज आसमान पर रहने वाले फरिश्तो के कानो तक पहुची। इन दिनों मे मुसलमानो की ऐसी यह बडी विजय हुई है।

2 शाह ईरान के नाम

शाह अब्बास के पोते शाह सफी ने मुहम्मदअली बेग को बादशाह के जुलूस की मुबारकबाद का पत्र देकर 3 लाख रुपयों की सौगात के साथ भेजा था। बादशाह ने भी उसके जवाब मे सफदर खां को 4 लाख रुपयो की सौगातें देकर अपनी तरफ से शाह के पास भेजा। 4 लाख में से 1 लाख के तो जडाऊ जेवर और 3 लाख के कीमती कपडो के थान थे, जो अहमदाबाद, पट्टन, बनारस और मालदा (बगाल) मे तैयार हुए थे। साथ मे एक पत्र भी था जिसमे शाह सफी को बेटा करके लिखा था, क्योंकि जहांगीर बादशाह उसके दादा अब्बास को भाई कह कर खत लिखा करते थे।

उस खत का साराश यह है कि "तुम्हारा अम्बर जैसा खुशबूदार खत मुहम्मदअली बेग के हाथ आया, जो बादशाहो की बदगी किया हुआ मालूम होता है। आपने मेरे जुलूस की खबर सुन कर अपना खुश होना लिखा, सो दोस्तो की खुशखबरी सुन कर दोस्त खुश हुआ ही करते हैं। इसमे सदेह करने की कोई बात नही है। हमारे तुम्हारे घरानो में जो कदीम से दोस्ती चली आती है, उम्मीद है कि तुम उसको यथावत् रख कर और भी मजबूत करोगे। हम भी सफदर खा को, जो हमारा पुराना खिदमतगार और भरोसे का अमीर है, भेजते हैं। वह आपको यह पत्र भी देगा और कुछ सदेश भी कहेगा, जो उसकी जबानी कहलाये गये हैं। मालूम होता है कि हमारे चचा के शुभचिन्तक अमीरों में से कोई ऐसा नहीं रहा है कि हमारे तुम्हारे घरानों के बादशाहो में जो सच्चा और निष्कपट प्रेम रहता आया है उसका पूरा-पूरा हाल तुमसे कहे।

"बादशाहो के पास ऐसे आदमी रहने चाहिए जिनकी मान-मर्यादा और स्थिति ऐसी हो कि वे उनके हित की बात बेधडक अर्ज कर दिया करें। साथ ही उनके दिलों मे यह जमाते रहें कि बादशाही का यथार्थ अर्थ यह है कि पर-

1 'गब्र'—अग्नि आदि पूजने वाले पारसी।

मेश्वर किसी एक आदमी को पसद करके उसे अपनी प्रजा इस अभिप्राय से सौंप देता है कि उसकी जान-माल और इज्जत की रखवाली करे और किसी बलवान से निर्बल पर जुल्म न होने दे। यदि किसी से कोई अपराध भी हो जावे तो क्षमा कर दे, और बिना जरूरत किसी खुदा के बदे को दड न दे।

"तुम भी ये बातें अपने ध्यान मे रखो और जो किसी से कोई अपराध ऐसा हो जावे, जिसको माफ करना उचित न हो तो उतनी ही सजा दो जो उस कसूर के लायक हो। बिना जरूरत किसी आदमी को, जिसे परमेश्वर ने अपनी ईश्वरीय शक्ति के द्वारा बनाया है, मारना प्रजा को नाराज कर देना है। प्रजा को तो राजी रखना चाहिए जिससे राज्य मे सुख, शाति, दौलत और हुकूमत की मजबूती बढे।"

"हमने मेहरबानी से ये थोडी सी नसीहतें तुमको लिखी हैं। खत और सदेशा पहुचाने के बाद तुम सफदर खा को जल्दी विदा कर देना।

"दोस्ती का एक नियम यह भी है कि दोस्तो की दौलत और ताकत बढने के समाचार सुनकर दोस्त राजी होते हैं। इसलिए हम अपनी कुछ नई विजयों का हाल लिखते हैं, जो इन मुबारक दिनो मे हुई हैं। उनमे से एक यह है कि बडे हजरत ने पीरा पठान को मेहरबानी से बढ़ाते-बढ़ाते खानजहा के खिताब और सिपहसालारी के ऊचे दर्जे तक पहुचा दिया था। वह बेईमान बागी हो कर निजामुलमुल्क की पनाह मे चला गया। 30 हजार के करीब सवार तो निजामुलमुल्क के पास थे और बहुत से पठान और भी वहा पीरा के बुलाने से जमा हो गये। हमने स्वय जाकर उन विद्रोहियो पर फौजें भेजी, जिन्होंने लड कर पठानो को तो वहा से भगा दिया और निजामुलमुल्क का मुल्क लूट कर ऊजड बजर कर डाला। तब पीरा का पीछा किया। निदान परमात्मा की कृपा से फतह हुई। पीरा का सिर हमारे पास आ गया। निजा-मुलमुल्क ने भी नर्क में जाकर उसका साथ दिया। उसका बेटा अपने वजीर फतेह खा सहित पकडा गया। दौलताबाद का मजबूत किला, जो जगल मे पहाड पर पत्थर का बना है और जिसके आस-पास वैसे ही 4 किले और भी हैं दूसरे सात मजबूत किलो अर्थात् धारूर, कधार, गालना, अन्तूर, तलतम, सतोडा और नबाती समेत फतह हो गया। ये सब किले सख्त घेरो, सुरगों और बहादुर सिपाहियों के धावो से छीने गये और 5 किलो को किलेदारो ने डर कर सौंप दिया। अकेले दौलताबाद के किले से 1000 तोपें, जिनमें कई तो ऐसी थी कि आदमी उनमे बैठ सकता था, खासा तोपखाने मे दाखिल हुई और निजामुलमुल्क का तमाम मुल्क, जिसकी जमा सवा दो करोड की है, हमारी अमलदारी मे मिल गया। कुतुबुलमुल्क ने भी ताबेदारी करके और 50 लाख रुपये का नजराना भेज कर अपने को हमारी सेना की मार से बचा

लिया। अब आदिल खा के ऊपर फौज गई है। वह भी या तो कुतुबुल्मुल्क की भाति तावेदार बन कर नजराना भेज देगा या निजामुल्मुल्क की तरह विनष्ट होगा।

"हुगली बदर मे, जो बगाल के प्रमुख और मशहूर बदरो में से सातगाव के पास है, पुराने जमाने से बहुत से फरगी (पुर्तगाली) रहते थे और उन काफिरो से उधर के मुसलमानो को बहुत कष्ट पहुचता था, क्योकि वे बहुत से मुसलमानों को पकड कर जबरदस्ती ईसाई कर लेते थे। ऐसी काफिरी बातों का मिटाना मुसलमान बादशाहो के लिए उचित और कर्तव्यानुकूल है, इसलिए हमने बगाल के नाजिम को उन उपद्रवियो के ऊपर तैनात किया था।"

दूसरा भाग

(जुलूसी सन् ग्यारह के प्रारभ से जुलूसी सन् वीस के अन्त तक)

जुलूसी सन् ग्यारहवां

(अक्तूबर 10, 1637 ई० से सितम्बर 28, 1638 ई० तक)

9 जमादि-उस्-सानी (कातिक सुदि 10=बुधवार, अक्तूबर 18, 1637 ई०) को राजा अनूपसिंह के बेटे, अपने बाप की मृत्यु के बाद शाही दरबार में हाजिर हुए। बड़ा बेटा जयराम था। उसको बादशाह ने खिलअत, अमल और इजाफे से हजारी जात—800 सवारों का मनसब, राजा का खिताब और हाथी-घोड़े इनायत किये। उससे छोटे अन्य चार लड़कों को उनकी योग्यता के अनुसार मनसब दिए।

1 रजब (मगसिर सुदि 3=गुरुवार, नवम्बर 9, 1637 ई०) को लाल खां कलावत, जो उस वक्त के गवैयों का सरताज था, खिलअत और 'गुण-समुद्र' के खिताब से सम्मानित किया गया। वह तानसेन के बेटे बिलास का दामाद था।

'बादशाह-नामा' में लिखा है कि 'तानसेन के गाने का ढंग उसके शागिर्दों से लाल खां ने अच्छी तरह सीखा है। उसके ढंग पर ध्रुपदों के गाने में जवाब नहीं रखता है। उसके चार बेटे हैं, जो उसका साथ देते हैं। इनमें खुशहाल और विश्राम बहुत अच्छे हैं और गाने में एक-दूसरे के बराबर हैं। पहिले की समझ-बूझ अच्छी है। इस कारण से बादशाह के नाम से वह काव्य भी बनाता है। लेकिन इस अमन-चैन के युग के कवियों का सरदार तो जगन्नाथ महाकवि है। पहिले जमाने में तो इस बहिश्त जैसे हिन्दुस्तान के गवैये गीत, छंद, ध्रुपद और स्तुति गाते थे। मगर ये सब कर्नाटक देश की भाषा में होते थे। अतः इस मुल्क के आदमी सिवाय राग और अलाप के उनके कुछ भी मतलब और अर्थ नहीं समझ सकते थे। इसलिए निजामुद्दीन औलिया के मुरीद मीर खुसरो ने चार तरह के गाने निकाले।

"1. 'कौल', जो अरबी और फारसी से इकताला, दो ताना, तिताना और चौताला भी होता है।

"2. 'गजल' और 'तराना' फारसी में, जो इकताला होता है।

"3 'तराना'। यह भी इकताला होता है।

"4. 'खयाल'। हिन्दुस्तानी जवान में। यह मीर से पहिले भी गाया जाता था।

"फिर ग्वालियर के राजा मान तवर ने, जो हिन्दुस्तान की गान विद्या और साहित्य शास्त्र को खूब जानता था, सब लोगो को आसानी से समझ मे आ जाने के वास्ते ग्वालियर की बोली मे नई चाल का गाना निकाला, जिसके ये तीन विभिन्न प्रकार निश्चित किये —

"1 'विष्णु-पद'—श्रीकृष्णजी की स्तुति मे।

"2 'स्तुति', जिसमें देवताओ की और बड़े आदमियो की प्रशसा हो।

"3. 'ध्रुपद', जिसमे नेह-प्रीति की बातें हो।

"राजा मान के शागिर्दों मे बखशू नायक बडा गुणी था, जिसने गाने में नई-नई बारीकिया निकाल कर उसको कमाल के दर्जे पर पहुचाया था। उसकी आवाज इतनी ऊची थी कि और गवैये तो जब तक कि पहिले दो व्यक्ति मिल कर शुरू न करें, अच्छी तरह नहीं गा सकते थे, परन्तु वह अकेला बडी खूबी और पूरे सुरो से गाता था। और 'टीप' को भी, जो बहुत ही ऊचे सुरों से गाई जाती है, यह इस खूबसूरती से अदा करता था कि बडे-बड़े गवैये भी उसकी तारीफ करते थे। गाते वक्त वह पखावज भी बजाता जाता था और अलाप में भी इक्का था। जब राजा मर गया, तब उसके बेटे विक्रमाजीत के पास रहा, और जब ग्वालियर का राज्य विक्रमाजीत के अधिकार से निकल गया, तब नायक कालजर के राजा कीरत के पास चला गया और वहा बडे आराम से रहा। आखिर गुजरात के बादशाह सुल्तान बहादुर ने नायक की तारीफ सुन कर उसको राजा कीरत से मागा। राजा ने उसे उसके पास भेज दिया। सुलतान बहादुर नायक का गाना सुन कर बहुत खुश हुआ और नायक जीवन पर्यन्त वही रहा।

"उसके पीछे तानसेन के गाने की चर्चा लोगो में फैली। वह पहिले बाघो-गढ़ के राजा रामचद्र बाघेले के पास बडे आराम से रहता था। अकबर बादशाह ने, जिनके दरबार मे मुलक-मुलक के गुणीजन हाजिर रहते थे, उसकी तारीफ सुन कर राजा के पास अपना एक भला आदमी भेजा और तानसेन को भेजने के लिए उसे लिखा। राजा का दिल उसको जुदा करना नही चाहता था, तो भी उसने शाही हुक्म मान लिया, और तानसेन को शाही दरबार मे भेज दिया। बादशाह उसका गाना सुन कर बहुत खुश हुए और बहुत-सा इनाम देकर उसके सब बराबर वालों से उसका दर्जा बढा दिया।

"आज हिन्दुस्तान के गवैये बखशू और तानसेन की किताबो पर चलते हैं।"

17 रजब (पौष वदि 4=शनिवार, नवम्बर 25, 1637 ई०) को राजा विट्ठलदास शाही दरबार में घघेड़े से हाजिर हुआ, जो वतन के रूप में उसको इनायत किया गया था।

18 रजब (पौष वदि 5=रविवार, नवम्बर 26, 1637 ई०) को राजा गजसिंह अपने बेटे जसवतसिंह समेत वतन से आकर दरगाह मे हाजिर हुआ।

25 रजब (पौष वदि 12=रविवार, दिसम्बर 3, 1637 ई०) को राणा जगतसिंह के नौकर कल्याण झाला ने दरगाह में हाजिर होकर राणा द्वारा भेजी चीजें नजर से गुजराईं।

4 शाबान (पौष सुदि 6=मगलवार, दिसम्बर 12, 1637 ई०) को अजमेर की फौजदारी राजा विट्ठलदास के बेटे अनिरुद्ध से उतर कर शाह अली को मिली। अनिरुद्ध अपने बाप के नायब के रूप मे काम करता था।

8 शाबान (पौष सुदि 10=शनिवार, दिसम्बर 16, 1637 ई०) को राजा विट्ठलदास को बादशाह ने खिलअत देकर वतन जाने की छुट्टी दी।

12 शाबान (पौष सुदि 14=बुधवार, दिसम्बर 20, 1637 ई०) नाहर सोलकी को हाथी इनायत हुआ।

9 रमजान, सोमवार (माह सुदि 10=जनवरी 15, 1638 ई०) को बादशाह की सालगिरह के तुलादान का दरबार था। उसमे राजा गजसिंह को खिलअत इनायत हुआ।

24 रमजान (फागुन वदि 11=मगलवार, जनवरी 30, 1638 ई०) को बादशाह ने राणा जगतसिंह के नौकर कल्याण झाला को हाथी इनायत करके विदा किया। उसके साथ राणा के वास्ते भी हाथी और खिलअत भेजे।

काबुल के सूबेदार सईद खा और राजा जगतसिंह ने बगश मे हमला करके जलाल (तारीकी) के बेटे करीमदाद को पकडा और बादशाह के हुक्म से मरवा डाला।

यह जलाल वही था, जिसने अकबर बादशाह के जमाने मे एक नया मत (रोशनी) जारी करके बडा उपद्रव किया था। इस मत के मानने वाले पठानों को 'अकबर-नामा' मे तारीकी (अंधेरी) लिखा है।

27 रमजान (फागुन वदि 14=शुक्रवार, फरवरी 2, 1638 ई०) को बादशाह आगरा से शिकार के वास्ते सोरो और सहसवान की तरफ रवाना हुए। ग्यारह शेर तो सोरो में मारे और 18 सहसवान के परगने मे मारे। और अमालत खा वगैरह ने परगने चदवार के विद्रोहियों पर हमला करके उनको सजा दी।

4 शव्वाल (फागुन सुदि 5=शुक्रवार, फरवरी 9, 1638 ई०) को (सहसवान मे) राव रतन के बेटो, माधोसिंह और हरीसिंह ने अपने वतन से आकर दो हाथी नजर किये।

जमुना के किनारे पर, जब कि बादशाह आगरा लौट रहे थे, राजा जयसिंह ने अपने वतन से वापस आकर मुजरा किया।

किशनसिंह राठोड के वेटे हरीसिंह के मनसब में पाच सदी जात की वृद्धि हुई, जिससे उसका मनसब डेढ हजारी जात—800 सवारो का हो गया।

कधार पर कब्जा

21 शव्वाल (चैत बदि 8=सोमवार, फरवरी 26, 1638 ई०) को शाह ईरान के नौकर अलीमरदान खा ने कधार का किला गजनी के हाकिम एवज खा को सौंप दिया। जो सन् 1031 हि० (सवत् 1679=सन् 1622 ई०) मे जहागीर बादशाह के अधिकार से निकल गया था। तीसरे दिन वहा बादशाह के नाम का खुतबा पढ़ा गया, और कलात, गिलजाइयो के किलो वगैरह में भी बादशाही अमल करा दिया गया। बादशाह ने यह खबर सुन कर काबुल के हाकिम सईद खा को फौज और खजाने के साथ कधार जाने का हुक्म लिखा। शाहजादा शुजा को 20,000 सवारो के साथ इस उद्देश्य से भेजा कि ईरान का बादशाह सफी यदि कधार पर चढाई करें तो उसको रोकें। इस फौज मे इतने राजपूत सरदार थे—

1 राजा जयसिंह,
2 राजा गजसिंह का वेटा, अमरसिंह;
3 राव रतन का बेटा, माधोसिंह,
4 हरीसिंह, और
5. कृपाराम।

इनमें से नबर 1 को खासा खिलअत और सोने की जीन का खासा घोडा, नवर 2 और 3 को खिलअत, चांदी की जीन के घोडे और नक्कारे इनायत हुए। हरीसिंह और कृपाराम के साथ भी उनके पद के अनुसार कृपा की गई।

इस चढाई का नेतृत्व मालवा के सूबेदार खानदौरा वहादुर नसरतजग को दिया गया। काबुल के सूबेदार सईद खा को अलीमरदान खा और उनके बादशाही अमीरो की मदद करने का हुक्म हुआ, जो कधार के किलो मे दाखिल हो गये थे। मुलतान का सूवेदार कुलीच खा कधार का सूबेदार हुआ, और पजाब के सूबेदार वजीर खा को रसद पहुचाने और काबुल आकर वहा का वदोवस्त करने का हुक्म पहुचा।

17 जीकाद (वैसाख वदि 5=शनिवार, मार्च 24, 1638 ई०) को सईद खा ने काबुल से कंधार पहुच कर बादशाह द्वारा भेजे गए खिलअत और इनाम के 1 लाख रुपये अलीमरदान खा को दिये।

राजा जगतसिंह सईद खा के साथ पेशावर से काबुल और कधार को गया।

26 जीकाद (वैसाख वदि 13=सोमवार, अप्रेल 2, 1638 ई०) को सईद खा ने 8000 सवारो के साथ कधार से निकल कर शाह सफी के सिपह-सालार (सेनाध्यक्ष) और मेशहद के हाकिम सियावश, जो खुरासान की फौज के साथ कधार से कुछ दूर कुश्क-इ-नखूद के मैदान मे पड़ा था, हमला किया। काबुल का दीवान, राय काशीदास, गोल (बीच की श्रेणी) मे था, और यहा भी राजपूत हरावल मे थे। 'बादशाह-नामा' मे लिखा है कि हरावल को बहादुर राजपूतो के कदमो ने वह ताकत दी, जो घोर सग्रामो मे, जहा कि मर्दों का रग उड़ जाता है, लड़ाई का रग जमा देते हैं।

मोहकमसिंह, गोपालसिंह, उग्रसेन, रामसिंह और गजसिंह (दोनो भाई), विहारीदास का बेटा, जगराम, हिम्मतसिंह, मेदनीमल भदोरिया, इद्रभान और दूसरे राजपूत, जो सूबेदार काबुल के मददगार थे, 400 बरकदाजो से इस फौज मे नियुक्त किए गए, और इनकी सरदारी राजा जगतसिंह को दी गई।

सियावश के पास भी निशापुर वगैरह खुरासान के हाकिमो समेत 5-6 हजार सवार थे। कधार से 1 कोस पर दोनो सेनाओ की मुठभेड़ हुई। कजलबाशो (ईरानियो) का हरावल बादशाही हरावल पर चढ आया, मगर हार कर पीछे चला गया। 'बादशाह-नामा' मे लिखा है कि "बादशाही हरावल राजा जगतसिंह और दूसरे स्वाभिमानी और लड़ाका राजपूतो की बहादुरी से सिकदर की दीवार के तरह मजबूत था, जिसमे दुश्मन कोई छिद्र न कर सका और निराश विफल होकर चला गया।"

आखिरकार कजलबाश भाग गये और सईद खा ने अरगदाब नदी से उतर कर उनका डेरा-डाडा लूट लिया।

105 बरस पहिले इसी जगह बाबर बादशाह के बेटे मिर्जा कामरा ने भी शाह तहमास्प के बेटे साम मिर्जा को लड़ाई मे पराजित कर भगा दिया था।

बादशाह ने विजय की खबर सुन कर तब सईद खा को भी खिलअत, जड़ाऊ जमधर, हाथी और घोड़ा प्रदान किये।

गोपालसिंह को खिलअत और मनसब हजारी जात—700 सवारो का मिला।

राय काशीदास को खिलअत के सिवाय उसका मनसब हजारी जात—250 सवारो का कर दिया गया।

हरदेराम के बेटे जगराम का भी मनसब बढ़ा दिया गया।

बादशाह का वकील सफदर खा ईरान मे था। शाह सफी ने उसको हिन्दुस्तान जाने को विदा देकर कहा कि "मैं एरवान[1] और बगदाद से तो

---

1. एरवान और बगदाद—ये दो ईरानी सूबे रूम (तुर्की) की सरहद से मिले हुए थे, जिनके वास्ते ईरानियो और तुर्कियो मे जग हुआ करती थी।

दिल उठा लूगा, लेकिन कधार से दिल नहीं उठाऊगा ।"

दरबार का हाल

4 जीकाद (चैत सुदि 6=रविवार, मार्च 11, 1638 ई०) को नौरोज के दरबार मे महेशदास राठौड का मनसब असल और इजाफे से हजारी जात—600 सवारो का हो गया ।

खालसा के दफ्तर के अधिकारी, दयानतराय को खिलअत और मनसब हजारी जात—150 सवारो का असल और इजाफे से प्रदान कर दफ्तर तन की खिदमत भी सौंपी गई ।

8 जिल्हिज (वैसाख सुदि 10=शुक्रवार, अप्रैल 13, 1638 ई०) को गोकुलदास सीसोदिया हजारी जात—500 सवारो के मनसब से सरफराज (सम्मानित) हुआ ।

18 जिल्हिज (जेठ बदि 5=सोमवार, अप्रैल 23, 1638 ई०) को कुलीच खा कधार पहुचा, और अलीमरदान खा काबुल की तरफ रवाना हुआ ।

कोच हाजो (कामरूप) की फतह

'बादशाह-नामा' मे लिखा है कि "बगाल के उत्तर मे दो मुल्क हैं, एक कोच हाजो जो ब्रह्मपुत्रा नदी के ऊपर है, और दूसरा कोच बिहार है, जो इस नदी से बहुत दूर है । पहिला तो जहागीरनगर (उस वक्त बगाल की राजधानी) से एक महीने के और दूसरा 20 दिन के रास्ते पर है । जहागीर बादशाह के वक्त में कोच हाजो पर परीक्षित का और कोच बिहार पर लक्ष्मीनारायण का अधिकार था । उनके 8वें जुलूसी वर्ष मे तब इस्लाम खा बगाल का सूबेदार था । परगने सुसग[1] के जमीदार रघुनाथ ने उसके पास आकर यह फरियाद की कि परीक्षित ने जुलम से मेरे बाल-बच्चो को कैद कर रखा है । सूबेदार ने उसकी फरियाद और लक्ष्मीनारायण के लिखने से 6 हजार सवार और दस-बारह हजार पैदल अपने दामाद मुकर्रम खा के साथ उसे भेजे । किले धुपडी (धुबडी) पर परीक्षित के 500 सवार और 1000 पैदल महीने भर तक लडे । जब वह टूटा तो परीक्षित ने अपनी राजधानी गाव खेला (गिला) से वकील भेज कर 100 हाथी 100 टागन (टट्टू), 20 मन अगरू और रघुनाथ के बाल-बच्चे भेजने का इकरार ही नहीं किया, बल्कि भेज भी दिये । लेकिन सूबेदार ने यह सब अस्वीकृत करके परीक्षित को पकडने

1 पूर्वी बगाल में मेमनसिंह जिले की उत्तर-पूर्व सीमा पर स्थित नेत्रकोणा उपखण्ड के अन्तर्गत । (स०) ।

का हुक्म लिख भेजा। यह मालूम होने पर परीक्षित 400 सवार, 10,000 पैदलो से घुपडी के ऊपर चढ आया। वहा पराजित होने पर फिर गजाधर नदी के मुहाने मे नदी की लडाई लडा। वहा भी हार कर जब वह खेला को वापस लौट गया, तब उसने सुना कि लक्ष्मीनारायण दूसरी तरफ से बादशाही सेना लेकर आ रहा है। इससे परीक्षित को अपनी राजधानी छोड कर बड-नगर जाना पडा, जो बनास (मनास) नदी पर स्थित है। बादशाही फौज ने खेला मे अमल कर लिया। तब परीक्षित ने फिर अपने वकील भेजे, उस पर शेख कमाल जाकर सेना सहित उसके हाथियो और उसको ले आया। मगर उसका भाई बलदेव भाग कर आसाम के राजा के पास पहुचा, जिसके साथ उसकी रिश्तेदारी थी। मुकर्रम खा ने सूबेदार के लिखने पर अपने भाई अब्दुस्-सलाम को खेला मे छोडा और आप परीक्षित को लेकर जहागीरनगर पहुचा। उसी दिन इस्लाम खा मर गया। जहागीर बादशाह ने परीक्षित को तो अपने पास बुलाया और बगाल की सूबेदारी पर इस्लाम खा के भाई शेख कासिम को नियुक्त किया, जिसने मुकर्रम खा को कोच हाजो की सुरक्षा और व्यवस्था पर भेजा। वह वहां पहुच कर एक साल तक रहा। मगर फिर शेख के दुर्व्यहार से नाराज होकर वह परभारा घोडाघाट के रास्ते से बादशाह के पास चला गया। शेख ने सैयद हकीम को दस-बारह हजार सवार और पैदल से कोच हाजो के बदोबस्त पर भेजा और आसाम को जीत लेने का भी हुक्म दिया। वह कोच हाजो पहुंच कर आसाम की ओर रवाना हुआ। अभी चार-पाच मजिल ही गया था कि आसामियो ने हमला करके बादशाही सेना को काट डाला, जिससे शेख कासिम को सूबेदारी से पदच्युत कर दिया गया।

आसाम पर चढाई

'बादशाह-नामा' मे लिखा है कि "आसामी गैर-आसामियो को अपने मुल्क मे नही आने देते हैं, जिससे पूरा हाल तो वहा का मालूम नही हुआ। लेकिन आसाम के जो आदमी कोच हाजो मे आते-जाते हैं और वहा के जो कैदी दरबार मे आये, उनसे मालूम हुआ कि आसाम एक बडा प्रदेश है, जहा हाथी और अगरू बहुत होता है। नदियो की रेत धोने से कम कीमत का सोना भी निकलता है। एक सरहद उसकी खता से मिली हुई है, दूसरी काश्मीर और तिब्बत से। एक तरफ उसके भेडायच, तुरहत, मोरग, कोच बिहार और कोच हाजो है। यहां का जमीदार स्वर्गदेव है, जिसके पास 1000 हाथी और 10,000 से अधिक पैदल हैं। आसामी सिर मुंडाते हैं और दाढी मूछ के बाल नक-चिमटी से लेते हैं। सरदार अपने ही मुल्क के हाथी और टांगन पर सवार होते हैं। लडाई के जहाज हर वक्त तैयार रखते हैं।

लड़ाई मे हर जगह बहुत जल्दी मिट्टी का किला बना कर ऊपर लकड़िया पाट देते हैं। किले के चारो ओर खाई खोद कर दुश्मन का मार्ग अवरुद्ध कर देते हैं।"

जब बलदेव आसाम मे पहुचा तो उसने वहा के राजा स्वर्गदेव से कहा कि "जो मेरे साथ फौज भेजो तो मुगलो को पराजित कर कोच हाजो पर अपना अधिकार जमा लूगा, मगर हुकूमत वहा की मुझ को देनी होगी।" राजा ने स्वीकार करके कुछ फौज तो उसी वक्त उसके साथ भेज दी। बाकी को हुक्म दिया कि तैयार रहे और आवश्यकता पड़ने पर बलदेव की सहायता करे।

बलदेव ने बादशाही सूबेदारो के स्थानातरण के समय अवसर पाकर पहिले तो दुरग पर कब्जा कर लिया जो कोच हाजो से 10 कोस ब्रह्मपुत्रा के किनारे पर पहाड़ के नीचे है। फिर दूसरे इलाको में हस्तक्षेप करके दस-बारह हजार पैदल कोची और आसामी अपने पास एकत्रित कर लिये। पहिले परीक्षित के जमाने मे आसाम का थाना जहां रहा करता था, वहा से बहुत आगे बढ़ा कर बैठा दिया। खानजमां की असावधानी से, जो अपने बाप महाबत खा की नायबी मे बगाल का हाकिम था, उसका साहस और भी बढ गया था। यो अब लोकी और भावमेती के परगनो में भी उसका अमल हो गया। यह देख कर उस तरफ के दूसरे जमींदार भी मालगुजारी में सुस्ती करने लगे।

बगाल के पहिले के हाकिमों ने दस-बारह हजार पायकों (पैदलो) को इस वास्ते जागीर दे रक्खी थी कि जब खेदा (हाथियो का शिकार) होवे, ये लोग आकर काम करें और अन्य समय वे अपनी जागीर में रहें। अपनी सूबेदारी के समय मे खेदे का काम अच्छा न करने के कारण कासिम खा ने इन पायकों के कई बड़े-बड़े सरदारो को जहांगीरनगर बुला कर उन्हे कैद कर लिया, और तब उनसे 20,000 रुपये जुरमाने के लेकर छोड़ा। इससे पायको के विशिष्ट सरदार सतोष लश्कर[1] और जयराम लश्कर पायको को लेकर स्वर्गदेव के पास चले गये। फिर इस्लाम खा बगाल का सूबेदार हुआ तो पाडू के थानेदार शत्रुजीत ने बलदेव से कहला भेजा कि "हाकिम नया आया है, अगर तुम कोशिश करो तो स्वार्थ सिद्ध हो सकता है। बलदेव ने दुरग से रवाना होकर उन लोगो पर हमला किया, जिनको कि कोच हाजो के हाकिम अब्दुस् सलाम ने खेदे के वास्ते भेजा था। इस पर शेख ने इस्लाम खा को लिख कर उससे मदद मागी। उसने 2000 सवार और पैदल तो लड़ाकू नावो और युद्ध के सामान के साथ रवाना किया। कुछ आदमी घोड़ाघाट मे नावो का बदो-

1 लश्कर— जहाज पर काम करने वाला व्यक्ति। (स०)

वस्त करने को भेजे, जो बरसात और नदियो के चढ जाने से अपने घोडो और सामानो को घोडाघाट पर ही छोड कर नावो मे बैठ गये, और कोच हाजो की तरफ रवाना हुए। मुहम्मद सालेह कम्बू सबसे पहिले वहा पहुचा, और उसी वक्त शत्रुजीत ने आकर शेख अब्दुस् सलाम से कहा कि "दुश्मन आज रात को मेरे थाने पर हमला करेंगे।" शेख ने मुहम्मद सालेह को उसके साथ भेज दिया। जब रात पड गई तो शत्रुजीत उसको रास्ते मे ठहरा कर यह कह गया कि "मैं थाने की खबर लेकर आता हू।" परतु सूर्योदय तक वह नहीं आया। जब मुहम्मद सालेह ने देर से आने का कारण पूछा तो कहा कि "दुश्मनो ने मेरा थाना ले लिया। मैं निवाड़े को बचा लाया हूं।"

दूसरे दिन शेख, जैनुल-आबदीन और बादशाही फौज के बगाल से हाजो मे पहुचने की खबर आई तो मुहम्मद सालेह भी वहा गया। दोनों मिल कर बलदेव से लडने गये। वह दुरग से दो कोस आगे आकर लडा, जहा उसने दो किले भी बना लिये थे। मगर बादशाही सेना ने उसको हटा कर पाच तोपो समेत वे दोनो किले भी उससे छीन लिये। दूसरी लडाई आगे चल कर श्रीघाट पर हुई। वहा आसामी फौज का भूखन (सिपहसालार) मारा गया और बहुत से बादशाही आदमी काम आये। दूसरे दिन फिर लडाई हुई। आसाम के कई सरदार मारे गये, जो बच गये वे अपने निवाड़े लेकर भाग गये। मगर जब आसाम से फिर दूसरी मदद आने और 40,000 दुश्मनो के इकट्ठे हो जाने की अफवाह फैल गई, तब तो इस्लाम खा ने सभी सूबो की फौजें बुलवाई और वह स्वय रणक्षेत्र में जाने को तत्पर हुआ। मगर फिर सूबे को खाली छोडना अनुचित समझ कर उसने अपने भाई जैनुद्दीन अली और सिलहट के फौजदार मुहम्मद जमान वगैरह को बहुत सी फौज देकर कोच हाजो की तरफ रवाना किया। पुन उनके वास्ते बहुत सा नाज और खजाना नावो में लदवा कर भेजा, क्योंकि उस तरफ के पायक और जमीदार आसामियो से मिल गये थे और रसद नहीं पहुचाते थे।

अब आसामियो ने 500 नावो मे आकर जल और थल की राह से बादशाही निवाड़ो के ऊपर हमला किया। शत्रुजीत अपना निवाडा लेकर उनसे जा मिला। मोहम्मद सालेह कम्बू मारा गया। उसका साथी मजलिस बायजीद पकडा गया। बलदेव ने श्रीघाट और पाडू की तरफ से कोच हाजो पर चढाई की। रास्ते मे अपने नियमानुसार मजिल-मजिल के ऊपर वह किले बनाता आता था। कोच हाजो को उसने घेर कर इस प्रकार तग किया कि अन्दर रसद बिल्कुल नही पहुच सकी, जिससे अब्दुस् सलाम, मोहीउद्दीन और जैनुल्-आबदीन नापी भाग कर उसके पास उपस्थित हो गये। तब उसने उन्हें आसाम भेज दिया। रास्ते में जैनुल-आबदीन लडा और मारा गया।

उधर जैनुद्दीन अली और मुहम्मद जमान वगैरह मनसबदार, जो बगाल से आये थे, परीक्षित के बेटे चद्रनारायण के ऊपर गये, जो जिले दक्षिण कोल के परगने सोलमारी में रहता था। यह जिला ब्रह्मपुत्र नदी के दाहिने तट पर फैला हुआ था और उसके अधिकाश परगने शत्रुजीत को दिए हुए थे। उसने अपने भतीजे गोपीनाथ को परगने करीबाडी की थानेदारी पर छोड रखा था, जहा एक मजबूत किला था। मगर वहा की प्रजा ने उसके जुल्म से उकता कर चद्रनारायण को बुलाया, तब वहा उसके आते ही गोपीनाथ थाना छोड कर भाग गया। चद्रनारायण के पास छ-सात हजार पैदल कोच और आसाम के इकट्ठे हो गये।

शाबान 10, सन् 1046 हि० (पौष सुदि 12, स० 1693=गुरुवार, दिसम्बर 29, 1936 ई०) को बादशाही आदमी उत्तर कोल की तरफ से करीबाडी के सामने पहुचे। चद्रनारायण सोलमारी की तरफ चला गया। बादशाही अमीरो ने परगने मरदगी मे पहुच कर वहा के जमीदार परीक्षित को अपने पास बुलाया, जो चद्रनारायण का श्वसुर था। वह आकर सेना मे उपस्थित हो गया।

इसी समय मे शत्रुजीत (सत्रजीत) भी पकडा जाकर जहागीरनगर में लाया गया। वह बसीना (भूसना) के राजा मुकद का बेटा था। इसका इलाका जहागीरनगर से तीन मजिल पर था। जब शेख अलाउद्दीन ने कोच हाजो फतह करने को फौज भेजी थी, तब शत्रुजीत को भी उसके साथ तैनात किया था। उसने उस मुहिम में अच्छा काम किया, जिससे पाडू और कोहमती की थानेदारी उसको मिली। उसका बेटा जहागीरनगर मे रहता था। जब इस्लाम खा सूबेदार होकर बगाल मे आया, उसने शत्रुजीत को आवश्यक कार्य हेतु बहुत जल्दी बुलाया। शत्रुजीत ने अपने बेटे को जहागीरनगर से बुला कर अपनी जगह छोडा और आप खान के पास गया। खान ने उसको फिर मोहीउद्दीन के साथ हाजो की तरफ भेजा। यहा आकर वह आसाम की सेना और बलदेव से मिल गया। इस कारण इस्लाम खा ने उसको पकडने का हुक्म भेजा। वह गिरफ्तार कर लिया गया और जहागीरनगर के कैदखाने मे पडा-पडा मर गया।

कोच और आसाम के सैनिको ने शेख अब्दुस् सलाम वगैरह को पकड लिया और तब बादशाही सेना की रोक के वास्ते, जो नजदीक थी, जोगीगप्पा (जोगीगुफा) और हीरापुर मे मजबूत किले बनाये, और दोनो जगह फौजें रक्खी। ये दोनो इलाके ब्रह्मपुत्रा के आस-पास थे। बादशाही फौज धुपडी से उनके ऊपर गई। खानपुर की नदी को पार करने के समय आसामियो से लडाई हुई। तब आसामी हार कर पीछे हट गये। उधर चद्रनारायण भी मर गया, जिससे उत्तर कोल और दक्षिण कोल के मुल्क साफ हो गये।

फिर बादशाही सेना चदनकोट पर गई। वहां वडनगर के जमीदार मरदापर का बेटा उत्तमनारायण भी वलदेव से लड़ाई हार कर आ गया। सेना के सरदार उसको साथ लेकर वडनगर पहुचे। वलदेव वहा से चौयडी की तरफ हट गया। यह इलाका भी सरदापर का था। जब वादशाही सेना विशनपुर में दाखिल हुई, तो वलदेव 4,000 आदमियो के साथ कालापानी तक जा पहुचा, जो विशनपुर से डेढ कोस है, और वहा किला बना कर वह रहने लगा। तब उसके लिखने पर आसाम के राजा स्वर्गदेव ने पांडु से अपने बेटे के दामाद के साथ 20,000 आदमी और भेजे।

वलदेव ने कुछ आदमी भेज कर विशनपुर और चदनकोट का रास्ता बद कर दिया, जहा एक बडा हिस्सा बादशाही सेना का पडा था।

जब नदियो का पानी कम हुआ तो चदनकोट की सेना भी विशनपुर को रवाना हुई। वलदेव ने 20 जमादि-उस्-सानी (मगसिर वदि 5, स० 1694 =शनिवार, अक्तूबर 28, 1637 ई०) की रात को कुछ आदमी वादशाही सेना पर छापा मारने के लिए भेजे। उन्होने कालापानी से उतर कर दो किले वादशाही आदमियो से ले लिये। मगर वादशाही फौज ने दूसरे दिन आक्रमण करके दोपहर मे पन्द्रह किले दुश्मनों के छीने और 4,000 आसामियो को और उनके कई सरदारो को मार डाला। वाकी आदमी भाग कर वलदेव के पास जा पहुचे।

वादशाही फौज ने 12 रजव (मगसिर सुदि 13=सोमवार, नवम्बर 20, 1637 ई०) को फिर तीन भागों मे विभाजित होकर थल मार्ग से दुश्मनो के ऊपर हमला किया और निवाडो को पानी की तरफ से मार्ग रोकने के वास्ते भेजा। किलो पर खूब लडाई हुई। वादशाही सेना ने कत्लेआम शुरू कर दिया। जो लोग लडाई मे पकडे गये, उनको भी मार डाला। उनमे आसाम के राजा का भाई भी था। वाकी आसामी लोग भाग कर श्रीघाट और पांडू पहुचे, और वलदेव दुरग को चला गया।

वादशाही सेना कोच हाजो होकर 24 रजव (पौष वदि 11=शनिवार, दिसम्बर 2, 1637 ई०) को आखिया पहाडी के पास पहुची। अब फिर खुश्की और तरी (जल-थल) मे लडाई होने लगी, जिसको जीत कर वादशाही सेना काजली की तरफ वढ़ी, जो ब्रह्मपुत्रा के किनारे पर आसाम देश के आधीन है। कुछ फौज वलदेव के ऊपर दुरग की तरफ भी गई। वलदेव भाग कर गांव सँगरी चला गया, जो आसाम की अमलदारी मे ब्रह्मपुत्रा के तट पर बना हुआ था। काजली मे भी आसामियो की हार हुई। वादशाही सेना ने काजली के पास दो किले बना कर उनमें 100 सवार और 3,000 वदूकची रक्खे। तीन महीने तक वहां रह कर वादशाही सेना ने उस तरफ के जमींदारो

को दबा दिया। फिर उत्तर कोल की तरफ श्रीघाट और काजली के बीच में स्थित हट्टा पहाड पर जाकर बरसात का समय व्यतीत करने के वास्ते वहा छावनी डाली। वहा पास-पड़ोस के कई सरदार आकर उपस्थित हो गये।

जब ये समाचार इस्लाम खा की अर्जी और हरकारो की खबरो से बादशाह को मालूम हुए, तो इस्लाम खा के मनसब के 5000 सवारो मे से जिनमें कि 3000 सवार तो पहिले से दो-अस्पा और से-अस्पा थे, 1000 और दो-अस्पा और से-अस्पा कर दिये। जिन-जिन अमीरो के वास्ते उसने सिफारिश की उनके मनसब भी बढा दिये।

कंधार की मुहिम

26 मुहर्रम (आसाढ वदि 13=गुरुवार, मई 31, 1638) को सईद खा ने राजा जगतसिंह को जमीनदावर और बिस्त किले को फतह करने के लिए भेजा। पुरदिल खा और एवज खा वगैरह बारहा के सैयदो और सूबे काबुल के कुमकी राजपूतों को साथ दिया। राजा ने पुरदिल खा वगैरह को तो किले बिस्त पर भेजा और आप जमीनदावर पर कूच करके रास्ते से अपने 1000 सवार और 2000 पैदल राजपूतो को कुलीच खां के कुछ आदमियो के साथ किले सारबान के ऊपर धावा करने का हुक्म दिया। वे किले के नीचे पहुँच कर सध्या समय से आधी रात तक किले वालो से लडे। आखिर राजपूत, जो लडाई के नाम को जान के बदले खरीदने और जान को नाम के वास्ते बेचने का व्यापार खूब जानते हैं, आगे दौडे और दौडने में कुछ गिर भी गये, तो भी दरवाजे तक पहुच कर आग लगा दी। इस तरफ मार्ग साफ करके राजपूत और मुगल साथ-साथ किले में दाखिल हुए। कजलबाशो को मार कर 140 इराकी घोड़े और दूसरा सामान ले आये। किले मे बदूक की आवाज सुन कर राजा जगतसिंह बहुत जल्दी वहा आ पहुचा और इन लोगो की बहादुरी और कोशिश की तारीफ करने लगा।

इस लडाई में राजा जगतसिंह के राजपूतो ने बडी बहादुरी की थी। उनके लगभग तीस आदमी मारे गये थे और कुछ आहत भी हुए थे, और बहुत से घोडे बदूक की गोलियों से मारे गये थे। इसलिए राजा ने किले के घोड़े और सब साज-सामान इन्ही के पास रहने दिया।

इतने मे खबर आई कि जमींनदावर से बिस्त वालो की मदद पर फौज आने वाली है। राजा ने उसके ऊपर धावा करके बहुतों को तो मार डाला और बाकी भाग गये।

फिर राजा जगतसिंह ने जमीनदावर के किले पर पहुच कर मोर्चे लगाये। उनमे से एक अपने आदमियो के जिम्मे किया और जब देखा कि इस तरह

से काम बढता है तो अपने मोर्चे की तरफ से खाई का पानी निकालने के वास्ते नाला खोदा, मगर पानी इधर से कम आता था, इसलिए यह बात ठहराई कि लकडी के तख्तो पर सलामत कूचा बना कर उसको कल से खाई के ऊपर रक्खें और उसके ऊपर से सेना को उतार कर किले की दीवार उडावें और उधर से किले मे प्रवेश करें। मगर अमीरो की राय न मिलने से काम न चला। यह खबर सुन कर कुलीच खा सूबेदार खुद वहा आया। तब 6 रबी-उल्-अव्वल (पहिला सावन सुदि 8=रविवार, जुलाई 8, 1638 ई०) को किलेदार रोशन सुल्तान ने किला उसे सौंप दिया। फिर फौज विस्त किले के ऊपर गई और 7 रबी-उस्-सानी (दूसरा सावन सुदि 9=बुधवार, अगस्त 8, 1638 ई०) को जब बारूद से किले की दीवार उडाई तो दूसरे मोरचे और खास करके राजा जगतसिंह के मोर्चे के आदमी तुरही की आवाज सुन कर नसेनियो से, जो तैयार थीं, किले मे जा कूदे और दुश्मनो को मार कर किला जीत लिया। वहा का किलेदार महराव वाला किले पर चढ गया। तीन सुरगें उसके गिर्द भी बनाई गई थी, जिसमे से एक जगतसिंह ने बनाई थी, उससे एक बुर्ज दरवाजे समेत उड गई और सिपाही अपने आगे ढालें करके अदर घुस गये। वाला किला भी 23 रबी-उस्-सानी (भादो बदि 10= शुक्रवार, अगस्त 24, 1638 ई०) को फतह हो गया।

अलीमरदान खां का उपस्थित होना

17 रबी-उल्-अव्वल (दूसरा सावन वदि 3=गुरुवार, जुलाई 19, 1638 ई०) को शाहजादा सुजा काबुल पहुच कर बुते खाक में ठहरा। कधार से इलाके काबुल मे बुते खाक उपस्थित होकर वहा अलीमरदान खा ने आदाब किया। उसकी पेशवाई के वास्ते शाहजादा ने कई अमीरो को भेजा था। दीवानखाने के दरवाजे तक खानदौरा बहादुर नसरतजग भी गया था। सलाम करने के बाद खानदौरा और राजा जयसिंह तो शाहजादा की तरफ बैठे और अलीमरदान खा को बाई तरफ बैठाया। फिर शाहजादा ने उसको एक भारी खिलअत देकर बादशाह की सेवा मे भेज दिया।

राजा गजसिंह की मृत्यु

1 मुहर्रम, 1047 हि० (जेठ सुदि 3=रविवार, मई 6, 1638 ई०) को राजा गजसिंह, जो कुरब-कायदे और फौज की सख्या मे हिन्दुस्तान के सभी राजाओ से बढा हुआ था, मर गया। बादशाह ने उसके कहने के अनुसार जसवन्तसिंह को खिलअत, जडाऊ जमधर, 4 हजारी जात—4000 सवार का मनसब, राजा का खिताब, झडा, नक्कारा, सोने की जीन का घोडा और

खासा हाथी प्रदान किये। राजा ने 1000 मुहरें, 12 हाथी और कुछ जड़ाऊ आभूषण नजर किये। राजा का बड़ा भाई, अमरसिंह, बादशाह के आदेश से शाहजादा मुहम्मद शुजा के साथ काबुल गया हुआ था। उसको 1000 सवारों के इजाफे से 3 हजारी जात—3000 हजार सवारो का मनसब और राव का खिताब इनायत हुआ। पहिले भी राठौडो मे राव का खिताब ही था। राजा सूरजसिंह के बाप राजा उदयसिंह ने अकबर बादशाह की सेवा मे रह कर प्रतिष्ठा प्राप्त की थी, तब उन्होने उसको राजा का खिताब इनायत करके यह बात ठहरा दी कि अब से जो कोई आदमी इस खानदान का अपने पूर्वजो की गद्दी पर बैठे तो उसे राजा का खिताब, और जो छोटा भाई इस दर्जे पर पहुचे तो उसका बडा भाई राव कहलावे। इस कौम के हाल दूसरी सभी राजपूत जातियो से प्रतिकूल हैं, क्योकि दूसरी जातियो में तो बड़ा बेटा अपने बाप की जगह बैठता है, और राठौडो मे जिसकी मा अपने पति की ज्यादा प्यारी होती है, उसी का बेटा बाप की जगह बैठाया जाता है। उसकी मा के साथ राजा उदयसिंह के विशेष प्रेम के कारण ही, राजा उदयसिंह के बाद राजा सूरजसिंह, जो तीन भाइयो से छोटा था, राजगद्दी पर बैठाया गया और सबसे बडा सकतसिंह राव कहलाया था।

दरबार का हाल

गोंडवाना के जमींदार राव चादा की पेशकश के 4 हाथी बादशाह की नजर से गुजरे।

रायसिंह झाला को आठ सदी जात—400 सवारो का मनसब मिला।

6 रबी-उल्-अव्वल (पहिला सावन सुदि 8=रविवार, जुलाई 8, 1638 ई०) को हरीसिंह राठौड का मनसब डेढ़ हजारी जात—900 सवारो का हो गया।

10 रबी-उल्-अव्वल (पहिला सावन सुदि 12=गुरुवार, जुलाई 12, 1638 ई०) को बादशाह शाहजादा दारा शिकोह के मकान पर गये। वहा कई अमीरो को खिलअत मिले। उनमे से राजा जसवंतसिंह को खिलअत फरजी सहित मिला।

5 रबी-उस्-सानी (दूसरा सावन सुदि 7=सोमवार, अगस्त 6, 1638 ई०) को 6 हाथी राजा जसवतसिंह ने बादशाह के नजर किये।

15 रबी-उस्-सानी (भादो वदि 2=गुरुवार, अगस्त 16, 1638 ई०) को राजसिंह राठौड को, जो कि राजा गजसिंह का प्रधान था, बादशाह ने अपने नौकरो मे सम्मिलित करके हजारी जात—400 सवारों का मनसब दिया, और घोड़े सहित खिलअत भी प्रदान की, क्योकि राजा जसवंतसिंह

नौजवानी मे ही बड़े दर्जे पर पहुचा था, और उसको एक विश्वस्त कामदार चाहिए था। इसलिए बादशाह ने अत्यधिक कृपा करके हुक्म दिया कि "जिस तरह राजसिंह उसके बाप के सामने काम किया करता था, उसी तरह अब भी राजा के कामो का बदोबस्त करता रहे।"

दयानतराय को हथनी इनायत हुई।

कधार की मुहिम

सूबे कधार के किलो मे से सारवान का किला तो राजा जगतसिंह ने और हिरमद का जाहद बेग ने पहिले ही जीत लिया था। जमीनदावर और बिस्त के किले बाद मे जीते गये। फिर बाकी के किले, गिरिश्क और फराह, वगैरह भी कुलीच खा ने ईरानियो से ले लिये। वे लोग तब कधार के इलाके से निकल कर खुरासान चले गये। तब कुलीच खा भी 8 जमादि-उल्-अव्वल (भादो सुदि 10=शुक्रवार, सितम्बर 7, 1638 ई०) को पीछा कधार आ गया।

ईरान की फौज और उपज

'बादशाह-नामा' मे लिखा है कि इस वक्त ईरान की कुल कलमी (हस्तलिखित ग्रथो मे लिखे अनुसार) फौज 30 हजार सवारो की थी। आमदनी दो करोड 40 लाख रुपये की, वजीर का वेतन एक लाख रुपये और वजारत के दस्तूरो समेत 2 लाख रुपये सालाना का है। सिपहसालार का 3 लाख रुपये, कोरची बाशी का 5 लाख रुपये और खुरासान के बगलर बेगी का वेतन 10 लाख रुपये सालाना है। (उनकी तुलना मे) यहा कई सूबे, जैसे आगरा, दिल्ली और लाहोर ढाई-ढाई करोड़ के हासिल के हैं। तथा हरेक मनसबदार 7 हजारी जात—7 हजार सवार या 5 हजार सवार दो-अस्पा और से-अस्पा की जागीर का हासिल 30 लाख रुपये सालाना है; और आसफ खा खानखाना सिपह-सालार की सालाना आमदनी 50 लाख रुपये की है।

बगलाना प्रदेश की फतह

'बादशाह-नामा' मे लिखा है कि इस प्रदेश में 9 किले, 34 परगने और 1001 गाव हैं, और यहां की जमींदारी कोई 1400 से भी अधिक वर्षों से हाल के जमीदार भैरजी के खानदान मे चली आ रही है। यह प्रदेश आब-हवा की श्रेष्ठता, नहरो की प्रचुरता, वृक्षो और रिसाल (मेवो) की बहुतायत के लिए सुप्रसिद्ध है। लबाई 100 कोस और चौड़ाई 70 कोस है। लंबाई उसकी पूरब की तरफ दोलताबाद के चांदोर इलाके तक और पश्चिम की तरफ बदर सूरत

श्रोर खारे समुद्र तक है। चौड़ाई उत्तर मे सुलतानपुर श्रोर (मालवा के) नदुरबार इलाके तक श्रोर दक्षिण मे नासिक त्र्यम्बक तक है। किलों के नाम साल्हेर, मुल्हेर, मोरा, हरगढ, सलोदा, बावना, पीपोल, जोरेल हैं। इनमे साल्हेर श्रोर मुल्हेर बहुत मजबूत हैं। साल्हेर एक लबे पहाड पर बना है श्रोर मजबूती के श्रतिरिक्त इस बात के वास्ते भी प्रसिद्ध है कि उसका रास्ता बहुत विकट श्रोर कठिन है। इस पहाड पर दो किले हैं, एक तो ऊपर है जिसको साल्हेर कहते हैं श्रोर दूसरा मध्य मे है। ये दोनो किले प्राकृतिक रूप से एक पत्थर के बने हुए हैं। मगर कहीं-कही सिर्फ दरारें चूने श्रोर पत्थरो के टुकडो से बद की गई हैं। पहाड की जड से पहिले किले तक एक-मात्र जो तग रास्ता है, वह साप की तरह बल खाता चला गया है, जिसमें बहुत सी ऐसी भी पहाडिया हैं, जिन पर बडी कठिनाई से चढा जाता है। दोनो किलों के बीच मे तो ऐसी विकट गली है कि जिसमें पाव ठहराने के लिए सिर्फ गड्ढे ही खुदे हुए हैं श्रोर उनमे भी दूसरे श्रादमी की सहायता के बिना पाव नही रखा जा सकता है। हर किले मे एक-एक तालाब ऐसा भी है कि जिसमे से पानी उबलता है।

मुल्हेर भी एक पहाड के ऊपर बना है। इस पहाड़ की ऊपर से दो चोटिया फट गई हैं। नीचे की चोटी पर तो मुल्हेर है श्रोर ऊपर की चोटी पर मोरा है। मगर मुल्हेर मोरा से ज्यादा लम्बा चौडा है। इस पहाड के बीच मे एक कोट है, जिसको बाडी श्रोर उसके बीच की बस्ती को शहरबाडी कहते हैं, जिसमें भेरजी श्रोर उसके इलाकेदारो के घर हैं।

बादशाह ने दो वर्ष पहिले बगलाना शाहजादा श्रोरगजेब को इनायत करके यह हुक्म दिया था कि दक्षिण मे पहुच कर उसे विजय कर लेना। इस पर उसने 8 शाबान, 1047 हि० (पौष सुदि 10, 1694 वि०=शनिवार, दिसम्बर 16, 1637 ई०) को बादशाही सेना के 3000 सवार श्रोर 2000 बदूकची मालूजी दक्खिनी के नेतृत्व मे, श्रोर श्रपने नौकर मुहम्मद ताहिर के साथ निजी 2000 सवार भी बगलाना फतह करने के लिए भेजे। 10 रमजान, 1047 हि० (माह सुदि 11=मगलवार, जनवरी 16, 1638 ई०) को बाडी का कोट घेरा गया श्रोर कुछ लडाई के बाद फतह हुश्रा। भेरजी पाच-छ सौ श्रादमियो के साथ तब मुल्हेर किले मे चला गया श्रोर उसके श्रदर बैठ कर लडने लगा। जब बाहर के मोरचो के पूर्ण प्रबध से नाज की रसद बद हो गई, तब उसने श्रपनी मा को श्राठो किलो की कुजिया देकर श्रपने वकील किशनजी के साथ शाहजादे के पास भेज कर श्रर्ज की कि "यदि सुलतानपुर का परगना मुझको मिल जावे तो श्रपना श्रसबाव लेकर वहा चला जाऊ।" शाहजादे ने भेरजी की मां को सिरोपाव वगैरह से राजी करके बादशाह को श्रर्जी लिखी। बाद-

शाह ने इस लिहाज से कि भेरजी हमेशा हुक्म मे रहा करता था, नजराना भेजा करता था, जब काम पडता तो दक्षिण के सिपहसालार के बुलाने पर उपस्थित हो जाता था, उसको 3 हजारी जात—500 सवार का मनसब और सुलतानपुर का परगना प्रदान किया। तब भेरजी 1 सफर, 1048 हि० (आषाढ सुदि 3, 1695 वि०=सोमवार, जून 4, 1638 ई०) को किले से निकल कर शाहजादा के पास उपस्थित हुआ। शाहजादा ने उसको खिलअत, जडाऊ जमधर, हाथी और घोड़ा दिये और मुहम्मद ताहिर को अपनी तरफ से उस मुल्क में हाकिम नियुक्त किया।

पीपोल का किला भेरजी के रिश्तेदार ऊदिया के पास था। वह भी फतह हो गया और ऊदिया 4 रबी-उल्-अव्वल (पहिला सावन सुदि 6= शुक्रवार, जुलाई 6, 1638 ई०) को शाहजादे के पास उपस्थित हो गया। इन किलो से 120 तोपें हाथ आईं।

बगलाना की जमा भेरजी के वक्त में 20 लाख टका की थी, जो वहा का सिक्का था। बादशाही बदोबस्त मे उसकी जमाबदी 4 लाख रुपये की हुई।

बगलाना के इलाके में से रामनगर का परगना भेरजी के दामाद सोमदेव को दिया हुआ था। जब भेरजी शाहजादा के पास उपस्थित हो गया तो सोमदेव भी हाकिम सूरत के माध्यम से हाजिर हुआ। मगर रामनगर की आमदनी खर्च से कम थी, इसलिए शाहजादे ने रामनगर उसी के पास रख कर दस हजार रुपये हर साल मालगुजारी के ठहरा लिये।

रखग[1] के जमींदार का भाई मांगतराय, जो चाटगाव (चिट्टागाग) का[2] हाकिम था, अपने भाई के एक नौकर से, जो उसकी जगह बैठ गया था, लडाई हार कर पनाह लेने के वास्ते बगाल मे इस्लाम खा के पास आ गया, और इसी कारण बगाल के 10–12 हजार औरत-आदमी, जो चाटगाव मे कैद थे, 40 वर्ष बाद छूट कर अपने वतन मे आये।

बादशाह का लाहौर जाना

16 रबी-उस्-सानी (भादो बदि 3=शुक्रवार, अगस्त 17, 1638 ई०) को बादशाह ने लाहौर जाने के विचार से सैफ खा को आगरा मे छोडा, और राजा विट्ठलदास को वहा की किलेदारी सौंपी। उसे तदर्थ तब घघेडे से बुलाया गया था। उसको खिलअत, जडाऊ जमधर और सोने की जीन का घोडा भी दिये।

---

1 रखग को अब अराकान कहते हैं।

2 उस वक्त फेहनी नदी बगाल और मग (ब्रह्मा) की हद थी, और चाटगाव रखग वालो के अधिकार में था।

17 रबी-उस्-सानी (भादो वदि 4=शनिवार, अगस्त 18, 1638 ई०) को बादशाह ने आगरे से कूच किया। घाट स्वामी के डेरे पर राजा जसवंतसिंह को खासा तबेले से सुनहरी जीन का घोड़ा इनायत हुआ।

8 जमादि-उल्-अव्वल (भादों सुदि 10=शुक्रवार, सितम्बर 7, 1638 ई०) को बादशाह दिल्ली पहुंचे। राजा जसवंतसिंह के प्रधान राजसिंह ने 1 हाथी नजर किया।

15 जमादि-उल् अव्वल (आसोज वदि 1=शुक्रवार, सितम्बर 14, 1638 ई०) को बादशाह का दिल्ली से कूच हुआ। राजा जसवंतसिंह वगैरह कई अमीर, जो शाही हुक्म से दिल्ली मे रह गये थे, पालम मे जा मिले।

जुलूसी सन् बारहवां

(सितम्बर 29, 1638 ई० से सितम्बर 18, 1639 ई० तक)

7 जमादि-उस्-सानी (आसोज सुदि 8=शुक्रवार, अक्तूबर 5, 1638 ई०) को परगने भदरी के गाव अखतियारपुर में बादशाह ने राजा जसवंतसिंह को खासा खिलअत और सुनहरी जीन का घोडा दिया।

17 जमादि-उस्-सानी (कातिक वदि 3=सोमवार, अक्तूबर 15, 1638 ई०) को बादशाह ने सतलज नदी के किनारे पर सूरजसिंह के बेटे सबलसिंह का मनसब, जो सूबा गुजरात में तैनात था, असल और इजाफे से हजारी जात—हजार सवार का कर दिया।

8 रजब (कातिक सुदि 9=सोमवार, नवम्बर 5, 1638 ई०) को व्यास नदी के किनारे पर महेशदास राठौड का मनसब 6 सदी जात—300 सवारो का हो गया और उसे खिलअत भी मिला। यह पहिले राजा गजसिंह का नौकर था, फिर राजा जसवंतसिंह का हुआ और इन दिनो में बादशाही नौकर था।

15 रजब (मगसिर सुदि 1=सोमवार, नवम्बर 12, 1638 ई०) को बादशाह ने अशरफी और रुपया लुटाते हुए लाहौर के दौलतखाने मे प्रवेश किया।[1] अलीमरदान खा उपस्थित हुआ। बादशाह ने उसको भारी खिलअत, 1 लाख रुपया और काश्मीर का सूबा दिया। 1 लाख रुपया पहिले भी उसे मिल चुका था। और पाच लाख रुपये बाद मे फिर मिले।

शाह सफी के वकील यादगार बेग को भी ईरान जाने को विदा दी गई।

---

1 बादशाह ईद की नमाज पढने को जाते थे, तब भी अशरफी और रुपये लुटाते जाते थे।

उसको 2 लाख रुपये नकद और 50 हजार की जिन्स इनायत हुई थी। 50 हजार रुपयो की जडाऊ सुराही, प्याला और रकाबी उसके साथ शाह के वास्ते भेजी गई।

1 शाबान (मगसिर सुदि 3=बुधवार, नवम्बर 28, 1638 ई०) को राजा जगतसिंह के बेटे राजरूप को मनसब का इजाफा होकर घोडा और कागड़े के पहाडो की फौजदारी का काम मिला।

15 शाबान (पौष वदि 2=बुधवार, दिसम्बर 12, 1638 ई०) को बादशाह ने दारा शिकोह और मुराद बख्श को खासा पोस्तीन[1] दिये। काबुल के सूबेदार सईद खा और राजा जसवतसिंह को भी समूर की पोस्तीनें इनायत की, जिनके अबरे (ऊपर वाले कपडे) पर जरी का काम किया हुआ था।

24 शाबान (पौष वदि 11=शुक्रवार, दिसम्बर 21, 1638 ई०) को कच्छ के जमीदार भारा के बेटे भोज का भेजा हुआ एक घोडा बादशाह की नजर से गुजरा।

2 रमजान (पौष सुदि 3=शुक्रवार, दिसम्बर 28, 1638 ई०) को राणा जगतसिंह की अर्जी और कुछ जडाऊ चीजें लेकर उसका नौकर ईश्वरदास उपस्थित हुआ। बादशाह ने उसको खिलअत देकर राणा के वास्ते खासा खिलअत और 2 तपचाक (तुर्की) घोड़े सुनहरी जीन के भेजे।

12 रमजान (पौष सुदि 13=सोमवार, जनवरी 7, 1639 ई०) को अल्लामी अफजल खा वजीर मर गया और दयानतराय को कुछ अधिकार वजीरायत के मिले।

जुलकरनैन फरगी (अरमेनिया-निवासी) ने एक किताब बादशाह के नाम पर बनाई थी, उसके लिए उसे 5000 रुपये इनाम के मिले।

18 रमजान (माह वदि 4=रविवार, जनवरी 13, 1639 ई०) को बादशाह की सालगिरह के तुलादान मे अमीरो के इजाफे हुए, जिनमे राजा जसवतसिंह का मनसब हजारी जात—हजार सवार के इजाफे से 5 हजारी जात—5 हजार सवारो का हो गया, और राजा रायसिंह के मनसब में 500 सवारो का इजाफा हुआ, जिससे उसका मनसब 3 हजारी जात—2000 सवारो का हो गया। दयानतराय को रायराया का खिताब मिला।

3 शव्वाल (माह सुदि 4=सोमवार, जनवरी 28, 1639 ई०) को बादशाह ने शाहजादा शुजा को, जो काबुल से बुलाये जाने पर आया था, 15 हजारी जात—9 हजार सवार का मनसब देकर बगाल के लिए रवाना किया। इसी के साथ उतना ही मनसब औरगजेब का भी कर दिया गया।

---

1 लोमडी, समूर, सिंजाब आदि रोएदार जतुओ की खाल से बनाया हुआ कोट। इसके रोए भीतर और खाल ऊपर रहती है। (स०)

दारा शिकोह का मनसव पहिले ही 20 हजारी हो गया था।

10 शव्वाल (माह सुदि 11=सोमवार, फरवरी 4, 1639 ई०) को राजा जगतसिह काबुल से आया। बादशाह ने उसको खिलअत और मोतियो की माला दी।

बुदेलो का विद्रोह

जुझारसिह के बेटे पृथ्वीराज को बदेलो ने अपना सिरदार बनाया था। चपत बुदेले ने उसकी मदद की। तब बादशाह के आगरा से जाने के बाद बुदेलो ने बहुत उपद्रव किया। जब यह खबर बादशाह के पास पहुची तो अब्दुल्ला खा फीरोजजग को पटना की सूबेदारी से बदल कर बुदेलो के विरुद्ध जाने का उसे आदेश दिया।

बादशाह का काबुल जाना

14 शव्वाल (फागुन वदि 1=शुक्रवार, फरवरी 8, 1639 ई०) को बादशाह ने शाहजादा दारा शिकोह को ईरान के शाह सफी के विरुद्ध भेजा, क्यो कि शाह कधार पर चढाई करना चाहता था। दारा के साथ राजा रायसिह और जगतसिह भी तैनात होकर गये। राजा रायसिह को हाथी इनायत हुआ।

1 जीकाद (फागुन सुदि 3=सोमवार, फरवरी 25, 1639 ई०) को बादशाह स्वय भी काबुल के लिए रवाना हुए।

बगलाने का जमीदार भेरजी मर गया। बादशाह ने उसके बेटे बहादुर परमजी (बैरमजी) को डेढ़ हजारी जात—हजार सवार का मनसव प्रदान किया। वह तब मुसलमान हो गया और उसका नाम दौलतमद रखा गया।

15 जीकाद (चैत वदि 2=सोमवार, मार्च 11, 1639 ई०) को नौरोज था। उस दिन बिहारीमल की जगह राय सभाचद लाहौर का दीवान हुआ और बिहारीमल मुलतान का दीवान बना।

2 जिल्हिज (चैत सुदि 4=गुरुवार, मार्च 28, 1639 ई०) को बादशाह का मुकाम रावलपिंडी मे हुआ। आदेशानुसार राजा जयसिह नौशहरा से आकर वहा उपस्थित हुआ।

4 जिल्हिज (चैत सुदि 6=शनिवार, मार्च 30, 1639 ई०) को राजा जगतसिह शाहजादा दारा शिकोह के साथ दरबार मे उपस्थित हुआ। बादशाह ने राजा जयसिह को मोतियो की माला प्रदान की। दूसरे दिन राजा जगतसिह को खिलअत देकर दोनो बगशो का बदोबस्त करने के लिए भेजा और यह हुक्म दिया कि "हमारे काबुल पहुचने तक रसद जमा करले और पहुचने के पीछे दोनो बगशो से बराबर नाज पहुचता रहे।"

10 जिल्हिज (चैत सुदि 12=शुक्रवार, अप्रेल 5, 1639 ई०) को बादशाह ने राजा जयसिंह और जसवंतसिंह को एक-एक हाथी खासा हाथियो मे से इनायत किया।

18 जिल्हिज (वैसाख वदि 6=शनिवार, अप्रेल 13, 1639 ई०) को बादशाह अटक से उतरे।

21 जिल्हिज (वैसाख वदि 9=मगलवार, अप्रेल 16, 1639 ई०) को बादशाह ने नोशहरा पहुच कर राजा जयसिंह और राव अमरसिंह को घोड़े प्रदान किये।

25 जिल्हिज (वैसाख वदि 12=शनिवार, अप्रेल 20, 1639 ई०) को बादशाह ने नोशहरा में अपनी सेना की हाजिरी ली तो 50,000 सवार गिने गये। इसी दिन राजा जयसिंह मिर्जा राजा के खिताब से सम्मानित हुआ, जो अकबर बादशाह ने उसके दादा राजा मानसिंह को दिया था। राव अमरसिंह को हाथी और रायसिंह को झडा इनायत हुए। राजा जयराम को हजारी जात—हजार सवार और गोकुलदास सीसोदिया को हजारी जात—600 सवारो का मनसब इनायत हुए।

26 जिल्हिज (वैसाख वदि 13=रविवार, अप्रेल 21, 1639 ई०) को शाहजादा (दारा शिकोह) को पीछे से आने का हुक्म हुआ, और बादशाह आगे रवाना हो गये।

आखिरी जिल्हिज (वैसाख सुदि 1=बुधवार, अप्रेल 24, 1639 ई०) को बादशाह ने आसफ खा वजीर और जसवंतसिंह को भी पेशावर मे छोड़ा और आप जमरूद क लिए रवाना हो गये। इनको हुक्म हुआ कि पीछे से आवें, क्यो कि खैबर के घाटे से एकदम इतने सैनिकों का गुजरना कठिन था।

1 मुहर्रम, 1049 हि० (वैसाख सुदि 2=गुरुवार, अप्रेल 25, 1639 ई०) को बादशाह अली मसजिद पहुचे। राजा विट्ठलदास आगरा से खजाना लाहौर पहुचा कर दरबार में उपस्थित हुआ।

3 मुहर्रम (वैसाख सुदि 4=शनिवार, अप्रेल 27, 1639 ई०) को राजा जसवंतसिंह वगैरह भी बादशाह के पास पहुच गये।

18 मुहर्रम (जेठ वदि 5=रविवार, मई 12, 1639 ई०) को छोटी काबुल मे पहुच कर बादशाह ने राजा विट्ठलदास को सोने की जीन का एक घोड़ा खासा तवेले से प्रदान किया।

25 मुहर्रम (जेठ वदि 12=रविवार, मई 19, 1639 ई०) को बादशाह ने काबुल मे प्रवेश किया।

1 रबी-उल्-अव्वल (आषाढ़ सुदि 3=रविवार, जून 23, 1639 ई०) को राजा जसवंतसिंह के प्रधान महेशदास राठौड को घोड़ा इनायत हुआ।

19 रबी-उल्-अव्वल (सावन वदि 5=गुरुवार, जुलाई 11, 1639 ई०) को बल्ख के स्वामी नजर मुहम्मद खा का वकील 40,000 रुपये की सौगात लेकर उपस्थित हुआ। कुछ दिनो पश्चात् बादशाह ने उसको 60,000 रुपये और खिलअत देकर बिदा किया।

14 रबी-उस्-सानी (भादो वदि 1=रविवार, अगस्त 4, 1639 ई०) को तुलादान के दरबार मे राजसिंह राठौड का मनसब हजारी जात—600 सवारो का और रायसिंह झाला का हजारी जात—400 सवारो का असल और इजाफे से हो गया।

15 रबी-उस्-सानी (भादो बदि 2=सोमवार, अगस्त 5, 1639 ई०) को राजा बिट्ठलदास और उसके बेटे अर्जुन गौड को जागीर मे जाने की छुट्टी हुई। राजा को खास खिलअत इनायत हुआ।

25 रबी-उस्-सानी (भादो बदि 11=गुरुवार, अगस्त 15, 1639 ई०) को बादशाह काबुल से बगश के रास्ते से वापिस रवाना हुए और घाटे की तगी से शाहजादा दारा शिकोह को हुक्म हुआ कि कुछ दिन काबुल मे रह कर राजा जयसिंह वगैरह के साथ कुछ समय बाद आवे। 1 लाख रुपये की सौगात नजर मुहम्मद खा के वास्ते देकर शाद खा को बल्ख की तरफ बिदा किया।

9 जमादि-उल्-अव्वल (भादो सुदि 12=गुरुवार, अगस्त 29, 1639 ई०) को राजा बिट्ठलदास के बड़े बेटे अनिरुद्ध का मनसब असल और इजाफे से हजारी जात—1000 सवार का हो गया।

20 जमादि उल्-अव्वल (आसोज बदि 7=सोमवार, सितम्बर 9, 1639 ई०) को कोहाट मे डेरे हुए। राजा जगतसिंह दोनो बगशो का थानेदार था, और वहा रहता था, उसने 9 घोडे नजर किये।

जुलूसी सन् तेरहवां

(सितम्बर 19, 1639 ई० से सितम्बर 7, 1640 ई०)

7 जमादि-उस्-सानी (आसोज सुदि 9=बुधवार, सितम्बर 25, 1639 ई०) को नीलाब के किनारे पर राजा जसवतसिंह को सुनहरी जीन का घोडा खासा तवेले से इनायत हुआ।

वडी तिब्बत के जमींदार सगीवमखल ने छोटी तिब्बत मे कुछ दखल दिया था, अत अलीराय के बेटे आदम के लिखने पर अलीमरदान खा ने अपने दामाद हुसैन बेग को काश्मीर से भेज कर सगीवमखल को निकाल दिया।

16 जमादि-उस्-सानी (कार्तिक बदि 2=शुक्रवार, अक्तूबर 4, 1639 ई०) को बादशाह के डेरे लाहौर के पास जडोल के तालाब पर हुए। वहां गोवर्धन राठौड़ का, जो पहिले राजा गजसिंह का नौकर था, 8 सदी जात—200 सवार का मनसब मिला।

21 जमादि-उस्-सानी (कार्तिक बदि 7=बुधवार, अक्तूबर 9, 1639 ई०) को बादशाह लाहौर मे दाखिल हुए और इसी दिन शाहजादा दारा शिकोह भी राजा जयसिंह समेत पहुंच कर दरबार में उपस्थित हुआ।

आदिल खां की 2 लाख रुपये की पेशकश बीजापुर से पहुंची।

अलीमरदान खां ने, जिसको काश्मीर की सूबेदारी के अतिरिक्त लाहौर की सूबेदारी इनायत हुई थी, बादशाह की आज्ञा लेकर रावी नदी से लाहौर तक नहर लाने का काम जारी किया। उसका नाम 'शाह नहर' रखा गया।

सीस्तान के मालिक हमजह ने कंधार की हद में कुछ दखल दिया था, अत कुलीच खां सूबेदार ने सीस्तान पर फौज भेजी थी। लूट-मार करने के सिवाय सीस्तान का बंद (बांध) तोड कर वह पीछे आ गई, जिससे वह तमाम इलाका खराब हो गया।

29 रजब (मगसिर सुदि 1=शुक्रवार, नवम्बर 15, 1639 ई०) को राजा जयसिंह को खासा खिलअत प्रदान कर वतन जाने को विदा दी गई।

खिलोजी बादशाह की नौकरी छोड़ कर आदिल खां के पास गया था, मगर आदिल खां ने उसे अपने पास नहीं रखा। इससे वह दौलताबाद के इलाके मे लूट-मार करने लगा। औरंगजेब ने मलिक हुसेन को उसके ऊपर भेजा। उसने पता लगा कर खिलोजी को मार डाला।

26 शाबान (पौष बदि 13=गुरुवार, दिसम्बर 12, 1639 ई०) को 'इकबाल-नामा जहांगीरी' को लिखने वाला मीर बख्शी मोतिमिद खां, जो आखिर वक्त मे लाहौर का सूबेदार हो गया था, मर गया।

15 रमजान (पौष सुदि 15=सोमवार, दिसम्बर 30, 1639 ई०) को बादशाह ने नरवर के राजा रामदास के मरने की खबर सुन कर उसके पोते अमरसिंह को असल और इजाफे से हजारी जात—600 सवारों का मनसब और राजा का खिताब दिया। नरवर किले की किलेदारी भी उसके दादा के अनुसार उसको सौंपी गई, और वह इलाका उसकी जागीर मे निश्चित हुआ।

15 शव्वाल (फागुन बदि 1=बुधवार, जनवरी 29, 1640 ई०) को बादशाह ने हरनाथ महापात्र को हाथी, घोड़ा और लाख दाम नकद इनायत किये।

इसी दिन शाहजादा औरंगजेब दक्षिण से आकर लाहौर में बादशाह के पास उपस्थित हुआ। बादशाह ने 10 लाख रुपये उसको इनाम दिये।

बगाल से खबर आई कि 6 शव्वाल (माह सुदि 7=सोमवार, जनवरी 20, 1640 ई०) को अकबरनगर के किले मे आग लग कर शाहजादा मुहम्मद शुजा के महल, कारखाने, आदि 75 दासिया और 5 लाख के जवाहरात, सब कुछ जल गये। बादशाह ने यह खबर सुन कर 2 लाख रुपया नकद, 2 लाख के जवाहर और 2 लाख के जेवर लाहौर से उसके पास भेजे।[1]

25 शव्वाल (फागुन बदि 12=शनिवार, फरवरी 8, 1640 ई०) को बादशाह काश्मीर को रवाना हुए और शाहजादा मुराद को बहीरा में ठहरने का हुक्म दिया और फरमाया कि जब काबुल जाने का हुक्म पहुचे, तब वह तुरन्त रवाना हो जावे। उसके साथ नियुक्त सेनानायको मे माधोसिंह, हरीसिंह राठोड और राजा जयराम भी थे।

8 जीकाद (फागुन सुदि 9=शुक्रवार, फरवरी 21, 1640 ई०) को शाहजादा औरगजेब चिनाव नदी के किनारे से दौलताबाद के लिए रवाना हुआ।

9 जीकाद (फागुन सुदि 10=शनिवार, फरवरी 22, 1640 ई०) को उसी मुकाम पर राजा जसवतसिंह को खिलअत और सुनहरी जीन का घोडा खासा तबेले से इनायत हुआ और वतन जाने की आज्ञा मिली। राजसिंह को भी खिलअत और जडाऊ खजर प्रदान कर उसके साथ जाने की आज्ञा दी गई।

19 जीकाद (चैत बदि 6=मगलवार, मार्च 3, 1640 ई०) को राजा जगतसिंह पूच का रास्ता खोलने और घाटी से बर्फ हटाने के वास्ते रवाना किया गया। उसने वहा पहुच कर काश्मीर के जमींदारो की सहायता से, जिन्हें वहा के सूबेदार ने इकट्ठा करके सडक बनाने के वास्ते भेजा था, बर्फ कटवा कर आदमियो और कारखानो के हाथियो के लिए गली निकाली, और उसमे बर्फ कुटवा कर सडक बनवा दी।

4 जिल्हिज (जेठ सुदि 6=बुधवार, मार्च 18, 1640 ई०) को बादशाह बर्फ की घाटी से गुजरे और राजा जगतसिंह ने घाटी के सिरे पर उपस्थित होकर मुजरा किया।

9 जिल्हिज (जेठ सुदि 11=सोमवार, मार्च 23, 1640 ई०) को बादशाह काश्मीर पहुचे।

अब्दुल्ला खा ने जुझारसिंह के बेटे पृथ्वीराज को तो ओरछा के निकट एक जगल में पकड लिया, परतु चपत लड कर निकल भागा। बादशाह ने पृथ्वीराज को ग्वालियर के किले में कैद रखने का हुक्म दिया। उधर अब्दुल्ला

---

1 यह खबर बगाल से लाहौर 18 दिनो मे पहुची थी।

खा की जगह वहादुर खा को वुंदेलो की मुहिम पर नियुक्त करके भेजा, क्यो कि अब्दुल्ला खा यह काम अच्छी तरह नही कर सका था।

20 सफर, 1050 हि० (आसाढ वदि 8=सोमवार, जून 1, 1640 ई०) को रूम (तुर्की) के कैसर (शाहशाह) मुराद खा के वकील ने काश्मीर मे हाजिर होकर एक घोडा और सुलतान का खरीता पेश किया। वादशाह ने उसको एक भारी खिलअत, जडाऊ खजर और 15,000) रुपये नकद इनायत किय।

भट (वेट अथवा झेलम) नदी के चढ जाने से काश्मीर और पजाब मे बहुत नुकसान पहुचा।

21 सफर (आसाढ वदि 9=मगलवार, जून 2, 1640 ई०) को शाहजादे औरगजेब की अर्जी से वादशाह को मालूम हुआ कि गोडवाना के जमीदार चादा के वेटे, वापजी ने, जिसको बाप की जगह बैठने की इजाजत हुई थी, बुरहानपुर मे उपस्थित होकर 4 लाख रुपये नजर किये। वादशाह ने वह रुपया शाहजादे को ही वख्श दिया।

आखिरी सफर (आसाढ सुदि 2=गुरुवार, जून 11, 1640 ई०) को शाहजादे मुराद के नाम कावुल जाने का हुक्म लिखा गया।

11 रबी-उल्-अव्वल (आसाढ सुदि 13=रविवार, जून 21, 1640 ई०) को करमसी राठौड का वेटा रामसिंह, जो राणा जगतसिंह का भानजा था और राणा की ही नौकरी मे था, वादशाही सेवा के वास्त राणा के पास से दरवार मे उपस्थित हुआ। वादशाह ने उसको खिलअत देकर हजारी जात—600 सवारो का मनसब प्रदान किया।

3 रबी-उस्-सानी (सावन सुदि 5=सोमवार, जुलाई 13, 1640 ई०) को तुलादान के दरवार मे रायसल दरबारी के वेटे भोजराज को हजारी जात 500 सवारो का मनसब मिला। रायराया का एक हाथी नजर हुआ। राजा रायसिंह को सुनहरी जीन का घोडा इनायत हुआ।

6 जमादि-उल्-अव्वल (भादो सुदि 8=शुक्रवार, अगस्त 14, 1640 ई०) को राजा जगतसिंह ने अर्ज किया कि कांगड़े की फौजदारी मुझको इनायत होवे तो हर साल 4 लाख रुपये वहा के जमीदारो से लेकर खजाने मे भेजता रहूगा।

8 जमादि-उल् अव्वल (भादो सुदि 10=रविवार, अगस्त 16, 1640 ई०) को वादशाह ने राजा जगतसिंह को खिलअत और चादी की जीन का घोडा देकर कागड़े की फौजदारी पर भेजा।

इसी दिन टोडरमल अफजलखानी को राय का खिताव, खिलअत और सरकार सरहिंद की दीवानी, फौजदारी और अमीनी खिदमत इनायत हुई।

28 जमादि-उल्-अव्वल (आसोज बदि 30=शनिवार, सितम्बर 5, 1640 ई०) को बादशाह ने जाफर खा और राजा रायसिंह वगैरह को खालसा (बादशाह के निज) के फालतू कारखानो के साथ भवर की तरफ रवाना किया।

जुलूसी सन् चौदहवां

(सितम्बर 8, 1640 ई० से अगस्त 27, 1641 ई० तक)

7 जमादि-उस्-सानी, सोमवार (आसोज सुदि 10=सितम्बर 14, 1640 ई०) को बादशाह काश्मीर से लाहोर की तरफ रवाना हुए। किश्तवार के राजा कुवरसेन को, जो सूबा काश्मीर के तैनातियो मे से था, खिलअत और घोडा इनायत होकर बिदा दी गई।

5 रजब (कातिक सुदि 7=रविवार, अक्तूबर 11, 1640 ई०) को मुकाम बहीरा मे राजा रायसिंह ने उपस्थित होकर सलाम किया।

1 शाबान (मगसिर सुदि 3=शुक्रवार, नवम्बर 6, 1640 ई०) को बादशाह लाहौर पहुँचे।

19 शाबान (पौष बदि 6=मगलवार, नवम्बर 24, 1640 ई०) को शाहजादा मुराद बख्श हाजिर हुआ। उसके साथ राव रतन का बेटा माधोसिंह भी दरबार में उपस्थित हुआ।

बहादुर खा ने चपत बुदेले को लड कर भगा दिया।

17 रमजान (माह बदि 3=सोमवार, दिसम्बर 21, 1640 ई०) को मुल्ला सादुल्ला अर्ज-मुकर्रर (दूसरे दफे अर्ज करने की) खिदमत पर नौकर हुआ। वही बाद को सादुल्ला खा वजीर कहलाया।

16 शव्वाल (पौष वदि 2=सोमवार, जनवरी 18, 1641 ई०) का काबुल सूवा के अखबार से मालूम हुआ कि सैयद दिलेर खा नौशहरा का थानेदार यूसुफजई पठानो के मुकाबले मे, जो उसके ऊपर चढ कर आये थे, अपने भाई-बदो समेत मारा गया।

19 शव्वाल, गुरुवार (फागुन वदि 5=गुरुवार, जनवरी 21, 1941 ई०) को बादशाह के 50वें वर्ष शुरू होने का तुलादान हुआ। इस उत्सव के दरबार मे अलीमरदान खा को वहुत-सी कृपाओ के साथ काबुल की सूबेदारी भी मिली। चद्रमन वुदेला उस सूबे के मददगारो मे था, इसलिए उसको घोडा इनायत हुआ।

9 जीकाद (फागुन सुदि 10=बुधवार, फरवरी 10, 1641 ई०) को राव रतन हाडा का वेटा माधोसिंह 500 सवारो के इजाफे से 3 हजारी जात —ढाई हजार सवारो का मनसवदार हुआ।

महेशदास राठौड ओर चन्द्रमन को हाथी इनायत हुए।

12 जीकाद (फागुन सुदि 13=शनिवार, फरवरी 13, 1641 ई०) को राजा जयसिंह अपने वतन से आया।

14 जीकाद (फागुन सुदि 15=सोमवार, फरवरी 15, 1641 ई०) को महेशदास के वेटे रतन को सुनहरी साज की तलवार इनायत हुई।

5 जिल्हिज (चैत सुदि 6, स० 1698 वि०=सोमवार, मार्च 8, 1641 ई०) को राजा जयसिंह के बड़े वेटे रामसिंह को हाथी इनायत हुआ।

9 जिल्हिज (चैत सुदि 10=शुक्रवार, मार्च 12, 1641 ई०) को नौरोज था। वादशाह ने शाहजादा मुराद को फिर कावुल के प्रवन्ध पर भेजा। राजा जयसिंह, हरीसिंह राठौड, राजा जयराम, राय काशीदास, इन्द्रसाल हाडा, ओर चद्रभान कछवाहा उसके साथ गये।

राजा जयसिंह को खिलअत, जमधर, मीनाकार फूल कटारी ओर सुनहरी जीन का घोडा इनायत हुए।

16 जिल्हिज (वैसाख वदि 3=शुक्रवार, मार्च 19, 1641 ई०) को राजा जसवतसिंह वतन से आकर उपस्थित हुआ।

21 जिल्हिज (वैसाख वदि 8=बुधवार, मार्च 24, 1641 ई०) को राजा रायसिंह को हाथी इनायत हुआ।

जमू के चकले का फौजदार शकुल्ला अरब था। वह अलग किया जाकर उसकी जगह सरदाज खा नियुक्त हुआ।

22 जिल्हिज (वैसाख वदि 9=गुरुवार, मार्च 25, 1641 ई०) को राव अमरसिंह को खिलअत, चादी की जीन का घोडा ओर हाथी, ओर चतुर-भुज चौहान को खिलअत ओर घोडा इनायत होकर दोनो को शाहजादा मुराद के पास जाने का हुक्म हुआ।

27 जिल्हिज (वैसाख वदि 14=मगलवार, मार्च 30, 1641 ई०) को राजा जसवतसिह को खिलअत ओर जड़ाऊ धूप (कत्ती) इनायत हुई।

राजसिंह के मर जाने पर 1 मुहर्रम, 1051 हि० (वैसाख सुदि 2=शुक्रवार, अप्रेल 2, 1641 ई०) को वादशाह ने महेश राठौड को खिलअत ओर घोडा देकर राजा जसवतसिह के कामो का प्रधान बना दिया।

11 मुहर्रम (वैसाख सुदि 12=सोमवार, अप्रेल 12, 1641 ई०) को राजा जसवतसिह के पाच हजारी—पाच हजार सवारो के मनसव मे से 1000 सवार दो-अस्पा ओर से-अस्पा कर दिये गए। महेशदास महावतखानी

को हजारी जात—800 सवारो का मनसब मिला ।

आजम खा ने, जो 8 वर्ष से गुजरात का सूबेदार था, कोलियो और काठियो का चोरी-धाडा बन्द करके काठियावाड मे शाहपुर का किला, और दो मजबूत किले, आजमपुर और खलीलाबाद, कोलीवाडा में बनाये । इससे तब जालौर से लेकर काठियावाड की सरहद तक, जो (नवानगर के) जाम और कच्छ के भारा के इलाको और समुद्र से मिली हुई है, किसी फसादी को उपद्रव करने की ताकत न रही । मगर जाम ने जैसा कि उसे चाहिये था शाही सेवा नही की । इससे आजम खा उसके ऊपर चढ कर गया । जब नवानगर 7 कोस रहा तो जाम उससे मिलने को आया । मगर खान ने कहला भेजा कि जब तक महमूदी सिक्को की टकसाल नवानगर मे बन्द नही करोगे, पीछा नही छूटेगा । जाम ने 100 कच्छी घोडो और 3 लाख महमूदी देना स्वीकार करके उस टकसाल को बद कर देने का भी इकरार कर लिया । उससे यह भी स्वीकार करवा लिया गया कि अहमदाबाद की जो रैय्यत उसके मुल्क मे है, उसको अपनी सरहद से निकाल देगा, ताकि वह अपने वतन को चली जावे । पुन जब भी अहमदाबाद का सूबेदार गिरासियो और कोलियो को सजा देने के वास्ते चढाई करेगा, तब अपने बेटे को फौज सहित वह उसके पास भेजेगा । इस प्रकार यह सब तय हो जाने के बाद जाम आजम खा के पास आया और उससे मिल कर आजम खा शाहपुर को लौट गया ।

2 सफर (पहिला जेठ सुदि 3=सोमवार, मई 30, 1641 ई०) को राजा जसवतसिंह को एक हाथी खासा हलके मे से इनायत हुआ ।

29 सफर (दूसरा जेठ सुदि 1=रविवार, मई 3, 1641 ई०) को वह नहर, जो अलीमरदान खा के प्रयत्न से तैयार हो रही थी, लाहौर मे पहुच गई । बादशाह ने उसके किनारे पर बाग लगाने और महल बनाने का हुक्म दिया ।

7 रबी-उल्-अव्वल (दूसरा जेठ सुदि 9=सोमवार, जून 7, 1641 ई०) को राजा बिट्ठलदास अपनी जागीर से आया ।

17 रबी-उल्-अव्वल (आसाढ वदि 5=गुरुवार, जून 17, 1641 ई०) को नरवर के राजा रामदास का बेटा, राजा अमरसिंह, ग्वालियर के जागीरदार सैयद खानजहा के साथ दरगाह मे उपस्थित हुआ, और उसने एक हाथी नजर किया ।

19 रबी-उल्-अव्वल (आसाढ वदि 7=शनिवार, जून 19, 1641 ई०) को राजा विट्ठलदास को खासा हलके से हाथी इनायत हुआ ।

4 रबी-उस्-सानी, शनिवार (आसाढ सुदि 5= जुलाई 3, 1641 ई०) को

घोडा इनायत हुआ। राजा अमरसिंह को नक्कारा मिला। करमसी राठौड के वेटे रामसिंह का मनसब असल और इजाफे से हजारी जात—700 सवारो का हो गया।

10 रवी-उस्-सानी (आसाढ़ सुदि 12=शुक्रवार, जुलाई 9, 1641 ई०) को राय टोडरमल को, जो चकला सरहिंद का फौजदार और अमीन था, लक्खी जगल की फौजदारी भी इनायत हुई।

राजा जगतसिंह के ऊपर चढ़ाई

15 जमादि-उल्-अव्वल (भादों वदि 3=शुक्रवार, अगस्त 13, 1641 ई०) को कागडा की थानेदारी राजा जगतसिंह से उतर कर कावुल के नये सूवेदार सईद खा के वेटे खानाजाद खां को इनायत हुई, क्योंकि अब सईद खा पजाव का सूवेदार हो गया था।

यह राजा जगतसिंह राजा वासू का वेटा था। इसका वडा वेटा राजरूप दो वरस पहिले, जव वादशाह लाहौर मे थे, कागड़े की फौजदारी पर और वहा के जमीदारो से पेशकश लेने के वास्ते नियुक्त हुआ था। पिछले वरस जव वादशाह काश्मीर में थे, तव अपने वाप के विरुद्ध राजरूप के विद्रोही हो जाने की वात प्रसिद्ध की गई। तदनन्तर राजा जगतसिंह ने कुछ वजीरो की मारफत अर्ज कराई कि "यदि कागडा की फौजदारी मुझे सौंप दी जावे तो मैं राजरूप को भी पकड लूगा और हर साल 4 लाख रुपये पेशकश के भी यहा के जमीदारो से वसूल किया करूगा।" उसकी यह अर्ज स्वीकृत हो गई। तव उसने अपने वतन मे जाकर तारागढ के किले को, जो पहाड के ऊपर है, गोले और वारूद वगैरह लडाई के सामानों से सजाया और अपने भाई सूरजमल की तरह, जो सजा पा चुका था, विद्रोही होने का इरादा किया। जव यह हाल वादशाह को मालूम हुआ तो उसको शाही दरवार मे उपस्थित होने का हुक्म लिखा, जिसके जवाव मे उसने कई आपत्तिया लिख भेजी। वादशाह ने सुदर कविराय को उसके हाल की जाच करने के वास्ते भेजा, और यह फरमाया कि उसको नमक-हरामी के वुरे नतीजे से भी अवगत करा देना। साथ ही उपस्थित होने के लिए एक और हुक्म उसके नाम लिख दिया। सुदर ने वहा पहुच कर अर्जी लिखी कि "जगतसिंह डर गया है, और यह अर्ज करता है कि 'मुझको एक साल और वतन में रहने की अवधि मिल जावे। मैं अपने वेटे राजरूप को भेज दूगा।' मगर उसके दिल मे पाप है।" इस पर वादशाह ने तीन फौजें उसको सजा देने के लिए भेजी। एक फौज का सेनापति सैयद खानजहा को, दूसरी का सईद खा को और तीसरी का असालत खा को वनाया। पहिली फौज में राजा अमरसिंह नरवरी, राव रणसिंह भदौरिया, दूसरी में राजा रायसिंह, गोकुल-

दास सीसोदिया, रायसिंह झाला, कृपाराम गौड, और चैनसिंह थे। तीसरी मे कोई राजपूत सरदार नही था। इन तीनो सेनापतियो के ऊपर शाहजादा मुराद को प्रधान सेनापति वना कर उसके नाम हुक्म लिखा कि जो अमीर काबुल के सूबेदार की सहायतार्थ तैनात हैं, उनके साथ वह स्यालकोट के रास्ते से पठान[1] जावे। उस वक्त राजा जयसिंह, राव अमरसिंह, हरीसिंह राठोड, चन्द्रमन बुदेला, राय काशीदास और नाहर सोलकी शाहजादा के पास तैनात थे।

ये तीनो फौजें 7 जमादि-उल्-अव्वल (सावन सुदि 9=गुरुवार, अगस्त 5, 1641 ई०) को विदा हुईं। शाहजादा के पहुचने तक उनको रायपुर और वहरामपुर मे ठहरने का हुक्म हुआ।

राजा रायसिंह, राजा अमरसिंह, गोकुलदास सीसोदिया और रायसिंह झाला को घोडे और खिलअत दिये गये।

फिर अब्दुल्ला खां वहादुर फीरोजजग और कुलीच खां वगैरह कई और अमीर भी इस मुहीम पर तैनात किये गये।

21 जमादि-उल्-अव्वल (भादो वदि 9=गुरुवार, अगस्त 19, 1641 ई०) को वादशाह ने सूबेदार वजीर खा के मरने की खबर सुन कर आगरा के किले और सूवे की सुरक्षा का भार राजा विट्ठलदास को सौंपा, और उसको खासा खिलअत भी इनायत किया।

जुलूसी सन् पन्द्रहवां

(अगस्त 28, 1641 ई० से अगस्त 17, 1642 ई० तक)

15 रजब (कार्तिक वदि 3=सोमवार, अक्तूबर 11, 1641 ई०) को वुयूतात (कारखानो) की दीवानी आकिल खा से उतर कर रायरायां को खिलअत के साथ मिली।

71 उमदा घोड़े अरव से 1 लाख रुपयो मे खरीद होकर 18 रजब (कार्तिक वदि 5=गुरुवार, अक्तूबर 14, 1641 ई०) को आये। उनमे से वादशाह ने एक घोडे को, जो 15,000 रुपये का था, 'वादशाह-पसद' नाम रख

1 राजा जगतसिंह जिस इलाके का मालिक था, उसकी राजधानी 'पठान' थी, एव वह क्षेत्र भी पठान कहलाता था। कई फारसी ग्रथों में इसका नाम 'पैठन' भी लिखा मिलता है। पठान में तब एक किला (कोट) था, जो वाद में ध्वस्त कर दिया गया। तथापि वह नगर अब भी 'पठानकोट' नाम से सुज्ञात है। (स०)

कर अपने तमाम घोडो से अव्वल नवर पर रखा, और सुनहरी जीन का एक घोडा जसवतसिंह को भी प्रदान किया। बादशाह को घोडो का बहुत शौक था। हमेशा अरबी, इराकी और तुरकी नसल के उमदा-उमदा घोड़े मगाया करते थे।

8 शाबान (कार्तिक सुदि 10=मगलवार, नवम्बर 2, 1641 ई०) को चकला सरहिंद के फौजदार और अमीन राय टोडरमल को खिलअत, हाथी और घोडा इनायत हुए, क्योंकि उसने उस जिले के खालसा को जैसा चाहिये था वैसा ही आबाद किया था।

14 शाबान (मगसिर सुदि 1=सोमवार, नवम्बर 8, 1641 ई०) को अब्दुल्ला खा फीरोजजग, जो शाहजादा मुराद की सेना में राजा जगतसिंह को सजा देने के वास्ते नियुक्त हुआ था, कुछ अर्ज करने के वास्ते शाही दरबार मे उपस्थित हुआ। मगर बादशाह ने उसकी अर्ज मे कुछ निजी स्वार्थ मिला हुआ देख कर उसको तो इस्लामाबाद (जतारा) की तरफ बुंदेलो की मुहिम पर भेज दिया, और बहादुर खा को वहां से शाहजादे के पास पहुचने का हुक्म लिखा।

पालामऊ पर मुहिम

पटना से 25 कोस पर पालामऊ का इलाका है। वहा से 15 कोस पर जमीदार का किला है। बलभद्र चेरो का बेटा प्रताप पीढ़ियो से वहा का राजा था। विकट पहाडों मे रहने के कारण वह बादशाही सेवा नहीं करता था। अब्दुल्ला खा के बाद शायस्ता खां पटना का सूबेदार हुआ तो उसने प्रताप की शिकायत मे बादशाह को अर्जी लिखी, जिस पर बादशाह ने प्रताप को सजा देने का हुक्म उसे लिख भेजा। तब पटना में अपने बेटे मुहम्मद तालिब को छोड़ कर शायस्ता खा 17 रजब, 1051 हि० (कार्तिक बदि 5, 1698 वि० =बुधवार, अक्तूबर 13, 1641 ई०) को 500 सवारो के साथ रवाना हुआ। गया तक पटना और पालामऊ की सरहद थी। वहां से आगे हर मजिल पर खान अपनी सेना के चारों तरफ खाई खोद कर उसके ऊपर मिट्टी की दीवार बनाता था और रात को पूरा चौकी-पहरा रखता था कि जिसमे दुश्मन छापा न मार सके। कूच के वक्त जगल काटता हुआ और दोनो तरफ के गावो को जलाता हुआ, वह आगे बढता था। दुश्मन घात मे रह कर जब भी अवसर पाते, तब हमला करके उसका सामना करते थे। इस तरह लडता-भिडता खान 5 जीकाद (माह सुदि 7, 1698 वि०=गुरुवार, जनवरी 27, 1642 ई०) को पालामऊ के उत्तर मे जा पहुचा। मगर वहां बहुत ही घना जगल था। खान ने कुछ लोगो को जगल काटने के लिए भेजा, जिन्होंने प्रताप के आदमियो को

हरा कर बाग मे डेरा किया और वहा के पेड़ काट डाले। आखिर मे प्रताप ने डर कर 80,000) रुपये नजराने के देना कबूल किये और यह इकरार किया कि "जब मेरी दिलासा हो जावेगी, तब मैं भी पटना में आ जाऊंगा।" असह्य गर्मी और बरसात के करीब आ जाने के कारण शायस्ता खा यह पेशकश लेकर 22 जीकाद (फागुन बदि 9, 1698 वि०=रविवार, फरवरी 13, 1642 ई०) को पटना की तरफ लौट आया।

पठान (पठानकोट) की मुहिम

17 शाबान (मगसिर बदि 4=गुरुवार, नवम्बर 11, 1641 ई०) को बादशाह शिकार के वास्ते राजा जगतसिंह के वतन गाव बाहून की तरफ रवाना हुए। उधर पठान पहुच कर शाहजादा ने सईद खा, राजा जयसिंह, और असालत खा को मऊ का किला फतह करने के वास्ते भेजा और आप रसद वगैरह जरूरी सामान पहुचाने के वास्ते पठान मे ही ठहरा रहा, जो मऊ से 3 कोस है।

बादशाह के हुक्म से सैयद खानजहा 2 जमादि-उस्-सानी (भादों सुदि 3=रविवार, अगस्त 29, 1641 ई०) को पहलवान की घाटी मे होकर राय-पुर से नूरपुर को रवाना हुआ। आगे जगतसिंह का बेटा राजरूप घाटी रोके पड़ा था। खानजहा के हरावल निजाबत खा ने उसको 21 जमादि-उस्-सानी (आसोज बदि 8=शुक्रवार, सितम्बर 17, 1641 ई०) को भगा दिया। कुछ लोग दीवारें बना कर उनकी ओट मे लड़ने को बैठे थे, दीवारें तोड़ कर उनको भी लड़ाई में हरा दिया। तब सेना घाटी के ऊपर चढ गई। वहा से नूरपुर तक रास्ते में जगह-जगह लोग आमना-सामना करने के लिए बैठे थे। मगर सेना एक दूसरे ही रास्ते से निकल कर नूरपुर के किले से आध कोस पर स्थित एक थाने पर जा पहुची। खानजहा ने किले की तलहटी को लूट कर किले को घेरा। जगतसिंह ने तमाम सामान तैयार करके 2000 बदूकची किले की सुरक्षा पर तैनात किये थे। उधर सईद खा जफरजग हारा पहाड़ के रास्ते से और राजा जयसिंह और असालत खा चक्की नदी के किनारे पहुच कर मऊ के पास शामिल हुए और राजा बासू के बाग मे, जो पहाड के नीचे है, ठहरे।

राजा जगतसिंह ने पहाडो और घाटो मे कहीं नाका और रास्ता खाली नहीं छोडा था। सब जगह ऊची-ऊची दीवारें उठा कर उनके ऊपर तोपें और बदूकें चढा दी थी। जगह-जगह चौकी-पहरे बैठा दिये थे। मुख्य किले के चारो तरफ बहुत घनी झाडी थी। बादशाही सेना ने इन दीवारो के पास मोरचे बनाने शुरू किये, जिनके ऊपर राजा के आदमी अपने मोरचो मे से बराबर तीर और बदूक चलाते थे। जो लोग जगल में घास लकडी लेने को जाते थे,

मौका देख कर राजा के आदमी उन पर भी हमला करते थे ।

17 रजब (कार्तिक वदि पहिली 5=बुधवार, अक्तूबर 13, 1641 ई०) को रुस्तम खा और कुलीच खा शाहजादा के पास पठान मे उपस्थित हुए । उसने बादशाह के हुक्म के अनुसार कुलीच खा को मऊ की तरफ भेजा और रुस्तम खा को खानजहा की मदद वास्ते रवाना किया । जो जमीदार बादशाही चाकर थे, उन्होने रूपढ की तरफ से मऊ के ऊपर हमला करने की सलाह दी, इस पर सईद खां जफरजग को उधर भेजने का बादशाह का हुक्म आया, और उसके साथ जाने को निजाबत खा, नजर बहादुर, अकबर कुली, सुलतान गक्कड़ और राजा मान गुलेरी नूरपुर से तैनात हुए ।

5 शाबान (कार्तिक सुदि 7=शनिवार, अक्तूबर 30, 1641 ई०) को नूरपुर के घाटे से रवाना होकर खानजहा जफरजग ने पहाड के करीब रूपढ के रास्ते पर डेरा किया, और जुल्फिकार खा वगैरह के साथ अपने दोनो बेटो को पहाड के ऊपर मुकाम करने की जगह देखने के लिए भेजा । उन्होने ऊपर जाकर खान को कहलाया कि यह बात जगल काटे बिना सभव नही होगी ।

इतने मे 4-5 हजार दुश्मनों ने एक पहाड की चोटी से उतर कर उनका मुकाबला किया । झाडियो से होने वाली रुकावटो के कारण वे लोग एक जगह एकत्रित नही हो सके । खान ने उनकी सहायतार्थ कुछ फौज अपने बेटे लुत्फुल्लाह के साथ भेजी, जिसका मुकाबला दुश्मनो की एक दूसरी टोली से हुआ, जिसमे वह आहत हुआ । लेकिन जुल्फिकार खा वगैरह अपने दुश्मनो को भगा कर खान जफरजग के पास चले आये । दूसरे दिन खान ने रूपढ मे जाकर जगल कटवाया और अपनी सेना के आस-पास मिट्टी और काटो का कोट बनवाया । यह ऐसी जगह थी कि जहा से मऊ के किले पर दबाव पड सकता था, इसलिए दुश्मनो ने भी हर तरफ से वहा आकर मुकाबला करने के वास्ते दीवारें और बुर्जे बनाई, जिनमे बदूको से मार करने के वास्ते जगहें रक्खी । इससे खान ने जल्दी करने मे लाभ न देख कर यह बात ठहराई कि हर रोज कुछ जगल काटें और धीरे-धीरे आगे बढें ।

21 शाबान (मगसिर वदि 8=सोमवार, नवम्बर 15, 1641 ई०) को निजाबत खा एक घाटी के ऊपर चढा । उसके नीचे राजा बासू के बाग में दुश्मनो का मोरचा था । दूसरी तरफ से जुल्फिकार खा और तीसरी तरफ से नजर बहादुर और राजा मान वगैरह भी पहुच कर दुश्मनो से तीरो और बदूको की लडाई लडने लगे । तब तो निजाबत खां और राजा मान के आदमी ढालो के बदले लकडियो के तख्ते सामने करके दौडे, और उस मोरचे के बराबर लकडी और पत्थर की एक भींत चुन कर उसकी आड में से लडने लगे । वहा दोनो तरफ के बहुत से आदमी मारे गये ।

28 शाबान (मगसिर बदि 30=सोमवार, नवम्बर 22, 1641 ई०) की रात को राजा मान ने अपने 1000 आदमी छत किले पर भेजे, जिन्होने किलेदार को मार कर वह किला जीत लिया।

किले नूरपुर के गिर्द सात सुरगें लगाई गई थी। छ के बारे मे किले वालो को जानकारी हो जाने पर उन्होंने उनके अदर पानी छोड दिया। सातवीं किले से दो तीन गज दूर रही थी कि सैयद खानजहा के बेटे और उसके आदमियो ने इस डर के मारे कि कही किले वाले उसको भी निकम्मी न कर देवें, उसमे बारूद भर दी और खान को कहला दिया कि सुरग पहुच गई है। खान ने सब मोरचो मे हुक्म भेज दिया कि तैयार रहें।

29 शाबान (मगसिर सुदि 1=मगलवार, नवम्बर 23, 1641 ई०) को तीसरे पहर के बाद उस सुरग में आग लगा दी गई, जिससे बुर्ज कुछ तो उडी और कुछ गिर गई। राजा ने हर बुर्ज के आगे एक दीवार उठा कर कोट की दीवारो से मिला दी थी और उसके ऊपर से किले मे आने-जाने का रास्ता रख दिया था, सो जो दीवार इस बुर्ज के आगे थी, वह भी आधी गिर पडी। मगर सुरग पूरी नहीं हो सकी थी, इस सबब से सेना वाले अदर न जा सके। सैयद लुत्फअली वगैरह कई शख्स खान के आदमियो के साथ दौडे, परतु उसी दीवार की आड आ जाने से वे अदर नहीं जा सके, और तब वे बेलदारो से उसको गिरवाने लगे। रास्ता हो जाने के खयाल से किले वाले अदर चले गये थे, किन्तु जब उन्हें दीवार के बाकी रहने का हाल मालूम हुआ, तब वे पीछे लौट आये और आधी रात तक तीरो और बदूको से लडते रहे। अत॰ कुछ बादशाही आदमी मारे गये और किला फतह नहीं हो सका।

इसी समय मे बहादुर खा ने बुदेल खड से पठान मे पहुच कर, अपनी फौज की उपस्थिति सूचित की, उसमे 3000 सवार और इतने ही पैदल थे।

30 शाबान (मगसिर सुदि 2=बुधवार, नवम्बर 24, 1641 ई०) को दमताल का किला तो बहादुर खा के प्रयत्न से फतह हुआ और थारी का किला अल्लावर्दी खा की कोशिश से।

बादशाह ने यह समाचार सुन कर लिखा कि असालत खा तो नूरपुर के घेरे पर रहे और सैयद खानजहा वगैरह गगथल के मार्ग से मऊ पर जाकर उसको जीतने की कोशिश करें। उस पर आधिपत्य हो जाने से नूरपुर को विजय करना भी आसान हो जावेगा। अत अमरसिंह और मिर्जा हुसैन सफवी को पठान मे छोड कर शाहजादा मुराद उस टेकरी पर डेरा करे, जहा से अब्दुल्ला खा फीरोजजग उतर आया था और उन फौजो को, जो हर तरफ से मऊ की फतह के वास्ते तैनात की गई हैं, ताकीद करता रहे।

शाहजादा 1 रमजान (मगसिर सुदि 3=गुरुवार, नवम्बर 25, 1641 ई०)

को पठान से रवाना हुआ, तो राजा जगतसिंह ने अपने बेटे राजरूप को भेज कर अल्लावर्दी खा के माध्यम से अर्ज कराई कि "अधिकतर दरबारी अमीर ईर्ष्या से इस मुहिम मे मेरी जान और इज्जत लेना चाहते थे, इसलिए मैंने भी राजपूती स्वाभिमान से उनका मन-चाहा नही होने देने के वास्ते जैसा कुछ हो सका उनका मुकाबला किया। मगर अब जो यह मुहिम आपके जिम्मे हो गई है, तो मैं भी हर तरह से हुक्म उठाने को तैयार हू।" 5 रमजान (मगसिर सुदि 7=सोमवार, नवम्बर 29, 1641 ई०) को वह स्वय ही अपराधियो की भाति गले मे रूमाल डालकर उपस्थित हो गया। शाहजादे ने उसको सात्वना दी और फरमाया कि "तुम्हारे कुसूर माफ कराने को बादशाह की सेवा में अर्ज की जावेगी।" मगर बादशाह ने उसकी कई अर्जें अस्वीकृत कर दीं, इसलिए शाहजादे ने राजा को विदा कर दिया। तब वह अपने वतन मे पहुच कर फिर लडाई का सामान एकत्रित करने लगा।

शाहजादे के हुक्म से सैयद खानजहा और बहादुर खा गगथल होकर फिर मऊ के ऊपर गये। जगल काटते और दुश्मनो की मजबूत दीवारो को, जो मुकाबले के वास्ते बना रखी थी, ढहाते हुए आगे बढे। जब मऊ के पास पहुचे तो जगतसिंह ने बहादुर भाई-बदो और पहाडी सिपाहियो के साथ सामने आकर पाच दिन तक निरतर लडाई की। सैयद खानजहां और बहादुर खा बहादुरी से उसके साथ लडे। इन पाच दिन की लडाई में 700 आदमी बहादुर खा के मारे गये, और इतने ही दूसरे बादशाही सेवक भी काम आये अथवा घायल हुए।

इस तरह से यह लडाई जोर पकड गई, तो बादशाह का हुक्म आया कि खानजहां और बहादुर खा तो किले के नीचे पहुचें और दूसरी फौज भी जगल से किले तक जावे, और हर समव प्रयत्न करके उसको फतह करें। तब शाहजादे ने 20 रमजान (पौष वदि 7=मगलवार, दिसम्बर 14, 1641 ई०) को सब मोरचो से ऊची एक पहाडी के ऊपर चढ कर आक्रमण करने का सरदारो को हुक्म दिया। आक्रमण दो तरफ से हुआ। राजा जयसिंह भी हमला करने वालो में था, कुलीच खा वगैरह के साथ घाटे के रास्ते जगलो में होकर वह पहाड के ऊपर जा चढ़ा। राजा जगतसिंह ने अपनी बाहर की फौज भी जगह-जगह से किले मे बुला ली और अन्दर से बादशाही सेना का मुकाबला किया। जब वह बहुत ही तग हो गया, तब तारागढ के किले मे चला गया, जहा उसने अपने परिवार को पहिले से भेज दिया था। यह समाचार सुन कर नूरपुर के किलेदार और सिपाही भी भाग गये। यो उक्त किले पर शाही अधिकार हो गया। जब इस फतह के शुभ समाचार बादशाह के पास पहुचे तब सैयद खानजहा का मनसब 6 हजारी जात—6 हजारी सवार दो-अस्पा और

करता था, बिहारीमल पजाब की दीवानी पर भेजा गया। गाव वाहन से चलकर 11 रमजान (मगसिर सुदि 13=रविवार, दिसम्बर 5, 1641 ई०) को बादशाह ने लाहौर मे प्रवेश किया।

19 शव्वाल, मगलवार (माह बदि 5=जनवरी 11, 1642 ई०) को तुलादान के दरबार मे महेश राठौड को हजारी जात—1000 सवार का मनसब मिला।

20 जिल्हिज (चैत बदि 6=शनिवार, मार्च 12, 1642 ई०) को नौरोज के दूसरे दिन, शाहजादा औरगजेब दक्षिण से आकर शाही दरबार मे उपस्थित हुआ और अपने बेटे मुहम्मद सुल्तान का सलाम कराया। बादशाह ने उसे दो लाख रुपये इनाम मे दिये। राव शत्रुसाल हाडा और राजा पहाडसिह बुदेला भी, जो दक्षिण मे तैनात थे, उसके साथ ही उपस्थित हुए। राव शत्रुसाल ने दो हाथी नजर किये। करमसी राठौड के बेटे श्यामसिह को शाहजादा औरगजेब की अर्ज से हजारी जात—500 सवार का मनसब मिला। राय काशीदास को सूबा आगरा की दीवानी मिली।

25 जिल्हिज (चैत बदि 12=गुरुवार, मार्च 17, 1642 ई०) को शाहजादा मुराद बख्श दरबार मे उपस्थित हुआ। उसके साथ जगतसिह भी अपने बेटो सहित गले मे रूमाल डाले हुए आया। बादशाह ने उसका कुसूर माफ कर दिया। राजा जयसिह, राव अमरसिह और राजा रायसिह भी शाहजादा के साथ दरबार मे उपस्थित हुए थे।

इस वर्ष काश्मीर मे भयकर अकाल पडा था, जिससे वहा के 30,000 आदमी लाहौर चले आये थे। बादशाह ने 1 लाख रुपया खजाने से उनको इनायत करके हुक्म दिया कि हर रोज 200 रुपये का खाना उनके लिए दिया जावे। साथ ही 30,000 रुपये काश्मीर के हाकिम तरबियत खां के पास भेज कर लिखा कि 100 रुपये रोज का खाना वहा के गरीबो को बाटा करे। मगर उससे इसकी व्यवस्था अच्छी तरह से नही हो सकी। तब बादशाह ने जफर खा को फिर काश्मीर का सूबेदार बना कर भेजा, और वहा के गरीबों की सहायता के लिए उसको 30,000 रुपये दिये गये।

4 मुहर्रम (चैत सुदि 6=शनिवार, मार्च 26, 1642 ई०) को शाहजादा औरगजेब दक्षिण की तरफ रवाना हुआ।

19 मुहर्रम (वैसाख वदि 6=रविवार, अप्रेल 10, 1642 ई०) को राजा जगतसिह और राजरूप के मनसब बहाल हो गये।

ईरान के शाह सफी का कधार पर आना

ईरान का शाह सफी रूम (तुर्की) के सुलतान मुराद खा से सुलह करके

कधार पर चढाई करने का सामान एकत्रित कर रहा था। अपने सिपहसालार रुस्तम गुरजी को हरावल बना कर शाह सफी ने अब उसको कधार के ऊपर रवाना किया।

उसका सामना करने को जाने की तैयारी बादशाह ने की। लेकिन शाहजादा दारा शिकोह ने अर्ज कराई कि "हजरत तो लाहोर मे ही तशरीफ रखें और इस मुहिम पर मुझको भेजें।" बादशाह ने उसको 20 हजारी जात—20 हजार सवार का मनसब, 12 लाख रुपया इनाम और एक भारी खिलअत देकर 50 हजार सवारो के साथ कन्धार की तरफ रवाना किया। 35 बडे-बडे अमीर, 5 हजार अहदी कमादार (धनुर्धर), बर्कदाज (सैनिक) और 5 हजार ही बदूकची, भरपूर खजाने और तोपखाने सहित उसके साथ भेजे गये। उनमे राजपूत सरदार इतने थे—

1 राजा जसवतसिंह, 2 राव अमरसिंह, 3. राव शत्रुसाल, 4 राजा जयसिंह, 5 राजा रायसिंह, 6 हरीसिंह राठोड, 7 महेशदास राठोड, 8. रामसिंह राठोड, 9 चन्द्रमन बुंदेला, 10. गोकुलदास सीसोदिया, 11 राजा अमरसिंह नरवरी, और 12 रायसिंह झाला।

राजा जसवतसिंह और जयसिंह को खासा खिलअत, फूल कटारे सहित जडाऊ जमधर, खास तबेले से सुनहरी साज के घोडे और खासा हाथी प्रदान किये। राव अमरसिंह को खासा खिलअत और सुनहरी जीन के घोडे के अतिरिक्त हजारी जात का इजाफा भी हुआ, जिससे अब वह 4 हजारी जात—3 हजार सवारो का मनसबदार हो गया। राजा रायसिंह को खिलअत मिला और हजारी जात के इजाफे से उसका मनसब 4 हजारी जात—2 हजार सवार का हो गया। राव शत्रुसाल को खिलअत और चादी की जीन का घोड़ा इनायत हुआ। राजा जगतसिंह को खिलअत और घोडा मिले। हरीसिंह और महेशदास को खिलअत, घोडे और झडे मिले। रामसिंह राठोड़ को खिलअत और घोडा इनायत हुए। चद्रमन बुंदेले को खिलअत और झडा मिला। राजा अमरसिंह नरवरी, गोकुलदास सीसोदिया और रायसिंह झाला को खिलअत और घोड़े दिये गये।

बादशाह ने तब यह आदेश दिया कि उनके (विशेष) व्यय मे सहायतार्थ सब ही अमीरो को उनके मनसब के वेतन के अतिरिक्त प्रति सौ सवार पर दस हजार रुपये तथा प्रति हजार सवार पर एक लाख रुपये के अनुपात से निर्धारित रकम दी जावे। साथ ही विशेष आदेश दिये गये कि अहदियो, तोपचियो और बदूकचियो का तीन महीने का वेतन उन्हें अग्रिम दे देवें, जिससे खर्च आदि के लिए उन्हें कोई कमी नही रहे। उस दिन शाहजादा मुराद बख्श को खिलअत वगैरह देकर फरमाया कि नीलाब नदी के किनारे पर जहा

भी वह उचित समझे मुकाम करे और जब जरूरत पडे भाई (दारा शिकोह) की मदद को रवाना हो जावे। साथ ही काबुल के हाकिम अलीमरदान खा को लिखा गया कि वह बल्ख और बुखारा के हाकिम नजर मुहम्मद खा पर चढ़ाई करने के वास्ते तैयार रहे।

ज्यादा शराब पीते रहने के कारण काशान पहुच कर शाह सफी 12 सफर (बैसाख सुदि 13=सोमवार, मई 2, 1642 ई०) को मर गया। शाहजादा दारा शिकोह ने जब नीलाब (सिंधु नदी) पार की, तब उसको यह खबर लगी, तो उसने बादशाह को अर्जी लिखी और हुक्म आने तक गजनी मे ठहर कर खानदौरा और सईद खा के साथ 30,000 सवार कधार को भेजे। मौका देख कर हेरात और सीस्तान को फतह करने का इरादा किया। मगर बादशाह ने ऐसी कार्यवाही अनुचित और आचार-विरुद्ध समझ कर शाहजादा को वापिस लौट आने का हुक्म लिख भेजा।

काशान से कजवीन जाकर ईरान के अमीरो ने शाह सफी के बडे बेटे सुलतान मुहम्मद मिर्जा को तख्त पर बैठा कर उसे शाह अब्बास का खिताब दिया।

दरबार का हाल

2 सफर (बैसाख सुदि 3=शुक्रवार, अप्रैल 22, 1642 ई०) को चम्बा के राजा पृथ्वीचद को हाथी इनायत हुआ। गिरधरदास गौड का मनसब हजारी जात —400 सवारो का असल और इजाफे से हो गया।

बुंदेला-मुहिम

अब्दुल्ला खा बहादुर फीरोजजग चपत और उसके साथियो को सजा देने का कार्य आदेशानुशार नही कर सका था। इधर अब 6 रबी-उल्-अव्वल (जेठ सुदि 7=गुरुवार, मई 26, 1642 ई०) को उस मुल्क के जमीदार राजा पहाडसिंह ने चपत और उसके भाइयो को सजा देने का जिम्मा लिया था। इसलिए बादशाह ने अब्दुल्ला खां की जगह पहाडसिंह को नियुक्त करके उसके मनसब में 1000 सवार दो-अस्पा का इजाफा कर दिया।

4 रबी-उस्-सानी (आसाढ़ सुदि 5=बुधवार, जून 22, 1642 ई०) को शाहजादा मुराद आदेशानुसार हसन अवदाल से पीछे आ गया।

15 रबी-उस्-सानी (सावन वदि 2=रविवार, जुलाई 3, 1642 ई०) को अर्ज हुई कि जब राजा पहाडसिंह इस्लामाबाद (जतारा) पहुचा तब लाचार होकर चपत उसके पास उपस्थित हो गया। बादशाह ने हुक्म दिया कि चपत जिस तरह पहिले राजा पहाडसिंह और उसके बडे भाई की नौकरी करता

था उसी तरह अब भी राजा पहाड़सिंह की नौकरी करे। चपत कई दिन तक तो पहाड़सिंह की नौकरी में रहा, फिर अपने भाइयो सहित बड़े शाहजादे (दारा शिकोह) का नौकर हो गया।

जुलूसी सन् सोलहवां

(अगस्त 18, 1642 ई० से अगस्त 6, 1643 ई० तक)

दरबार के हाल

12 जमादि-उस्-सानी (भादो सुदि 15=सोमवार, अगस्त 29, 1642 ई०) को माधोसिंह हाडा 500 सवारों के इजाफे से 3 हजारी जात—3000 सवारो का मनसबदार हो गया।

15 जमादि-उस्-सानी (आसोज वदि 3=गुरुवार, सितम्बर 1, 1642 ई०) को महेशदास राठौड हजारी जात—1000 सवारों के इजाफे से 2 हजारी जात—2000 सवारो का मनसबदार हो गया, और अपना वतन बनाने के लिए जालौर का परगना भी उसको दे दिया गया।

17 जमादि-उस्-सानी (आसोज वदि 5=शनिवार, सितम्बर 3, 1642 ई०) शाहजादा दारा शिकोह लाहौर पहुच कर बादशाह के पास उपस्थित हुआ। बादशाह ने उसको 'शाह बुलद इकबाल' का खिताब दिया। उसके साथ जो अमीर गये थे, वे भी सब आ गये।

बादशाह ने 50,000) रुपये काश्मीर के जमीदारों को इनायत किये।

21 जमादि-उस्-सानी (आसोज वदि 9=बुधवार, सितम्बर 7, 1642 ई०) को रामसिंह राठौड असल और इजाफे से डेढ हजारी जात—800 सवारो का मनसबदार हुआ।

4 रजब (आसोज सुदि 6=सोमवार, सितम्बर 19, 1642 ई०) को राय मुकुददास दीवान-इ-बुयूतात (कारखानो का दीवान) नियुक्त हुआ।

21 रजब (कार्तिक वदि 8- गुरुवार, अक्तूबर 6, 1642 ई०) को राजा जयसिह और राव अमरसिह राठौड कधार से वापस आकर उपस्थित हुए।

7 शाबान (कार्तिक सुदि 9=शनिवार, अक्तूबर 22, 1642 ई०) को बादशाह पहिली बार उस बाग की सैर को गये, जो लाहौर में नहर के किनारे पर नया तैयार हुआ था। उसके अदर सगमरमर के महल बने थे। इस बाग और महल पर 6 लाख रुपये खर्च हुए थे, और एक लाख रुपया नहर मे पहिले लगा था तथा 1 लाख और अब लगा।

8 शाबान (कार्तिक सुदि 11=रविवार, अक्तूबर 23, 1642 ई०) को राव शत्रुसाल हाडा उपस्थित हुआ।

18 शाबान (मगसिर बदि 6=बुधवार, नवम्बर 2, 1642 ई०) को बादशाह लाहौर से आगरा लौटे।

22 शाबान (मगसिर बदि 9=रविवार, नवम्बर 6,1642 ई०) को ख्वाजा शमसुद्दीन की सराय मे राजा जयसिंह को खासा खिलअत इनायत होकर घर जाने की छुट्टी मिली।

1 रमजान (मगसिर सुदि 2=सोमवार, नवम्बर 14, 1642 ई०) को शाहजादा दारा शिकोह को हुक्म हुआ कि वह स्वय वहा जाकर राजा जगतसिंह के पहाडी इलाके, नूरपुर और तारागढ वगैरह को देखे। उनको देख कर शाहजादा गांव वाहन में बादशाह के पास उपस्थित हुआ और रास्ते की कठिनाइयों और तारागढ की मजबूती का जो हाल देखा था, वह अर्ज किया।

14 रमजान (पौष वदि 1=रविवार, नवम्बर 27, 1642 ई०) को गिरधरदास गौड असल और इजाफे से हजारी जात—500 सवारो का मनसबदार हो गया।

20 रमजान (पौष बदि 7=शनिवार, दिसम्बर 3, 1642 ई०) को सरहिंद के दौलतखाने में मुकाम हुआ, जहां सरकार सरहिंद का दीवान, अमीन और फौजदार, राय टोडरमल अच्छा काम करने पर असल और इजाफे से हजारी जात—हजार सवार दो-अस्पा और से-अस्पा का मनसबदार हो गया।

14 शव्वाल (माह वदि 1=मगलवार, दिसम्बर 27, 1642 ई०) को बादशाह ने दिल्ली पहुच कर वहा उस किले को देखा, जो बन रहा था।

24 शव्वाल (माह बदि 11=शुक्रवार, जनवरी 6, 1643 ई०) को बादशाह ने आगरा मे प्रवेश किया। आगरा के किलेदार राजा बिट्ठलदास ने उपस्थित होकर मुजरा किया।

अलीमरदान खा को 7 हजारी जात—7000 सवारों का मनसब, जिनमे 5000 सवार दो-अस्पा और से-अस्पा थे, और अमीर-उल्-उमरा का खिताब मिला। उसका वेतन 12 करोड़ दाम निश्चित हुआ, जिसके 3 लाख रुपये वार्षिक होते थे। 11 करोड दाम तो मनसब की तलब थी और एक करोड़ दाम इनाम के थे। आसफ खां के बाद अमीरो के वास्ते यही उच्चतम मनसब था।

1 जीकाद (माह सुदि=2 गुरुवार, जनवरी 12, 1643 ई०) को तुलादान के दरबार में राजा बिट्ठलदास का मनसब हजारी जात के इजाफे से पांच हजारी—3 हजार सवारो का हो गया।

17 जीकाद (फागुन बदि दूसरी 3=शनिवार, जनवरी 28, 1643 ई०)

को वादशाह ने मुमताज-उल्-जमानी वेगम (ताज बीवी) की कब्र पर सोने के कटहरे की जगह सगमरमर का कटहरा लगाया, जो 10 वर्ष मे 50,000 रुपये की लागत से तैयार हुआ था। इस रोजे की इमारत (जो अब ताज महल के नाम से सुप्रसिद्ध है) इस साल में 50 लाख रुपये की लागत से तैयार हो गई, वह पिछले 12 वर्ष से वन रही थी। इसके खर्च के वास्ते एक लाख रुपये की आमदनी के गाव दिये गये थे और 2 लाख रुपये सालाना भाड़े के भी आते थे।

23 जीकाद (फागुन वदि 9=शुक्रवार, फरवरी 3, 1643 ई०) को राजा विट्ठलदास को एक खासा हाथी इनायत हुआ। 18 सफर (जेठ वदि 4= गुरुवार, अप्रेल 27, 1643 ई०) को राजा विट्ठलदास को सोने की जीन का खासा घोड़ा मिला।

जुलूसी सन् सत्रहवां

(अगस्त 7, 1643 ई० से जुलाई 25, 1644 ई० तक)

12 जमादि-उस्-सानी (भादों सुदि 14=शुक्रवार, अगस्त 18, 1643 ई०) को वादशाह ने राजा जसवतसिह को खासा खिलअत प्रदान करके वतन जाने को छुट्टी दी।

25 जमादि-उस्-सानी (आसोज वदि 13=गुरुवार, अगस्त 31, 1643 ई०) को वादशाह दारा शिकोह के लडके मुमताज शिकोह का मुह्ह देखने को उसकी हवेली पर गये। शाहजादे ने पावड़े विछाए और नजर निछावर करके अनेक किस्म के जवाहर पेशकश के रूप मे प्रस्तुत किये। जिनमे से 1 लाख रुपये के जवाहर वादशाह ने स्वीकार किये और मुमताज शिकोह को मोतियों की एक माला, जिसमें कई लाल भी लगे थे, मुह दिखाई में दी। शाहजादे ने वादशाह के हुक्म से कई अमीरो को खिलअत दिये, जिनमें एक खिलअत फरजी सहित राजा विट्ठलदास गौड़ को भी मिला।

24 रजव (कातिक वदि 11=गुरुवार, सितम्बर 28, 1643 ई०) को राव शत्रुसाल को एक खासा हाथी इनायत हुआ।

30 रजव (कातिक सुदि 2=बुधवार, अक्तूबर 4, 1643 ई०) को शाहजादा औरगजेब का दूसरा वेटा मुहम्मद मुअज्जम पैदा हुआ। दूसरे दिन जीनत-उल्-निसा वेगम पैदा हुई।

8 शावान (कातिक सुदि 10=गुरुवार, अक्तूबर 12, 1643 ई०) को रायरायां ने एक हाथी नजर किया। उसके दिल मे वहुत दिन से काशी-सेवन

की लौ लग रही थी, इसलिए बादशाह ने उसको वहां जाने की आज्ञा दी।

18 शाबान, रविवार (मगसिर बदि 5=शनिवार, अक्तूबर 21, 1643 ई०) की रात को बादशाह आगरा से अजमेर (ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती) की जियारत के वास्ते रवाना हुए।

1 रमजान (मगसिर सुदि 3=शनिवार, नवम्बर 4, 1643 ई०) को चाटसू के पास राजा जयसिंह ने अपने बेटो सहित वतन से आकर सलाम किया। वहा से उसका वतन पास था, इसलिए उसने तीसरे दिन 3 रमजान (मगसिर सुदि 5=सोमवार, नवम्बर 6, 1643 ई०) को एक हाथी और 9 घोडे नजर किये।

7 रमजान (मगसिर सुदि 9=शुक्रवार, नवम्बर 10, 1643 ई०) को जोगी पर डेरे हुए। यहा राणा जगतसिंह के ज्येष्ठ पुत्र राजकुवर राजसिंह ने उपस्थित होकर हाथी नजर किया। बादशाह ने उसको खिलअत, जडाऊ सरपेच, जडाऊ जमधर, और सोने की जीन का तपचाक घोडा प्रदान किये।

'बादशाह-नामा' मे लिखा है कि "जब बादशाह राणा अमरसिंह की मुहिम समाप्त करके अपने बाप जहागीर बादशाह के साथ काश्मीर की सैर को गये थे, तब राणा जगतसिंह सवारी के साथ था। इसी तरह दक्षिण की हरेक मुहिम में वह बादशाह के साथ रहा था और अब इस सफर मे उसने अपने बडे बेटे को, जो राठोडो के सिवाय, जैसा कि लिखा जा चुका है, और सब राजपूतो मे बाप की जगह बैठता है, और जिसको ये लोग टीकाई कहते हैं, अपने एवजी के रूप मे भेजा।"

8 रमजान (मगसिर सुदि 10=शनिवार, नवम्बर 11, 1643 ई०) को बादशाह अजमेर के दौलतखाने में, जो आना सागर तालाब के ऊपर है, प्रविष्ट हुए और ख्वाजा साहिब (मुईनुद्दीन चिश्ती) की जियारत करके 10,000 रुपये वहा के खादिमो और गरीबो को बाटे। राजा जसवतसिंह ने अपने वतन से उपस्थित होकर मुजरा किया। इसी दिन राजा जयसिंह ने अपना निशान दिखलाया, तब उसके 5000 सवार गिने गये।

14 रमजान (पौष बदि 2=शुक्रवार, नवम्बर 17, 1643 ई०) को बादशाह दिन के पिछले पहर मे ख्वाजा साहिब की दरगाह में पुन गये, और हुक्म दिया कि जहागीर बादशाह की चढ़ाई हुई ताबे की बडी देग मे खासा शिकार की नीलगायो का मास और चावल पकवा कर गरीबो को बाट देवें। तदनुसार 140 मण मास, चावल, घी, और दूसरा मसाला उस देग मे पकाया गया।

15 रमजान (पौष बदि 3=शनिवार, नवम्बर 18, 1643 ई०) को बादशाह का अजमेर से आगरा को कूच हुआ। राजा जयसिंह और राजा जसवतसिंह को खासा खिलअत और वतन जाने की छुट्टी मिली। राजा जय-

सिंह के बेटे, रामसिंह और कीरतसिंह, भी घोड़े और सिरपाव पाकर अपने बाप के साथ चले गये।

16 रमजान (पौष वदि 4=रविवार, नवम्बर 19, 1643 ई०) को राणा जगतसिंह के बेटे राजकुवर (राजसिंह) को खिलअत, सोने के मीनाकार साज की तलवार और ढाल, हाथी, घोडे और कुछ जडाऊ जेवर, जो राजपूत पहना करते हैं, प्रदान कर वतन जाने की अनुमति दी गई। साथ ही उसके पिता के दो बड़े राजपूतो को घोडा तथा खिलअत और दूसरे 8 आदमियो को केवल खिलअत प्रदान किये। कुवर के साथ राणा के वास्ते मोतियों की माला, सुनहरी मीनाकार साज की ढाल तथा तलवार, और सुनहरी जीन के दो घोड़े, एक अरबी और दूसरा इराकी, भेजे गये।

24 रमजान (पौष वदि दूसरी 11=सोमवार, नवम्बर 27, 1643 ई०) को बादशाह की सवारी-मालपुरा इलाके में पहुची। यह राजा विट्ठलदास की जागीर में था। राजा ने एक हाथी और एक हथनी नजर की। बादशाह ने हथनी पसद की।

आखिर रमजान (पौष सुदि 1=शनिवार, दिसम्बर 2, 1643 ई०) को बाडी में डेरे हुए। वहा राजा किशनसिंह भदोरिया के मरने की अर्ज हुई। उसके कोई लडका नही था। उसके एक दासी-पुत्र अवश्य था, किन्तु ब्राह्मण (हिन्दू) ऐसे लडके को गुलाम की तरह रखते हैं और उसके साथ खाना नही खाते हैं। इसलिए बादशाह ने राजा किशनसिंह के चाचा के पोते, राय बदनसिंह को खिलअत और राजा का खिताब प्रदान करके पाच सदी जात—500 सवारों के इजाफे से उसका मनसब भी हजारी जात—हजार सवारो का कर दिया।

1 शव्वाल (पौष सुदि 2=रविवार, दिसम्बर 3, 1643 ई०) को नाहर सोलकी ने एक हाथी नजर किया।

15 शव्वाल (माह वदि 2=रविवार, दिसम्बर 17, 1643 ई०) को बादशाह आगरा पहुचे।

8 जीकाद (माह सुदि 11=मगलवार, जनवरी 9, 1644 ई०) को तुलादान के दरबार मे सुजानसिंह सिसोदिया को हजारी जात—400 सवारो का मनसब मिला। राजा बदनसिंह भदोरिया को हाथी दिया गया।

7 जिल्हिज (फागुन सुदि 9=मंगलवार, फरवरी 6, 1644 ई०) को आगरा मे हैजा शुरू हुआ और बादशाह शिकार के वास्ते सूकर (क्षेत्र) की तरफ चले गये।

26 जिल्हिज (चैत वदि 13=रविवार, फरवरी 25, 1644 ई०) को बादशाह वापस आगरा आये, परतु लौट कर चले गये, क्योकि हैजा तब भी वहा चल रहा था।

पिछले साल से कही ज्यादा इस साल मे प्राय ईरान, तूरान, अरब व काशगर वगैरह से बडे-बडे आदमी नौकरी के वास्ते हिन्दुस्तान मे आये, और जैसा कि नियम था, सब अपनी-अपनी योग्यता के अनुसार नौकर हो गये। आदिल खा और कुतुबशाह के नजराने भी परम्परानुसार आये।

1 मुहर्रम (पहिला चैत सुदि 3=शुक्रवार, मार्च 1, 1644 ई०) को बादशाह ने सफदर खा सूबेदार कधार की शिकायत सुन कर उसको तो पद-च्युत किया, और उसकी जगह पजाब के सूबेदार सईद खा को भेजा। उससे राजा जगतसिंह अप्रसन्न था। इसलिए राजा को कलात की किलेदारी से बदल कर काबुल के सूबे में नियुक्त किया।

27 मुहर्रम (दूसरा चैत बदि 13=मगलवार, मार्च 26, 1644 ई०) को रात के वक्त बादशाह की बड़ी बेटी जहाआरा की बेगम के कपडो मे आग लग जाने से वह जल गई। बादशाह ने तीन दिन तक 5000 मोहरें और 5000) रुपये रोज खैरात किये, फिर एक महीने तक 2000 रुपये रोज बाटे और दूसरे महीने से हर रोज 1000) रुपये खैरात करने का हुक्म फरमाया। दीवानी कैदियो को छोड कर 8 लाख रुपये एनुल्-माल (जमापूजी) से उनको प्रदान किये। मदद-इ-मआश (गुजारे के लिए दी जाने वाली सहायता) की जमा, जो थोडे दिनो मे सनदो की जाच वगैरह के वास्ते रोक रखी थी, वह भी पीछी दिलवा दी गई।

पालामऊ

पालामऊ के जमींदार प्रताप उज्जैनिया ने अपनी जाति के लोगो को नाराज कर दिया था, जिससे उसके चाचा, दरियाराय और तेजराय, बिहार के सूबे-दार एतकाद खा के पास आये। खान ने उनको सात्वना दी, जिस पर उन्होने इकरार किया कि "हम प्रताप को पकड लावेंगे।" तदनुसार उन्होंने जाकर उसको कैद कर लिया और तेजराय उस जाति का सरदार बन गया। मगर यह खबर पाकर जब खान ने उनको लिखा कि "प्रताप को यहां उपस्थित करो", तब तेजराय ने अपने वकील को भेज कर एतराज किया। इस तरह प्रताप बहुत दिनो तक उनकी कैद मे रहा। फिर दरियाराय और चेरो जाति के दूसरे सरदारो मे, जो तेजराय को अपना सरदार बनाना चाहते थे, आपसी विरोध हो गया। एतकाद खा ने उसको दिलासा देकर सेवा के लिए राजी किया। इस पर दरियाराय ने कहला भेजा कि "जो फौज भेजो तो देवकन (देवगाव) के किले पर, जो पालामऊ का बडा थाना है, शाही अमल करा दू।" खान ने जबरदस्त खा को भेजा। 1 शाबान, 1053 हि० (कातिक सुदी 3, 1700 वि०=गुरुवार, अक्तूबर 5, 1643 ई०) को वह किले के

पास पहुचा। दरियाराय आकर उससे मिला। देवकन के किलेदार भवाल और चपत भी साथ थे। उन्होंने वह किला जबरदस्त खा को सौंप दिया। जबरदस्त खा ने उनको तो एतकाद खा के पास भेजा और आप वहा रह कर लोगो को राजी करने, जगल काटने और किले को मजबूत करने मे लगा रहा।

11 शाबान (कार्तिक सुदि 13=रविवार, अक्तूबर 15, 1643 ई०) को खान ने सुना कि तेजराय ने अपने वकील मदनसिंह ठकराई को 500 सवार और 7000 पैदलो से गाव बावली जून (बावली चौखा) की तरफ, जो देवकन से 5 कोस दक्षिण मे है, भेजा है, और वह छापा मारने के इरादे मे है। इस पर जबरदस्त खा ने कुछ फौज भेज कर उसको भगा दिया। जब एतकाद खां ने यह हाल सुना तो अब्दुल्ला खा बख्शी और दरियाराय को जबरदस्त खां की सहायतार्थ भेजा।

3 रमजान (मगसिर सुदि 5=सोमवार, नवम्बर 6, 1643 ई० को जब तेजराय पालामऊ के किले से निकल कर शिकार खेलने को गया, तब पीछे से उसके वकील के बेटो, सूरतसेन और सबलसेन ने दूसरे किले वालो से मिल कर प्रताप को कैद से छोड दिया, जिससे पालामऊ किले पर प्रताप का अधिकार हो गया। यह सुन कर तेजराय के बहुत से आदमी प्रताप के पास चले आये, और तेजराय जगल मे चला गया। मदनसिंह फौज सहित बादशाही अमीरो का मुकाबला कर रहा था, किन्तु इस खबर के सुनते ही वह रात को भाग गया। इस समाचार से अवगत होने पर धरनीधर उज्जैनिया और अपने नौकरो को देवकन के किले में छोड कर के जबरदस्त खा पालामऊ की ओर रवाना हुआ, और बडी कठिनाइयो से जगलो मे होता हुआ शत्रुओ से लडता-भिडता वह मानगढ पहुचा। तब तो प्रताप ने डर कर लिखा कि "सेवा करने को तैयार हूं। हुक्म हो तो उपस्थित हो जाऊं।" जबरदस्त खा ने पालामऊ से 3 कोस गाव बाडी मे ठहर कर जवाब भेजा कि "तुम्हारा आना उसी हालत मे ठीक होगा कि तुम मेरे साथ एतकाद खा के पास चलो। नहीं तो पटने का बख्शी आता है, उस वक्त तुम अपना किया पाओगे।" उसने कहलाया कि "शायस्ता खा ने बहुत सी फौज से किले के नीचे आकर कठोर परिश्रम और असीम प्रयत्न मेरी उपस्थिति के लिए ही किये थे। परन्तु मैं उसके पास भी नहीं गया था। तब वह सुलह करके और नजराना लेकर चला गया था। अब तुमसे तो मैं प्रत्यक्ष भेंट करता हू। मगर पटना जाने का वादा नही कर सकता, क्योकि मेरे बाप-दादो में से कभी कोई पटना नही गया है।" लेकिन जबरदस्त खा ने नही माना और एतकाद खा के पास पटना चलने के वास्ते उससे बहुत ही जिद की। प्रताप ने भी लाचार होकर उससे कुछ भी नुकसान न पहुचाने का वचन लेकर भेंट की और एक हाथी भी उसको

दिया। जवरदस्त खा ने एतकाद खा को लिख कर अहदनामा मगवा दिया, और बख्शी को लिखा कि जहा तक वह आ पहुचा हो वही वह ठहर जावे, क्योंकि वह स्वय भी लौट कर आ रहा है।

17 रमजान (पौष बदि 5=सोमवार, नवम्बर 20, 1643 ई०) जबरदस्त खा प्रताप को साथ लेकर रवाना हुआ और 23 रमजान (पौष बदि पहिली 11=रविवार, नवम्बर 26, 1643 ई०) को देवकन मे बख्शी से मिला। फिर दोनो मिल कर पटना पहुचे। प्रताप एतकाद खा के लिए भी हाथी लाया था। फिर उसने एक लाख रुपया बादशाही खजाने मे जमा कराने का इकरार किया। जबरदस्त खा ने उसकी जमानत दी। तब एतकाद खा ने उसके वास्ते मनसब की अर्जी लिखी। बादशाह ने प्रताप का अपराध क्षमा करके हजारी जात—1000 सवार का मनसब उसे दिया और पालामऊ जागीर की जमा (राजस्व) एक करोड़ दाम की निश्चित कर वह उसके अधिकार मे पूर्ववत् रहने दी।

गन्नौर के किले की फतह

गन्नौर के जमीदार सग्राम गोड के मरने पर उसके गुलाम मारू गोड ने उसके बेटे भोपत को कैद करके स्वय स्वामी बन बैठा और गन्नौर जमीदारी की मालगुजारी देना भी बद कर दी। उसकी देखादेखी उसके पडोसी भी मालगुजारी मे ढील करने लगे। तब खान नसरतजग इसी साल के मुहर्रम, 1053 हि० (वैसाख, 1700 वि०=मार्च अप्रेल, 1643 ई०) के अन्त मे अपने नौकरो, मालवा के तैनातियो, और कुछ जमीदारो के साथ रायसेन किले से जगल की राह चल पडा। 16 सफर (जेठ बदि 2, स० 1700=मगलवार, अप्रेल 25, 1643 ई०) को गन्नौर के घाटे पर 5000 पैदल गोडो और सात-आठ सौ बदूकचियो को, जो मार्ग अवरुद्ध किये हुए थे, पराजित कर वह गन्नौर के पास पहुच गया। मारू ने डर कर खान के नौकर गोविन्ददास राठौड और मिर्जा वाली को अपना पक्षपाती बनाया, और भोपत को कैद से छोड कर सग्राम के कई विश्वस्त नौकरो के साथ उसे खान के पास भेजा। खान ने भोपत को नजरबद करके उसके साथियो को भी कैद कर दिया, क्योंकि उसने सुन लिया था कि भोपत को भगा ले जाने का इरादा हो रहा है। तदनन्तर लखेरे पहाड के ऊपर चढ कर, वहा जो एक मजबूत मोरचा बना हुआ था, उसको गोडो से छुडा लिया।

गन्नौर का किला ऊचे-नीचे चढ़ाव-उतार मे एक पहाड के ऊपर एक ही पत्थर का ऐसा कटा हुआ है, कि किसी तरफ से उसके ऊपर चढ़ना संभव नहीं है, और किसी जगह दीवार नही बनानी पडी है। केवल एक ही जगह

कुछ दीवार बनाने की जरूरत थी, सो वहा सग्राम ने एक मजबूत दीवार बना दी थी। गोड अब बुर्जों और दमदमों[1] को तोप और बदूक से मजबूत किये हुए थे, जिनको खानदौरा ने लडाई से फतह करना आसान देख कर बादशाह को अर्जी लिखी और कुछ अमीरो के साथ दो बडी तोपें भी मगवाईं। बादशाह ने तोपें तो आगरा के किले से भिजवा दी और उसकी सहायता करने के वास्ते आस-पास के अमीरो को हुक्म लिखे। तदनुसार रशीद खां और कुछ मनसबदार बुरहानपुर से, राजा पहाडसिंह बुदेला अपनी जागीर से, पृथ्वीराज राठोड रामपुरा से, और जासिपार खा मदसोर से रवाना हुए।

19 जिल्हिज, रविवार (पहिला चैत बदि पहिली 6, स० 1700 वि०= फरवरी 18, 1644 ई०) के दिन प्रात काल ही आक्रमण करके बादशाही फौजो ने वह दीवार गोडो से छीन ली और किले के नीचे का हिस्सा जीत लिया। फिर वे दोनो तोपें भी पहुच गईं और दमदमे भी बन गये। उधर किले के तालाब खाली हो गये, जिससे माफी माग कर इस नये वर्ष (सन् 1054 हि०) के आखिर मुहर्रम, सन् 1054 हि० (द्वितीय चैत सुदि 2, स० 1701 वि०=शुक्रवार, मार्च 29, 1644 ई० से पहिले) मे मारू खान से मिलने को आया। खान ने किले पर चढ कर वहा की सब बुर्जों और मोर्चों को देखा और अपने भाई सलाउद्दीन को 500 सवार और 700 बदूकचियो से किले में रख कर बादशाह को अर्जी भेजी।

दरबार के हाल

23 सफर, 1054 हि० (वैसाख बदि 9=रविवार, अप्रेल 21, 1644 ई०) को दरबार में अर्ज हुई कि किशनसिंह राठोड का बेटा हरीसिंह मर गया। उसके कोई बेटा नहीं था, इसलिए बादशाह ने उसके भतीजे रूपसिंह को खिलअत और चादी की जीन का घोडा देकर कुछ मनसब भी बढाया और उसके चाचा का वतन, किशनगढ, उसको जागीर मे प्रदान कर दिया।

5 रबी-उल्-अव्वल (वैसाख सुदि 6=गुरुवार, मई 2, 1644 ई०) को औरगजेब दक्षिण से आया।

9 रबी-उल्-अव्वल (वैसाख सुदि 10=सोमवार, मई 6, 1644 ई०) को राजा सूरजसिंह का बेटा, सबलसिंह, जो सूबा गुजरात के मददगारो मे तैनात था, पाच सदी जात—200 सवारो के इजाफे से डेढ हजारी जात—1200 सवारो का मनसबदार हो गया।

15 रबी-उल्-अव्वल (जेठ बदि 1=रविवार, मई 12, 1644 ई०) को बादशाह ने राव हठीसिंह के नि संतान मरने पर उसके चाचा के बेटे रूपसिंह

1 दमदमा—तोप के मोर्चे के लिए आवश्यक टीला। (स०)

रहे। अत मे वल्लू और भावसिंह सहित सब के सब मारे गये। अरदली के आदमियो मे से सैयद अब्दुल रसूल एक मरदाना जवान था, जो सब आदमियो से आगे बढ़ कर अपने भतीजे सैयद गुलाम मुहम्मद और दूसरे भाई-वदो के साथ पैदल हो कर लडा। अपने साथियो सहित वह काम आया। वादशाह ने सलावत खा के वेटे मुहम्मद मुराद को, जो 4 वर्ष का था, चार सदी जात—200 सवार का मनसव प्रदान किया और मीर खा के वेटे को भी, जो वहुत ही छोटा था, उसके लायक कुछ मनसव दिया। अब्दुल रसूल का मनसव तव चार सदी जात—100 सवारो का था, वही उसके चार वेटो मे वाट दिया। गुलाम मुहम्मद के कोई वेटा न था, इसलिए उसका मनसव उसके छोटे भाई अली अकवर के नाम कर दिया गया।

जुलूसी सन् अठारहवां

(जुलाई 26, 1644 ई० से जुलाई 14, 1645 ई०)

दरबार के हाल

1 जमादि-उस्-सानी (सावन सुदि 3=शुक्रवार, जुलाई 26, 1644 ई०) को अर्जुन गौड असल और इजाफे से हजारी जात—500 सवार का मनसवदार हो गया।

2 जमादि-उस्-सानी (सावन सुदि 4=शनिवार, जुलाई 27, 1644 ई०) को राजा मनरूप के वेटे गोपालसिंह का मनसव हजारी जात—हजार सवार हो गया।

27 रजव (आसोज वदि 14=गुरुवार, सितम्वर 19, 1644 ई०) को करमसी राठौड़ का वेटा श्यामसिंह पाच सदी जात—100 सवार के इजाफे से डेढ़ हजारी जात—600 सवारो का मनसवदार हो गया। द्वारकादास के वेटे नरसिंहदास को वरार के मजवूत और प्रसिद्ध किले गाविलगढ़ की किलेदारी प्रदान की।

8 शावान (आसोज सुदि 9=सोमवार, सितम्वर 30, 1644 ई०) को राव शत्रुसाल हाडा को खिलअत और चादी की जीन का घोडा देकर अपने वतन जाने की छुट्टी भी दी गई।

कल्याण झाला को, जो कुछ दिन पहिले राणा जगतसिंह की अर्जी लेकर उपस्थित हुआ था, खिलअत, सुनहरी मीनाकार साज की ढाल और तलवार, चादी की जीन का घोडा और हाथी इनायत होकर वापस जाने की छुट्टी

पास पहुचा । दरियाराय आकर उससे (एकदम से दौड़ा और उस बेखबर
और चपत भी साथ थे । उन्होंने वह कि उसका वही काम तमाम हो गया ।
जबरदस्त खा ने उनको तो एतक . ऐसा अशिष्टतापूर्ण कार्य किया कि जिसका
लोगो को राजी करने, जगल नही कर सकता था । अमरसिंह के इस दुष्कर्म
11 शाबान (कार्ति .लुल्ला खा और विट्ठलदास का बेटा, अर्जुन गौड,
खान ने सुना कि ...र दौड़े, और तब वहा बडा शोर मच गया । लिखते-
और 7000 पैद ...कर जब बादशाह ने उस तरफ नजर डाली तो देखा कि
से 5 कोस ...अर्जुन गौड से लड़ रहा है । अमरसिंह ने कटारी के दो-तीन वार
पर जल्..र किये, जिन्हें उसने ढाल पर रोक लिया । मगर फिर कटारी
...म्ल कर अर्जुन की गर्दन पर लगी, तब खलीलुल्ला खा ने अमरसिंह पर
...र का वार किया । अर्जुन ने भी हिम्मत करके तलवार के दो वार
। इसके साथ ही सैयद सालार और सात-आठ दूसरे गुर्जबरदार (गदा-
...री) मनसबदारों ने दायें-बायें से दौड कर तलवारो से अमरसिंह का काम
...माम कर दिया । सलाबत खा एक लायक नौजवान था, जो बादशाह के
...र्देशन से बडे-बडे काम करने योग्य था । अमरसिंह राजपूतो मे बहुत ही
कुलीन और बहादुर योद्धा था और बादशाह उससे बहुत आशाए रखते थे कि
'किसी बडी लड़ाई में भाई-बंदो सहित हमारे काम आकर अपना नाम रोशन
करेगा ।" दैवगति से ये दोनों यो अकारथ मारे गये ।

बादशाह ने सलाबत खां की नौजवानी पर अफसोस करके इस घटना के
कारणो की गहनता से जाच की, मगर अमरसिंह के हमेशा नशा करने और
साथ ही कुछ दिनो बीमार रहने के अतिरिक्त और कुछ पता नही लगा ।
इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि अमरसिंह की जागीर नागौर की
सरहद बीकानेर से मिली हुई थी । राव अमरसिंह तो शाही दरबार में
उपस्थित था और बीकानेर का राव करण दक्षिण मे अपनी नौकरी पर था ।
वहा जागीरो की सरहद के बारे में विवाद उत्पन्न होकर उन दोनो के
आदमियो मे लडाई हो गई । राव करण के आदमियो के पास बदूकें अधिक
...। इससे अमरसिंह के कुछ सुयोग्य वीर राजपूत मारे गये थे । यह खबर
...र अमरसिंह ने अपने आदमियो को लिखा था कि फिर सैनिक एकत्र करके
करण के नौकरों से लडने को वे जावें । राव करण ने जब यह सुना तो
...बत खा को लिखा कि अमरसिंह के आदमियो ने ही पहिले लडाई छेडी
और तब जो होना था सो हो गया । मगर अब फिर उसने अपने नौकरो
...स करने के वास्ते कहलाया है । अत इस झगडे की समाप्ति के लिए
... में अर्ज कर एक अमीन सरहद निश्चित करने के वास्ते भेजा जावे ।
खां ने अर्ज करके तदनुसार एक अमीन भेज दिया था । उस समय

अमरसिंह पर पागलपन चढा हुआ था, अतएव आश्चर्य नही कि सलावत खां की इस बात को राव करण के प्रति उसका पक्षपात समझ कर ही अमरसिंह ने ऐसा अनुचित काम किया हो।

उस घटना के बाद बादशाह के हुक्म से मीर खां मीर तुजुक[1] और मलूकचंद मुशरिफ[2] ने अमरसिंह की लाश को खिलवतखाने के बाहर दहलीज के आगे रख कर उसके आदमियो को बुलाया, ताकि लाश को अपने डेरे ले जाकर जो करना हो सो करें। इस पर अमरसिंह के 15 सेवक आये, और जब वे उस हाल से अवगत हुए, तब वे कटारें और तलवारें निकाल कर भिड़ गये। मलूकचंद तो मारा गया और मीर खां घायल होकर दूसरी रात में मरा। दरवाजे के बाहर जो गुर्जबरदार अहदी पहरे पर थे, उन्होंने यह हाल देख कर उन लोगो का मार डाला। साथ ही 6 गुर्जबरदार भी मारे गये और 6 घायल हुए। उनकी यह दिलेरी बादशाह के दिल को बुरी लगी। ये सारी बातें ज्ञात होने पर अमरसिंह के यत्किंचित् समझदार नौकर तो रातो-रात अपने वतन को चल दिये, और जो फसादी थे, उन्होंने यह बात ठहराई कि अर्जुन गौड के घर पर, जो अमरसिंह के डेरे के पास था, जाकर उसको मार डालें।

बल्लू राठौड और भावसिंह राठौड भी, जो पहिले अमरसिंह के और उसके बाप के नौकर थे और अब बादशाही सेवक बन गए थे, सिर्फ इसी बहाने से कि उनके तथा इन लोगो के घर पास-पास थे, इस आयोजन मे उनके शामिल होकर लड़ने-मरने को तैयार हुए। जब यह खबर बादशाह को पहुंची, तब कृपा करके उन्होंने फरमाया कि "इन मूर्खों को समझाओ कि अमरसिंह और उसके दूसरे साथी, जो भी इस अपराध मे सम्मिलित थे, अपनी सजा पा चुके हैं। तुमने तो कोई कुसूर भी नही किया है, फिर क्यो अपनी जान और माल को खराब करते हो। हम न्यायपूर्वक हुक्म देते हैं कि कोई तुमसे रोक-टोक नही करेगा। तुम अपने बाल-बच्चो और माल-असबाब लेकर अपने घरो को चले जाओ।" मगर जब देखा कि ये लोग अपनी मूर्खता और हठ के ऊपर जमे हुए हैं, तब हुक्म दिया कि सैयद खानजहां अरदली के आदमियो के साथ और रशीद खां, जिनकी पहरे की बारी है, जाकर उन लोगो को भी उनके सरदार के पास पहुंचावें। जब ये उस जगह पहुंचे जहां कि वे लोग इकट्ठे हो रहे थे, तब उन्होंने इनको देखते ही तलवार की धार को अमृत की धार समझ कर लड़ाई शुरू कर दी और जब तक बदन, हाथ और सांस चलते रहे लड़ते

1. मीर तुजुक—शाही दरबार में तौर-तरीको आदि का निदेशक (मास्टर आफ सेरिमनीज)। (सं०)

2 मुशरिफ—हिसाब-किताब रखने वाला। (सं०)

आकर फमाद करने लगा था।

12 जीकाद (पौष सुदि 14=बुधवार, जनवरी 1, 1645 ई०) को अमर-सिंह के वेटे रायसिंह ने उपस्थित होकर 4 हाथी नजर किये। वादशाह ने उसको वेगुनाह समझ कर खिलअत, हजारी जात—700 सवारो का मनसव इनायत किया।

14 जीकाद (माह वदि 1=शुक्रवार, जनवरी 3, 1645 ई०) को वादशाह दारा शिकोह के मकान पर उसके वेटे सिपहर शिकोह को देखने के लिए गये। शाहजादा ने वादशाह के हुक्म से साथ के अमीरो को खिलअतें दी, जिनमे फरजी सहित खिलअत राजा विट्ठलदास को भी मिली।

24 जीकाद (माह वदि 11=सोमवार, जनवरी 13, 1645 ई०) को सौर मास के हिसाव से वादशाह का तुलादान हुआ, जिसमे भी राजा विट्ठलदास गौड को फरजी समेत खिलअत मिली।

25 जीकाद (माह वदि 12=मगलवार, जनवरी 14, 1645 ई०) को राजा पहाडसिंह ने एक हाथी नजर किया।

लाहोर जाना

26 जीकाद, वुधवार (माह वदि 13=जनवरी 15, 1645 ई०) को वादशाह आगरा से लाहोर को रवाना हुए।

1 जिल्हिज (माह सुदि 3=सोमवार, जनवरी 20, 1645 ई०) को मुकाम रूपावास मे वादशाह ने राजा जसवतसिंह को खासा खिलअत देकर नये सूवेदार शेख फरीद के पहुचने तक आगरा की हिफाजत करने का हुक्म दिया। राय काशीदास को खिलअत इनायत करके आगरा की दीवानी पर भेजा। सूवा विहार के दीवान वेनीदास का भेजा हुआ हाथी वादशाह की नजर से गुजरा।

मथुरा मे वादशाह ने हामू फकीर को, जिसकी धूनी से वेगम साहिव के जख्मो को आराम हुआ था, रुपयो मे तोल कर और एक गाव देकर विदा किया। उस वक्त हाथी, घोडे और खिअलत के सिवाय उसको वहुत से जेवर और जवाह-रात भी वादशाह की, शाहजादो की और वेगम साहिव की सरकार से मिले, और अमीरो ने भी उसे वहुत-कुछ दिया।

10 जिल्हिज (माह सुदि 13=वुधवार, जनवरी 29, 1645 ई०) को वादशाह जनाना समेत मथुरा से किश्तियों मे वैठ कर 21 जिल्हिज (फागुन वदि 8=रविवार, फरवरी 9, 1645 ई०) को दिल्ली पहुचे, और अपने नये वनाये हुए किले मे उतरे। परम्परानुसार हुमायू वादशाह के मकवरे में 5000) रुपये खैरात किये।

मिली। उसके साथ खासा खिलअत, जडाऊ कमर पेटी, सोने की और सुनहरी काम की जीन के दो खासा घोडे राणा के वास्ते भेजे गये।

10 शाबान (आसोज सुदी 11=बुधवार, अक्तूबर 2, 1644 ई०) को बादशाह ने गोवर्धन राठौड को, जो राजा गर्जसिह के योग्य और कार्यक्षम नौकरो मे से था, घोडा और सिरोपाव देकर असीरगढ की किलेदारी पर शिवराम गौड की जगह भेजा।

16 शाबान (कार्तिक बदी 3=मगलवार, अक्तूबर 8, 1644 ई०) को राजा जयसिह के नाम हुक्म लिखा गया कि वतन से दक्षिण जाकर खानदौरा के वापस पहुचने तक, जो दरबार मे बुलाया गया है, उस मुल्क की देख-रेख करे।

20 शाबान (कार्तिक वदि 7=शनिवार, अक्तूबर 12, 1644 ई०) को अलफ खा का बेटा, दौलत खा, पाच सदी जात—200 सवारो के इजाफे से डेढ हजारी जात—1000 सवार का मनसबदार होकर नागोर की जागीरदारी पर भेजा गया, और उसको खिलअत भी मिली।

24 शाबान (कार्तिक वदी 11=बुधवार, अक्तूबर 16, 1644 ई०) को राजा विट्ठलदास अपने वतन से आकर उपस्थित हुआ।

5 शव्वाल (मगसिर वदि 6=सोमवार, नवम्बर 25, 1644 ई०) बेगम साहिब ने स्वस्थ होकर स्नान किया। बादशाह ने इस खुशी मे 8 दिन तक बडी धूमघाम की, और उत्सव करके खूब सोना और जवाहर लुटाये, और अपने बेटा-बेटियो और बेगमो, वगैरह को भी बहुत-कुछ माल-असबाब दिया। इस खुशी मे 20 लाख रुपये व्यय हुए और हजारो रुपये, जो रोज खैरात हुआ करते थे, उनमे कुल मिला कर दो लाख रुपये से ज्यादा खर्च हुए।

बेगम साहिब की सिफारिश से औरगजेब के अपराध माफ हुए और मनसब भी बहाल हो गया, जो 15 हजारी जात—10,000 सवारो का था। उसे एक भारी खिलअत भी मिली।

1000 आदमियो को खिलअतें दी गई और कई एक के मनसब मे भी वृद्धि हुई।

राजा विट्ठलदास को खिलअत, और सुनहरी जीन का खासा घोडा मिला। उसके मनसब मे 500 सवारो का इजाफा भी हुआ, जिससे उसका मनसब 5 हजारी जात—3500 सवारो का हो गया। हरीसिह के भतीजे रूपसिह को खिलअत, हजारी जात—700 सवारो का मनसब मिला। सुजानसिह सीसोदिया को खिलअत, हजारी जात—500 सवारो का मनसब इनायत हुआ।

काबुल से खुश-खबरी पहुची कि वहा के सूबेदार अलीमरदान खा के आदमियो ने बल्ख और बुखारा के खान नजर मुहम्मद खा के नौकर, तरद्दीअली

आकर फसाद करने लगा था।

12 जीकाद (पौष सुदि 14=बुधवार, जनवरी 1, 1645 ई०) को अमर-सिंह के बेटे रायसिंह ने उपस्थित होकर 4 हाथी नजर किये। बादशाह ने उसको बेगुनाह समझ कर खिलअत, हजारी जात—700 सवारो का मनसब इनायत किया।

14 जीकाद (माह वदि 1=शुक्रवार, जनवरी 3, 1645 ई०) को बादशाह दारा शिकोह के मकान पर उसके बेटे सिपहर शिकोह को देखने के लिए गये। शाहजादा ने बादशाह के हुक्म से साथ के अमीरो को खिलअतें दी, जिनमे फरजी सहित खिलअत राजा विट्ठलदास को भी मिली।

24 जीकाद (माह वदि 11=सोमवार, जनवरी 13, 1645 ई०) को सौर मास के हिसाब से बादशाह का तुलादान हुआ, जिसमें भी राजा विट्ठलदास गौड को फरजी समेत खिलअत मिली।

25 जीकाद (माह वदि 12=मगलवार, जनवरी 14, 1645 ई०) को राजा पहाडसिंह ने एक हाथी नजर किया।

लाहोर जाना

26 जीकाद, बुधवार (माह वदि 13=जनवरी 15, 1645 ई०) को बादशाह आगरा से लाहोर को रवाना हुए।

1 जिल्हिज (माह सुदि 3=सोमवार, जनवरी 20, 1645 ई०) को मुकाम रूपावास मे बादशाह ने राजा जसवतसिंह को खासा खिलअत देकर नये सूबेदार शेख फरीद के पहुचने तक आगरा की हिफाजत करने का हुक्म दिया। राय काशीदास को खिलअत इनायत करके आगरा की दीवानी पर भेजा। सूबा बिहार के दीवान बेनीदास का भेजा हुआ हाथी बादशाह की नजर से गुजरा।

मथुरा मे बादशाह ने हामू फकीर को, जिसकी धूनी से बेगम साहिब के जख्मो को आराम हुआ था, रुपयो मे तोल कर और एक गाव देकर बिदा किया। उस वक्त हाथी, घोड़े और खिअलत के सिवाय उसको बहुत से जेवर और जवाह-रात भी बादशाह की, शाहजादो की और बेगम साहिब की सरकार से मिले, और अमीरो ने भी उसे बहुत-कुछ दिया।

10 जिल्हिज (माह सुदि 13=बुधवार, जनवरी 29, 1645 ई०) को बादशाह जनाना समेत मथुरा से किश्तियों मे बैठ कर 21 जिल्हिज (फागुन वदि 8=रविवार, फरवरी 9, 1645 ई०) को दिल्ली पहुचे, और अपने नये बनाये हुए किले मे उतरे। परम्परानुसार हुमायू बादशाह के मकबरे मे 5000) रुपये खैरात किये।

29 जिल्हिज (फागुन सुदि 1=सोमवार, फरवरी 17, 1645 ई०) को वादशाह ने शाहजादा औरगजेब और उसके बेटो मुहम्मद सुलतान और मुहम्मद मुअज्जम को भारी-भारी खिलअत, हाथी और घोडे इनायत करके गुजरात की सूवेदारी पर भेजा।

21 मुहर्रम, सोमवार, (चैत बदि 8=मार्च 10, 1645 ई०) को नौरोज के दरवार मे राय टोडरमल को खिलअत हथनी सहित प्रदान की।

2 सफर (चैत सुदि 4=शुक्रवार, मार्च 21, 1645 ई०) को बादशाह ने लाहोर पहुच कर वाग फैजबख्श और फरहबख्श मे डेरे किये, और किलेदारी की खिलअत राठौड महेशदास को दी।

लाहोर में कुछ समय से नदी के किनारे पर सगमरमर की इमारत तैयार हो रही थी। बादशाह उसको देख कर 6 सफर (चैत सुदी 8=मगलवार, मार्च 25, 1645 ई०) को काश्मीर के लिए रवाना हो गये और असालत खा मीरवख्शी को हुक्म हुआ कि कावुल जाकर वह और अलीमरदान खा दोनो बल्ख और वदख्शा की मुहिम का सामान तैयार करें।

12 सफर (चैत सुदि पहिली 15=सोमवार, मार्च 31, 1645 ई०) को खानदौरा वहादुर नसरतजग की अर्ज से, जो लाहोर मे उपस्थित हो गया था, दौलतावाद के किलेदार पृथ्वीराज राठौड का मनसव 2 हजारी—2000 सवार का हो गया।

1 रवी-उल्-अव्वल (वैसाख सुदि 3=शुक्रवार, अप्रैल 18, 1645 ई०) को बादशाह काश्मीर मे पहुचे। कुतुवुल्मुल्क और आदिल खा के वकील अपने-अपने मुल्क से सालाना पेशकश लेकर उपस्थित हुए।

20 रवी-उस्-सानी (आसाढ वदि 6=गुरुवार, जून 5, 1645 ई०) को कावुल से अलीमरदान खा की अर्जी वल्ख और वदख्शा की मुहिम के वास्ते मदद भेजने के वारे मे आई, जिस पर वादशाह ने राजा जगतसिंह को खिलअत, मीनाकार साज की तलवार और चादी की जीन का घोडा देकर उस तरफ रवाना किया। और भी कई मनसवदारो के नाम हुक्म लिखे कि 1000 सवार और 2000 पैदल लेकर वे लाहोर से कावुल को रवाना हो। उनमे राजा रायसिंह, पहाडसिंह और माधोसिंह हाडा भी थे। राजा रायसिंह के हुक्म मे इतनी वात अधिक थी कि नकदी पाने वाले सेवको के वेतन के वास्ते 20 लाख रुपया भी लाहोर के खजाने मे लेता जावे।

1 जमादि-उल्-अव्वल (आसाढ सुदि 3=सोमवार, जून 16, 1645 ई०) को वादशाह ने चुनार और रोहतास के किलो समेत इलाहावाद का सूवा शाहजादा दारा शिकोह को इनायत करके उसका मनसव असल और इजाफे से 20 हजारी — 20,000 सवार का कर दिया, जिनमे 10,000 दो-अस्पा और

से-अस्पा थे।

खानदौरा बहादुर नसरतजग बादशाह के पास से अपने काम से दक्षिण के सूबे को रवाना हुआ था। 6 जमादि 'उल्-अव्वल, शनिवार, (आसाढ सुदि 7=शुक्रवार, जून 20, 1645 ई०) की रात मे लाहोर मे वह काश्मीरी ब्राह्मण के हाथ मे बहुत घायल हुआ, जिसको उसने मुसलमान बना कर अपना नौकर रक्खा था। अंत मे 8 जमादि-उल्-अव्वल (आसाढ सुदि 9=रविवार, जून 22, 1945 ई०) की रात मे खानदौरा मर गया। उसकी वसीयत के अनुसार उसके पुत्रों को देने के बाद 60 लाख रुपया बादशाही खजाने में जमा हुआ। उसका मनसब 7 हजारी—7 हजार सवार का था, जिसका वेतन 30 लाख रुपये सालाना था और वह दक्षिण के चारों सूबों (दौलताबाद, बरार, खानदेश, तिलगाना) का हाकिम था। उसकी जगह इस्लाम खा नियुक्त हुआ, और उसकी अनुपस्थिति मे कार्यवाहक के रूप में राजा जयसिह काम करता था, अत. उसको खासा खिलअत भेजी गई।

7 जमादि-उल्-अव्वल (आसाढ सुदि 9=रविवार, जून 22, 1645 ई०) को राजा जसवतसिह के नाम हुक्म लिखा गया कि बादशाह के वहा पहुचने तक वह लाहोर पहुच जावे।

12 जमादि-उल्-अव्वल (आसाढ सुदि 14=शुक्रवार, जून 27, 1645 ई०) को दूदा सीसोदिया का पोता, ईश्वरदास का बेटा हमीरसिह, जो राणा जगत-सिह के राजपूतो मे से था, नौकरी की आशा से राणा के पास से बादशाह के दरबार मे उपस्थित हुआ। बादशाह ने उसको खिलअत देकर पाच सदी जात—300 सवारो का मनसब प्रदान किया।

जुलूसी सन् उन्नीसवां

(जुलाई 15, 1645 ई० से जुलाई 4, 1646 ई० तक)

3 जमादि-उस्-सानी (सावन सुदि 5=गुरुवार, जुलाई 17, 1645 ई०) को बादशाह ने इस्लाम खा को 6 हजारी—6000 सवार का मनसब देकर काश्मीर से दक्षिण के चारो सूबो की हुकूमत पर रवाना किया।

8 जमादि-उस्-सानी (सावन सुदि 9=मगलवार, जुलाई 22, 1645 ई०) को खानदौरा बहादुर नसरतजग का नौकर राठौड गोविददास पाच सदी जात 200 सवारो का मनसबदार हुआ।

शाहजादा शुजा का बेटा बुलद अख्तर किश्तवार के राजा कुवरसेन की बेटी

से बंगाल में पैदा हुआ ।

बल्ख की मुहिम

दो महीने पहिले गोरबंद के थानेदार खलील बेग ने बल्ख के मालिक नजर मुहम्मद खां और उसके बेटे अब्दुल अजीज खां की आपस मे लड़ाई चलते देख कर काबुल के सूबेदार अलीमरदान खां की अनुमति से कहमर्द का किला फतह कर लिया था, जिसको एक महीने बाद ही बादशाही किलेदारों का वध करके नजर मुहम्मद खां के आदमियों ने वापिस ले लिया। तब पहिले तो अली-मरदान खां ने मीर बख्शी असालत खां को साथ लेकर कहमर्द के ऊपर जाने के विचार से कूच किया। मगर फिर मार्ग की कठिनाइयों और नजर मुहम्मद खां का निकट होना सुन कर बदख्शां फतह करने के लिए उसने बाग मोड़ी। लेकिन तब वहां के भी मार्ग की तंगी और कठिनाइयों का हाल सुन कर मीर बख्शी को 10,000 सवारों के साथ उधर रवाना किया। वह कई मंजिल-तक लूट-मार कर के पीछा लौट आया। बादशाह ने इस बात को पसंद नहीं किया, और अलीमरदान खां को लिखा कि खाती, बेलदार और संगतराश भेज कर रास्ता चौड़ा करे। असालत खां और निजाबत खां के नाम वापिस लौट आने का हुक्म लिखा। रायसिंह को हुक्म दिया कि "राजपूतों के साथ अटक पर जाकर जाड़े का मौसम वहीं बिताओ"। इसी तरह दूसरी सेनाओं के लिए भी जगह-जगह ठहरने के आदेश हुए।

राजा जगतसिंह की बल्ख के ऊपर चढ़ाई

राजा जगतसिंह ने बादशाह से प्रार्थना की थी कि "मैं चाहता हूं कि कोई सेवा कार्य कर दिखाऊं और तूल के मार्ग से, जो सब से अच्छा मार्ग बदख्शां जाने का है, वहां पहुंच कर खोस्त, सराब और इंदराब के किलों को जीत कर उस क्षेत्र की जातियों को अधिकार मे कर लूं। जो कोई आदेश न माने उसको सजा दूं। इसी वास्ते मैंने बहुत से सवार और पैदल अपने वतन से बुला लिये हैं। इन मे से जितने भी मेरे मनसब से ज्यादा हों, उनका वेतन सरकार से मिलना चाहिए।" बादशाह ने अलीमरदान खां की सिफारिश से उसकी यह प्रार्थना स्वीकार करके राजा जगतसिंह के अतिरिक्त 1500 सवार और 2000 पैदलों का वेतन काबुल के खजाने से देना तय कर दिया। राजा फौज का सामान और दूसरी जरूरी बातों का बंदोबस्त करके, 5 रमजान (कार्तिक सुदि दूसरी 6 = गुरुवार, अक्तूबर 16, 1645 ई०) को अलीमरदान खां से विदा हुआ। तूल की घाटी से निकल कर उसने अपनी सेना के दो हिस्से किये। एक हिस्से को तो अपने बेटे भावसिंह के साथ हरावल करके रवाना किया

और दूसरे को स्वय लेकर वह खोस्त को लूटने को रवाना हुआ। जव वहा के सरदारो को यह हाल मालूम हुआ तो तीन-चार कोस सामने आकर राजा से मिले और शाही सेवा स्वीकार करके निवेदन किया कि "यदि कोई वादशाही सेवक यहा किला वना कर रहना शुरू करें तो हम लोग सेवा करने को तैयार हैं। यदि सेवा नही करें तो निस्सदेह वे हमारे घर लूट लें।" राजा भी यही चाहता था। इसलिए उसने वहा थाना वैठा कर डेरा कर दिया। और उन लोगो को वादशाही सहयोग से आशान्वित करके किला वनाने के वास्ते उपयुक्त जगह पूछी। उन्होंने कहा कि "यदि मराव और इदराव के वीच मे किला वनाया जावे तो खोस्त सहित वे दोनो भी मजवूत हो जावेंगे।" दूसरे दिन राजा कूच करके उन के साथ मराव गया। वहा के लोगों ने भी उपस्थित होकर शाही सेवा स्वीकार कर ली। वर्फ वरसने के कारण तीन दिन वहा ठहर कर राजा चौथे दिन इदराव को रवाना हुआ, जहा उसने मराव और इदराव के वीच मे वहा वहुतायत से प्राप्य लकडियो का एक मजवूत किला वनाया, और उसके ऊपर पत्थर के वुर्ज वना कर दो वडे कुए किले मे खुदाये। इसी समयातर मे काशग जाति के कलमाक और कुछ उजवक, जिनको कि नजर मुहम्मद खा ने राजा से लडने के लिए भेजा था, वहा आ पहुचे और उनके दो तुग हो गये, एक मे सवार थे और दूसरे मे पैदल। राजा के किरावलो[1] ने जव यह खवर दी, तव राजा ने भी किले से निकल कर अपनी फौज के तीन हिस्से किये और घाटे के दोनो नाको को, जहा से शत्रु प्रवेश कर सकते थे, वडे-वडे लक्कडो से वद करके वहा केवल इतनी सी ही गली रहने दी कि जिसमे से एक सवार भी कठनाई से निकल सके। उन लक्कडो के पीछे दोनो तरफ वदूकची और तीरदाज तैनात करके एक तरफ स्वय भी लडने के वास्ते खडा हो गया। दूसरी तरफ अपने वेटे भावसिंह को भेजा। कुछ वदूकची हजारा जाति के पैदलो का सामना करने के लिए रवाना किये, जो पहाड के ऊपर चढ गये थे। जव उजवको की तीनो सेनाए तीन तरफ से आ पहुची, तव राजा और उसके वेटे ने दो तरफ से उनके ऊपर तीर और वदूकें चलानी शुरू की। उजवको ने हिन्दुस्तानियो के समक्ष सामना करने मे स्वय को असमर्थ पाया और हार कर वे भाग गये। कुछ वदूकची पहाड के ऊपर चढ गये थे, उन्होंने भी वदूको की मार से हजारा जाति के प्यादो से किले के वरावर वाला मोरचा छीन लिया और पीछा करके उन लोगो को पहाड़ से नीचे उतार दिया। तव तो राजा की वदूको की गोलियो की पहुच से वाहर होकर उजवक लोग वहा पुन: एकत्रित हुए। राजा ने अपनी दोनो फौजो और पैदलो को भी

1 सेना के आगे-आगे चलने वाले वे सिपाही, जो शत्रु सेना की गतिविधियों की खवर देते रहते हैं। (स०)

से बंगाल में पैदा हुआ।

बल्ख की मुहिम

दो महीने पहिले गोरबंद के थानेदार खलील बेग ने बल्ख के मालिक नजर मुहम्मद खां और उसके बेटे अब्दुल अजीज खां की आपस में लड़ाई चलते देख कर काबुल के सूबेदार अलीमरदान खां की अनुमति से कहमर्द का किला फतह कर लिया था, जिसको एक महीने बाद ही बादशाही किलेदारों का वध करके नजर मुहम्मद खां के आदमियों ने वापिस ले लिया। तब पहिले तो अली-मरदान खां ने मीर बख्शी असालत खां को साथ लेकर कहमर्द के ऊपर जाने के विचार से कूच किया। मगर फिर मार्ग की कठिनाइयों और नजर मुहम्मद खां का निकट होना सुन कर बदख्शां फतह करने के लिए उसने बाग मोड़ी। लेकिन तब वहां के भी मार्ग की तंगी और कठिनाइयों का हाल सुन कर मीर बख्शी को 10,000 सवारों के साथ उधर रवाना किया। वह कई मंजिल तक लूट-मार कर के पीछा लौट आया। बादशाह ने इस बात को पसंद नहीं किया, और अलीमरदान खां को लिखा कि खाती, बेलदार और मिनारवट भेज कर रास्ता चौड़ा करे। असालत खां और निजाबत खां के नाम वापिस लौट आने का हुक्म लिखा। रायसिंह को हुक्म दिया कि "राजपूतों के साथ अटक पर जाकर जाड़े का मौसम वहीं बिताओ"। इसी तरह दूसरी सेनाओं के लिए भी जगह-जगह ठहरने के आदेश हुए।

राजा जगतसिंह की बल्ख के ऊपर चढ़ाई

राजा जगतसिंह ने बादशाह से प्रार्थना की थी कि "मैं चाहता हूं कि कोई सेवा कार्य कर दिखाऊं और तूल के मार्ग से, जो सब से अच्छा मार्ग बदख्शां जाने का है, वहां पहुंच कर खोस्त, सराब और इंदराब के किलों को जीत कर उस क्षेत्र की जातियों को अधिकार में कर लूं। जो कोई आदेश न माने उसको सजा दूं। इसी वास्ते मैंने बहुत से सवार और पैदल अपने वतन से बुला लिये हैं। इन में से जितने भी मेरे मनसब से ज्यादा हों, उनका वेतन सरकार से मिलना चाहिए।" बादशाह ने अलीमरदान खां की सिफारिश से उसकी यह प्रार्थना स्वीकार करके राजा जगतसिंह के अतिरिक्त 1500 सवार और 2000 पैदलों का वेतन काबुल के खजाने से देना तय कर दिया। राजा फौज का सामान और दूसरी जरूरी बातों का बंदोबस्त करके, 5 रमजान (कार्तिक सुदि दूसरी 6= गुरुवार, अक्तूबर 16, 1645 ई०)को अलीमरदान खां से विदा हुआ। तूल की घाटी से निकल कर उसने अपनी सेना के दो हिस्से किये। एक हिस्से को तो अपने बेटे भावसिंह के साथ हरावल करके रवाना किया

दरबार का हाल

4 शाबान (आसोज सुदि 5=सोमवार, सितम्बर 15, 1645 ई०) को बादशाह काश्मीर से लौटे।

8 शाबान (आसोज सुदि 9=शुक्रवार, सितम्बर 19, 1645 ई०) को हीरापुर पड़ाव मे किस्तवार के राजा कुवरसेन का मनसब असल और इजाफे से हजारी जात—400 सवारो का हो गया। साथ ही उसे घर जाने की छुट्टी मिली।

15 रमजान (मगसिर वदि 2=रविवार, अक्तूबर 26, 1645 ई०) को बादशाह लाहोर पहुचे। शाहजादा मुराद मुलतान से आ गया था। राजा जसवतसिह ने, जो वतन मे उपस्थित हुआ था, और लाहोर के किलेदार महेशदास राठोड ने भी उपस्थित होकर मुजरा किया।

8 शव्वाल (मगसिर सुदि 9=सोमवार, नवम्बर 17, 1645 ई०) को रायसिह झाला को हजारी जात—600 सवारो का मनसब मिला।

14 शव्वाल (मगसिर सुदि 15=रविवार, नवम्बर 23, 1645 ई०) को राय टोडरमल पाच सदी जात—200 सवार दो-अस्पा और से-अस्पा के इजाफे से डेढ हजारी जात—1200 दो-अस्पा और से-अस्पा सवारो का मनसवदार हो गया। तब वह सरहिंद के लिए रवाना हुआ।

18 शव्वाल (पोष वदि 5=गुरुवार, नवम्बर 27, 1645 ई०) को राजा जयराम का मनसब डेढ हजारी जात—1000 सवारो का हो गया। रूपसिंह राठोड का मनसब हजारी जात—हजार सवार का हो गया। गोकुलदास सीसोदिया का मनसब हजारी जात—800 सवारो का हो गया।

22 शव्वाल (पोष वदि 9=सोमवार, दिसम्बर 1,1645 ई०) को महेशदास राठोड असल और इजाफे से हजारी जात—500 सवारो का मनसबदार हो गया।

29 शव्वाल (पोष वदि 30=सोमवार, दिसम्बर 8, 1645 ई०) को जहागीर बादशाह की सुप्रसिद्ध बेगम नूरजहा का लाहोर मे स्वर्गवास हो गया। इसको 2 लाख रुपये सालाना मिलते थे।

4 जिल्हिज (माह सुदि 5=सोमवार, जनवरी 12, 1646 ई०) को नजर मुहम्मद खा का राजदूत 30,000 रुपये की पेशकश लेकर वल्ख मे आया। सादुल्ला खा का मनसब 6 हजारी जात—दो हजार सवारो का हो गया।

14 जिल्हिज (फागुन वदि 1=गुरुवार, जनवरी 22, 1646 ई०) को तुलादान के दरबार मे अमीरो के मनसबो का जो इजाफा हुआ, उसमे राजा विट्ठलदास गौड का मनसब 500 सवारो के इजाफे से 5 हजारी जात—

बुला कर तब संपूर्ण सेना के साथ उन पर अचानक हमला किया । खूब लड़ाई हुई, जिसमे शत्रु के बहुत से आदमी मारे गये और कुछ बादशाही सैनिक भी काम आये । उजबको ने जब इन वीर योद्धाओ की बहादुरी देखी तो लड़ने मे कोई लाभ न देख कर वे अपने-अपने घरो को लौट गये। राजा ने यह हाल अलीमरदान खा को लिख कर अपने किले के वास्ते सीसा-बारूद मगवाया और कुछ और भी मदद चाही। अलीमरदान खा ने उसी के बेटे राजरूप के साथ सीसा-बारूद भेज कर तीन-चार हजार सवार भी सूबा काबुल के मददगारो और अपने नौकरो मे से जुलकदर और अलीबेग वगैरह के साथ रवाना किये ।

23 रमजान (मगसिर बदि 9 रविवार, नवम्बर 3, 1645 ई०) को रात के वक्त उजबको के 2000 सवार और हजारा जाति के बहुत से पैदल और कपश कलमाक उन लोगो के ऊपर आ गिरे, जिनको कि राजा ने रास्ते की देख-रेख और घाटे की सुरक्षा के लिए रक्खा था। इस लड़ाई मे भी दोनो तरफ के कुछ बहादुर आदमी काम आये। पुन लड़ाई हार कर उजबक बड़ी घबराहट से भाग गये।

फिर अपने लकड़ी के किले की सुरक्षा और रसद वगैरह का बदोबस्त करके अपने विश्वासपात्र राजपूतो के आधीन 500 बदूकची और 400 राजपूतो को किले की सुरक्षा के लिए छोड़ कर राजा 25 रमजान (मगसिर बदि 12= बुधवार, नवम्बर 5, 1645 ई०) को परदे की घाटी से पचशेर की तरफ रवाना हुआ। मगर बर्फ और हवा के कष्टो के कारण बहुत से आदमी और घोड़े मर गये, और सेना घाटी पार नही कर सकी। उसे नि सहाय वह रात रास्ते मे ही बड़ी असुविधा के साथ व्यतीत करनी पड़ी । दूसरे दिन प्रात काल मे ही वहा से लौट कर एक ऐसी जगह, जहा कि लकड़ी बहुत थी, उसने मुकाम किया। यहा दूसरे तैनातियो से पहिले अलीमरदान खा का गुलाम फरैदू अलीमरदान खा के आदमियो को लेकर राजा से आ मिला । उजबक मौका देख कर लड़ने को आये। राजा आप तो फौज के बीच मे रहा और अपने बड़े बेटे राजरूप और फरैदू को हरावल में रक्खा। लड़ाई मे बहुत से उजबक मारे गये। और बाकी मैदान छोड़ कर भाग गये। बादशाही सेना ने दो कोस तक उनका पीछा किया । इस डर से कि कही किले वाले उनका रास्ता नही रोक लें, उजबक भाग कर अपने-अपने घरो को चले गये। इस लड़ाई मे कुछ राजपूत और दूसरे आदमी काम आये। उस दिन तो राजा ने किले के नीचे डेरा किया। दूसरे दिन तूल के रास्ते मे रवाना होकर घाटी से नीचे उतर आया और सुबह मे बर्फ के पहाड़ मे, जिसका बर्फ इधर दो-तीन दिन मे कम हो गया था, गुजर कर पचशेर की सरहद मे पहुचा।

दरबार का हाल

4 शाबान (आसोज सुदि 5=सोमवार, सितम्बर 15, 1645 ई०) को बादशाह काश्मीर से लौटे।

8 शाबान (आसोज सुदि 9=शुक्रवार, सितम्बर 19, 1645 ई०) को हीरापुर पड़ाव मे किस्तवार के राजा कुवरसेन का मनसव असल और इजाफे से हजारी जात—400 सवारो का हो गया। साथ ही उसे घर जाने की छुट्टी मिली।

15 रमजान (मगसिर वदि 2=रविवार, अक्तूबर 26, 1645 ई०) को बादशाह लाहोर पहुचे। शाहजादा मुराद मुलतान से आ गया था। राजा जसवतसिंह ने, जो वतन से उपस्थित हुआ था, और लाहोर के किलेदार महेशदास राठोड ने भी उपस्थित होकर मुजरा किया।

8 शव्वाल (मगसिर सुदि 9=सोमवार, नवम्बर 17, 1645 ई०) को रायसिह झाला को हजारी जात—600 सवारो का मनसव मिला।

14 शव्वाल (मगसिर सुदि 15=रविवार, नवम्बर 23, 1645 ई०) को राय टोडरमल पाच सदी जात —200 सवार दो-अस्पा और से-अस्पा के इजाफे से डेढ हजारी जात —1200 दो-अस्पा और से-अस्पा सवारो का मनसवदार हो गया। तब वह सरहिंद के लिए रवाना हुआ।

18 शव्वाल (पौष वदि 5=गुरुवार, नवम्बर 27, 1645 ई०) को राजा जयराम का मनसव डेढ हजारी जात—1000 सवारो का हो गया। रूपसिह राठोड का मनसव हजारी जात—हजार सवार का हो गया। गोकुलदास सीसो-दिया का मनसव हजारी जात—800 सवारो का हो गया।

22 शव्वाल (पौष वदि 9=सोमवार, दिसम्बर 1, 1645 ई०) को महेशदास राठोड असल और इजाफे से हजारी जात—500 सवारो का मनसवदार हो गया।

29 शव्वाल (पौष वदि 30=सोमवार, दिसम्बर 8, 1645 ई०) को जहागीर बादशाह की सुप्रसिद्ध बेगम नूरजहा का लाहोर मे स्वर्गवास हो गया। इसको 2 लाख रुपये सालाना मिलते थे।

4 जिल्हिज (माह सुदि 5=सोमवार, जनवरी 12, 1646 ई०) को नजर मुहम्मद खा का राजदूत 30,000 रुपये की पेशकश लेकर बल्ख से आया। सादुल्ला खा का मनसव 6 हजारी जात—दो हजार सवारो का हो गया।

14 जिल्हिज (फागुन वदि 1=गुरुवार, जनवरी 22, 1646 ई०) को तुलादान के दरबार मे अमीरो के मनसवो का जो इजाफा हुआ, उसमे राजा विट्ठलदास गौड का मनसव 500 सवारो के इजाफे से 5 हजारी जात—

4 हजार सवारो का हो गया। राजा पहाडसिंह बुदेला के हजार सवार दो-अस्पा और से-अस्पा हो गये, जिससे उसका मनसब 3 हजारी जात—3000 सवार दो-अस्पा और से-अस्पा का हो गया। महेशदास राठौड का मनसब पाच सदी जात के इजाफे से ढाई हजारी जात—2 हजार सवारो का हो गया। राजा विट्ठलदास के बेटे अनिरुद्ध का मनसब पाच सदी जात के इजाफे से हजारी जात—700 सवारो का हो गया।

24 जिल्हिज (फागुन बदि 11=रविवार, फरवरी 1, 1646 ई०) को अर्ज हुई कि राजा जगतसिंह पेशावर मे मर गया। बादशाह ने उसके बडे बेटे राजरूप को खिलअत भेज कर उसका मनसब असल और इजाफे से डेढ हजारी जात—1000 सवारो का कर दिया, राजा का खिताब और वतन भी उसको प्रदान कर दिया गया। लकडी का जो किला, उसके बाप ने सराब और इदराब मे बनाया था, उसका बदोबस्त भी उसी को सौंप दिया और उसके बाप को जो अतिरिक्त 1500 सवार और 2000 पैदल दिये गये थे, उनमे से 1500 सवार और 2000 पैदल का वेतन काबुल के खजाने मे से दिये जाने का आदेश दिया गया।

बल्ख और बदख्शा की चढ़ाई

30 जिल्हिज (फागुन सुदि 2=शनिवार, फरवरी 7, 1646 ई०) को बादशाह ने शाहजादा मुराद को 50 000 सवार और 10,000 पैदल, तोपची और बरकदाज वगैरह और 7 लाख रुपये का खजाना देकर लाहौर मे बहुत से अमीरो और राजाओ के साथ बल्ख और बदख्शा फतह करने के लिए रवाना किया। इस फौज मे इतने राजपूत सरदार थे —

1 राजा विट्ठलदास गौड, 2 राव शत्रुसाल हाडा, 3 माधोसिंह हाडा, 4 महेशदास, दलपत राठौड का बेटा, 5 शिवराम गौड, 6 रूपसिंह, किशनसिंह राठौड का पोता 7 रामसिंह राठौड, 8 मोहकमसिंह, 9. गोपालदास, 10 गोकुलदास सीसोदिया, 11 गिरधरदास गौड, 12 राजा अमरसिंह नरवर का, 13 रायसिंह झाला, 14 अर्जुन गौड, 15 महेशदास राठौड दूसरा, (सूरजमल चापावत का पुत्र), 16 सुजानसिंह सीसोदिया, 17 किशनसिंह तवर, 18 राव रूपसिंह चन्द्रावत, 19 कृपाराम गौड, 20 उग्रसेन 21 इन्द्रमाल, 22 तिलोकचद, 23 चन्द्रभान नरूका 24 सग्राम कछवाहा, 25 हमीरसिंह सीसोदिया, 26 पृथ्वीसिंह कछवाहा, 27 प्रेमचद, राय मनोहर का पोता, 28 दानीदास मेडतिया, 29 गोविन्द-दास खानदौरानी, 30 बल्लू चौहान, और 31. राव नारायणदास सीसो-दिया।

इस हरावल मे 480 अमीर और मनसवदार थे और उसका मुख्य सेनापति राजा विट्ठलदास था।

दाहिनी ओर की फौज मे 460 अमीर और मनसवदार थे, और हिन्दू राजाओ मे से उसमे सिर्फ राजा देवीसिंह बुंदेला था।

बायी ओर की फौज में 250 अमीर और मनसबदार थे। इसमे कोई हिन्दू सरदार नही था।

गोल (बीच की) फौज मे शाहजादा और 400 अमीर थे। उनमे भी कोई हिन्दू अमीर नही था।

तरह (अर्थात् दाहिने हाथ की मददगार) फौज में 369 अमीर और मनसवदार थे। उसमे हिन्दू अमीर थे —

1 राजा रायसिंह, महाराज भीम का बेटा, 2 राजा जयराम, राजा अनूप सिंह का बेटा, 3 राजा राजरूप, 4 जगराम, 5 राजा वहरोज, 6 चतुरभुज चौहान, 7 अजबसिंह, राव शत्रुसाल का बेटा, और 8 किशनसिंह कछवाहा।

बायें हाथ की मददगार फौज मे 205 अमीर और मनसवदार थे, उनमें राजपूत सरदार राजा पहाड़सिंह बुंदेला, चद्रमन बुंदेला और भोजराज थे।

विदा होते वक्त राव शत्रुसाल को खासा खिलअत, जड़ाऊ जमधर और घोड़ा इनायत हुए। शिवराम गौड़, रूपसिंह राठौड़, रामसिंह राठौड़, गोकुलदास सीसोदिया, गिरधरदास, राजा अमरसिंह नरवरी, रायसिंह झाला और अर्जुन गौड़ को खिलअत और घोड़े मिले। राव रूपसिंह चद्रावत का मनसव हजारी जात—1000 सवार का और रायसिंह झाला का हजारी जात—700 सवार का असल और इजाफे से हो गया।

वहा अकाल पड़ने के कारण लाहोर के लोग अपने बेटो को बेचते थे। बादशाह ने आदेश दिया कि जो कोई अपना बेटा बेचे, उसकी कीमत सरकार से उसको दे दें और बेटा भी उसको सौंप देवें। 200 रुपये का खाना हर रोज दस जगह तैयार करके गरीबो को खिलावें।

18 सफर (वैसाख वदि 5=गुरुवार, मार्च 26, 1646 ई०) को बादशाह ने रत्न और साढे तीन लाख रुपये की हिन्दुस्तान की सौगातें देकर जानिसार खा को ईरान रवाना किया।

तारागढ पर कब्जा

बादशाह ने राजा जगतसिंह के मरने के बाद कागड़ा पहाड़ की तलहटी के फौजदार मुर्शिदकुली खा को हुक्म लिखा था कि राजा के उत्तराधिकारियो को खबर होने से पहले ही तारागढ के किले मे अमल कर लें, क्योंकि ऐसे मजबूत किले का उपद्रवी जमीदारों के हाथ में रहना उचित नहीं है। पुन·

17 सफर (बैसाख बदि 4=बुधवार, मार्च 25, 1646 ई०) को फिदाई खा के नाम भी आदेश पहुचा कि बहुत जल्दी वहा पहुच कर इस कार्य के लिए विशेष प्रयत्न करे। फिदाई खा के पहुचने से 12 दिन पहिले ही मुर्शिदकुली खा ने तारागढ पर अधिकार कर लिया था। जब फिदाई खा वहा पहुचा, तब वह किला उसको सौंप करके वह अपनी जगह पीछा चला गया। बादशाह ने यह खबर सुन कर तारागढ की किलेदारी पर बहादुर कबू को भेजा।

बादशाह का काबुल जाना

18 सफर, गुरुवार, (वैसाख बदि 5=मार्च 26, 1646 ई०) को बादशाह लाहोर से काबुल को रवाना हुए।

24 सफर (वैशाख बदि 11=बुधवार, अप्रेल 1, 1646 ई०) को राजा जयसिंह के बेटे कुवर रामसिंह ने 500 सवारो के साथ अपने वतन से दरबार मे उपस्थित होकर एक हाथी नजर किया। बादशाह ने उसको खिलअत हजारी जात -1000 सवार का मनसब प्रदान किया।

3 रबी-उल-अव्वल (बैसाख सुदि 5=शुक्रवार, अप्रेल 10, 1646 ई०) को चिनाव नदी के किनारे पर राजा जसवतसिह को जडाऊ जमधर फूल कटारे सहित और सोने के साज का घोडा मिले।

15 रबी-उल-अव्वल (जेठ बदि 3=बुधवार, अप्रेल 22, 1646 ई०) को कुवर रामसिह को सुनहरी जीन का घोडा इनायत हुआ।

5 रबी-उस् सानी (जेठ सुदि 7=सोमवार, मई 11, 1646 ई०) को बादशाह पेशावर पहुचे।

9 रबी-उस-सानी (जेठ सुदि 11=शुक्रवार, मई 15, 1646 ई०) को शाहजादा मुराद बख्श, जो तब तक पेशावर मे ठहरा हुआ था, काबुल पहुचा। राजा विट्ठलदास भी बहुत से राजपूतो के साथ बगश के घाटे से गुजर कर शाहजादा के पास काबुल में उपस्थित हुआ।

8 रबी-उस्-सानी (जेठ सुदि 10= गुरुवार, मई 14, 1646 ई०) को पेशावर मे चन्द्रमास के हिसाब से बादशाह की सालगिरह का तुलादान हुआ। उसकी खुशी मे राजा जसवतसिंह के और 1000 सवार दो-अस्पा से-अस्पा हो गये। यो अब उसका मनसब पाच हजारी जात- 5000 सवार हो गया, जिनमें 2000 सवार दो-अस्पा से-अस्पा थे।

महेशदास राठोड पाच सदी जात के इजाफे से 3 हजारी जात—2000 सवार का मनसबदार हो गया और उसको नक्कारा भी मिला।

9 रबी-उस्-सानी (जेठ सुदि 11=शुक्रवार, मई 15, 1646 ई०) को बादशाह ने पेशावर से कूच किया और आदेश दिया कि राजा जसवतसिंह

और कुवर रामसिंह बादशाही सेना से एक मजिल आगे चला करें, ताकि सेना आसानी के साथ खैबर के घाटे और दूसरे तग रास्तो से गुजर सके।

यह नियम था कि जिस मनसबदार की जिस किसी सूबे म जागीर होती और वह उसी सूबे मे नियुक्त होता तो अपने मनसब के तीसरे हिस्से के सवारो का दाग कराता था, जेसे 3 हजारी जात—3000 सवार वाला 1000 सवारो का दाग कराता था । इधर जब वह हिन्दुस्तान के किसी भी दूसरे सूबे मे लडाई पर जाता तो अपने मनसब के चौथे हिस्से के सवारो को दाग के वास्ते हाजिर करता था, यानी 4 हजारी जात—4000 सवार का मनसबदार 1000 सवारो के दाग दिलाता था। मगर अब बल्ख और बदख्शा पर फौजें भेजी गईं, और ये मुल्क हिन्दुस्तान से बहुत दूर थे, इसलिए बादशाह ने यह हुक्म दिया कि जब तक यह मुहिम रहे, मनसबदार अपने मनसब के पाचवें हिस्से के सवारो को दाग दिलावें, यानी पच हजारी मनसबदार के यदि 5000 सवार होवें तो वह हजार का दाग करावे। से-अस्पा, दो-अस्पा और एक-अस्पा के दाग का यह अनुपात निश्चित हुआ —

हासिल जागीर	से-अस्पा	दो-अस्पा	एक-अस्पा	कुल
12 महीने का	300	600	100	1000
11 महीने का	250	500	250	1000
10 महीने का	0	800	200	1000
9 महीने का	0	600	400	1000
8 महीने का	0	450	550	1000
7 महीने का	0	250	750	1000
6 महीने का	0	100	900	1000
5 महीने का	0	0	1000	1000

पुन जिसके मनसब के सवार दो-अस्पा और से-अस्पा हो गये हो तो वह ऊपर लिखे दो-अस्पा और से-अस्पा सवारो मे दूने दाग करावे, जैसे पाच हजारी—पाच हजार दो-अस्पा और से-अस्पा वाला मनसबदार, जिसकी जागीर की आमदनी भी 12 महीने की हो, 600 सवार से-अस्पा और 1200 दो-अस्पा और 200 एक-अस्पा दाग करावे। इसी पर बाकी के मनसबदारो को समझ लेना चाहिये।

इसी तरह नकदी के मनसबदारो, अहदी तीरदाजो, बरकदाज सवारो, पैदल बदूकचियो और दूसरे शागिर्द पेशा के लोगो को तीन महीने का वेतन देने का आदेश हुआ। जिन जागीरदारो की आमदनी दाग के बराबर थी, यानी उतनी ही थी कि जितने उनके घोडे के दाग लगते थे, उनको भी उनके

आमदनी का चौथा हिस्सा, जो कि तीन महीने के वेतन के बराबर होता है, खजाने से अग्रिम दिलाया गया, ताकि उनको खर्च की तकलीफ न हो।

18 रबी-उस्-सानी (आषाढ वदि 5=रविवार, मई 24, 1646 ई०) को बहादुर खा और राजा विट्ठलदास हरावल फौज के साथ काबुल से बदख्शा को रवाना हुए और तीन दिन बाद शाहजादे ने भी कूच किया।

22 रबी-उस्-सानी (आसाढ वदि 9=गुरुवार, मई 28, 1646 ई०) को बादशाह काबुल पहुचे। राजा जसवतसिह और सादुल्ला खा वजीर पेशवाई को आये, क्योकि वे पहिले ही वहा पहुच गये थे।

26 रबी-उस्-सानी (आसाढ़ बदि 13=सोमवार, जून 1, 1646 ई०) पृथ्वीराज राठोड की जगह सम्रादन खा दौलताबाद का किलेदार नियुक्त हुआ। पृथ्वीराज के नाम लिखा गया कि वह आगरा पहुच कर बाकी खा के साथ मिल कर आगरा के किले की रखवाली करे।

राजा जयसिह के वेटे कुवर रामसिह को मोतियो की माला इनायत हुई।

27 रबी-उस्-सानी (आसाढ बदि 14=मगलवार, जून 2, 1646 ई०) को हरावल सेना गुलबहार पहुची। बहादुर खा और राजा विट्ठलदास ने अपने सभी आदमियो को मजदूरो के शामिल बर्फ उठाने मे लगा कर रास्ता साफ किया।

1 जमादि-उल्-अव्वल (आसाढ सुदि 2=शुक्रवार, जून 5, 1646 ई०) को असालत खा, 2 जमादि-उल्-अव्वल (आसाढ सुदि 3=शनिवार, जून 6, 1646 ई०) को बहादुर खा तथा राजा विट्ठलदास, और 8 जमादि-उल्-अव्वल (आसाढ सुदि 10=शुक्रवार, जून 12, 1646 ई०) को शाहजादा मुराद तथा अलीमरदान खा तूल के घाटे से गुजरे। बादशाही हुकूमत यही तक थी।

शाहजादे ने दाहिनी-बाई फौजों को कहमर्द और गोरी को जीतने के वास्ते भेजा था। अत खलील वेग ने 10 जमादि-उल-अव्वल (आसाढ सुदि 12= रविवार, जून 14, 1646 ई० को कहमर्द का किला खोजम शकूर से ले लिया। मिर्जा नोजर, राजा देवीसिह और राजा पहाडसिह, वगैरह गोरी के किले पर गये थे। उनमे से गजनफर ने आक्रमण के लिए पहिले आगे बढ कर के फुवाद मीर आखोर से लड कर 20 जमादि-उल्-अव्वल (पहला सावन वदि 6=बुधवार, जून 24, 1646 ई०) को वह किला फतह कर लिया।

नजर मुहम्मद खा का बेटा खुसरो तब कुदुज मे था। वह अलमान जाति के लुटेरो से तग होकर शाहजादे के पास आया। शाहजादे ने उसको बादशाह की सेवा मे रवाना किया।

शाहजादा मुराद 20 जमादि-उल्-अव्वल (पहला सावन वदि 6=बुधवार, जून 24, 1646 ई०) को कुदुज पहुचा। अलमान लोग तमाम मुल्क और शहर को लूट कर जामे मस्जिद को जला कर चले गये। राजा राजरूप को कुदुज किले मे छोड कर 21 जमादि-उल्-अव्वल (पहिला सावन वदि 7= गुरुवार, जून 25, 1646 ई०) को शाहजादा वलख की तरफ रवाना हुआ और 2 लाख रुपया राजा को खर्च के वास्ते दे गया।

25 जमादि-उल्-अव्वल (पहिला सावन वदि 11=सोमवार, जून 29, 1646 ई०) को खुसरो वादशाह के पास कावुल पहुचा। वादशाह ने उसको एक लाख रुपया और इसके साथ दूसरे असवाव और हाथी, घोडे देकर 6 हजारी जात—2000 सवारो का मनसव इनायत किया।

27 जमादि-उल्-अव्वल (पहिला सावन वदि 14=बुधवार, जुलाई 1, 1646 ई०) को शाहजादा वलख के पास पहुचा।

28 जमादि-उल्-अव्वल, गरुवार, (पहिला सावन वदि 30=जुलाई 2, 1646 ई०) को शाहजादे ने वलख के किले पर अधिकार कर लिया। नजर मुहम्मद खा, जिसको वादशाह ने लिखा था कि "हमारी फौज तुम्हारी मदद के लिए आ रही है", और जो शाहजादे से मिलने तैयार बैठा था, डर कर भाग गया। शाहजादे ने वहादुर खा और असालत खा को उसके पीछे भेजा। राजा विट्ठलदास को और सभी राजपूतो को हरावल सहित अपने पास रख लिया। महेशदास, रूपसिंह और कई दूसरे राजपूत वहादुरी और लडाई के शौक मे शाहजादे की आज्ञा लिये विना ही वहादुर खा और असालत खा के साथ चले गये।

नजर मुहम्मद खा का 12 लाख रुपये का माल, ढाई हजार घोडे-घोडिया और 300 ऊटनिया और ऊट जब्त हुए।

जुलूसी सन् वीसवा

(जुलाई 5, 1646 ई० से जून 23, 1647 ई० तक)

वलख और वदख्शा की पैदा

वलख की आमदनी अमन और आवादी के जमाने मे 15 लाख और वदख्शा की 10 लाख के करीव थी। मगर इस युद्ध मे हुई वरवादी के कारण पहिले वरस आधी के करीव और दूसरे वरस केवल चौथाई के लगभग ही आई।

इतनी ही आमदनी 'मावर-उल्-नहर' प्रदेश (बुखारा, समरकद वगैरह) की भी थी, जो नजर मुहम्मद खा के बेटे अब्दुल अजीज खा के पास था और अभिलेखो के अनुसार दोनो विलायतो के कुल सवार 7000 के करीब थे।

3 जमादि-उस्-सानी (पहिला सावन सुदि 5=मगलवार, जुलाई 7, 1646 ई०) को बल्ख मे बादशाह के नाम का खुतबा पढा गया। बादशाह ने इस विजय की खुशी आठ रोज तक बडी धूमधाम से मनाई।

उजबको पर फहत

2 जमादि-उस्-सानी (पहिला सावन सुदि 4=सोमवार, जुलाई 6, 1646 ई०) को जब बहादुर खा और असालत खा गाव गोती मे पहुचे, तब उनको मालूम हुआ कि वहा से सात कोस पर शेरगान मे नजर मुहम्मद खा उजबको और अलमानो से मिल कर लडने का इरादा कर रहा है। इन्होने भी उससे लडने की तैयारी करके अपनी फौज इस तरह सजाई कि वे दोनो तो बीच मे रहे और बहादुर खा के चाचा नेकनाम को राजपूतो के साथ हरावल में रक्खा और कहा कि वे उनके आगे-आगे पक्ति बाधे चलें। राजपूत उसकी दाहिनी तरफ रहे और सैयद बाईं तरफ। ये वे ही राजपूत थे, जो शाहजादे और अलीमरदान खा मे कहे बिना ही अपनी बहादुरी दिखलाने के वास्ते उनके साथ चले आये थे। उनके नाम इस प्रकार हैं —

1 महेशदास राठौड, 2 रूपसिंह राठौड, 3 रामसिंह राठौड, 4 राव रूपसिंह चन्द्रावत, 5 राजा अमरसिंह राजावत, 6 महेशदास दूसरा, जो पहिले राजा गजसिंह के पास रहता था, 7 राय तिलोकचद शेखावत, 8. सग्रामसिंह राजावत, 9 गोविन्ददास खानदोरानी, और 10 बल्लू चौहान।

असालत खा के पास गोल (मध्य की सेना) में इतने राजपूत सरदार थे —

1 राजा जयराम, 1 जगराम, हरदेराम कछवाहे का बेटा, 3 अजबसिंह, शत्रुसाल का बेटा, 4 चतुरभुज, लक्ष्मीसेन चौहान का पोता, और 5 चन्द्रभान नरूका।

नजर मुहम्मद खा के पास शेरगान में 10,000 उजबक और अलमान थे। बादशाही सेना का आगमन सुन कर उनमें से अधिकाश अदखूद को चले गये। तथापि नजर मुहम्मद खा शेरगान से बढ कर लडने को आया। मगर युद्ध के समय उसके साथ वाले बाणो और बदूको की मार से घबरा कर भाग निकले और खान भी मुह मोड कर अदखूद को चला गया। कुछ साथी उसके बेटे सुभान कुली को लेकर चारजूई की तरफ चल दिये। शेरगान पर बाद-

8 जमादि-उस्-सानी (पहला सावन सुद 10=रविवार, जुलाई 12, 1646 ई०) को यह खबर सुन कर बादशाह ने अमीरों के मनसब बढ़ाये। उनमें महेशदास राठोड को खिलअत मिली और 500 सवारो का इजाफा हुआ, जिससे उसका मनसब 3 हजारी जात—2500 सवारो का हो गया। राजा जयराम को खिलअत मिली। उसका मनसब भी असल और इजाफे से डेढ हजारी जात—1200 सवारो का हो गया। रूपसिंह राठोड रामसिंह राठोड और राव रूपसिंह चन्द्रावत को खिलअतें मिली, और प्रत्येक का मनसब असल और इजाफे से डेढ हजारी जात—हजार सवार का हो गया। राजा गजसिंह के नायब महेशदास राठोड का मनसब असल और इजाफे से हजारी जात—600 सवार का हो गया। उसको खिलअत भी मिली। इसी तरह शत्रुसाल के वेटे अजबसिंह, चतुरभुज चौहान, चन्द्रभान नरूका, राजा मानसिंह के पोते संग्रामसिंह, वल्लू चौहान, गोविन्ददास खानदौरानी के भी मनसब वढे।

23 जमादि-उस्-सानी (दूसरा सावन वदी 10=सोमवार, जुलाई 27, 1646 ई०) को राजा राजरूप को जडाऊ जमधर तथा मोतियों के कुंडल इनायत हुए, और पाच सदी जात—500 सवारो का इजाफा भी हुआ, जिससे उसका मनसव 2 हजारी जात—1500 सवारो का हो गया।

अव शाहजादा मुराद इस मुल्क से घवरा गया था और उसने कई अर्जिया वादशाह को भेजी कि "मुझको दरवार में वुला लें", जिससे बादशाह ने अप्रसन्न होकर 26 जमादि-उस्-सानी (दूसरा सावन वदि 13=गुरुवार, जुलाई 30, 1646 ई०) को सादुल्ला खा वजीर को वल्ख रवाना किया। उसने 8 रजव (दूसरा सावन सुदि 10=सोमवार, अगस्त 10, 1646 ई०) को वहा पहुंच कर शाहजादा को समझाया, परन्तु जब लौट जाने के बारे में उसका दृढ निश्चय देखा तव वजीर ने अमीरो को उसके डेरे पर जाने से मना कर दिया। वल्ख की सूवेदारी असालत खा और वहादुर खा को दी। वदख्शा की सूवेदारी कुलीच खा को सौंपी। राजा पहाडसिंह, राजा देवीसिंह और चन्द्रभान वुदेला को तो दूसरे अमीरो के साथ पाच हजार सवारो सहित अदखूद को रवाना किया, और उग्रसेन कछवाहा को कलना और गुरगान की हिफाजत और हुकूमत पर वजीर ने भेजा। इसी तरह और भी कई हाकिम और थानेदार जगह-जगह नियुक्त करके 22 दिन मे उसने इन नये जीते हुए मुल्कों का सारा वदोवस्त कर दिया।

वदख्शां का हाल

21 जमादि-उस्-सानी (दूसरा सावन वदि 8=शनिवार, जुलाई 25, 1646 ई०) को जब राजा राजरूप ने कहुज मे सुना कि बहुत से अलमान जेहू नदी के

आब ख्वाजा पाक नामक एक खाडी से उतर कर इधर आ रहे हैं, तब उसने तुरन्त अपने कुछ विश्वस्त राजपूतो को आगे हरावल बना कर रवाना कर दिया। पुन वहा कुदुज किले का बदोबस्त करके सैयद असदुल्ला, सैयद बाकिर और दूसरे अहदियो के साथ वह स्वय भी हरावल के पीछे ही चल पडा। अलमानो ने अभी कई घसियारो को, जो सिपाहियो के वास्ते जगल मे घास-लकडी लेने गये थे, मारा था कि यह फौज वहा जा पहुची और वे भागते ही नजर आये। उनका पीछा करता हुआ राजा दो कोस गया था कि उनकी दूसरी टुकडी ने जो पहाडियो और घाटियो मे छुपी हुई थी, बाहर निकल कर उस पर आक्रमण किया। परन्तु जब उनके कई आदमी मारे गये, तब बाकी के भी भाग गये।

यो जीत कर राजा लौटा। दो-तीन दिन बाद सुना कि वे भागे हुए अलमान आस्ताने इमाम गये है और कुछ दूसरे भी उनसे आ मिले हैं। वे पुन कुदुज के ऊपर आने का विचार कर रहे हैं। सेना के गुप्तचरो ने उनकी सख्या पाच-छ हजार सवारो की बताई थी और राजा के पास जो फौज थी वह थोडी थी। इसलिए उसने मैदान की लडाई लडना अहितकर समझा और शहर को बचाना जरूरी समझा, जो बादशाही अमीरो के न्याय और आभार से आबाद हो गया था, क्योकि बदख्शा की बहुत सी प्रजा अलमानो के जुल्म से त्रस्त होकर वहा आ बसी थी। राजा ने कुछ अहदियो और बदूकचियो और बुदेले पैदलो को तो किले की रखवाली पर रखा और राजपूतो को इस काम पर नियुक्त किया कि जिधर अलमानो की भीड देखें सहायतार्थ पहुच जावे। वह स्वय भी रात-दिन लडाई के लिए तत्पर रहता था।

3 रजब (दूसरा सावन सुदि 5=बुधवार, अगस्त 5, 1646 ई०) को शाह मुहम्मद वगैरह कई व्यक्ति, जो कौम कतान के अधिकारी थे, पाच-छ हजार सवार लेकर तीन तरफ से शहर के ऊपर आए। कोई पहर भर तक तीर मारते रहे। मगर फिर भाग कर आब ख्वाजा पाक से उतरे और आस्ताने इमाम को लौट गये।

अदखूद के हाकिम रुस्तम खा को भी ख्वाजा दो कोह के पास अलमानो से मुकाबला करना पडा। उस दिन राजा देवीसिह हरावल मे था। अलमान सैनिक छावनी से ऊटो की एक कतार पकड ले गए। राजा ने पीछा करके वह कतार उनसे छुडा ली। इस पर 1500 अलमान, जो पहाड के पीछे बैठे थे, तीन तरफ से राजा के ऊपर दौड पडे। राजा के पास 200 से अधिक सवार न थे, तो भी उसने जम कर उनका सामना किया और बहुत से अलमानो को मारा। उसके भी बहुत से साथी और विशेषत सबधी मारे गये। राजा की जान पर भी आ बनी थी और उसने भी बहादुरी से मरने की ठान ली

थी कि उसी समय उसका एक सवार दौडा हुआ मुहम्मद कासिम के पास पहुचा, जो रुस्तम खा की तरफ से हरावल और चन्द्रावल की हिफाजत पर तव रखा गया था। मुहम्मद कासिम तुरत रवाना होकर ठीक वक्त पर राजा के पास आ पहुचा। तव तो उसको देखते ही दुश्मन भाग गये।

नजर मुहम्मद खां का निकल जाना

नजर मुहम्मद खा लडाई हार कर मर्व गया। वहा से इस्फहान (ईरान को) रवाना हुआ। यह सुन कर वादशाह ने उसको 'उज्र-माजिरत' (शिष्टाचारी) करके लिखा कि "तुम्हारे कुटुम्वियो को जहा कहो वहा तुम्हारे पास भिजवा देवे।" यह लेख-पत्र मीर अब्दुल अजीज के साथ उसे भेजा। जव मीर ईरान पहुचा, तव नजर मुहम्मद खा तो वहा से खुरासान को चल दिया था। अत शाह ईरान ने मीर को ठहरा कर ईद (जिल्हिज 10) के दिन (माह सुदि 11=गुरुवार, जनवरी 7, 1647 ई०) उससे मुलाकात की।

मीर की अर्जी से नजर मुहम्मद खा के साथ भेंट नही हो सकने का हाल मालूम होने पर वादशाह ने मीर को लौट आने का आदेश लिख भेजा।

दरवार का हाल

15 रजव (भादो वदि 1=सोमवार, अगस्त 17, 1646 ई०) को राजा राजरूप के मनसव मे 500 सवारो का इजाफा हुआ, जिससे वह दो हजारी जात—2000 सवार का मनसवदार हो गया।

16 रजव (भादो वदि 2=मगलवार, अगस्त 18, 1646 ई०) को राजा जसवतसिंह को खासा तवेले से सोने के साज का एक घोडा इनायत हुआ।

21 रजव (भादो वदि 7=रविवार, अगस्त 23, 1646 ई०) को वादशाह ने आकिल खा के हाथ 25 लाख रुपये वल्ख को फिर भिजवाए। राजा जगतसिंह का वेटा वहादुरसिंह भी उसके साथ जाने के लिए नियुक्त हुआ।

22 रजव (भादो वदि 8=सोमवार, अगस्त 24 1646 ई०) को शाह-जादा मुराद-वख्श कावुल आया। मगर वादशाह ने उसको दरवार मे आने से मना कर दिया।

28 रजव (भादो वदि 30=रविवार, अगस्त 30, 1646 ई०) को नजर मुहम्मद खा की औरतो, वेटिया, वेटे और पोते, जो वल्ख में थे, उन सव को लेकर राजा विट्ठलदास गौड और महेशदास राठौड कावुल मे उपस्थित हुए, क्योंकि वादशाह ने सादुल्ला खा वजीर ने कह दिया था कि "नजर मुहम्मद खा की औरतो और लडको-वालो को राजा विट्ठलदास, महेशदास राठौड, खलीलुल्लाह खा और लुहरास्प, वगैरह के साथ हमारे पास भेज

देना।" अब जो वे आए तो बादशाह ने उन सब के ऊपर बहुत अधिक कृपा और परवरिश की।

5 शाबान (भादो सुदि 6=शनिवार, सितम्बर 5, 1646 ई०) को सादुल्ला खा भी बल्ख से आ गया।

बादशाह ने 5 लाख रुपये के खर्च से काबुल मे दौलतखाना बनाया और पुराने महलो और बागो की भी मरम्मत कराई।

9 शाबान (भादो सुदि 10=बुधवार, सितम्बर 9, 1646 ई०) को बादशाह ने काबुल से लाहोर की तरफ कूच किया और बल्ख-बदख्शा का फतह-नामा शाह ईरान के पास एक जडाऊ तलवार के साथ भेजा। जो अमीर बल्ख के सूबे मे नियुक्त हुए थे, उनके मनसब बढाये गये। उनमे से राजा किशनसिंह राठौड के पोते रूपसिंह और रामसिंह राठौड पाच-पाच सदी जात के इजाफ़े से 2 हजारी जात—2000 सवारो के मनसबदार हो गये। राजा जयराम का मनसब असल और इजाफे से डेढ हजारी जात—1500 सवारो का हो गया। गोकुलदास सीसोदिया पाच सदी जात के इजाफे से डेढ हजारी जात—800 सवारो का मनसबदार हो गया। भोजराज खगार, नारायणदास सीसोदिया केसरीसिंह महाबत-खानी और सारगदेव के बेटे पृथ्वीराज के मनसब मे भी वृद्धि हुई।

28 शाबान (आसोज वदि 30=सोमवार, सितम्बर 28, 1646 ई०) को पेशावर मे बादशाह ने राजा जयसिंह के बडे बेटे, रामसिंह को खिलअत और सुनहरी जीन का घोडा देकर वतन जाने की छुट्ठी दी, क्योंकि राजा को दक्षिण से बुलाया गया था।

8 रमजान (आसोज सुदि 9=गुरुवार, अक्तूबर 8, 1646) ई० को भट (झेलम) नदी के ऊपर डेरे हुए। वहा सूबा आगरा के दीवान राय काशीदास को बगाल की दीवानी पर जाने का आदेश लिखा गया।

23 रमजान (कार्तिक वदि 10=शुक्रवार, अक्तूबर 23,1646 ई०) को चिनाव नदी के ऊपर मुकाम हुआ। वहा जयराम का मनसब पाच सदी जात के इजाफे से हजारी जात—500सवारो का हो गया।

8 शव्वाल (कार्तिक सुदि पहिली 10=शनिवार, नवम्बर 7,1646 ई०) को बादशाह लाहोर पहुचे। राजा विट्ठलदास का मनसब इजाफा होकर पाच हजारी जात—5000 सवारो का हो गया। गिरधरदास गौड का मनसब असल और इजाफे से हजारी जात —800 सवारो का हो गया। उसको खिलअत भी मिली और उसे आगरा की क़िलेदारी पर बाकी खा की शामिलात मे काम करने को भेजा गया।

19 शव्वाल (मगसिर वदि 6=बुधवार, नवम्बर 18, 1646 ई०) को आगरे

का पहिले का किलेदार राठौड पृथ्वीराज वहा से 1 करोड रुपयो का खजाना, जो वादशाह ने मगवाया था, लेकर लाहोर मे उपस्थित हुआ।

8 जीकाद (मगसिर सुदि 9=रविवार, दिसम्बर 6, 1646 ई०) को शाहजादा मुराद का मनसव 12 हजारी था, वह तो यथावत् रहा, परतु सवारो मे से सिर्फ 1000 सवार कम हुए। पहिले 10,000 थे, अब 9000 रहे।

उजवको के हमले

वजीर सादुल्ला खा के चले जाने पर उजवको ने जगह जगह लूट-मार मचा दी। वल्ख का सूवेदार वहादुर खा दो-तीन वार जाकर उनसे लडा। एक वार वहादुर खा ने गोरी का खजाना लाने के वास्ते कुछ आदमी भेजे थे। उजवको ने उनका रास्ता रोक लिया। तव वहादुर खा ने राजा जयराम, गोपालसिह, राय तिलोकचद और जगराम वगैरह राजपूत सरदारो और कुछ मुगलो को भेजा। उन्होंने उजवको को मार भगाया। फिर अलमानो ने जमा होकर शेरगान के किलेदार जव्वार कुली को घेर लिया। राजा देवीसिह और तुर्क ताजर खा ने, जो रुस्तम खा से आदेश प्राप्त किये विना ही अदखूद मे वल्ख को रवाना हुए थे, किलेदार की सहायता कर अलमानो को भगा दिया।

दरवार का हाल

14 जिल्हिज (माह वदि 1=सोमवार, जनवरी 11, 1647 ई०) को राणा जगतसिह का वकील वलराम नूतन विजयो की वधाई की अर्जी और पेशकश लेकर उपस्थित हुआ। वादशाह ने राणा की पेशकश मे से सोने के साज का एक घोडा नजर मुहम्मद खा के वेटे खुसरो को प्रदान किया। कुछ दिनो वाद वलराम को घोडा और खिलअत देकर जाने की अनुमति दी। उसके साथ राणा और राणा के वडे वेटे कुवर राजसिह के वास्ते खिलअत और सोने की जीन के घोडे भेजे।

23 जिल्हिज (माह वदि 10=वुधवार, जनवरी 20, 1647 ई०) को शाहजादा औरगजेव गुजरात मे आया।

24 जिल्हिज (माह वदि 11=गुरुवार, जनवरी 21, 1647 ई०) को वल्ख और वदख्शा की विलायत शाहजादा औरगजेव को इनायत हुई और उनके लिए 5 लाख रुपये वल्ख भेजने निश्चय हुआ था। इसलिए पृथ्वीराज को खिलअत और चादी की जीन का घोडा प्रदान करके उसे आदेश दिया कि उस खजाने को अपनी सुरक्षा मे लेकर वह शाहजादे से पहिले ही रवाना हो जावे।

इस समय वुखारा मे वडी मरी[1] फैली हुई थी और लाहौर मे काल था।

1 ऐसा व्यापक और संक्रामक रोग, जिसमे एक साथ वहुत से लोग मरते है। (स०)

1 मुहर्रम (माह सुदि 3=गुरुवार, जनवरी 28, 1647 ई०) को बादशाह ने 30,000 रुपये गरीबो को बांटने के लिए दिये। इसी दिन सुजानसिंह सीसोदिया का मनसब पांच सदी जात के इजाफे से डेढ़ हजारी जात—500 सवारो का हो गया।

नजर मुहम्मद खा के बेटे अब्दुल अजीज खा के बुखारा से बलख पर आने की खबर सुनकर 15 मुहर्रम (फागुन बदि 2=गुरुवार, फरवरी 11, 1647 ई०) को बादशाह ने शाहजादा औरगजेब को बिदा किया। चलते वक्त उस को बहुत सा जेवर और जवाहर इनायत करके 5 लाख रुपये नकद भी इनाम मे दिये। बादशाह ने यह भी आदेश दिया कि पेशावर मे ठहर कर बसत ऋतु के शुरू मे अलीमरदान खा, राजा रायसिंह, राव शत्रुसाल, नजर बहादुर खेशगी, राव रूपसिंह चन्द्रावत, राजा अमरसिंह राजावत, वगैरह के साथ, जो बलख और बदख्शा को छोड कर पेशावर मे आ गये थे, और जिन को अटक पार नही आने का आदेश था, वे बलख को रवाना होवें। रावत दयालदास झाला भी शाहजादा के साथ नियुक्त हुआ। रवानगी के वक्त उसको भी घोडा मिला।

27 मुहर्रम (फागुन बदि 14=मगलवार, फरवरी 23, 1647 ई०) को बादशाह ने चबा के जमीदार पृथ्वीचद को खिलअत और चादी की जीन का घोडा देकर घर जाने की छुट्टी दी। शाहजादा दारा शिकोह के दीवान राय बिहारीमल को हजारी जात—डेढ़ सो सवार का मनसब इनायत हुआ।

महेशदास राठौड़ का मरना

9 सफर (फागुन सुदि 11=रविवार, मार्च 7, 1647 ई०) को राजा सूरजसिंह के भाई दलपत के बेटे महेशदास का स्वर्गवास हो गया। 'बादशाह-नामा' मे लिखा है कि "वह काम देखे हुए और लडाइया किये हुए विश्वासपात्र आदमियो मे से था। जब दौलतखाना खास मे उपस्थित होता था तो बादशाह के आदेश से तख्त के पीछे उस सदली (चौकी) के पास खडा रहता था, जिस पर कि बादशाह का खासा तरकश और तलवार रखी रहती है, और जो तख्त से 10 गज की दूरी पर रखी जाती है। सवारी मे भी वह बादशाह के पीछे-पीछे 20 गज की दूरी पर रहता था। बादशाह ने फरमाया कि 'वह किसी लडाई मे काम आना चाहिये था कि बहुत आदमी उसके साथ मारे जाते।' उसके उत्तराधिकारियो को खिलअत दिये। बडा बेटा रतन जालोर मे था, उसका मनसब बढा कर डेढ हजारी—डेढ़ हजार सवार का कर दिया, ताकि उसके बाप की जमैयत तितर बितर नही होने पावे।"

वादशाह का काबुल जाना

18 सफर (चैत वदि 6=मगलवार, मार्च 16, 1647 ई०) को वादशाह लाहोर से कावुल को रवाना हुए, क्योकि नजर मुहम्मद खा के वेटे अब्दुल अजीज खां के बुखारा से वल्ख पर आने के समाचार वहुत फैल चुके थे।

16 रवी-उल्-अव्वल (वैसाख वदि 3=सोमवार, अप्रेल 12, 1647 ई०) को वादशाह ने शिवराम को खिलअत देकर अली मसजिद से कावुल के किले की हिफाजत के लिए रवाना किया। इसी दिन राजा विट्ठलदास को खासा तवेले से सुनहरी जीन का घोडा इनायत हुआ।

26 रवी-उल्-अव्वल (वैसाख वदि 13=गुरुवार, अप्रेल 22, 1647 ई०) को वादशाह ने कावुल के पास वाग सफा में पहुच कर राव रतन हाडा के वेटे माधोसिह, रूपसिह राठौड और रामसिह राठौड को, जो वल्ख मे थे, रूपहरी जीन के घोड़े भेजे।

वल्ख में लड़ाई

12 मुहर्रम (माह सुदि 13=सोमवार, फरवरी 8, 1647 ई०) को पहर रात रहे वहुत से अलमान अचानक कलता के किले पर चढ़ आये। कलता और गुरगान के थानेदार उग्रसेन कछवाहा नरूका ने यह खवर वल्ख भेजी। साथ ही उसकी सहायतार्थ वहा नियुक्त वादशाही मनसवदारो व वंदूकचियो को साथ लेकर वह किले से वाहर निकला और उनको भगा दिया। इस घटना के समाचार प्राप्त होते ही वहादुर खा ने राजा जयराम, रूपसिह राठौड, गोकुलदास सीसोदिया और दूसरे वादशाही सेवको को अपने चाचा नेकनाम और अपने 2000 सवारो के साथ अलमानो के ऊपर भेजा। कलता पहुच कर ये मोमनावाद की ओर रवाना हुए, जिस तरफ वे लोग गये थे। इधर जव उन्होने इनके आने का सुना, तव वे अलमान जेहू नदी के पार उतर गये। तव तो ये भी वल्ख को वापस लौट आये।

25 मुहर्रम (फागुन वदि 12=रविवार, फरवरी 21, 1647 ई०) को वहुत से अलमान जेहू के घाट नीलगू से उतर कर शेरगान के पास से गुजरते हुए, शेरम और सरपुल की तरफ गये। वहादुर खां ने यह खवर पाकर राजा देवीसिह, राजा जयराम, रूपसिह राठौड़, रामसिह राठौड, मोतमद खां मीर आतिश, गोकुलदास सीसोदिया, अलावल तरीन, गोपालसिह, महेशदास राठौड, जगराम कछवाहा और अपने चाचा नेकनाम को अपने 2000 सवारो के साथ उनके मुकावले पर भेजा। ये लोग दिन की पिछली घडियो मे आकचा पहुचे ही थे कि शेरम और सरपुल से वहुत से घोडे, ऊट, गाय और वकरी

इन्होंने अलमानों का पीछा करना प्रारभ कर दिया। दो पहर रात और ढाई पहर दिन बराबर चल कर वे उनके ऊपर जा पहुचे। दोनो के मध्य लडाई हुई। बहुत से अलमानो को मार कर वे गाय और बकरी वगैरह छीन लाये। रात को जेहू के किनारे पर ठहरे थे। वही पर एक घडी रात गये अलमानो के पाच-छ हजार सवार फिर नदी से उतर आये और लडने लगे। मगर अत मे अलमान पराजित हो गये। उनके कई व्यक्ति मारे गये। बादशाही सेवक विजयी होकर लौट आये।

बदख्शां मे लड़ाई

7 रबी-उल्-अव्वल (चैत सुदि 9=शनिवार, अप्रेल 3, 1647 ई०) को कुलीच खा को खबर पहुची कि कई हजार अलमान जेहू नदी से उतर कर तालकान शहर के ऊपर आने वाले हैं। उस वक्त राजा राजरूप मिलने आया हुआ था। बहादुर खा ने उसकी और दूसरे सरदारो की सलाह से शहर मे ही मोरचाबदी करके लडने का इरादा किया, क्योकि दुश्मनो के अधिक शक्तिशाली होने की बात सुनी गई थी।

19 रबी-उल् अव्वल (वैसाख वदि 6=गुरुवार, अप्रेल 15, 1647 ई०) को 10–12 सरदारो के नेतृत्व मे 10–12 हजार तुरकी और कतगान वगैरह आये। राजा राजरूप तो किले के बाहर जहा वह उतरा था, अपनी फौज सजा कर खडा हो गया, और तब दूसरे अधिकारी भी बाहर आये। इधर तो लडाई शुरू हुई, और उधर कुछ लोग बादशाही घोडो को ले जाने लगे। अहदाद मुहम्मद ने उनके ऊपर हमला किया। उसको दुश्मनो ने घेर लिया। राजा यह देख कर फौरन दौडा और नूरुलहमन भी राजा की सहायतार्थ वहा गया। कुलीच खा ने कहलाया कि "इस वक्त शहर से दूर जाना उचित नही है" लेकिन उन्होने बहादुरी के जोश मे कुछ खयाल नही किया। राजा ने अहदाद को तो बचा लिया, मगर उसके ऊपर चारो तरफ से बहुत सारे अलमान आ गिरे। उस वक्त बडी भारी लडाई हुई, जिसमे राजा का हरावल, उदया (? ओपा) जो राजा की ही जाति का था, काम आया। उसके साथ राजा के और भी बहुत से आदमी मारे गये। राजा के भी तीन जख्म लगे और उसका घोडा तीर से घायल होकर गिर पडा। नूरुलहमन और अहदाद मुहम्मद भी घायल हुए। राजा लडता हुआ शहर की तरफ लौटा। आगे एक बाग की गली आ गई। राजा के कोतवाल ने दीवार पर चढ कर तीरो और बदूको की मार से राजा और नूरुलहमन का दुश्मनो से पीछा छुडाया। तदनन्तर उजबको ने कई दिनो तक शहर के पास लडाई जारी रखी। साथ ही नहर तोड कर पानी भी बद कर दिया। इधर बादशाही सेवको ने भी उनके

मुकावले में कमी न की। आखिर गनीम 22 रवी-उल्-अव्वल (वैसाख वदि 9=रविवार, अप्रेल 18, 1647 ई०) को विजय की आशा छोड़ कर वहा से वापिस चले गये। तव राजा राजरूप और नूरुलहसन ने कुलीच खा से कहा कि "तुम भी कुदुज चले जाओ, क्योकि तालकान मे पानी का भरोसा नही है।" कुलीच खा ने तो फरखार जाना पसद किया। अत राजा को ही कुदुज की सुरक्षा के लिए उस तरफ जाना पडा। उपर्युक्त लडाई मे राजा के अधिकाश साथी मारे गये थे, और अत्यल्प सहयोगी ही शेष वचे थे। इसलिए नूरुलहसन उसको पहुचाने को आया। उधर कुलीच खा फरखार गया, और वहा से अश्कमश जाकर उस किले की मरम्मत की ओर वही रहने लगा।

6 रवी-उल्-अव्वल (चैत सुदि 8=शुक्रवार, अप्रेल 2, 1647 ई०) को पाच-छ हजार अलमान अब्दुल अजीज खा के कहने से अली मगूल के झरने पर गये। वहादुर खा ने असालत खा को राजा पहाडसिह और राजा जयराम के साथ उनके विरुद्ध भेजा। उन्होने जाकर उनसे लूट का माल छीन लिया और उनके वहुत से आदमियो को मार डाला।

8 रवी-उल्-अव्वल (चैत सुदि 10=रविवार, अप्रेल 4, 1647 ई०) को अब्दुल अजीज खा के भेजे हुए 15000 सवार खानावाद के थाने पर चढ़ाई कर आये। वहादुर खा असालत खा को वल्ख मे छोड कर स्वय उनका मुका-वला करने के लिए रवाना हुआ। यह सुन कर वे वहा से चले गये। वहादुर खा ने इमाम वकरी के पुल पर पहुच कर गनीमो की खवर लाने के लिए कुछ आदमी भेजे। इतने मे उसने सुना कि असालत खा 22 रवी-उल्-अव्वल (वैसाख वदि 9=रविवार, अप्रेल 18, 1647 ई०) को रवाना हो गया है, तो वहादुर खा ने रामसिह राठोड और अजवसिह कछवाहा को भेज कर कहा कि मोहकमसिह सीसोदिया और पहलवान दरवेश से मिल कर किले की सुरक्षा करें। अलमान जेहू नदी से उतर गये और अब्दुल अजीज खा करशी से उस तरफ वढ़ रहा था, और वेग ओगली उसके आगे-आगे चला आ रहा था। यह सुन कर वहादुर खा लड़ाई की तैयारी के वास्ते वल्ख को लौट आया।

नजर मुहम्मद खा शेरगान से मर्व और मर्व से जगल के रास्ते मेशहद होकर इस्फहान गया। शाह ईरान ने पेशवाई करके घोडे पर मुलाकात की। शहर के दरवाजे से एक कोस तक रगीन और रेशमी कपडे विछे हुए थे। शाह ने खान का वडा ही आदर-सत्कार किया। दोनो एक गद्दी पर वैठे। खान 15 दिन वहा रहा। तदनन्तर यद्यपि शाह की फौज को गुप्तरूप से आदेश था कि वह हेरात से आगे नही वढे, फिर भी वह किसी तरह उसे लेकर मेशहद आया। फौज को हेरात मे ही एकत्र रहने को कह कर वह वहा

से मर्व गया। मर्व से चेचकतू पहुच कर उसने अपने बेटे कतलक सुल्तान को उजवको के पास भेजा, और मेमना किले को फतह करने को 400 सवार भेजे। फिर खुद भी इस किले के ऊपर आया। बादशाही किलेदार शाद खा ने 4 महीने तक खूब मुकाबला किया। एक-दो बार बाहर निकल कर भी लडा, जिसमे बुदेला पैदलो ने बहुत वीरता दिखाई।

8 रबी-उल्-अव्वल (चैत सुदि 10 = रविवार, अप्रेल 4, 1647 ई०) को खान ने सुरग से भी किले की कुछ दीवार उडाई। मगर लडाई मे हार कर वह पीछा लौट गया। उस वक्त किसी ने उससे कह दिया कि बहादुर खा बल्ख मे नही है, इससे उसने कतलक सुल्तान को बल्ख लेने के लिए भेजा। मगर बुखारा के लोग, जो अब्दुल अजीज खा से नाराज होकर चल आये थे, उसको बहका कर बहुत से उजबको सहित उस फौज मे ले गये, जो अब्दुल अजीज खा की तरफ से बल्ख के ऊपर हमला करने वाली थी।

शाहजादा औरगजेब का बल्ख जाना

23 सफर (चैत बदि 11 = रविवार, मार्च 21, 1647 ई०) को पेशावर से कूच करके 8 रबी-उल्-अव्वल (चैत सुदि 10 = रविवार, अप्रेल 4, 1647 ई०) को शाहजादा औरगजेब काबुल पहुचा, और 12 रबी-उल्-अव्वल (चैत सुदि 14 = शुक्रवार, अप्रेल 8, 1647 ई०) को वह वहा से बल्ख को रवाना हुआ।

गज के घाटे मे खलील वेग गिरदावर से और उजबको से लडाई हुई। बादशाहजादे ने महाराजा (भीम) के बेटे राजा रायसिह, राव शत्रुसाल, नजर बहादुर, राव रूपसिह चन्द्रावत, राजा अमरसिह कछवाहा, बलराम हाडा, और इन्द्रसाल को हरावल की अनी मे से उजबको के ऊपर भेजा। इनके पहुचते ही उजबक भाग गये।

25 रबी-उस्-सानी (जेठ बदि 12 = शुक्रवार, मई 21, 1647 ई०) को फिर गज घाटे मे लडाई हुई। उस दिन भी राजा रायसिह और शत्रुसाल हाडा हरावल थे। उजबक फिर हार कर भाग निकले।

आखिरी रबी-उल्-अव्वल (वैसाख सुदि 1 = सोमवार, अप्रेल 26, 1647 ई०) को बादशाह भी काबुल मे दाखिल हो गये।

दरबार का हाल

1 रबी-उस्-सानी (वैसाख सुदि 3 = मगलवार, अप्रेल 27, 1647 ई०) को राजा जगमन को घोडा इनायत हुआ। 9 रबी-उस्-सानी (वैसाख सुदि 11 = मगलवार, मई 4, 1647 ई०) को तुलादान के दरबार मे विट्ठलदास के बेटे अर्जुन गौड का मनसब असल और इजाफे से दुजारी जात—700 सवारो का

हो गया। वुयूतात के दीवान राय मुकुददास का भी इजाफा हुआ। राय मनोहर के पोते प्रेमचद के मनसव में भी वृद्धि हुई।

24 रवी-उस्-सानी (जेठ वदि 11=गुरुवार, मई 20, 1647 ई०) को शाहजादा शुजा वगाल से काबुल मे उपस्थित हुआ, और उसकी अर्ज से शाहजादा मुराद वख्श को भी दरवार मे उपस्थित होने की आज्ञा मिली।

इसी दिन राजा जयसिंह भी, जो दक्षिण से बुलाया गया था, 2000 सवारो के साथ उपस्थित हुआ। वह 1 करोड़ 20 लाख रुपये और 3 लाख मोहरें आगरा के खजाने से लाया था, सो आदेशानुसार उन्हें लाहोर मे जाफर खा को सौंप आया था।

सादुल्ला खा वजीर का मनसव सात हजारी—7000 सवारो का और इस्लाम खा का 7 हजारी—5000 सवारो का हो गया।

11 जमादि-उल्-अव्वल (जेठ सुदि 13=शनिवार, जून 5, 1647 ई०) को वादशाह ने राजा जयसिंह को खासा खिलअत, जड़ाऊ जमधर फूल कटारे समेत, प्रदान करके उसके मनसव के सवारों मे से 1000 सवार दो-अस्पा और से-अस्पा कर दिये गये, जिससे उसका मनसव पांच हजारी जात—5000 सवार का हो गया, जिसमें से 2000 सवार दो-अस्पा और से-अस्पा थे। सोने के साज का एक घोडा खासा तवेले से और 2 लाख रुपये खर्चे के वास्ते देकर वल्ख जाने की उसे आज्ञा दी गई, और उसके साथ 20 लाख रुपये शाहजादा औरगजेब के पास भेजे। महेशदास राठोड का वेटा रतन जालोर से पिछले महीने में उपस्थित हो गया था। उसको खिलअत और घोडा मिला। हमीरसिंह सीसोदिया, वल्लू चौहान, महेशदास का भाई जसवत और दूसरे कई राजपूत सरदारो को भी घोडे मिले और ये सव राजा जयसिंह के साथ भेजे गये।

वल्ख की मुहिम

आखिरी रवी-उस्-सानी (जेठ सुदि 1= मगलवार, मई 26, 1647 ई०) को शाहजादा औरगजेब वल्ख पहुंचा। वहादुर खा पेशवाई को आया।

1 जमादि-उल्-अव्वल (जेठ सुदि 3=बुधवार, मई 21, 1647 ई०) को शाहजादा ने वल्ख मे प्रवेश किया और राव रतन हाडा के वेटे माधोसिंह को वल्ख के दुर्ग की हिफाजत के लिए नियुक्त किया।

अब्दुल अजीज खा का सेनापति वेग ओगली तूरान की वहुत सी सेना के साथ आमू नदी को पार कर आगे वढ रहा था। फौज सजा कर औरगजेब ने उसके मुकावले के लिए कूच किया।

9 जमादि-उल् अव्वल (जेठ सुदि 11=गुरुवार, जून 3, 1647 ई०) को तैमूरावाद मे वहादुर खां और अमीरुल्-हसन उमरा अलीमरदान खां का उजवको

से मुकाबला हुआ। शाहजादा ने राजा रायसिंह, राव शत्रुसाल, गजनफर और मुर्शिद कुली, वगैरह को उनकी सहायतार्थ भेजा। लडाई मे बादशाही सेना की जीत हुई। परतु इस लडाई में सईद खा बहादुर जफरजग वगैरह कई अमीर घायल होकर काम आये।

10 जमादि-उल्-अव्वल (जेठ सुदि 12=शुक्रवार, जून 4, 1647 ई०) को शाहजादा ने अलीमरदान खा की सलाह से आगे को कूच किया। शाही सेना की बाईं तरफ की हिफाजत राजा रायसिंह और शत्रुसाल वगैरह राजपूतो और बरकदाजो को सौंपी गई थी। बेग ओगली ने सामने आकर लडाई लडी। लेकिन अत मे वह मैदान छोड कर भाग गया। बादशाही सेना ने आगे बढ कर उसका डेरा लूट लिया। कतलक मुहम्मद और बेग ओगली तो अलीयाबाद की तरफ चले गये और सुभान कुली अब्दुल अजीज खा के आदेश से बहुत सी सेना लेकर आस्ताने अलविया की राह से बल्ख के ऊपर गया। शाहजादा यह सुन कर पीछे लौटा। उजबक चारो तरफ से दौड़ और लड-भिड कर सुभान कुली स जा मिले और अब्दुल अजीज खा भी यलगतोश समेत वहा जा पहुचा। दूसरे दिन मार्ग मे चलते-चलते कुछ लडाई हुई।

14 जमादि उल्-अव्वल (आसाढ़ वदि 1 = मगलवार, जून 8, 1647 ई०) को उजबको की सेना सात मार्गों मे बट कर सब तरफ से लडने को आई। उनका मीर तुजुक यादगार अलीमरदान खा से लडा और घायल होकर पकडा गया। उजबक फिर सामने से भाग गये। दूसरे दिन कूच के समय वे लडने को आये, मगर राजा पहाडसिंह, मोतमिद खा मीरआतिश और बहादुर खा के चाचा नेकनाम ने आक्रमण करके उनको भगा दिया।

18 जमादि-उल्-अव्वल (आसाढ वदि 5=शनिवार, जून 12, 1647 ई०) को शाहजादा बल्ख के करीब आ पहुचा। उजबक भी पीछे लगे हुए आये। अब्दुल अजीज खा अपने भाई सुभानकुली के लिए शाहजादा से बल्ख मागता था। शाहजादा के पास इस समय बहुत थोडी फौज थी। उजबक बहुत अधिक सख्या मे इकट्ठा हो गये थे, वे एक लाख सवार से भी अधिक थे। बेग ओगली कहता था कि "हमने इस लडाई मे ऐसी वीरता और परिश्रम दिखाया है कि हिन्दुस्तान के स्वाभिमानी सैनिको के अतिरिक्त यदि कोई दूसरी सेना होती, क्या कजलवाशो की और क्या और कोई भी होती तो विनष्ट हो जाती"।

शाहजादा ने अब यह आयोजन किया कि उस विशाल सेना को तो वह अपने बेटे मुहम्मद सुलतान के साथ बल्ख मे छोड दे, और वह स्वय कुछ ही सैनिको को साथ लेकर दुश्मनो का मुकाबला करे। अब्दुल अजीज खा तब बदख्शा पर हमला करने का नाम लेकर रास्ते से जेहू के किनारे आ पहुचा था, किन्तु औरगजेब के इस आयोजन की सूचना मिलते ही वह आखिरी

जमादि उल्-अव्वल (आसाढ सुदि 1=बुधवार, जून 23, 1647 ई०) को अपनी फौज सहित जेहू से लौट गया। उस वक्त बहुत लोग उस दरिया को पार करते समय उसमे डूब गये। अलमान इनसे पहिले ही व्हा से चले गये थे, वे हमेशा वल्ख और वदख्शा लूटा करते थे।

'वादशाह-नामा' मे लिखा है कि "वल्ख की मुहिम मे पहिली गलती शाहजादा मुराद बख्श से यह हुई कि जब चगताइयो के थोक उसको 'साहिब-जादा! साहिबजादा!' कह कर सेवा के लिए उसके पास आने वाले थे, तब वह घबरा कर वहा से चला आया। दूसरी गलती बहादुर खा ने यह की कि नजर मुहम्मद खा का पीछा न किया और न शेरगान, अदखूद, चेचकत् के इलाको की हिफाजत की। तीसरी गलती औरंगजेब की यह थी कि दुश्मन से लड़ने के लिए वल्ख से आगे चला गया, फिर पीछा आया और अब्दुल अजीज खा का पीछा नहीं किया।"

तीसरा भाग

(जुलूसी सन् इक्कीसवे से शासन-काल के अन्त तक)।

जुलूसी सन् इक्कीसवां

(जून 24, 1647 ई० से जून 12, 1648 ई० तक)

वल्ख की मुहिम

1 जमादि-उस्-सानी, वृहस्पतिवार (ग्रासाढ सुदि 2, स० 1703 वि०=जून 24, सन् 1647 ई०) इक्कीसवा जुलूसी वरस शुरू हुग्रा। परम्परानुसार इस नौरोज की खुशी के जलसे हुए।

5 जमादि-उस्-सानी (ग्रासाढ सुदि 7=सोमवार, जून 28, 1647 ई०) को उजवको के वल्ख पर ग्राने की खवर सुन कर वादशाह ने शाहजादा मुराद को उस तरफ रवाना किया। वह चारीकार तक पहुच कर दूसरा ग्रादेश पहुचने से 7वें दिन पीछा लौटा, क्यो कि उजवको ने ग्रपना इरादा वदल दिया था। वापिस लौटने पर जव शाहजादा मुराद वख्श उपस्थित हुग्रा तो वादशाह ने उसको खिलग्रत ग्रौर पन्नो का सिरपेच देकर काश्मीर की सूवेदारी पर भेज दिया।

ईरान से निराश वापिस ग्राने पर नजर मुहम्मद खा ने शाहजादा ग्रौरगजेव से शिष्टाचारी की। शाहजादे ने वादशाह को ग्रर्जी लिखी। वादशाह ने जवाव भेजा कि यदि नजर मुहम्मद खा ग्राकर शाहजादा से मुलाकात करे तो वल्ख ग्रौर वदख्शा उसे वापिस देकर वादशाही फौजें लौटा लाए।

ग्राखिरी रजव (भादो सुदि 2= शनिवार, ग्रगस्त 21, 1647 ई०) को वादशाह काबुल से लाहोर को रवाना हुए ग्रौर शाहजादा शुजा को ग्रौरगजेव के वापिस ग्राने तक काबुल में छोड ग्राये।

सरहिंद के ग्रमीन, टोडरमल की कार्य कुशलता से खुश होकर वादशाह ने उसके मनसव मे पाच सदी जात का इजाफा किया ग्रौर उसको राजा का खिताव भी वख्शा। ग्रव उसका मनसव ग्रसल ग्रौर इजाफे से 2 हजारी जात—2 हजार सवार का हो गया।

जव वादशाह की सवारी ग्रटक से उतरी तो शाहजादा दारा शिकोह ग्रपने वेटे सुलेमान शिकोह सहित लाहोर से पेशवाई को ग्राया। वादशाह ने

100 रत्ती भर का 1 हीरा जिसकी कीमत 1 लाख रुपये की थी, खिलग्रत ग्रौर घोडो सहित उसको प्रदान किया।

5 शव्वाल (कार्तिक सुदि 7=रविवार, ग्रक्तूबर 24, 1647 ई०) को वादशाह लाहोर पहुचे ग्रौर 19 शव्वाल (मगसिर बदि 5=रविवार, नवम्बर 7, 1647 ई०) को वहा से ग्रागरा की तरफ रवाना हुए।

3 जीकाद (मगसिर सुदि 4=शनिवार, नवम्बर 20, 1647 ई०) को सरहिंद मे दक्षिण के सूबेदार इस्लाम खा के मरने की खवर पहुची। बादशाह ने उसके भाई ग्रौर बेटो को खिलग्रत भेज कर मालवा के सूबेदार शाहनवाज खा को लिखा कि ग्रौरगावाद पहुच कर वह वहा के वदोवस्त के बारे मे सचेत रहे।

वल्ख की मुहिम की समाप्ति

नजर मुहम्मद खा की ग्रर्जी पहुची कि "शाहजादा के पास उपस्थित होने से पहिले मैमना का किला मुझको इनायत हो जाए।" वादशाह ने उत्तर दिया कि उपस्थित होने के वाद तत्सवधी उसकी प्रार्थना से भी बढ कर सोचा जाएगा। मगर नजर मुहम्मद खा भ्रमवश स्वय तो बीमारी का वहाना करके शाहजादा के पास उपस्थित नही हुग्रा ग्रौर ग्रपने पोते कासिम सुलतान को उसने भेज दिया। शाहजादा ने उसको गद्दी पर ग्रपने वरावर वैठाया। उस वक्त नाज का ग्रकाल था ग्रौर वर्फ भी गिरने वाला था। इसके अतिरिक्त वल्ख के सूबे का खर्च भी ग्रामदनी से ग्रधिक था ग्रौर उजवक भी हर वक्त फसाद करने को तैयार रहते थे। इसलिए ग्रौरगजेव ने वादशाह के ग्रादेश के ग्राने की प्रतीक्षा न करके वल्ख ग्रौर वदख्शा का मुल्क नजर मुहम्मद खा के लिए छोड कर फैजावाद से कूच किया। छ लाख रुपये नकद ग्रौर जिन्स सहित वल्ख का किला कासिम सुलतान ग्रौर कफश कलमाक को सौंप दिया।

राजा जयसिह भी त्रिमिज से ग्राकर शामिल हो गया।

वल्ख की प्रारभिक चढाई से उस दिन तक जव कि शाहजादा ने वल्ख छोडा दो करोड रुपये तो वेतन मे ग्रौर दो करोड सामानो ग्रादि मे खर्च हुए थे, ग्रौर लडाइयो मे वहुत से ग्रादमी दोनो तरफ के मारे गये थे, खास करके सात दिन की उस लडाई मे, जो रात-दिन वरावर होती रही थी। 6000 सवार उजवको के ग्रौर 5000 वादशाही सेना के काम ग्राये थे।

14 रमजान (ग्रासोज सुदि 15=रविवार, ग्रक्तूवर 3, 1647 ई०) को शाहजादा ने वल्ख से कूच किया।

19 रमजान (कार्तिक वदि 5=शुक्रवार, ग्रक्तूवर 8, 1647 ई०) को सेना घाटी से उतरी। उजवको ग्रौर ग्रलमानो ने पीछा किया। जहा थोडे

आदमी देखते वहा वे आक्रमण कर देते थे। शाहजादा हर रोज नाज की खोज और प्राप्ति के वास्ते फौज भेजा करता था।

17 रमजान (कार्तिक वदि 3=बुधवार, अक्तूबर 6, 1647 ई०) को शमशेर खा वगैरह काशगर वालो के साथ अलमानो की मुठभेड हुई। वहादुर खा ने काशगर की मदद पर पहुच कर अलमानों को मार भगाया।

25 रमजान (कार्तिक वदि 11=गुरुवार, अक्तूबर 14, 1647 ई०) को शाहजादा गोरी पहुचा। उजवक दो तरफ से चढ कर आये। अमीरुल्-उमरा और मोतमद खा ने हरावल की फौज के साथ जाकर उनको भगा दिया।

वादशाह का आदेश आया था कि गोरी और कहमर्द को वादशाही अमलदारी मे शामिल रखें, इसलिए शाहजादा ने वहा दो दिन ठहर कर नूरुलहसन और जुलकदर खा को वहां नियुक्त किया।

29 रमजान (कार्तिक सुदि 1=सोमवार, अक्तूबर 18, 1647 ई०) को ख्वाजा जाहिद के रास्ते कूच हुआ। डेरे सुरखाव नदी किनारे पर हुए। रास्ते मे घाटी पर उजवक और हजारा के लोगो ने सैनिको को चारो तरफ से घेर लिया और सैनिको का असवाव लूट कर खजाने पर जा गिरे। रात तक लडाई हुई। आखिर में अमीरुल्-उमरा ने सहायता करके उनको भगा दिया।

1 शव्वाल (कार्तिक सुदि 3=बुधवार, अक्तूबर 20, 1647 ई०) को कूच करने के वाद भी तग घाटियो मे दुश्मन पुन दिखाई दिये, जिससे व्याकुल हो करके वहुत से आदमी और जानवर घवराहट मे पहाड़ से लुढक कर मर गये। हिन्दूकोह के नाके पर 7–8 हजार उजवको ने शमशेर खा को जा घेरा, जो घास-चारा लेने के लिए गया था, साथ ही उसके वहुत से ऊटो और घोडो को घेर कर आदमियो को भी मारा तथा घायल किया। उसकी सहायतार्थ पहुच कर वहादुर खा ने शमशेर खा को उस आपत्ति से वचा लिया।

4 शव्वाल (कार्तिक सुदि 6=शनिवार, अक्तूबर 23, 1647 ई०) को हिन्दूकोह की घाटी से उतरना पडा। वह वर्फ से डटी हुई थी, इसलिए वहा भी आदमियो को वहुत कष्ट उठाना पडा।

6 शव्वाल (कार्तिक सुदि 8=सोमवार, अक्तूबर 25, 1647 ई०) को गोरवद में और दूसरे दिन चारीकार में मुकाम हुआ।

गोरवद पहुचने तक इसी तरह तीन वार और उजवकों से मुकावला हुआ। हर मुकावले मे दोनों तरफ के वहुत से आदमी मारे गये और जख्मी हुए।

गोरवद मे उसने थाना वैठाया और वहा तव उपलब्ध 10 लाख रुपये लेकर वे रवाना हुए। जिस दिन गोरवद की घाटी से उतरे, हजारा जाति के हजारो आदमी चढ आये और जो भी माल-असवाव हाथ लगा, उसको

लूट कर खजाने पर जा गिरे। यहा बहुत से बादशाही सेवक काम आये और आहत हुए। पहर रात गये तक लडाई होती रही। किसी को भी जीवित बच जाने की आशा नही थी। जुल्फिकार खा और नूरुलहसन, जो खजाने के साथ थे, जख्मी होकर भी खूब लडे और खजाने को वचा लाये।

जव हिन्दूकुश के घाटे मे पहुचे तो मार्ग की तगी और वर्फ बरसने की तकलीफ से बहुत से भारवाहक जानवर मर गये। जो भी आदमियो और चौपायो के पैरो मे गिरा, वह कुचला गया। इसी तरह जिस सवार या पैदल ने ठोकर खाई, वह फिर न उठ सका।

शाहजादा तो 22 शव्वाल (मगसिर वदि 9—बुधवार, नवम्बर 10, 1647 ई०) को कावुल पहुच गया, लेकिन वहादुर खा रुहेला, जुल्फिकार खा और नूरुलहसन खजाने के साथ थे, जिससे पीछे रह गये थे। तब वहा ऐसी वर्फ गिरी कि पलक झपकने का भी समय नही मिला और वहुत से आदमी और जानवर मारे ठड के मर गये।

जव वहादुर खा भी जुल्फिकार खा से विछड गया, और खजाने के आधे से अधिक जानवर ठिकाने लगे, तव जुल्फिकार खा ने वाकी रहे ऊटो पर जितना भी खजाना लद सका, उसको तो लाद कर शाहजादे के पास रवाना किया, और वारवरदारी न मिलने से जो वाकी रहा उसे उसने अपने पास रख लिया। वर्फ हर रोज वरसता था, इस पर भी हजारा जाति ने एक वहुत वडी फौज से खजाने के ऊपर धावा करके वडा गजव ढाया, जिससे कदाचित ही किसी का थोडा-वहुत माल-असवाव उनसे वच पाया। चार-पाच हजार घोडे और वारवरदारी के जानवरो सहित वहुत से आदमी लुट गये, और वहुत से जानवर वर्फ के नीचे दव गये।

जग जीते हुए और काम किये हुए, जो भी सरदार और सिपाही थे, वे सव खजाने की सुरक्षा के लिए जम कर लडे, और अन्य सव चीजों को छोड कर वे खजाने के साथ अपनी जानो को भी वचा लाये। तथापि वेशुमार लूट हजारा वालो के हाथ आई, जिसको वे ले भागे।

वहादुर खा ने जव यह सुना, तव उसने आदेश दिया कि जिस किसी का भी कोई जानवर दिखाई पडे, उसे पकड कर जुल्फिकार खा के पास भेज दे। मगर पठानो ने जानवर नही दिये। इस पर उनसे लडाई हुई। तव वहादुर खा ने अपने और अपने भाई वेटो के खासा और वारगीर ऊट जुल्फिकार खा के पास भेज दिये, और स्वय भी अपनी फौज सहित वहा पहुचा। मगर उसके पहुचने तक 5-6 हजार आदमी वर्फ और जाडे मे ठिठुर कर मर चुके थे। वाकी रहे लोगो का यह हाल था कि वेटे को छोड कर वाप अपनी जान वचाना चाहता था।

वहादुर खा ने वहा पहुच कर देखा कि वारवरदारी के जानवर खजाना ले जाने के लिए पर्याप्त नही हैं, और जो हैं वे जाडे और वर्फ के मारे अधमरे हो रहे हैं। इसलिए खजाने की थैलिया गिन-गिन कर उसने जमादारो को दी और उन्हे घोडो पर लाद कर वे रवाना हुए। रास्ता रोक कर हजारा लोग फिर लडे। तथापि वहादुर खा और जुल्फिकार खा वडी मुश्किलो का सामना करते हुए तमाम खजाने को उन घाटो से निकाल कर कावुल ले ही गये।

दरबार का हाल

वादशाह लाहौर से कूच करके कुछ दिन वामनगाव मे ठहरे।

6 जीकाद (मगसिर सुदी 7=मगलवार, नवम्बर 23, 1647 ई०) को वहा से रवाना हुए। मार्ग मे 19 जीकाद (पौष वदि 5=सोमवार, दिसम्बर 6, 1647 ई०) को शाहजादा दारा शिकोह का दूसरा वेटा महर शिकोह 4 वरस 9 महीने का होकर मर गया। वादशाह ने उसकी लाश लाहोर भेजी, जहा उसकी मा के वाग मे वह भी दफनाई गई।

3 जिल्हिज (पौष सुदि 4=सोमवार, दिसम्वर 20, 1647 ई०) को वादशाह दिल्ली पहुच कर नूरगढ मे ठहरे। दूसरे दिन सवार होकर नये किले की इमारतो के देखने को गये, जो 8 वर्ष से वन रही थी। अगले नौरोज तक तैयार हो जाने की ताकीद करके वे आगरा के लिए रवाना हुए।

सूरत वदरगाह के अखवार (समाचार-पत्र) से मालूम हुआ कि वहा के और खभात के हाकिम अली अकवर के अपशब्द वोलने पर एक हिन्दू ने उसको जमवर से मार डाला। वादशाह ने उसकी जगह मालवा के दीवान मुअजुल्मुल्क को नियुक्त किया।

इसी तरह मालवा के अखवार से मालूम हुआ कि मदसौर का जागीरदार जानिसार खा एक फसादी जमीदार को पकड लाया था, और जव वह उससे उसके मामले सम्बन्धी पूछ-ताछ कर रहा था, तव उस जागीरदार को उस जमीदार ने मार डाला।

15 जिल्हिज (माह वदि 1=शनिवार, जनवरी 1, 1648 ई०) को वादशाह आगरा के किले मे प्रविष्ट हुए।

अबर का जड़ाऊ कंदील

गोलकुंडा की खान से 180 रत्ती भर का एक हीरा निकला था। वादशाह ने उसकी खवर सुन कर कुतुवुलमुल्क को लिखा कि "इस हीरे की कीमत करके पेशकश के हिसाव मे हमारे पास भेज देवे।" यह आदेश पहुचने से पहिले ही

कुतुबुलमुल्क नें वेगडिये को देकर उसमे से 10 रत्ती छिलवा डाला था। मगर अव उपर्युक्त आदेश पहुचने पर उसी दिन वह हीरा वैसा ही भिजवा दिया। यहा पहुचने पर उसमे से 70 रत्ती भर और तराशा गया, तो विना दाग-धब्वे का खरा वह 100 रत्ती भर रह गया, जिसकी कीमत डेढ लाख रुपये की हुई। और उसका चूरा 20,000) रुपये का आका गया। सयोग से उसी दिन 100 तोले भर अवर का 1 डला 50,000) रुपये मे खरीद होकर आया। उसकी शक्ल कदील जैसी थी। इसलिए वादशाह ने आदेश दिया कि इस अवर का कदील सोने और जवाहरात से वना कर ऊपर तो उस हीरे को जडें और नीचे उसके चूरे को भी जगह-जगह जड देवें। जव इस तरह यह कदील तैयार हुआ, तव ढाई लाख की लागत वैठी।

2 मुहर्रम (माह सुदि पहिली 4=मगलवार, जनवरी 18, 1648 ई०) को शाहजादा शुजा अपने वडे वेटे जैनुल्-आवदीन सहित कावुल से दरवार मे उपस्थित हुआ।

23 मुहर्रम (फागुन वदि 10=मगलवार, फरवरी 8, 1648 ई०) को वादशाह ने अवर का कदील, जो 3,50,000) रुपये मे तैयार हुआ था, हाजी सईद के साथ मदीना भेजा। मक्का के गरीवो के वास्ते उसको 1,60,000) रुपये देकर यह हुक्म दिया कि आधे रुपयो मे अहमदावाद से वह माल, जिसके कि अरव मे दूने हो जाते हैं, खरीद ले जावे। उसमे से आधा तो मक्का के शरीफ (महत) को मय 50,000) रुपये नकद देवे और वाकी रुपया और माल वहा के गरीवो को वाट दे। कदील को मदीना ले जाकर पैगम्वर साहिव की दरगाह मे लटका देवे।

1 सफर (फागुन सुदि 3=वुधवार, फरवरी 16, 1648 ई०) को वादशाह ने शाहजादा शुजा को 1 लाख रुपये की कीमत का जडाऊ सरपेच प्रदान करके उसे पीछा वगाल की तरफ विदा किया।

शाहजादा मुराद काश्मीर से दक्षिण की सूवेदारी के लिए वुलाया गया।

18 सफर (चैत वदि 6=शनिवार, मार्च 4, 1648 ई०) को राणा जगतसिंह का ज्येष्ठ पुत्र कुवर राजसिंह अपने पिता द्वारा भेजा हुआ वल्ख और वदख्शा पर विजय का वधाई-पत्र लेकर उपस्थित हुआ।

एक दिन राजा वदनसिंह वादशाह के सम्मुख खडा था। पीछे मे एक मस्त हाथी ने झपट कर राजा तथा उसकी सहायतार्थ आये एक और आदमी को अपने दातो के नीचे दवा लिया। राजा ने नीचे से ही खीच कर उसकी सूड मे जमधर मारी। उधर चरखीवान ने चरखियो मे आग दे दी,[1] जिससे राजा

1 ऐसे मौके पर हाथियों को चमकाने और डराने के लिए वारूद की चरखियां चलाया करते थे।

अपने नौकर सहित उसके दातो के नीचे से निकल गया । वादशाह ने राजा कं
वहुत शावाशी दी और खिलअत देकर उसके जिम्मे की वाकी मालगुजारी ं
5,00,000) रुपये माफ किये ।

25 सफर (चैत वदि पहिली 13=शनिवार, मार्च 11, 1648 ई०) कं
नौरोज के दिन वादशाह ने शाहजादा औरगजेव के नाम, जो वल्ख से आक
शाही निर्देशानुसार अटक के किनारे पर ठहरा हुआ था, हुक्म लिखा f
मुलतान को अपनी जागीर मे समझ कर वह परभारा ही वहा चला जा
और अपनी वाकी तलव के भी 30 लाख रुपया वार्षिक वह मुलतान
खजाने से लेता रहे ।

12 रवी-उल्-अव्वल (चैत सुदि 14=सोमवार, मार्च 27, 1648 ई
को वादशाह आगरा से दिल्ली को रवाना हुए और राजकुवर राजसिंह ं
लालो और मोतियो की माला तथा हाथी-घोडे देकर विदा किया । 22 रवं
उल्-अव्वल (वैसाख वदि 9=गुरुवार, अप्रेल 6, 1648 ई०) को वादशाह ं
सवारी शाहजहानावाद के पास पहुची ।

शाहजहानावाद का किला और शहर

वादशाह ने आगरा और लाहोर की गलियो और अश्वशालाओ को तग देख ं
दिल्ली के मैदान मे नूरगढ के पास जमुना के ऊपर एक नया शहर वसाने
आदेश दिया था, जहा किले की नीव 25 जिल्हिज, शुक्रवार, 1048 f
(वैसाख वदि 11, स० 1696 वि०=गुरुवार, अप्रेल 18, 1639 ई०)
रात को उन्ताद अहमद और हामिद की तजवीज से खोदी गई थी, औ
मुहर्रम, शुक्रवार, सन् 1049 हि० (वैसाख सुदि 10=गुरुवार, मई
1639 ई०) की रात को भरी गई । वह अव 50 लाख रुपये के खर्च से
चुका था और इतना ही रुपया जनाने महलो और मरदानी इमारतो मे ं
हुआ था ।

किला 6 लाख गज जमीन मे लाल पत्थर का टाकीवद वना था । इ
कोट 20 हजार गज लम्वा, 60 गज चौडा और 25 गज ऊचा था, जि
4 दरवाजे और 2 खिडकिया थी । जमुना की फीरोजशाह वाली नहर,
वहुत दिनो से वद पडी थी, वढा कर और साफ करके इस किले के अद
निकाली गई थी ।

किले मे उत्तर की तरफ वादशाह के रहने के वास्ते दौलतखाना,
हयातवख्श, हम्माम, शाह महल, और वेगमो के वास्ते इमतियाज महल, ं
हरी महल और दूसरे मकान मकराने के पत्थर से वनाये गये थे ।

60 गज समचौरस था, जिसके बीच मे 49 और किनारो पर 112 चादी के फुहारे लगाये गये थे। बाग में चौपड़ की तरह पर 6 गज चौडी नहर जारी थी, जिसके किनारे लाल पत्थर के बने हुए थे और बीच में 30 फुहारे चलते थे। यह बाग तीन तरफ से जमुना के ऊपर आ गया था और तीनो तरफ झरोखे पानी पर झुके हुए थे, जो मकराने के पत्थर के थे। नहर हर जगह से निकाली गई थी।

इमतियाज महल के एक तरफ दर्शन का झरोखा और दूसरी तरफ खास-आम का बगला था, जिसमे रग-रग के पत्थर सोने की पच्चीकारी से लगे थे।

बगले के आगे चार स्तम्भो की एक कचहरी 67 गज लबी और 24 गज चौडी बनी थी, जिसमे तीन तरफ एक कठघरा आदमी के कद के बराबर चादी का लगा था और इसके बाहर 104 गज लबा और 60 गज चौडा कठ-घरा लाल पत्थर का था। इसके आगे 204 गज लबा और 160 गज चौडा चौक था, जिसके चारो तरफ पत्थर के 140 मकान बने हुए थे, जिनमे खूब कोरनी की गई थी। इनके आगे तबेले वगैरह कारखाने थे। जो दरवाजा किले के पश्चिम की तरफ था, उस तरफ बाजार दोहरी दुकानो का था। बीच मे नहर थी। बाजार मे कोतवाली चबूतरा 480 गज का था। यह बाजार लाहोर की तरफ था और ऐसा ही दूसरा बाजार आगरा की तरफ भी था।

बेगम साहिब के बाग की तरफ फतहपुरी महल की मसजिद थी। इससे बडी मसजिद अकबराबादी महल की आगरा बाजार मे थी, जो 1,50,000) के खर्चे से बनी थी। यह 63 गज लबी और 17½ गज चौडी थी।

इसी तरह शाहजहानाबाद भी 10 कोस के घेरे मे आबाद हुआ था।

किले से 1000 गज के करीब पश्चिम की तरफ एक पहाडी है। उसके ऊपर भी एक मसजिद तैयार हुई थी, जिसका काम सादुल्ला खा वजीर और अफजल खा मीर सामान की उपस्थिति मे प्रारभ किया गया था। यह काम सम्पूर्ण होने तक हर प्रतिदिन रोज 5000 सिलावट और सुथार वगैरह काम किया करते थे। यह मसजिद 90 गज लबी और 32 गज चौडी थी। इसके ऊपर तीन बडे गुबज और दो ऊचे मीनार बनाये गये थे। यह 6 वर्ष मे 10 लाख रुपये के खर्चे से बनी थी। इसके चौक मे दक्षिण की तरफ विद्यालय और उत्तर की तरफ चिकित्सालय के मकान थे।

बादशाह का नये किले मे प्रवेश करना

24 रबी-उल्-अव्वल, शनिवार, (वैसाख बदि 11=अप्रैल 8, 1648 ई०) के दिन 6 घडी दिन चढे सिंह लग्न मे बादशाह ने नदी के मार्ग से नये किले के अदर प्रवेश किया, और बडी धूमधाम से दल-बादल डेरे मे दरबार किया,

जो 70 गज लवा और 40 गज चौडा 1 लाख रुपयो की लागत से अहमदावाद के वादशाही कारखानो मे तैयार हुआ था और जिसको 22 गज ऊची 4 चोवो पर 3000 फर्राशो ने वडी मेहनत से खडा किया था। फिर गुसलखाने मे होकर महल मे पधार गये। इस दिन शाहजादा दारा शिकोह का मनसव 10 हजारी जात के इजाफे से 30 हजारी जात—20 हजार सवार दो-अस्पा का हो गया।

4 लाख रुपये नकद और 1 लाख रुपये के जडाऊ जेवर वेगम साहिव को इनायत हुए। इसी तरह दूसरी वेगमो, शाहजादो और अमीरो को 20 दिन तक खिलअत, नकद रुपये और जवाहर इनायत होते रहे। पहिले दिन सादुल्ला खा वगैरह 100 प्रसिद्ध अमीरो के मनसव वढे थे और उन्हे भारी-भारी सिरोपाव मिले थे। इसी तरह की कृपा नौरोज के दिन तक प्रति दिन सौ-सौ अमीरो को होती रही। शायरो, पण्डितो और गवैयो, वगैरह को रोज इनाम मिलता था। ईरान, तूरान और काश्मीर के गाने वालो, हिन्दुस्तान के नाचने वालो को वहुत-वहुत चादी, सोना और जवाहरात मिले। अधिकतर सरकारी कारीगरो ने अपनी-अपनी कारीगरी की चीजें नजर की और उन्होंने इनाम मे मोहरें और रुपये पाये।

वल्ख की मुहीम

अलीमरदान खां की अर्जी पहुची कि अब्दुल अजीज खा ने पुन वुखारा से नजर मुहम्मद खा पर चढाई करके वल्ख को घेर लिया है। उस पर आदेश हुआ कि वहादुर खा और विट्ठलदास वगैरह वीस अमीर अलीमरदान खा के पास जाकर उसकी सलाह के अनुसार नजर मुहम्मद की सहायतार्थ रवाना होवें।

दरवार का हाल

रायगया कुछ वरसो से रोजगार छोड कर वनारस मे जा वैठा था। अव वह फिर ससार के मोह मे लिप्त होकर दरवार मे उपस्थित हुआ। वादशाह ने उसको एक हजारी जात—250 सवार का मनसव देकर वगलाना/को फौजदारी के साथ दक्षिण के सभी सूवो की दीवानी भी प्रदान की।

जुलूसी सन् बाईसवां

(जून 13, 1648 ई० से जून 1, 1649 ई० तक)

1 जमादि-उस्-सानी (आसाढ सुदि 3= मगलवार, जून 13, 1648 ई०) को 22 वा जुलूसी बरस शुरू हुआ और परम्परानुसार दरबार और जलसे हुए।

14 जमादि-उस्-सानी (सावन वदि 2= सोमवार, जून 26, 1648 ई०) को शाहजादा मुराद काश्मीर से आया।

नौरोज मे निवट कर बादशाह ने शाहजादा मुराद बख्श को असीम कृपाओ से सम्मानित करके दक्षिण की सूबेदारी पर इस्लाम खा की जगह, जो मर गया था, नियुक्त करके उसे वहा भेजा और शाहनवाज खा को, जो मालवा से दक्षिण मे भेजा गया था, शाहजादा का अतालीक (अभिभावक) नियुक्त कर दिया। शायस्ता खा गुजरात का अच्छा बदोवस्त करने मे असफल रहा था। इसलिए वह सूबा दारा शिकोह को प्रदान किया गया और उसका नायब बाकी बेग, जो इलाहाबाद का सूबेदार था, असल और इजाफे से 2 हजारी जात—500 सवारो के मनसब और गैरत खा के खिताब से सम्मानित होकर गुजरात का बदोवस्त करने के लिए वहा भेजा गया। उडीसा का सूबा शाहजादा शुजा को प्रदान किया गया।

बल्ख से खबर पहुची कि अब्दुल अजीज खा ने नजर मुहम्मद खा के साथ सधि कर ली है। इसलिए बादशाह ने बहादुर खा वगैरह को वापिस लौट आने का आदेश लिख भेजा।

शाह ईरान का कंधार लेना

24 रमजान (कार्तिक वदि 11=सोमवार, अक्तूबर 2, 1648 ई०) को बादशाह शिकारगाह खास मे शिकार खेल रहे थे कि कधार के किलेदार खवास खा और विस्त के किलेदार गैरत खा की अर्जी पहुची। उसमे लिखा था कि कधार फतह करने के वास्ते "ईरान का बादशाह अब्बास दूसरा 4 रबी-उल्-अव्वल (चैत सुदि 5 = रविवार, मार्च 19, 1648 ई०) को बहुत सी सेना लेकर इस्फहान से रवाना होकर 7 शाबान (भादो सुदि 10=गुरुवार, अगस्त 17, 1648 ई०) को मेशहद मे पहुचा। उसने अपने एक अमीर को पहिले से ही हेरात की तरफ भेज दिया था, कि खुरासान के ताजीको मे से, जो लडाई के वक्त बिना वेतन आगे होकर जान देते हैं, मामूल के माफिक 10,000 बरकदाज और 5,000 बेलदार तैयार करें और दे-बहमन (पौष-माह =दिसम्बर-जनवरी) के महीनो मे जब कि बर्फ बरसने और रास्ता बद हो जाने से हिन्दुस्तान की फौज को मदद नही पहुच सकती है, कधार के ऊपर

जावे। सो अव वहुत शीघ्र सहायता भेजी जानी चाहिये।"

इसके साथ ही यह भी ज्ञात हुआ कि शाह का राजदूत शाहकुली भी खत लेकर कधार मागने को आता है।

वादशाह ने ये खबरें सुनकर ज्योतिपियो को मुहूर्त निकालने का आदेश दिया और काजी अफजल को, जो दारा शिकोह की तरफ से लाहौर का हाकिम था, आदेश भेजा गया कि शाहकुली को लाहौर से आगे नही वढने देवें। साथ ही हर तरफ के अमीरो को शीघ्र ही अपनी सेना सहित दरवार मे उपस्थित होने के आदेश दिये गये।

शव्वाल 2 (कार्तिक सुदि 2 = सोमवार, अक्तूवर 9, 1948 ई०) को वादशाह शिकारगाह से शाहज्हानावाद के किले मे पहुचे। इतने मे ईरान के शाह के आने की गरमागरम खबरें आने लगी, जिमसे वादशाह ने सादुल्ला खा वजीर को 135 वडे-वडे अमीरो के साथ शाहजादा औरगजेव के नेतृत्व मे कधार भेजने के वास्ते तैयार किया, और आदेश दिया कि 60,000 सवारो और 10,000 वरकदाजो की पूरी सूची तैयार करें, जिनमे वारह के सैयद, उजवक, पठान और राजपूत अधिक हो। इस हिन्दी फौज मे वहुत ही कम ईरानी लिये जावें।

इसी समयान्तर मे कावुल से यह खवर आई कि अलीमरदान खा ने किलेदार कधार की लिखावट आने पर 5000 सवार और 1000 वरकदाज काकड खा, राजा अमरसिह और अहदियो के वख्शी नूरुलहसन की सरदारी मे कावुल से रवाना कर दिये हैं, और 5 लाख रुपया भी खर्च के लिए उनके पास भेज दिया है।

22 जीकाद (पौप वदि 9= मगलवार, नवम्वर 28, 1648 ई०) को वादशाह औरगजेव और उसके तैनातियो को वहुत सी भेंटो और कृपाओ के साथ विदा करके स्वय भी लाहौर को रवाना हुए। 3 जिल्हिज (पौप सुदि 4=शुक्रवार, दिसम्वर 8, 1648 ई०) को सतलज से और 7 जिलहिज (पौप सुदि 8=मगलवार, दिसम्वर 12, 1648 ई०) को व्यास नदी मे उतरे और 12 जिल्हिज (पौप सुदि 13=रविवार, दिसम्वर 17, 1648 ई०) को लाहोर पहुचे।

वादशाह का पहिले तो यह विचार हुआ था कि शाहजादा औरगजेव को आगे भेजें, परतु फिर यह वात ठहरी कि लाहोर और कावुल तक साथ-साथ जावें। आराम चाहने वाले अमीरो ने दुनिया की भलाई व्यक्त करके अर्ज की कि "आजर-दे-वहमन (मगसिर-पौप-माह=नवम्बर-दिसम्बर, 1648 ई० जनवरी, 1649 ई०) इन तीनो महीनो मे कजलवाश (ईरानी) लफर और लडाई की ताकत नही रखते हैं, और इन दिनो मे शाह अव्वास के कधार

पहुचने की जो खवर प्रसिद्ध हो रही है, वह भी अकल के खिलाफ है।" इसके साथ ही उस इलाके मे घास-चारा और नाज के कम मिलने की खवर पहुची, तव तो वादशाह ने भी कह दिया कि "वेशक इन तीन-चार महीनो मे वर्फ और सर्दी के कारण यात्री मर जाया करते है, अत प्राय कजलवाश उस समय सफर नही करते है, तव फिर वे कधार के ऊपर क्यो चढाई करने लगे।" इस तरह कावुल जाने का विचार स्थगित हो गया और तव यह निश्चय हुआ कि वर्फ और सर्दी के दिन लाहोर मे ही व्यतीत किये जायें।

12 मुहर्रम (माह सुदि 13=मगलवार, जनवरी 16, 1649 ई०) को जन्म-पत्री के हिसाव से वादशाह को 58वा वर्ष लगा, जिसके तुलादान की खुशी मे शाहजादा औरगजेव का मनसव 15 हजारी जात—8000 सवार दो-अस्पा और से-अस्पा का हो गया। उस दिन अनेक अमीरो के मनसवो मे इजाफे हुए और उन्हे इनाम भी मिले।

आजम खा 72 वर्ष का होकर मर गया।

वादशाह अभी तक तैनाती अमीरो के पहुचने की प्रतीक्षा कर रहे थे, जिनको लाने को गुर्जबरदार गये हुए थे, और जो वादशाह ईरान के मेशहद से रवाना होने की खवर फैल रही थी, उसकी यथार्थता सवधी सही जान-कारी की भी प्रतीक्षा थी। आराम चाहने वाले अमीर छावनी छाने की फिक्र मे थे, और टटपूजिये सरदार डेरो मे पडे रहने को जाडे और सफर की तकलीफो से गनीमत समझ कर कूच करने मे हानि के कारण शुक्र (प्रार्थना-पूर्ण प्रशसा) कर रहे थे कि किलेदार की अर्जी से शाह अब्बास के कधार पहुच जाने की खवर एकाएक ज्ञात हुई। उसमे लिखा था कि "शाह ने सख्ती उठा कर इस बर्फ और वर्षा के मौसम मे धावा करके 50 हजार कजलवाश, तुर्क, ताजीक और सगीन तोपखाने से 10 जिल्हिज (पौष सुदि 11=शुक्रवार, दिसम्वर 15, 1648 ई०) को पहुच कर किले को घेर लिया है, अत तुरन्त मदद पहुचनी चाहिये।"

इस खवर के पहुचते ही वादशाह ने शाहजादा औरगजेब को लिखा कि वह मुलतान से सीधा कधार को रवाना हो जावे। उसके साथ जाने के वास्ते सादुल्ला खा वजीर, बहादुर खा, राजा जसवतसिंह, कुलीच खा, राजा बिट्ठलदास गौड, रुस्तम खा, निजाबत खा, सरदार खा और लुहरास्प खा, वगैरह 132 अमीरो को 50,000 सवारो से तीन महीने का अग्रिम वेतन देकर विदा किया। जल्दी का मुहूर्त होने के कारण विना खिलअत वगैरह के ही शाहजादा की बिदाई हुई थी। इसलिए उसके लिए खिलअत, जवाहर, हाथी और घोडे वगैरह पीछे से सादुल्ला खा के साथ भेजे गये। उसको बगश, रूद (नदी) के नजदीक के रास्ते से जाने का आदेश दिया गया। खर्च के लिए

यह आदेश हुआ कि जो नौकर पहिले से ही नकदी पाते हैं, उनको चढी 2 तलव के सिवाय आसामीवार प्रत्येक को चाकरो समेत 100)-100) रुपये दे देवें, और नये नौकरो को जिनकी कि सनदें अव तक तैयार नही हुई हैं, और नये-पुराने मनसवदारो को जिन्हे कि जागीरें दी हुई हैं, उन सव को तीन-तीन महीनो का वेतन नकद दे देवें। रुपया दिलाने के वास्ते सजावलों[1] और सेना को ताकीद करके रवाना करने के लिए गुर्जवरदार नियुक्त हुए।

शाह ईरान का कोरची वाशी[2] हसन वेग तुर्कमान कधार छोड कर वादशाह के पास आया। वादशाह ने उसको खिलअत, सोने का खजर, 4000) रुपये नकद और हजारी जात—500 सवार का मनसव प्रदान किया।

नजर मुहम्मद खा के वकील ख्वाजा जान को, जो खत और कुछ तोहफे लेकर आया था, खिलअत, घोडा और 2,15,000 रुपये नकद देकर विदा किया।

1 रवी-उल्-अव्वल (चैत सुदि 2, स० 1706 वि०= सोमवार, मार्च 5, 1649 ई०) को वादशाह स्वय भी लाहोर से कावुल को रवाना हुए।

12 रवी-उल्-अव्वल (चैत सुदि 13=शुक्रवार, मार्च 16, 1649 ई०) को जव चिनाव नदी से उतर रहे थे, तव उस गुर्जवरदार ने, जो औरगजेव के पास फरमान लेकर गया था, जाफर खा मीर वख्शी के डेरे मे पहुच कर जाहिर किया कि सियादत खा ने सादुल्ला खा को लिखा है कि "8 सफर (फागुन सुदि 9=रविवार, फरवरी 11, 1649 ई०) को खवास खा ने कधार का किला ईरान के शाह को सौंप दिया है, और उस जिले के दूसरे किलो, विस्त और जमीनदावर, पर भी ईरानियो का अधिकार हो गया है।" इसके साथ ही गजनी से भी कामिदो (पत्र-वाहको) और जिलेदारो के साथ कागज पहुचे, जिनको जाफर खा ने वादशाह की सेवा मे उपस्थित होकर अर्ज किया। उनका खुलासा यह था कि किले को घेरने और किले वालो से लडने मे शाह का एक महीना व्यतीत हुआ। दुर्ग के भीतर से उसकी सेना पर खूब गोले वरसाये गये। किले वाले बाहर निकल कर भी लडे। मगर कजलवाशो के घेरे मे घवरा कर किलेदार हिम्मत हार गया। शाह की सेना मे रसद की कमी और हिन्दुस्तान से फौज रवाना होने की खवर से गडवड मची हुई थी, जिसका एक परचा मुखविर (जासूस) ने तीर से वाध कर किले मे फेंक दिया था, तव भी मदद पहुचने तक किलेदार नही ठहर सका और 15 दिन तक शाह को सुलह का सदेश भेजता रहा। अत मे जव शाह ने स्वीकार कर लिया तो 9 सफर (फागुन सुदि 10 = सोमवार, फरवरी 12,

1 सरकारी कर उगाहने वाले कर्मचारी। (स०)

2 शाही दरबार का मुख्य प्रबन्धक। (स०)

1649 ई०) को वह किले से वाहर निकल आया और दो दिन की मोहलत लेकर अपने माल-असवाव और वाल-वच्चो को भी निकाल लाया। तीसरे दिन ईरान का किलेदार महराव खा किले मे प्रवेश हुआ, और वह सूवा वादशाह के अधिकार से निकल गया।

फिर किलेदार खवास खा, काकड खा और अवुलहसन वगैरह सहित शाह के दरवार मे गया, और कुछ ही समय तक वहा ठहर कर हिन्दुस्तान को रवाना हुआ। अपने दोष छिपाने के वास्ते उसने शाह का खिलअत नही लिया, और रोता हुआ वादशाह के पास आया।

फिर कजलवाशो ने विस्त और जमीनदावर वगैरह के किले भी ले लिये, जिनमे 600 सवार उनके और 900 इन किले वालो के मारे गये। महराव खा का वचन लेकर ये किलेदार वाहर आये। मगर जव उनसे हथियार लेने लगे, तव कुछ ने तो, जो कि स्वाभिमान वाले थे, लड कर अपने प्राण न्यौछावर कर दिये, वाकी अपने वाल-वच्चो सहित कैद होकर शाह के पास भेजे गये।

शाह भी सर्दी की तेजी और वारवरदारी के घोडे मर जाने मे आखिर माह सफर (चैत वदि = फरवरी उत्तरार्द्ध और मार्च 4, 1649 ई० तक) मे हेरात को लौट गया, और महराव खा के पास 10,000 सवार वदूकची छोड गया। कधार का घेरा लगा तव से लेकर कूच करने के दिन तक शाह को ढाई महीने लगे थे।

वादशाह ने सादुल्ला खा को लिखा कि "अव शाह ईरान भी कधार लेकर लौट गया है। तुम जल्दी कधार पहुच कर उसको लेने की कोशिश करो।"

वजीर और शाहजादे की फौज का हाल

वादशाह ने चलते समय शाहजादे और वजीर को कहा था कि "कधार जल्दी पहुचना। शाह तुम्हारा पहुचना सुन कर किले के नीचे से उठ जावेगा और यदि कही किला फतह कर ले तो तुम उसको नया सामान जमा करने का अवकाश नही देना, वल्कि शीघ्र ही किले को जा घेरना।" लेकिन शाहजादे को मुलतान मे सेना और जरूरी सामानो को जमा करने मे और वजीर को शाहजादे की प्रतीक्षा मे और वेमौसम वरसात हो जाने से भी मार्ग मे ठहरना पडा।

सादुल्ला खा 15 सफर (चैत वदि 2=रविवार, फरवरी 18, 1649 ई०) को नीलाव नदी से उतरा और शाहजादा भी मुलतान से रवाना होकर सक्खर पहुचा। मगर आगे वर्फ वहुत पडा हुआ था, इसलिए पेशावर की तरफ लौटा। आगे जाकर दोनो फौजें इकट्ठी हुईं।

मार्ग मे वर्फ हटाने और झाडी काटने के वास्ते खलील वेग गया था। उसकी खवर आई कि "वर्फ इतना गिरा है कि यदि अव विलकुल नही गिरे तो भी एक महीने मे कठिनता से रास्ता निकल सकता है।" इसी समयान्तर मे शाह के कधार को घेरने और विजय करने की खवर और जल्दी रवाना होने के वास्ते वादशाह की ताकीदें पहुची। फिर तुरन्त ही शाह के वहा से वापस कूच करने की खवर आई। तव तो शाहजादे और वजीर को कूच करना ही पडा। वे जाने के लिए स्वीकृत मार्ग को छोड कर 2700 गज ऊचे पहाडो पर से फौज के साथ पैदल ही गुजरे, और जो कुछ सामान-असवाव साथ था, उसको जहा का तहा छोड गये। इस दौड मे वहुत से ठिठुर कर मर गये, और वहुत से भाग गये। कुछ भी खाना-दाना पास नही रहा। जव इस हाल से 21 रवी-उस्-सानी (जेठ वदि 8=मगलवार, अप्रेल 24, 1649 ई०) को वे कावुल पहुचे, तव वहा इतनी महगाई थी कि 1) रुपये का 5 सेर गेहू और 4 सेर घास भी हाथ नही आता था। आदमी और जानवर का पेट 1) रुपये मे भी नही भरता था।

कधार पहुचने के वास्ते वादशाह की ताकीद हद से ज्यादा थी, तो भी घोडे वगैरह वारवरदारी के जानवर खरीदने के लिए शाहजादा को वहा 15 दिन ठहरना पडा। फिर कूच करके गजनी पहुचा, तव वहा भी घास का अकाल था। खास-खास आदमियो के वास्ते 1) रुपये का सेर भर नाज और डेढ सेर घास मिलता था, जिससे सेना का वहुत वुरा हाल हो गया। शाहजादा ने वादशाह को अर्जी लिखी कि "यहा रुपये सेर नाज है, और घास तो अप्राप्य है। आगे तो कुछ भी चीज नही मिलती हैं। इस कारण से सैनिक और सिपाही वहुत तग आ गये हैं।" वादशाह ने लिखा कि "मुल्कगीरी[1] मे आराम नही होता है। ऐसी वातो का ख्याल न करके तुरन्त कधार को रवाना हो जाओ, और कजलवाशो को किले मे नया सग्रह जमा करने और वहा ठहरने का अवसर न दो। जो फसल तैयार है उसको उनके हाथ मे न पडने दो, स्वय काट लो। हमको भी वहा पहुचा जानो।" इस पर शाहजादा और वजीर ने सेना मे ढोडी पिटा दी कि "सव लोग गजनी से रास्ते के वास्ते रसद ले लेवें।" तव 15 दिन वाद कूच करके तीन दिन मे कजलवाशो के एक किले पर पहुचे, जिसको वे लोग खाली कर गये थे।

सात हिस्सो मे विभक्त होकर वादशाही सेना 14 जमादि-उल्-अव्वल (पहिला आसाढ वदि 2=गुरुवार, मई 17, 1649 ई०) को कधार किले के पास पहुची, और गजअली के वाग मे उतरी। तीसरे दिन भावसिंह वगैरह कई वहादुर सरदारो ने किले की एक तरफ सुरक्षा की व्यवस्था नही देख कर

1. दूसरे देशो को अपने आधीन करने में। (स०)

शाहजादे से पूछे विना ही वहा मोरचा जमाया। किले वालो ने यह समाचार जान कर उधर ऐसी आग वरसाई कि वहुत से आदमी मारे गये और उनका ठहरना वहुत कठिन हो गया। सादुल्ला खा ने राजा से कहलाया कि "विना आदेश के दु साहस करना अनुचित था। मगर अव वही जगल के वृक्षो की आड लेकर जमे रहो, नही तो किले वाले ज्यादा शेर हो जावेंगे।" इस तरह वडी कठिनाई से वहुत जानें खपाने के वाद ही किले का घेरा लगाया जा सका।

दरवार का हाल

जव हसन अव्दाल से वादशाह का कूच हुआ तो शाह अव्वास के वकील शाह वरदी खा के कावुल पहुचने की खवर आई। वादशाह ने उसको लाने को गुर्जवरदार भेजा।

5 रवी-उस्-सानी (वैसाख सुदि 6=रविवार, अप्रेल 8, 1649 ई०) को वादशाह नीलाब से उतरे और 4 कूच मे पेशावर पहुचे। वहा वाग फरह वख्श के मुकाम पर शाह वेग भी आ पहुचा। मगर वादशाह ने उसको अपने समक्ष नही वुलाया। उधर शायस्ता खा व जाफर खा से फरमाया कि "उसको अपने डेरे मे ठहरा कर उसके पास से खरीता तो नही लेवें और हमारी तरफ से कहे कि हमने शाह ईरान की पुश्तैनी दोस्ती पर विश्वास करके अपने एक खवास को कधार के किले मे रख छोडा था। यदि यह जानते कि उनकी तरफ से ऐसी हरकत होगी तो एक अनुभवी अमीर को रखते जो जीते जी किले को नही छोडता। अब इस आशा के विरुद्ध करतूत के वदले का उपालंभ भी नही देना चाहिये। पहिले शाह कुली के आने की खवर आई थी फिर शाह के कधार पहुचने की खवर आई, तो शाह कुली को लाहोर मे रखने का आदेश दिया गया। इसका अर्थ यही है इस तरह जव दोस्ती का झरना गदला हो गया तो खत और वकील भेजने मे क्या मजा है?"

फिर फरमाया कि "शाह वर्दी वेग से कह दो कि जलालावाद मे जाकर ठहरें। कावुल पहुच कर हम तुम दोनो वकीलो को इज्जत के साथ बिदा करेंगे।" शाह वर्दी वेग की तकलीफ का हाल सुन कर 10,000 रुपये उसको प्रदान किये।

शाहजादा दारा शिकोह, जो पहिले रवाना हो गया था, इस मजिल मे कावुल के सूवेदार अलीमरदान खा वगैरह सहित पेशवाई को आया।

शुरू जमादि-उल्-अव्वल (जेठ सुदि=मई पूर्वार्द्ध, 1649 ई०) मे कावुल के दौलतखाने मे पहुचे। चौथे दिन अलीमरदान खा के मकान पर गये और उसकी पेशकश मे से एक लाख रुपये की जिन्स स्वीकार की।

वल्ख मे अब फिर नजर मुहम्मद खां, अव्दुल अजीज खा और सुभान कुली

खा मे बहुत से फसाद हुए। तव भी अपनी सल्तनत पर कायम होकर नजर मुहम्मद खा ने वादशाह को खरीता लिखा, जिसको लेकर उसका वकील मुराद वेग आया। उसके साथ यादगार वेग चौलाक भी था।

नजर मुहम्मद खां के वेटे सुभान कुली खा ने सेवनज तरुद्दी अली कतगान और मुहम्मद वेग कवचाक वगैरह वागियो को कतल करके उनके सिर नजर मुहम्मद खा के पास भेजे थे। वे भी नजर मुहम्मद खा ने वादशाह को दिखाने के वास्ते शाहजादा दारा शिकोह के पास भेजे। अव वलख और वदख्शा मे नजर मुहम्मद खा का पूरा कब्जा हो गया था। इसलिए उसने अपने वेटो और कवीलो को अपने पास वापस वुलाया और कुछ खर्च भी मागा।

जुलूसी सन् तेईसवां

(जून 2, 1649 ई० से मई 21, 1650 ई० तक)

1 जमादि-उस्-सानी (पहिला आसाढ सुदि 2=शनिवार, जून 2, 1649 ई०) को 23वा जुलूसी वर्ष शुरू हुआ, जिसके दरवार मे वादशाह ने नजर मुहम्मद खा के वेटे अब्दुल रहमान सुलतान को खिलअत, जीगा (तुर्रा), जडाऊ साज की तलवार, खजर और ढाल तथा 30,000) रुपये नकद देकर वलख जाने को विदाई दी। 20,000) रुपये के जवाहरात और जडाऊ जेवर वगैरह दारा शिकोह ने भी वादशाह के आदेश से दिये, क्योकि अब्दुल रहमान की सभाल उसी के जिम्मे की गई थी।

नजर मुहम्मद खा को 1,00,000) रुपये तो पहिले कावुल के खजाने से इनायत हुए थे, और 1,00,000) रुपये अव फिर उनके वास्ते, और सुभान कुली खा के वास्ते 50,000) रुपये नकद तथा जडाऊ तलवार, अब्दुल रहमान सुलतान के साथ भेजे गये।

1 रजव (दूसरा आसाढ सुदि 3=सोमवार, जुलाई 2, 1649 ई०) को नजर मुहम्मद खा की औरतें और वेटिया भी, जो लाहौर से कावुल मे पहुच गई थी, वल्ख को रवाना हुई। उनको भी कई लाख रुपये की नकदी और जिन्स इनायत हुई। इन वेगमो को तव तक 3 लाख रुपये खर्च के लिए सहायतार्थ मिल चुके थे, और वादशाही वेगमो ने जो कुछ भी उन्हे दिया था वह इनके अतिरिक्त ही था। नजर मुहम्मद खा के वास्ते इनके साथ भी एक लाख रुपये और एक हाथी भेजा गया।

ये लोग दो वर्ष और दस महीने के लगभग हिन्दुस्तान मे रहे थे।

नजर मुहम्मद खा के दो बडे वेटे खुसरो सुलतान और वहराम सुलतान हिन्दुस्तान का आनन्द न छोड सके, और वादशाही नौकरी पर राजी होकर बल्ख को नही गये ।

कधार की मुहिम

14 जमादि-उस्-सानी (दूसरा आसाढ वदि 1 = शुक्रवार, जून 15, 1649 ई०) को सादुल्ला खा ने शाहजादे से कहा कि "किलेदार ने मगरूरी से खजर और वेसकरन दरवाजो को आज तक वद नही किया है। इस वात से अपनी सेना की सुस्ती और अव्यवस्था प्रकट होती है।"

दूसरे दिन शाहजादा किले की तरफ वढा, तव किले वालो ने तोपो की मार से बहुत से आदमियो को गिरा दिया।

किले मे गोले मेह की तरह हर रोज वरसा करते थे, तव भी सादुल्ला खा ने कुछ दिन पीछे 5-6 सलावत कूचे वना कर 92 गज जमीन खोदी और किले की खाई तक सुरग पहुचाई। मगर किले वालो ने उसके अन्दर पानी छोड दिया।

इस तरह वादशाही सेना ने किला फतह करने के वास्ते कोशिश करने और जान लडाने मे कोई वात वाकी नही छोडी। मगर गोला, वारूद, वगैरह सामान पूरा तैयार नही था और सर्दी का मौसम भी आ गया था। इसलिए लौट चलने की सलाह ठहरी। परन्तु तव ही उनके पास खवर पहुची कि "कजलवाशो के 30,000 सवार मुर्तजाकुली खा वगैरह 31 वडे-वडे अमीरो के नेतृत्व मे चले आ रहे है।" शाहजादे ने यह सुन कर 12 शावान (सावन सुदि 14 = शनिवार, अगस्त 11, 1649 ई०) को रुस्तम खा और कुलीच खा वगैरह को उनके मुकावले पर भेजा। बडी घमासान लडाई हुई। दोनो तरफ से खूव कोशिश और मरदानगी दिखलाई गई। अत मे वादशाही आदमी एकदम से हल्ला करके दुश्मनो पर जा गिरे, और वहादुरी से उनको भगा कर डेरो की तरफ लौटे। दूसरे दिन वे शाहजादे के पास पहुचे। इस फतह को कधार की फतह से वढ कर समझा, और तव शाहजादा पीछा लौटा तथा कधार की फतह को अगले साल पर छोड आया।

'तवारीख मुन्तखव-उल्-लुवाव' मे लिखा है कि "घेरा डालने के वाद एक तरफ से सादुल्ला खा ने और दूसरी तरफ से रुस्तम खा और कासिम खा वगैरह ने किले के पास तक मोरचे वढाये। सुरगें भी खाई तक पहुचाई लेकिन ईरान के किलेदार महराव खा की होशियारी और अनुभव से, जिसने कि रूम की लडाइयो मे खूव लडाई और किलेदारी के काम देखे थे, कुछ वश नही चला। वह किले मे से रात-दिन वरावर ऐसी गोलिया और गोले लगातार वरसाता था कि आदमियो को मोरचो मे भी चलने-फिरने की फुर्सत

नही मिलती थी। पुन वह प्राय सुरगो को भी गोलो से उडा देता था। इधर मे जो हल्ले किये जाते थे, उनमे शाही सेना के सरदारो के सिर और सिपाहियो के धड खाई को पूरने के काम मे आते थे, तथापि कुछ भी काम नही निकलता था।

" उधर से जब कजलबाश लडने को बाहर निकलते थे, तब भी बडी-बडी लडाइया होती थीं। जो कैदी उनके हाथ लगते थे, उनको वे किले मे ले जाते थे, और जो बादशाही सैनिको के हाथ आते, उनको वे अपने डेरो मे ले आते थे।

" एक दिन इसी तरह कैद किये जाकर कुछ कजलबाश वहा लाये गये थे। उनकी जबानी मालूम हुआ कि 'हेरात पहुच कर शाहअब्बास ने 20 अमीर और 30,000 सवार महराब खा की सहायतार्थ रवाना किये हैं। उनमे से 3–4 हजार तो बहुत करीब आ पहुचे हैं।' इसी तरह की खबर एक बादशाही सेवक ने भी, जो शाह की सेना मे पकडा गया था, वहा से वापस लौटने पर कुलीच खा को दी। इसके साथ ही ऊट वालो, हाथियो के महावतो और खच्चर वालो ने आकर फरियाद की कि 'अकस्मात् हमला करके कजलबाश बहुत से आदमियो और जानवरो को पकड ले गये। साथ ही कई लोगो को भी घायल कर गये हैं।' अपने वक्त के रुस्तम, रुस्तम खा ने यह सुन कर विना आदेश के ही कजलबाशो का पीछा किया और 4–5 कोस पर उनको जा मिलाया। पहिले बदूको और बाणो की लडाई हुई और फिर तलवारें चली। दोनो तरफ के अनेक व्यक्ति मारे गये। रुस्तम खा अपने और उनके जितने भी हाथी, घोडे, ऊट, बैल और खच्चर ला सका उन्हे लेकर वह शाहजादा के पास उपस्थित हुआ, और सब ने उसकी इस बहादुरी की भूरि-भूरि प्रशसा की।

" दूसरे दिन प्रात काल ही समाचार पहुचे कि 'कजलबाशो के 30 हजार सवार नजरअली खा हाकिम अर्दबेल, अलीकुली खा, और मुर्तजा खा वगैरह कई अमीरो के नेतृत्व मे बहुत करीब पहुच गये हैं।' इधर से पुन रुस्तम खा, कुलीच खा वगैरह कई अमीर, दस हजार सवार और बहुत सा तोपखाना लेकर उनके मुकाबले पर गये। ज्यो ही उनकी फौज नजर आई सैयदो, पठानो, मुगलो और राजपूतो ने घोडे उठाये। ईरानी वही ठहर गये। मगर जब इधर से गोले और बाण चलने लगे तो उन्होने तीन तरफ से हल्ला करके हिन्दुस्तानियो के ऊपर हमला किया, और कई बार अपने सामने की फौज को हटा दिया। मगर रुस्तम खा, कुलीच खा और बहादुर राजाओ ने मस्त हाथियो को आगे रख कर और अपनी सवारी के हाथियो के पावो मे जजीरें डाल कर सब लोगो को दिलासा दी और अपने कदम भी आगे बढाये। जो लोग कवच पहिने हुए थे, वे दुश्मनो की बीच की सेना से जा भिडे। तब

वहा कई प्रसिद्ध सरदार और बहुत से साधारण आदमी मारे गये और कई घायल भी हुए। अत मे कजलवाशो के पाव उखड गये और वे सामने से भागते ही नजर आये। बादशाही अमीर उनके बहुत से घोडे और खच्चर लेकर शाहजादे के पास लौट आये।"

इन्ही घटनाओ का वर्णन करते हुए 'सियार-उल्-मुताखरीन' मे लिखा है कि "शाह अब्बास कधार जीत कर इस्फहान नही गया। वह हेरात मे ही ठहरा रहा। जब हिन्दुस्तान की फौज के पहुचने की खबर उसके पास पहुची, तब उसने अपने सरदारो को शाहजादा औरगजेब के मुकाबले पर भेजा। शाम के वक्त चगताइयो और कजलवाशो की मुठभेड हुई। रात हो जाने से दोनो सेनाए अपने-अपने डेरो को लौट गईं। सुबह होते ही कूच का नक्कारा बजा कर औरगजेब चल दिया। सियावश खा ने कुछ दूर तक पीछा किया। सर-हदी किलो को मजबूत करके ईरानी अमीर तब शाह के पास लौट गये, और मेशहद मे जियारत करके शाह इस्फहान को चला गया। इधर बादशाह ने इस छोटी सी सेवा के उपलक्ष मे औरगजेब का मनसब 15 हजारी—12000 सवार दो-अस्पा और से-अस्पा का, सादुल्ला खा का 7 हजारी—7000 सवार दो-अस्पा और से-अस्पा का, और अलीमरदान खा का 5 हजारी—5000 सवार दो-अस्पा और से-अस्पा का कर दिया। रुस्तम खा को फिरोजजग का खिताब दिया गया और कुलीच खा को काबुल का सूबेदार नियुक्त किया गया।"

दरबार का हाल

8 रजब (दूसरा आसाढ सुदि 10=सोमवार, जुलाई 9, 1649 ई०) को कधार के अखबार (समाचार-पत्र) से मालूम हुआ कि बहादुर खा पठान मर गया। बादशाह ने उसके छ बेटो मे से बडे दिलावर को हजारी जात—500 सवार का मनसब दिया और शेष की भी सहायता की।

आखिरी शाबान (भादो सुदि 2=बुधवार, अगस्त 29, 1649 ई०) को बादशाह काबुल से हिन्दुस्तान को रवाना हुए और शाहजादा दारा शिकोह को औरगजेब के पहुचने तक काबुल मे रहने का आदेश दे गये।

3 रमजान (भादो सुदि 5=शनिवार, सितम्बर 1, 1649 ई०) को बादशाही सेना द्वारा ईरानियो पर फतह पाने की खबर पहुची। बादशाह ने खुश होकर शाहजादा औरगजेब और अनेक अमीरो को, जिन्होने उस लडाई मे अच्छा काम किया था, इजाफे और इनाम से सम्मानित किया।

'मुन्तखब-उल्-लुबाब' मे लिखा है कि "जब पहिली फतह की खबर बाद-शाह के पास पहुची तो उन्होने फिर ईरान के वकील शाह वर्दी बेग से कह-लाया कि 'बडे शाह अब्बास 30 बरस तक हमारे साथ स्नेह रखते थे। उनके

बाद हम जो आशा उनके खानदान से रखते थे, इस साल उसके प्रतिकूल व्यवहार दृष्टिगत हुआ। अत हम से जो कुछ भी हो सकेगा अब उसमे हम भी कमी न्ही करेंगे।' 10,000 रुपये इनायत करके उसको गुर्जबरदार के साथ शाहजादा औरगजेब के पास रवाना किया, और शाहजादा को लिखा कि इसी तरह गुर्जबरदार को साथ करके वह भी उसे शाह के पास पहुचा देवे।

"कधार के घेरे मे शाही सेना को जो परिश्रम करना पड रहा था और असुविधाए, कठिनाइया और कष्ट उठाने पड रहे थे, और जिनका कोई लाभ नही मिल रहा था, लगातार उनकी खबरें सुन कर बादशाह ने जान लिया कि घेरा अधिक दिनो तक रहने से फौज के तबाह होने के सिवाय और कुछ काम नही निकलेगा, इसलिए शाहजादा को लिखा कि 'अब भलाई इसी मे है कि कधार का फतह करना दूसरे साल पर छोड कर किले के नीचे से उठ आओ।' शाहजादा दारा शिकोह से फरमाया कि 'औरगजेब के गजनी पहुचने की खबर आने तक तुम काबुल मे रहना', और आप शाबान पूर्वार्द्ध (भादो सुदि = अगस्त पूर्वार्द्ध, 1649 ई०) मे हिंदुस्तान की तरफ रवाना हुए। तब पहली मजिल पर बादशाही सेना से कजलबाशों के पराजित होकर भाग जाने की खबर आई। इससे बादशाह को बहुत प्रसन्नता हुई, क्योकि उनको बहुत चिंता थी। अत इस शुभ समाचार के पहुचते ही तीन दिन तक शादियाना[1] बजाने का हुक्म दिया। सादुल्ला खा, रुस्तम खा और कुलीच खा वगैरह सभी अमीरो के मनसब मे वृद्धि की गई।"

कधार का हाल

बादशाह का आदेश पहुचने पर शाहजादा औरगजेब कधार के चार महीने के घेरे को, जिसमे उसके दो-तीन हजार आदमी और चार-पाच हजार जानवर विनष्ट हो चुके थे, किले के नीचे से उठा कर बादशाह की सेवा मे रवाना हुआ।

दरबार का हाल

24 रमजान (आसोज वदि 11 = शनिवार, सितम्बर 22, 1649 ई०) को बादशाह पेशावर पहुच कर बाग जफर मे ठहरे। वहा से चल कर 26 रमजान (आसोज वदि 13 = सोमवार, सितम्बर 24, 1649 ई०) को हसन अब्दाल और 18 शव्वाल (कार्तिक वदि 5 = सोमवार, अक्तूबर 15, 1649 ई०) को लाहोर पहुचे। सादुल्ला खा भी 8 दिन मे काबुल से आया।

6 जीकाद (कार्तिक सुदि 8 = गुरुवार, नवम्बर 1, 1649 ई०) को

1 खुशी के अवसर पर बजाया जाने वाला बाजा। (स०)

शाहजादा दारा शिकोह अपने बेटे सुलेमान शिकोह सहित उपस्थित हुआ।

5 जिल्हिज (मगसिर सुदि 7=शुक्रवार, नवम्बर 30, 1649 ई०) को औरगजेब अपने बेटे मुहम्मद सुलतान और सभी सैनिको के साथ कधार की चढाई से लौट कर उपस्थित हुआ। कजलवाशो से छीनी हुई कई तोपें और निशान रुस्तम खा ने बादशाह के नजर किये। बादशाह ने उसको बहुत शाबाशी दी और अधिकतर अमीरो को इजाफे, इनाम और खिताब प्रदान किये।

शाहजहानाबाद का सूबेदार मक्रमत खा, जिसने अपनी उमर वहा की इमारतो को बनवाने मे व्यतीत की थी, मर गया। बादशाह ने उसकी जगह जाफर खा को हजार सवार दो-अस्पा के इजाफे से नियुक्त किया।

मुलतान का सूबा तो पहिले से औरगजेब के पास था। अब थट्टा का सूबा और सरकार भक्कर और सेवान, ये तीनो भी उसको प्रदान किये गये।

12 जिल्हिज (मगसिर सुदि 14=शुक्रवार, दिसम्बर 7, 1649 ई०) को बादशाह ने लाहोर से शाहजहानाबाद की तरफ कूच किया। अलीमरदान खा को, जो काबुल से उपस्थित हुआ था, काश्मीर की भी सूबेदारी मिली। उसको आदेश दिया गया कि वह स्वय तो काबुल जावे और अब्दुल गनी को अपना नायब नियुक्त करके उसे काश्मीर भेज देवे।

11 मुहर्रम (पौष सुदि 12=शुक्रवार, जनवरी 4, 1650 ई०) को बादशाह ने शाहजहानाबाद के किले मे प्रवेश किया। उसी दिन शाहजादा मुराद बख्श भी दक्षिण से आया, क्योकि वहा की आब-हवा उसके अनुकूल प्रमाणित नही हुई थी, और सूबे का बदोबस्त भी वह अच्छी तरह से नही कर सका था।

बादशाह ने शाहजादा मुराद के मनसब मे दो हजारी जात की वृद्धि करके उसका मनसब 12 हजारी जात—10,000 सवार दो-अस्पा और से-अस्पा कर दिया और 25 मुहर्रम (माह बदि 11=शुक्रवार, जनवरी 18, 1650 ई०) को काबुल की सूबेदारी उसको दी।

शाहजादा दारा शिकोह, जो 25 मुहर्रम (माह बदि 11=शुक्रवार, जनवरी 18, 1650 ई०) को लाहोर से रवाना हुआ था, अपने बेटो सहित बादशाह के पास पहुचा।

सादुल्ला खा वजीर का मनसब उसकी योग्यता और बादशाह की महरबानी से हर साल बढता रहता था। अब वह बढ कर 7 हजारी जात—7000 सवार का हो गया, जिसमे 2,000 सवार दो-अस्पा और से-अस्पा थे, और प्रति वर्ष 11 करोड दाम इनाम के उसके लिए निश्चित हुए। आसफ खा के बाद तब तक दूसरा कोई अमीर इस स्तर तक नही पहुचा था, और न इतना इनाम शाहजादो के अतिरिक्त और किसी को मिलता था।

16 रवी-उल्-अव्वल (चैत वदि 2 = रविवार, मार्च 10, 1650 ई०) को नौरोज, यानी सौर गणना से नये साल का पहिला दिन था, और शाहजहानावाद मे पहिला ही नौरोज था। इसलिए वह बहुत धूमधाम से मनाया गया, जिसमे वादशाह ने 1,000 वडे-वडे मनसवदारो को खिलअत दिये और बहुतो के मनसवो मे भी वृद्धि की और कुछ को खिताव भी दिये गये।

इस दिन हाफिज मोमिन ने, जो ईरान के शाह के गवैयो मे से था, उपस्थित होकर वादशाह के नाम पर वनाये हुए अपने गीत सुनाये। वादशाह ने उसको खिलअत और 10,000) रुपये देकर अपने शाही दरवार मे नौकर रख लिया।

इसी दिन वादशाह ने मेवातियो को सजा देने के वास्ते, जिन्होंने आगरा और दिल्ली के वीच के गावो को लूट कर ऊजाड कर दिया था, राजा जयसिंह के दूसरे वेटे कीरतसिंह को नियुक्त करके वहा अपना वतन वनाने के वास्ते कामा पहाडी का परगना उसको जागीर मे प्रदान किया।

इसी दिन वादशाह ने सादुल्ला खा वजीर के पेशकार रघुनाथ की योग्यता और कार्य-कौशल से प्रसन्न होकर उसको राय का खिताव, दीवान-इ-तन का काम और सोने का कलमदान प्रदान किये।

वृहस्पतिवार की पेशकश (नजराना) एक साल तक ताहर खा को इनाम मे दिया जाना निश्चित हुआ।

जुलूसी सन् चौबीसवां

(मई 22, 1650 ई० से मई 10, 1651 ई० तक)

1 जमादि-उस्-सानी (जेठ सुदि 2 = बुधवार, मई 22, 1650 ई०) को वादशाह का जुलूसी सन् 24वा शुरू हुआ।

वादशाह ने ख्वाजा कासिम को पत्र और एक लाख रुपये के जवाहर देकर नजर मुहम्मद खा के पास भेजा, और 10,000) रुपये खान के छोटे वेटे अब्दुल रहमान सुलतान के वास्ते भी भेजे।

2 रजव (आसाढ सुदि 3 = शनिवार, जून 22, 1650 ई०) को नजर मुहम्मद खा का वकील खस्तकह वे पत्र लेकर आया, जिसमे उसने मदद मिलने के वास्ते लिखा था।

5 शावान (सावन सुदि 7 = गुरुवार, जुलाई 25, 1650 ई०) को मीर सालेह खुशनवीस मर गया। वादशाह ने उसकी जगह किताव-खाना की

दारोगाई, सैयद जलाल के बेटे सैयद अली को प्रदान की।

15 शाबान (भादो वदि 3=रविवार, अगस्त 4, 1650 ई०) को बादशाह ने फरासत खा नाजिर को मक्का जाने को विदा देकर आदेश दिया कि "1,50,000) रुपये वहा के कगालो के लिए अहमदाबाद के खजाने से लेता जाए।"

कीरतसिंह ने चार-पाच हजार सवार और छ -सात हजार बदूकची और तीरदाज नौकर रख कर मेवातियो को मारा। उनके औरतो-बच्चो को कैद करके शेष को वहा से निकाला और अपने आदमियो को वहा वसा दिया, जिससे दिल्ली और आम्बेर की तलहटी मे अमन-चैन हो गया। बादशाह ने खुश होकर उसके मनसब मे 1,000 सवारो की वृद्धि का आदेश दिया।

अब बादशाह की उमर 60 वरस की हो गई थी। इसलिए मौलवियो ने फतवा(धर्मादेश) दिया कि यदि अपनी वृद्धावस्था की कमजोरी के कारण बादशाह रोजे नही रख सकें तो 60,000) रुपये हरेक रमजान के महीने मे फकीरों को देते रहे। बादशाह ने 30,0(0) रुपये वार्षिक तो पहले से ही तदर्थ निश्चित कर रखे थे। अब 20,000) रुपये और बढा दिये, और 20,000) रुपये ही कुल रोजो के कुफ्फारे (प्रायश्चित्त) मे, जो भूल-चूक से या जान-बूझ कर नहीं रखे गये थे, गरीबो और मोहताजो को देने का आदेश दिया।

अकबराबादी महल ने किले शाहजहानाबाद से 2½ कोस की दूरी पर सराय बावली के पास, लाहोर और काश्मीर के फैजबख्श और फरहबख्श बागो के नमूने पर, जो मसजिद और बाग दो लाख रुपये की लागत से 4 वरस मे तैयार कराये थे, बादशाह उस बेगम की अर्ज से उस मसजिद मे नमाज पढने को गये। बेगम ने 18 ख्वान (थाल) सोने और जवाहरात के, जडाऊ जेवरो के नजर और निछावर के तौर पर प्रस्तुत किये।

मुर्तजा खा बूढा हो गया था। अत उसको मनसब से अलग कर कार्य निवृत्त कर दिया, और उसकी पेंशन 20 लाख दाम (50 हजार रुपये) सालाना की निश्चित कर दी गई।

9 जिल्हिज (मगसिर सुदि 12=रविवार, नवम्बर 24, 1650 ई०) को मुल्ला शफीआय यजदी ने सूरत से आकर बादशाह से सलाम किया। बादशाह ने हजारी जात—100 सवार का मनसब प्रदान करके उसे नौकर रख लिया।

रूम के सुलतान मुहम्मद खा के दूत सैयद मुहीउद्दीन के सूरत मे पहुचने की खबर सुन कर बादशाह ने उसको लाने के वास्ते ख्वाजा रोशन गुर्जबरदार को खिलअत के साथ भेजा और 10,000) रुपये सूरत के खजाने से और पद्रह-पद्रह हजार रुपये बुरहानपुर, माडू और मालवा के दीवानो से उसको दिलवाये।

19 मुहर्रम (माह वदि 5 =गुरुवार, जनवरी 2, 1651 ई०) को शाहजादा औरगजेव अपने वेटो समेत मुलतान से आया। वादशाह ने उसको वुलाया था।

1 रवी-उल्-अव्वल (फागुन सुदि 3 =वुधवार, फरवरी 12, 1651 ई०) को वादशाह काश्मीर को रवाना हुए और शाहजादा औरगजेव को मुलतान जाने की विदाई दी।

जफर खा को पटना जाने को बिदा दी गई। खलीलु लाह खा को शाह-जहानावाद की सूवेदारी मिली। सईद खा जफरजग पटना से वदला गया।

1 रवी-उस्-सानी (चैत सुदि 2=शुक्रवार, मार्च 13, 1651 ई०) को वादशाह लाहौर पहुच कर वाग फैजवख्श मे ठहरे और आदेश दिया कि पेशकश के जमा करने वाले मुतसद्दी रविवार के दिन की नजर एक साल तक मुल्ला शफीआय (यजदी) को देते रहें। वह वडा शायर था और व्यापार के लिए ईरान से सूरत वदरगाह मे आया था। वादशाह ने उसकी प्रशसा सुन कर कुछ महीने पहिले 5000) रुपये खर्च के भेज कर उसे अपने पास वुला लिया था और दोनो वक्त मुजरा करने के लिए उपस्थित होने का आदेश दे दिया था।

4 रवी-उस्-सानी (चैत सुदि 5=रविवार, मार्च 16, 1651 ई०) को वादशाह ने लाहौर के किले मे प्रवेश किया।

वगाल के अखवार (समाचार-पत्र) से मालूम हुआ कि हिजली का किला शाहजादा शुजा के नौकर जान वेग ने, जो सूवा उडीसा का काम करता था, वहा के जमीदारो से लेकर वादशाही सल्तनत मे शामिल किया।

अब्दुल रहमान का वल्ख से आना

अब्दुल रहमान, जो वल्ख को रवाना हुआ था, जव अपने वाप नजर मुहम्मद खा के पास पहुचा, तो नजर मुहम्मद खा ने अपने आदमी साथ करके उसको गोरवद की हुकूमत पर भेजा। दूसरे भाई सुभान कुली खा ने वाप के पास फौज कम रह जाने की खबर सुन कर वल्ख पर हमला करके उसको इस प्रकार तग किया कि उसने अब्दुल रहमान को रास्ते से पीछा वुलाया।

मगर सुभान कुली खा के कलमाक बीच मे से ही उसको पकड ले गये। सुभान कुली खा ने अब्दुल रहमान को कैद कर दिया। मगर पहरे वालो की मिलावट से वहा से निकल कर वह वादशाह के पास भाग आया। वादशाह ने उसको 4 हजारी जात—500 सवार का मनसव और 20,000 रुपये, हाथी, घोडा और कुछ जडाऊ जेवर प्रदान किये। उसके साथियो को भी उसके कहने के अनुसार वेतन का प्रवध करके नौकर रख लिया।

29 जमादि-उल्-अव्वल (जेठ सुदि 1=शनिवार, मई 10, 1651 ई०) को वादशाह ने लाहोर से काश्मीर की तरफ कूच करके रावी नदी के पास डेरा

किया। शाहजादा मुराद वख्श को मालवा की सूवेदारी पर जाने का आदेश लिखा।

इस साल मे नाज की महगाई और मेह के नही वरसने से लोगो को वहुत तकलीफ हो रही थी। मगर जिस दिन वादशाह ने कूच किया, मेह वरसना शुरू हुआ और इतना वरसा कि वादशाह को मार्ग मे ही एक सप्ताह तक ठहरना पडा। इस मेह से रैयत का भी नुकसान हुआ। क्योकि पहिले तो वोने का अवसर नही मिला और जो कुछ भी वोया था वह पानी मे वह गया। इस वास्ते जमावदी के समय खालसा के परगनो की रैयत ने सहायता के लिए प्रार्थना की। वादशाह ने सादुल्ला खा वजीर को आदेश दिया कि रैयत की यह शिकायत कई दिन तक ध्यान लगा कर वह स्वय सुने।

आदिल खां की पेशकश

इस्लाम खा का वेटा मुहम्मद सफी आदिल खा के पास से पिछले वर्षो की वाकी पेशकश लाने के वास्ते भेजा गया था, सो नीचे लिखे अनुसार लेकर उपस्थित हुआ

1. वादशाह के वास्ते पेशकश, नकद और जिन्स, 40 हाथी और जडाऊ चीजो सहित कुल 40 लाख रुपये की थी।
2 वादशाह की वेगम मलिका जहा के लिए पेशकश, नकद और जिन्स, 5 लाख रुपये की।
3 शाहजादा दारा शिकोह के लिए पेशकश, नकद और जिन्स, 15 लाख रुपये की।

इसके अतिरिक्त आदिल खा ने डेढ़ लाख रुपया नकद और कुछ जवाह-रात मुहम्मद सफी को और 6 लाख रुपये का नकद और माल शाहजादा दारा शिकोह के नौकर सैयद वाकिर को दिया था। वे भी वादशाह की नजर से गुजारे गये।

जुलूसी सन् पच्चीसवां

(मई 11, 1651 ई० से अप्रेल 29, 1652 ई० तक)

दरबार का हाल

1 जमादि-उस्-सानी, रविवार, (जेठ सुदि 2=मई 11, 1651 ई०) को पच्चीसवें बरस के नौरोज मे एक प्रसिद्ध कवि ने, जो वादशाह का मुसाहिब

भी था, बादशाह की तारीफ में एक कविता पढ कर सुनाई, जिसके इनाम मे बादशाह ने उसको 1 हथनी और 2000) रुपये प्रदान किये।

शाहजादा शिकोह को बेटो सहित लाहोर जाने का आदेश हुआ।

22 जमादि-उस्-सानी (आसाढ वदि 8=रविवार, जून 1, 1651 ई०) को बादशाह काश्मीर में पहुचे। मार्ग मे बर्फ से बहुत तकलीफ हुई। मगर काश्मीर मे बडी बहार थी। बादशाह बेगमों सहित नावो मे बैठ कर रातो को डल तालाब की सैर किया करते थे। ये नावें रग-रग के जरी के परदो और लाज्वर्द (नीलम) के काम की चोबो से सजी हुई थी, और उन चोबो के ऊपर सोने के जडाऊ कलश लगे हुए थे। इसी तरह बागो मे जाकर वहा की बहार देखते थे और झोली भर-भर कर रुपया मल्लाहो और बागबानो को दिया करते थे।

एक दिन अली मरदान खा की प्रार्थना से उसके बाग और महल देखने को पधारे। अली मरदान खा ने जो पेशकश नजर से गुजराई, उसमे से 13,000) रुपये का माल स्वीकृत किया गया।

एक दिन मुल्ला शाह बदख्शी बादशाह से मिलने को आया। दूसरे दिन बादशाह और मलिका जहा बेगम उसके मकान पर गये, जो बेगम ने 40,000) रुपये लगा कर बनवा दिया था, तथा और 20,000 रुपये लगा कर फकीरो के वास्ते कई दूसरे मकान उसके पास ही तैयार कराये थे।

29 जमादि-उस्-सानी (आसाढ सुदि पहिली 1= रविवार, जून 8, 1651 ई०) को आदम खा तिब्बती की प्रार्थना से ज्ञात हुआ कि मिरजाय तिब्बती, जो हुजूर मे से भाग कर तिब्बत का मालिक बन बैठा था, अब बादशाह के प्रताप से भाग गया है। बादशाह ने आदम खा का मनसब असल और इजाफे से हजारी जात—500 सवार का करके तिब्बत का मुल्क भी, जो 80 लाख दाम (2 लाख रुपये) का था, वतन के तौर पर उसको और उसके भाइयो को जागीर मे दे दिया।

इस साल मे पहिले तो पानी नही बरसा और फिर बरसा तो अधिक बरसा, जिससे काश्मीर के अधिकाश मकानो और बागो की शोभा जाती रही थी। इसलिए बादशाह वहा की सैर से पहिले की तरह खुश नही हुए और फरमाया कि "लाहोर और आगरा के जैसे कीमती मकानो और बागो को छोड कर अपने दिल की खुशी के वास्ते इतनी दूर आना कि जिसमे खुदा की खलकत को बहुत तकलीफ पहुचती है, खुदा से नही डरने की बात है।" दो महीने रहने के बाद शाहबाद के रास्ते से सेना को सीधे मार्ग मे रवाना करके कहा कि "अब मैं इस तरफ फिर नही आऊगा"। तब सादुल्ला खा वजीर को आदेश दिया कि सब कामो का बदोबस्त करके वह जल्दी लाहोर आ जाए।

आसिफावाद मे नदी से उतरते वक्त आदमियो की बहुत अधिक भीड हो जाने से पुल, जो पुराना हो गया था, टूट गया। 250 आदमी और उन पर लदे हुए माल-असवाव सहित बहुत से जानवर नदी मे गिर पडे।

22 रमजान (आसोज वदि 9=शुक्रवार, अगस्त 29, 1651 ई०) को वादशाह की सवारी भवर पहुची। दूसरे दिन कूच के वक्त शाहजादा दारा शिकोह ने अपने वेटो सहित लाहोर से आकर मुजरा किया। नजर मुहम्मद खा के वेटे अब्दुल रहमान और खुसरो भी पेशवाई मे उपस्थित हुए।

जब वादशाह लाहोर के पास पहुचे तो सादुल्ला खा वजीर भी काश्मीर से आकर उपस्थित हो गया।

वादशाह ने लाहोर पहुच कर रुस्तम खा, राजाओ और अमीरो को, जो उपस्थित अथवा अनुपस्थित थे, आदेश भेजा कि कधार की मुहिम के लिए सामान और तोपखाने समेत हाजिर हो जावें। शाहजादा मुराद वख्श को बुलाने के लिए अपने हाथ से फरमान लिखा।

रूम के सुल्तान के दूत मोहीउद्दीन ने लाहोर पहुच कर अपने मालिक का पत्र पेश किया, जिसके साथ दो घोडे जडाऊ जीन के और 1 पोशाक मोतियो की भी थी। अपनी तरफ से भी उसने 5 घोडे नजर किये। वादशाह ने उसको 15,000) रुपये, घोडा, खिलअत और तलवार और एक कलगी प्रदान की।

वल्ख से नजर मुहम्मद खा के मरने की खबर पहुची। वह हज करने को जा रहा था। आखिरी जमादि-उस्-सानी (आसाढ सुदि दूसरी 1=सोमवार, जून 9, 1651 ई०) को शिगनान के करीब पहुच कर वह मर गया। बादशाह ने उसके वेटो, खुसरो, वहराम और अब्दुल रहमान को मातमी के खिलअत दिये।

रूम (तुर्की) के कैसर (वादशाह) के पत्र का जवाब सादुल्ला खा वजीर ने अरवी मे लिखा और वादशाह ने उसके साथ 2 लाख रुपये की लागत की 1 कलगी और परतले सहित 1 जडाऊ तलवार कैसर के वास्ते भेजी। मोहीउद्दीन को 15,000) रुपये और सुनहरी सामान का घोडा देकर विदा किया। तब हाजी अहमद सईद, मीर अदल (अदालतो का निरीक्षक), को भी अपनी तरफ से उसके साथ कैसर के पास भेजा। 12,000) रुपये उसको भी दिये और 1,00,000) रुपये नकद और 1,00,000 रुपये का माल उसके साथ मक्का और मदीना के गरीबो के लिए भी भेजा।

मीर अदल की जगह शेख अब्दुल समद को अदालत की सेवा इनायत हुई।

कैसर के वकील को आने के दिन से बिदा होने तक 60,000 रुपये नकद

अथवा जिन्स मे मिले थे।

28 जिल्हिज (पौष वदि 30=मगलवार, दिसम्बर 2, 1651 ई०) को अर्ज हुई कि राजा विट्ठलदास गौड अपने वतन मे मर गया। बादशाह ने बहुत शोक प्रकट किया। उसके बड़े बेटे अनिरुद्ध को डेढ हजारी जात—2000 सवार के इजाफे से 3 हजारी जात—3000 सवार का मनसब देकर राजा पदवी और रणथभोर की किलेदारी प्रदान की। अर्जुन और भीम के इजाफे हुए और विट्ठलदास के बडे भाई बलराम के बेटे शिवराम और छोटे भाई गिरधर वगैरह के मनसब मे भी वृद्धि हुई। राजा विट्ठलदास 10 लाख रुपया नक्द, 5 लाख रुपये के जवाहर, हाथी और दूसरा माल छोड मरा था। वह सब बादशाह ने उसके बेटो को बख्श दिया।

सादुल्ला खा ने अपनी सेना का मौहल्ला (निरीक्षण) बादशाह के सामने कराया, यानी फौज की हाजरी दी। तब उसमे 4000 सवार, 1000 बरकदाज, 500 बेलदार और तबरदार गिने गये। उसके बेटो, लुत्फुल्लाह और इनायतुल्लाह की भी नजर हुई, जो पहिली बार सलाम के लिए उपस्थित हुए थे। बादशाह ने सादुल्ला खा को बहुत शाबासी दी, और उसके बेटे लुत्फुल्लाह को मोतियो की माला प्रदान की, और इनायतुल्लाह को सरपेच दिया।

सईद खा जफरजग काबुल मे मर गया, जो 7 हजारी जात—5000 सवार दो-अस्पा का मनसबदार था।

महाबत खा के बेटे लुहरास्प को महाबत खा का खिताब, 5 हजारी जात—5 हजार सवार का मनसब और काबुल का सूबा मिला।

बादशाह के आदेशानुसार निजाबत खा आगरे के खजाने से एक करोड रुपया लाहौर लाया।

जन्म-पत्री के हिसाब से (सौर-गणना के अनुसार) 61वा बरस प्रारभ होने के उपलक्ष मे 18 सफर (फागुन वदि 5=मगलवार, जनवरी 20, 1652 ई०) को उत्सव प्रारभ हुआ। उस दिन के तुलादान के दरबार में बादशाह ने बडे-बडे अमीरो से लेकर छोटे मनसबदारो तक, जिनको भी बादशाह पहिचानते थे, सभी के मनसब बढाये, और गुर्जबरदारो वगैरह को 1000 खिलअतें मिली।

8 रबी-उल्-अव्वल (फागुन सुदि 10=सोमवार, फरवरी 9, 1652 ई०) को बादशाह ने सोने के मीनाकार जडाऊ तख्त पर, जो 9 महीने मे 5 लाख रुपये के खर्च से तैयार हुआ था, जुलूस किया, और शाहजादा औरगजेब को लिखा कि "16 रबी-उल्-अव्वल, (सोमवार, चैत वदि 1=रविवार, फरवरी 15, 1652 ई०) की रात्रि मे काबुल जाने का मुहूर्त है। तुम भी उसी दिन मुलतान मे कधार को रवाना हो जाना।" तदनुसार शाहजादा औरगजेब उस निश्चित

दिन और मुहूर्त पर मुलतान से कधार के लिए रवाना हो गया। उधर उसी तारीख को बादशाह ने शाहजादा के लिए 5 लाख रुपये नकद और 50,000) रुपये का जेवर, 1 भारी खिलअत, बढिया कीमत की कलगी, सोने-चादी के साजो समेत 2 घोडे और हाथी-हथनी उसके पास भेजे। कुलीच खा और पहाडसिंह, वगैरह 20 अमीर उनके 20,000 सवारो समेत उसके साथ तैनात किये। इन 20 अमीरो मे से प्रत्येक लडाई के मैदान का शेर कहलाता था। बहुत सा खजाना और किले फतह करने का सामान भी शाहजादा के पास भेज कर उसे लिखा गया कि "कधार पहुच कर 3 जमादि-उस्-सानी, रविवार, (दूसरा वैसाख सुदि 5=मई 2, 1652 ई०) के दिन, जो दरबार के ज्योतिषियो का नियुक्त किया हुआ मुहूर्त है, किले को घेर लेवें।"

16 रबी-उल्-अव्वल (चैत वदि 3=मगलवार, फरवरी 17, 1652 ई०) को बादशाह स्वय भी तख्त खा (कहारो के कधो पर चलने वाले तख्त) पर बैठ कर काबुल को रवाना हुए। उसी दिन सादुल्ला खा वजीर को भी 50,000 सवार, 9,000 पैदल, बरकदाज और बहुत से बेलदारो सहित कधार की तरफ रवाना किया। उसके साथ 20 बडी तोपें, 20 मझोली, 20 हथनाल, 10 मस्त जगी हाथी, 100 शुतरनाल, 2 करोड रुपये नकद और किला फतह करने का बहुत सा सामान भी भेजा। उसी मुहूर्त पर कधार किले का घेरा लगाने की उसको भी ताकीद करके सुरग लगाने, दमदमा बनाने और मोरचे बढाने वगैरह की हिदायत दी। राजा जयसिंह, कासिम खा, रुस्तम खा, शत्रुसाल, राजा राजरूप और महाबत खा वगैरह बडे-बडे अमीर भी उसके साथ रवाना हुए।

इस चढाई मे कुल मिला कर 70,000 सवार, तोपखाने के सिवाय तैनात हुए, जिनके साथ 600 अमीर और बाकी मनसबदार थे, जिनको बादशाह स्वय पहिचानते थे। रुस्तम खा वगैरह सभी अमीरो को हाथी, घोडे, खिलअत और जवाहरात मिले और उनके मनसबो मे भी वृद्धि हुई। तलब और तीन महीने के अग्रिम वेतन के लिए उन्हें 1 करोड रुपये दिये गये। सभी अमीरो और तोपखाने वालो को काबुल मे यह दे देने का आदेश हुआ। उनको यह भी हुक्म था कि पहिले बिस्त और जमीनदावर के किलो को फतह करने की कोशिश करें, जिससे कधार के किले वाले डर जाए।

औरगजेब का मनसब असल और इजाफे से 20 हजारी जात—15 हजार सवारों का हो गया।

4 जमादि-उल्-अव्वल (पहिला वैसाख सुदि 5=शनिवार, अप्रेल 3, 1652 ई०) को बादशाह काबुल पहुचे।

18 जमादि-उल्-अव्वल (दूसरा वैसाख वदि 4=शनिवार, अप्रेल 17, 1652 ई०) को शाहजादा शुजा भी बगाल से आ गया। बादशाह ने उसका

नसव भी औरजेव के वरावर कर दिया और उसे 200 घोडे भी प्रदान किये ।

जुलूसी सन् छब्बीसवां

(अप्रेल 30, 1652 ई० से अप्रेल 18, 1653 ई० तक)

1 जमादि-उस्-सानी (दूसरा वैसाख सुदि 3=शुक्रवार, अप्रेल 30, 1652 ई०) को छव्वीसवा जुलूसी वरस शुरू हुआ, जिसकी खुशी मे प्राय सभी प्रतिष्ठित अमीरो के मनसव वढे और उनको इनाम भी मिले।

24 जमादि-उस्-सानी (जेठ वदि 11=रविवार, मई 23, 1652 ई०) को शाहजादा शुजा की 3,60,000) रुपये की पेशकश वादशाह की नजर से गुजारी गई, जिसमे वगाल की अनोखी वहुमूल्य वस्तुए भी थी।

नजर मुहम्मद खा के वेटे अव्दुल रहमान का ढग वादशाह को पसद नही आया, इसलिए उसको वगाल मे तैनात किया।

कंधार की मुहिम

औरगजेव और सादुल्ला खा ने कधार पहुच कर 3 जमादि-उस्-सानी (दूसरा वैसाख सुदि 5=रविवार, मई 2, 1652 ई०) को किले को घेरा, और सेना को चारो तरफ ऐसी जगह उतार कर, जहा कि गोला नही पहुचता था, वे सुरगो और मोरचो का वदोवस्त करने लगे। सादुल्ला खा वजीर ने और राजपूतो ने इस काम मे सवसे अधिक कोशिश की। कधार का किलेदार कई दिनो तक किले मे चुप वैठा रहा। किसी को अदर से किसी आदमी की आहट और वोली भी नही सुनाई दी। हिन्दुस्तानी लोग किले के नीचे जाकर किलेदार को वहुत वुरा-भला सुनाते थे, मगर वह सुनी अनसुनी कर जाता था।

जव रुस्तम खा और सादुल्ला खा के मोरचे खाई तक पहुच गये, तव सुविख्यात वहादुर राजा राजरूप ने शाहजादा के पास जाकर कहा कि "खाई के पास एक वुर्ज के नीचे कुछ ऐसी जगह है कि जहा से ऊपर चढने का खूव मौका है और किले वाले विलकुल वेखवर मालूम होते हैं। अगर मुझको आदेश हो तो कमद और निसेनी लगा कर मैं ऊपर चढ जाऊ। सम्पूर्ण सेना तैयार रहे और जव भेरी वजे तो निसेनी लगा कर वे सव भी ऊपर चढ आए।"

शाहजादा और वजीर ने यह सुन कर उसको स्वीकृति दे दी। तव वह किला फतह करने के कामो मे कई वहुत प्रसिद्ध और अनुभवी आदमियो के

साथ ऊपर चढ गया और भेरी वजा दी, जिसको सुनते ही वादशाही आदमी कमद और निसेनिया लेकर आगे वढे। उधर किले वालो ने, जो ऐसी ही आवाज सुनने के लिए चुपचाप वैठे थे, हर तरफ महतावे-रोशन (आतिशवाजी मे उजाला) करके तोपें और वदूकें चलानी शुरू की। आग, पत्थर, गर्म तेल और दूसरे ममाले ऐसी तेजी से फैंके कि जो लोग वुर्ज के ऊपर जा पहुचे थे और जो पहुच रहे थे, सव जल कर नीचे गिर पडे और मर गये। उधर जो भी किले के अदर गिरे, उनका कुछ पता न लगा। हर तरफ मुर्दों के ढेर लग गये। मुमलमान और राजपूत सर्वाधिक मरे, जिन्हें वडी कठिनाई से पहिचाना जा सकता था कि वे मुसलमान हैं या राजपूत।

उम दिन से दो महीने और आठ दिन तक वरावर नीचे ऊपर लडाई होती रही। जो भी आदमी मोरचे से सिर निकालता था, वह तत्काल मारा जाता था। रात्रि ने कजलवाश किले से निकल-निकल कर मोरचो पर आक्रमण करते थे और वहुत से आदमियो और जानवरो को मार जाते थे। एक रात को सादुल्ला खा और रुस्तम खा के मोरचे पर लड कर वे कई तोपो को कील[1] गये। वादशाही लोगो ने उनका पीछा भी किया, लेकिन कुछ न कर सके, क्योकि किले मे वहुत अधिक आग वरसती थी। तोपें तो इधर से भी वहुत चलती थी, लेकिन हिंदुस्तानी गोलदाज रूमी और कलजवाश गोलदाजो के मुकावले मे कुछ नही कर सकते थे। उनके अचूक निशानो से हिंदुस्तान के सरदारो के सारे के सारे परिश्रम और प्रयत्न अकारथ हो जाते थे। इसी तरह उच्च अधिकारियो की राय न मिलने से विस्त और जमीनदावर के किले भी फतह नही हो सके।

जव ये खवरें वादशाह के पास पहुची कि किले का घेरा विगड गया है, और तोपखाने का सामान समाप्त हो गया है तो उन्हें वहुत रज हुआ। इसके साथ ही यह भी अर्ज हुई कि उजवक लोग गजनी की तरफ लूट-मार करने लगे हैं, तव वादशाह ने अपने हाथ से औरगजेव को आदेश लिखा कि 'अभी तो चले आओ। फिर देखा जाएगा।"

'सियार-उल्-मुताखरीन' मे कधार के घेरे के वारे मे लिखा है कि —

"जव ईरान के शाह अव्वास को औरगजेव के कधार पर पहुचने की खवर लगी, तो सेना की तैयारी का हुक्म देकर उसने इस्फहान से कूच किया, और कुछ फौज आगे रवाना कर दी, जिसके डर से औरगजेव और हिंदुस्तान की सेना कधार से कूच कर वापस लौट गये।"

---

1 कीलना—तोप के अग्निसचार-रध्र में कील ठोक कर उसे अनुपयोगी वना देना। (स०)

दरबार का हाल

अब ज्येष्ठ शाहज़ादा दारा शिकोह ने काबुल के सूबे का बंदोबस्त अपने जिम्मे लिया। बादशाह ने उसको असल और इजाफे से 30 हजारी जात—22 000 सवार का मनसब और 3 करोड़ दाम इनाम के लाहौर और मुलतान की सायर (चुंगी-कर) से मुकर्रर करके गुजरात के बदले मुलतान का सूबा प्रदान किया। काबुल का सूबा उसके बेटे सुलेमान शिकोह को देकर 8 हज़ारी जात—4,0(0 सवार का मनसब और लाल डेरा भी प्रदान कर दिया, जो अब तक किसी शाहज़ादा के बेटे को नहीं मिला था।

मुलतान सूबा के बदले औरंगजेब को दक्षिण के चारों सूबों की सूबेदारी दी गई।

गुजरात की सूबेदारी शायस्ता खां को मिली।

24 शाबान (सावन वदि 11=बुधवार, जुलाई 21, 1652 ई०) को शाह-ज़ादा शुजा को बादशाह ने बंगाल जाने को विदाई दी, और उसके वास्ते एक करोड़ दाम (2,50,000 रुपये) इनाम के उड़ीसा और मछलीं बंदर से नियत हुए।

1 रमजान (सावन सुदि 2=मंगलवार, जुलाई 27, 1652 ई०) को सादुल्ला खां, अमीरुल् उमरा अलीमरदान खां, राजा जयसिंह और कुलीच खां वगैरह दरबार में उपस्थित हो गये, जो 12 शाबान (आसाढ सुदि 13=शुक्रवार, जुलाई 9, 1652 ई०) को कंधार से रवाना हुए थे। तब 11 रमजान (सावन सुदि 12=शुक्रवार, अगस्त 6, 1652 ई०) को बादशाह भी काबुल से लाहौर को रवाना हुए, परंतु अमीरुल्-उमरा, राजा जयसिंह और कुलीच खां सहित दारा शिकोह को वहीं छोड़ आये।

16 रमजान (भादों वदि 2 बुधवार, अगस्त 11, 1652 ई०) को अपने बेटों सहित शाहज़ादा औरंगजेब कंधार से आकर उपस्थित हुआ और 21 रम-जान (भादों वदि 8=सोमवार, अगस्त 16, 1652 ई०) को दक्षिण को रवाना हुआ। उसको 1 करोड़ दाम (2,50,000 रुपये) इनाम के बंगाल से दिलाये गये।

आखिरी रमजान (भादों सुदि 2=बुधवार, अगस्त 25, 1652 ई०) को बादशाह पेशावर पहुंचे। 17 शव्वाल (आसोज वदि 4=शनिवार, सितम्बर 11, 1652 ई०) को अटक से और आख़िरी शव्वाल (आसोज सुदि 2=शुक्रवार, सितम्बर 24, 1652 ई०) को झट (झेलम) के पार उतरे। 5 ज़ीक़ाद (आसोज सुदि 7=बुधवार, सितम्बर 29, 1652 ई०) को चिनाव से गुज़र कर 15 ज़ीक़ाद (कार्तिक वदि 3=शनिवार, अक्तूबर 9, 1652 ई०) को बादशाह लाहौर के बाग फ़ैजबख्श में दाख़िल हुए। रास्ते में कुछ आदमी मेह

और पानी के रेलो मे वह गये ।

मिर्जा रुस्तम सफवी की वीमारी और वृद्धावस्था के कारण उसके लिए 1 हजार रुपए वार्षिक नियत हुए । इसी तरह नजर मुहम्मद खा का वेटा खुसरो भी मनसव से दूर होकर लाख रुपया वार्षिक पाने लगा ।

21 जीकाद (कार्तिक वदि 9=शुक्रवार, अक्तूवर 15, 1652 ई०) को वादशाह लाहौर से कूच करके 16 जिल्हिज (मगसिर वदि 3=सोमवार, नवम्वर 8, 1652 ई०) को सरहिंद पहुचे । वहा तन और खालसा के दफ्तर का काम राजा रघुनाथ को इनायत हुआ ।

11 मुहर्रम (मगसिर सुदि 13=शुक्रवार, दिसम्वर 3, 1652 ई०) को वादशाह ने शाहजहानावाद के किले मे प्रवेश किया ।

सुलेमान शिकोह का मनसव हजारी जात—1000 सवार के इजाफे से 8 हजारी जात—5000 सवारो का हो गया ।

नमरत खा[1] को अकवरावादी महल की चिकित्सा करने के इनाम मे 30,000 रुपये नकद और मनसव साढे तीन हजारी जात—1000 सवार का मिला ।

5 सफर (पौप सुदि 7=सोमवार, दिसम्वर 27, 1652 ई०) को जहागीर वादशाह की छोटी वहिन शुक्रुल्-निशा वेगम, जो आगरा से दिल्ली आ रही थी, मथुरा पहुच कर मर गई । अत वादशाह के आदेश से अकवर वादशाह के मकबरे मे दफनाई गई ।

शाहजादा दारा शिकोह ने लाहौर से प्रार्थना-पत्र लिखा कि सेना की रवानगी का मुहूर्त 3 रवी-उल्-अव्वल (माह सुदि 5=रविवार, जनवरी 23, 1653 ई०) को और कधार घेरने का 7 जमादि-उस्-सानी (वैसाख सुदि 8=सोमवार, अप्रेल 25, 1653 ई०) को निकला है, सो जाने की स्वीकृति मिले । वादशाह ने मुलतान के मार्ग से जाने की अनुमति देकर उसके वास्ते वहुत से खिलअत, जवाहरात हाथी, घोडे, 1 लाख रुपये नकद और 1 लाख अशरफिया कई बार करके भेजी । यह सब 20 लाख रुपये का माल था । लडाई के वास्ते एक-एक मन का गोला फेंकने वाली दो तोपें, 7 हवाई तोपें[2], 30 छोटी तोपें, 1000 गोले, 5000 मन वारूद, 500 मन-सीसा, 14,000 वाण, खजाना,

1 नसरत खा—सही नाम तकर्रुव खा (हकीम दाऊद) । वारिस०, 2, पृ० 274, मासिर-उल्-उमरा (हिन्दी), 3, पृ० 346 9 । (स०)

2 हवाई तोप मे केवल हवाई गोले (अग्नि-वाण) चलते थे, उनमें सीसे के गोले नहीं चलते थे । (स०)

और सिपहखाने के वाहन के लिए 3,000 ऊट[1] और 1 करोड रुपये नकद भेजे। रुस्तम खा, राजा जयसिंह, कुलीच खां, निजावत खा, महावत खा, राजा रायसिंह, राव शत्रुशाल, राजा पहाडसिंह, इफ्तखार खा, ताहर खा, कुवाद खा, वाकी खा, वहादुर खा, सैयद अब्दुलरसूल, दिलावर खा, बहादुर खा का बेटा सैयद मकवूल आलम, राजा शिवराम, जैसे वडे-वडे 70 अमीर और 5000 मनसवदार, अहदी, तीरदाज, वरकदाज, यो कुल 70,000 सवार, 10,000 वदूकची, 6,000 वेलदार, 500 सुरग खोदने वाले, 500 भिश्ती और 60 मस्त जगी हाथी, शाहजादा के साथ जाने के लिए तैनात किये।

जुलूसी सन् सत्ताईसवां

(अप्रेल 19, 1653 ई० से अप्रेल 8, 1654 ई० तक)

1 जमादि-उस्-सानी (वैसाख सुदि 2=मगलवार, अप्रेल 19, 1653 ई०) को सत्ताईसवा जुलूसी साल शुरू हुआ।

27 जमादि-उस्-सानी (जेठ वदि 14=रविवार, मई 15, 1653 ई०) को राणा जगतसिह के पुत्र राजसिह का प्रार्थना-पत्र, जो अपने पिता के मरणोपरात उसने भेजा था, शाही दरवार मे पहुचा। वादशाह ने उसको राणा का खिताव, पाच हजारी - 5000 सवार का मनसव देकर जडाऊ जमधर और हाथी, घोडे वगैरह उसके लिए भेजे।

कधार की मुहिम

3 रवी-उल्-अव्वल (माह सुदि 5=रविवार, जनवरी 23, 1953 ई०) को शाहजादा दारा शिकोह लाहोर से रवाना होकर 15 रवी-उल्-अव्वल (फागुन वदि 2 - शुक्रवार, फरवरी 4, 1653 ई०) को मुलतान पहुचा। 25 रवी-उल्-अव्वल (फागुन वदि 12=सोमवार, फरवरी 14, 1653 ई०) को मुलतान की नदी को नावो के पुल पर से पार कर नीलाव के किनारे पहुचा। वहा एक सप्ताह मे 90 नावो का पुल तैयार हुआ था, जिससे सम्पूर्ण सेना का गुजरना कठिन था, और घेरे का मुहूर्त पास आ गया था। इसलिए शाहजादा ने रुस्तम खा, वहादुर खा, निजावत खा, कासिम खा मीर आतिश, अब्दुल्ला मीर वख्शी,

1. खाफी खा ने अपनी किताव 'मुन्तखव-उल्-लुवाव' मे लिखा है कि "यह सव सामान वादशाह ने पिछले वरस में 3 महीने 9 दिन तक लाहोर मे रह कर तैयार कराया था और रसद पहुचाने के वास्ते दिलासा देकर बनजारो को नियुक्त किया था।"

और अपने (दारा शिकोह के) मीर आतिश मीर जाफर को पहिले रवाना कर दिया। ये लोग 12,000 सवारो से धावा करके 3 जमादि-उस्-सानी (वैसाख सुदि 4=गुरुवार, अप्रेल 21, 1653 ई०) को कधार पहुचे और किले के सामने गोले की मार वचा कर ठहरे। उजवक किले की तरफ दौडे, उधर से कजलवाश भी निकले, तव दोनो मे लडाई हुई और दोनो तरफ के आदमी मारे गये।

दूसरे दिन रुस्तम खा सेना सजा कर किले के गिर्द मोरचे लगाने योग्य स्थानो की खोज मे निकला और तदर्थ वह तीन दिन तक फिरता रहा।

फिर शाहजादा भी विकट पहाडो और तग घाटियो से उतर कर 15 जमादि-उस्-सानी (जेठ वदि 1= मगलवार, मई 3, 1653 ई०) को किले से दूर ठहर कर 7 दिन तक मोरचो की जगहें जाचने को जाता रहा। तदनन्तर मिर्जा कामरा के वाग मे जाकर उतरा, जो किले से आध कोस दूर था, और रुस्तम खा वगैरह सभी अमीरो को तोपखाने समेत मोरचे वाट दिये। राजा जयसिंह का मोरचा आवदुज्द नामक वुर्ज के और वदनसिंह का वावा दरवाजे के सामने था।

प्रत्येक सरदार मोरचो को वढाने मे हद से ज्यादा कोशिश करता था। मुहम्मद जाफर मीर आतिश तो सर्वाधिक जान लगा रहा था। वह सिर के ऊपर एक वडा पर लगाये रहता था। एक दिन उसके वहुत मुह लगे एक मुसाहिब ने उससे पूछा कि "इतना वडा पर लगाने से क्या फायदा है?" उसने कहा कि "जिस दिन धावा होगा मैं इसी पर से उड कर किले मे पहुच जाऊगा।"

बादशाह का आदेश कधार क्षेत्र के विस्त किले वगैरह को पहिले फतह करने का था। इसलिए शाहजादा ने रुस्तम खा और निजाबत खा वगैरह 20 अमीरो और बहादुर राजाओ को 15,000 सवारो के साथ विस्त का किला फतह करने के लिए भेजा। उन्होंने वहा पहुच कर किले को तीन तरफ मे घेरा। हर एक तरफ से सुरगें दौडा कर 10 दिन तक गोले बरसाये और एक तरफ की दीवार उडा दी। तब वहा के किलेदार महदीकुली ने रुस्तम खा के पास उपस्थित होकर किले की चाबिया सौंप दी। किले मे उसके जो बाल-बच्चे थे, उनको उसके माल-असवाब सहित नाहर खा शाहजादा के पास ले गया। मगर उसके वेटे ने गिरिश्क का किला अपने पिता के लिखने पर भी नही छोडा और कई दिन तक बादशाही फौज से लडता रहा, किंतु अत में एक दिन उसे खाली कर वह निकल भागा। तव रुस्तम खा ने दूसरे किलो को घेरा, मगर कुछ भी काम न निकला।

कधार का किला शीघ्रातिशीघ्र विजय करने के लिए बादशाह के आदेश

वार-वार पहुचते रहते थे, इस वास्ते मीर जाफर और राजा राजरूप ने शाह-जादा के हुक्म से एक वडा दमदमा वनाना शुरू किया और कुछ मरदानो ने सुरगें भी खोदी।

शाहजादा अमीरो को वुला-वुला कर कहता था कि "मुझे औरगजेव मत समझना, जो दो वार विना विजय किये इस किले के नीचे से चला गया। यदि फतह नही करोगे तो मैं तुम मे से एक को भी जीवित न छोडूगा।"

मुहम्मद जाफर किला फतह करने मे सवसे ज्यादा जी खपाता था और शाहजादा से कहता था कि "किले पर आधिपत्य हो जाने के पश्चात् मैं किले वालो मे से एक को भी जीवित न छोडूगा। ऐसा न हो कि उनके करुणा-याचना करने और गिडगिडाने पर तरस खाकर आप उनकी जान वख्श देवें।" शाहजादा जवाव देता था कि "हम वादशाहो को दया का सागर कहते हैं। शत्रु के उपस्थित हो जाने पर दया करना आवश्यक है।"

सुरगो और मोरचो के वढाने मे कोशिश तो वहुत ही की जाती थी, परतु किले वालो की आग उगलती हुई तोपो के कारण उनका वश नही चल पाता था। अत मे मुहम्मद जाफर ने शाहजादा के आदेश से 1 दमदमा 75 गज लवा, 55 गज चौडा और 27 गज ऊचा 1 लाख रुपये के खर्च मे 40 दिन मे वनाया, उसके ऊपर वडी-वडी 10 तोपें चढाईं, जिनके गोले सीधे किले मे गिरने लगे। इसी तरह दमदमो से हवाई गोले और वाण वरावर वरसने शुरू हुए। जव इन गोलो से किले वालो की जान-माल का नुकसान होने लगा तो उन्होंने एक ऐसी तोप लगाई जिससे कि गोले शाहजादा के दौलतखाने पर गिरने लगे, जिनसे घोडे और आदमी वहुत मारे गये थे। तव एक वादशाही गोलदाज ने निशाना वाध कर उस तोप का मुह गोले से उडा दिया और वह तोप कई दिन तक वद रही। मगर फिर किले वालो ने उस जगह एक नया दमदमा वना कर तोप का मुह उसमे छुपा दिया। तदनन्तर वे पूर्ववत् गोले मारने लगे। अव आवाज और धुए के अतिरिक्त और कुछ सुनने और देखने मे नही आता था। प्रत्येक दिन शाम और सुवह दस-वारह वार वह तोप दागी जाती थी।

दमदमो के अतिरिक्त दूसरा वडा काम वादशाही सेना ने यह भी किया कि खाई का तमाम पानी चुरा लिया और हवाई गोलों से किले का 1 वारूद खाना भी उडा दिया। आग उगलती हुई तोपो के समय भी कई वार आक्रमण किये गये, लेकिन कोई लाभ नही हुआ।

वीच मे एक वार किले वाले फिर चुपचाप हो गये, तव तो मुहम्मद जाफर ने एक दिन शाहजादा से अर्ज की कि अदर से न आदमियो की आवाज आती है, और न कुछ आहट सुनाई देती है, वल्कि ऐसी दुर्गंध आती है कि जैसे

मुरदे सड गये हो । मालूम होता है कि बहुत से आदमियो समेत किलेदार मरी से मर गया है । इस पर सैनिको ने निश्चित होकर किले पर चढाई की। किंतु ज्यो ही दीवार के नीचे पहुच कर लोगो ने कमदो और निसेनियो से ऊपर चढना शुरू किया, त्यो ही एकाएक किले का तोपखाना चला । इससे इतने सवार और पैदल मारे गये कि गोलो की मार के कारण उनके वारिस कई दिन तक उनकी लाश उठा भी न पाये । परतु राजपूत लोग वडी मेहनत से रातो मे अपने मुरदो के ऊपर लकडिया फेंक-फेंक कर उन्हे आग दे देते थे ।

4 शाबान (आसाढ सुदि 5=सोमवार, जून 20, 1653 ई०) को घेरे को 56 दिन हो चुके थे । तब कुलीच खा, अब्दुल्ला खा और कासिम खा का मोर्चा 1000 गज चल कर खाई तक पहुचा । चहल-जीना बुर्ज को विजय करने का दायित्व राजा राजरूप ने लिया था, अतएव उसके आदमियो ने उस बुर्ज के नीचे से खोद कर उसकी मिट्टी निकाल डाली और फिर उससे कब्जा भी कर लिया। मगर किले वालो ने तोपें और बदूको के सिवाय मिट्टी के तेल में भिगोये हुए कपडे जला-जला कर फेंके कि उनके मारे वे न आगे बढ सके और न वहा ठहर सके, अत वे पीछे लौट आये ।

एक दिन मुहम्मद जाफर ने दो फकीरो को शाहजादा के पास हाजिर कर के कहा कि "ये दुनिया का हाल बताते है ।" शाहजादा ने बडे सम्मान से उनको अपने पास बैठा कर ईरान का हाल पूछा, तो उन्होने समाधि लगा कर कुछ देर पीछे कहा कि "अभी हम चलते-चलते जो इस्फहान पहुचे तो क्या देखते हैं कि शाह अब्बास का मातम हो रहा है, और उसको दफन कर दिया है ।"

इसी तरह एक दिन एक गणित विद्या (ज्योतिष) जानने वाले को लाकर अर्ज की कि "यह देव-जिन अर्थात् भूत-प्रेतो को बुलाने की विद्या जानता है ।" वह आदमी बोला कि "यदि ऐसी-ऐसी सूरत और शक्ल की एक वेश्या मिल जावे तो मैं उसके खून और शराब से कई हजार जतर लिख कर जिनो (भूतो) की सेना तुम्हारी मदद पर बुला दू ।' यह सुन कर सेना की सभी वेश्याए छिप गईं । अत मे बहुत ढूढने और खोज करने पर एक वेश्या उसी रग-रूप की मिली, जो बहुत सी शराब के साथ उसको सौंप दी गई । कुछ दिनो का वचन देकर वह उसके साथ मौज उडाता रहा । जब वचन का समय पूरा होने को आया तो वह भाग कर किले मे चला गया । वहा भी निश्चल नही बैठा । दुर्ग की दीवार पर चढ कर सैनिको से बातें किया करता था, जिससे कजलबाशो ने इसमे उसकी मिलावट समझ कर उसको मार डाला ।

मुहम्मद जाफर ने फिर कहना शुरू किया कि "आज कल मे किला फतह

हो जावेगा । किलेदार अपने साथियो सहित वदी हो जावेगा । आप उन पर दया न करके सबको मेरे हवाले कर देना, सो मैं उन्हे उनकी करतूतो की सजा देकर मार डालूगा ।" शाहजादा ने पुन. कहा कि "हम लोग वादशाह हैं । हमे अपराधियो को मारने की अपेक्षा उन्हे प्राणदान देने मे ही कही अधिक आनन्दानुभूति होती है ।"

जब किले के घेरे को चार महीने हो गये तो कुलीच खा, राजा जयसिंह, लश्कर खा, इरच खा, कासिम खा, अब्दुल्ला खा और जाफ़र वगैरह सरदारो ने किला फतह न होने मे अपनी बडी शर्मिंदगी समझ कर 9 शव्वाल (भादो सुदि 10 = मगलवार, अगस्त 23, 1653 ई०) को जब 5 घडी रात वाकी थी अपने-अपने मोरचो से हल्ला किया । उनके साथ बहुत से आदमी निसेनियो को कधो पर उठा कर ले गये थे, जिनके द्वारा सिपाही किले की दीवार पर जा चढे । उधर दमदमो पर से गोले भी खूब बरसाये गये । जो दीवारें गिर पडती थी, उनको और दिन तो रात के वक्त कि े वाले पुन ठीक कर लिया करते थे, मगर इस रात को वे यह भी न कर मके । सिपाहियो को किले पर चढ जाने के लिए पुकारते-पुकारते मुहम्मद जाफर का गला भी बैठ गया । मगर ज्यो ही सुबह हुई किले वालो ने एकदम इतने गोले, गिराव (छोटी गोलिया आदि वाला गोला विशेष) के छर्रे, लोहे के टुकडे, मिट्टी के तेल मे जलते हुए कपडे और छोटे-बडे पत्थर बरसाये कि उनसे बारह के बहुत से सैयद, मुगल, राजपूत और पठान मारे गये । जो बच गये, वे घबरा कर पीछे लौटे । पच्चीस बडे-बडे अमीर और राजपूत सरदार उस दिन मारे गये, जिनमे अहदियो का बख्शी, जियाउद्दीन और राजा मानसिंह गुलेरी भी थे । इस पर भी कुछ दिल-चले आदमी इजाफा पाने के लालच से मुरगो मे होकर खाई मे उतरे, लेकिन वे भी डूब कर मर गये । उस दिन सब मिला कर लगभग 2000 आदमी खेत रहे ।

शाहजादा ने रुस्तम खा वगैरह अमीरो को बुला कर अप्रसन्नता के साथ कहा कि "हम फिर फरमाते हैं कि हमको औरगजेब भाई मत समझना कि फतह किए बिना चले जावें ।" अमीरो ने अर्ज की कि "आप जो हुक्म देंगे उसका हम पालन करेंगे ।" यह कह कर उन्होंने नये सिरे से सुरगें बनाने, मोर्चे चढाने और दमदमे उठाने शुरू किये, जिनके ऊपर किले के गोलो से हर रोज बादशाही आदमी मारे जाते थे ।

यह हाल देख कर ईरान और हिन्दुस्तान के कारीगरो ने लकडियो पर तख्ते जड कर उन्हें रस्सो से बाधा और सिपाही उनकी आड मे बैठ कर किले के नीचे, जहा कि गोलो का बचाव था, जा पहुचे । किले वालो ने मिट्टी के तेल से भरी मश्कें उन तख्तो के ऊपर उतारीं, तीरो से उनमे छेद करके वह

तेल तख्तो पर गिराया, और तब जलते हुए कपडे और गूदडे फेंक-फेंक कर उन मे आग लगा दी। इस तरह उन सब तख्तो को रस्सो और सिपाहियो सहित जला दिया। साथ ही खाई मे सुरगें दौडा कर दमदमो के नीचे की सारी मिट्टी भी चुरा ली, और उनको खाली कुओ के माफिक बना दिया।

घेरे को पाच महीने गुजर गये थे, और तब तक गोला, बारूद और सीसा भी समाप्त हो चुके थे। सेना मे नाज और जगल मे घास नही रहा। वर्फ बरसने लगा। सेना के आदमी और जानवर सर्दी और भूख से मरने लगे। अमीरो मे फूट पड गई, एक सलाह नही रही। तब बादशाह ने अपने खास हस्ताक्षरो से शाहजादे को लिखा कि "अब चले आओ।"

रुस्तम खा को इस आदेश की खबर पहुची, उसने बिस्त का किला गिरा दिया और खुराक का जो सामान वहा था, वह लोगो को बाट दिया और तोपखाने का जो मसाला वहा था वह अपने साथ लेकर शाहजादा से आ मिला। तब शाहजादा ने जीकाद के मध्य (कार्तिक वदि = सितम्बर, 1653 ई० के अतिम सप्ताह)[1] मे किले के नीचे से कूच किया। वहीर के आदमियो को कजलबाशो और पठानो की लूट-मार के खयाल से पहिले ही तोपखाने के साथ गैरत खा के नेतृत्व मे रवाना कर दिया, जिससे कूच करने के बाद पिछली फौज को उन लोगो के हाथो बहुत नुकसान पहुचा।

15 जिल्हिज (मगसिर वदि 1 = गुरुवार, अक्तूबर 27, 1953 ई०) को दोकी मे डेरे हुए। वहा से शाहजादा तीव्र गति से कूच करके नौ दिन मे मुलतान पहुचा। फिर रुस्तम खा भी 21 दिन मे वहा पहुच गया। शाहजादा ने 11 दिन मुलतान मे रह कर 21 जिल्हिज (मगसिर वदि 8 = बुधवार नवम्बर 2, 1653 ई०) को लाहोर की तरफ कूच किया।

दरबार का हाल

12 शाबान, मगलवार, (आसाढ सुदि 13 = जून 28, 1653 ई०) को शाहजादा औरगजेब की अर्जी से लडका पैदा होने के शुभ समाचार पहुचे। बादशाह ने उसका नाम सुलतान मुहम्मद आजम रक्खा। यह शाहनवाज खा सफवी की लडकी से पैदा हुआ था।

15 शव्वाल (आसोज वदि 1 = सोमवार, अगस्त 29, 1653 ई०) को बादशाह की वहारबानू बेगम 65 बरस की उमर मे मर गई और मरियम मकानी के मकबरे मे दफनाई गई।

---

1 15 जीकाद, बुधवार (कार्तिक वदि 2 = सितम्बर 28, 1653 ई०), वारिस०, 2, पृ० 20-21, अथवा 16 जीकाद, गुरुवार, (कार्तिक वदि 3 = सितम्बर 29, 1653 ई०), लताइफ उल् अखबार, पृ० 168 अ-170 ब। (सं०)।

मुहम्मद इब्राहीम अख्तावेगी को असद खा का खिताव मिला।

9 जिल्हिज (कार्तिक सुदि 10=शुक्रवार, अक्तूबर 21, 1653 ई०) को नावो मे बैठ कर वादशाह दिल्ली से आगरा को रवाना हुए।

16 मुहर्रम (पौप वदि 3=रविवार, नवम्बर 27, 1653 ई०) को वादशाह आगरा मे प्रविष्ट हुए। उसी शाम को वे उस जुमा मसजिद को देखने के लिए गये जो किले मे 9 लाख रुपये की लागत से 7 वरस मे तैयार हुई थी। इस मसजिद की लम्बाई 56 गज और चौडाई 21 गज है। उसमे 3 कतारो मे 21 चश्मे हैं, जिन पर 3 गुंवद वने हैं। यह जमीन से 11 गज ऊची है। इसका चौक 60 गज समचौरस है। वीच मे दस गज लवा और इतना ही चौडा 1 हौज मकराने का है, जिसमे 1 फुहारा चलता था। वादशाह ने वहा नमाज पढ कर 10,000 रुपये खैरात किये।

सामूगढ की शिकारगाह की इमारत पुरानी हो गई थी, इसीलिए उससे आध कोस पर जमुना के किनारे इमादपुर मे वादशाह ने नई इमारत वनवाई थी। वह भी 80,000) रुपये की लागत से तैयार हो गई थी। वादशाह वहा शिकार खेलने को गए और 2 मुहर्रम (पौप सुदि 1=शनिवार, दिसम्वर 10, 1653 ई०) को लौट कर शाहजहानावाद की तरफ रवाना हो गये।

राणा जगतसिंह का भाई, गरीवदास, आज्ञा लिये विना ही अपने वतन को चला गया था। इस पर उसको मनसव और जागीर से अलग करने का आदेश हुआ।

14 सफर (माह वदि 1=रविवार, दिसम्वर 25, 1653 ई०) को वादशाह ने शाहजहानावाद के किले मे प्रवेश किया। दूसरे दिन शाहजादा दारा शिकोह, सुलेमान शिकोह समेत मुलतान से आकर उपस्थित हुआ। सादुल्ला खा और असद खा पेशवाई करके उसे दरवार मे ले गये।

26 सफर (माह वदि 13=शुक्रवार, जनवरी 6, 1654) को वादशाह ने 5 लाख रुपये की लागत से तैयार हुए जडाऊ मीनाकार तख्त के ऊपर ही जुलूस करके सौर साल गिरह का तुलादान किया। इस खुशी मे शाहजादा दारा शिकोह को 4 लाख रुपये के जवाहर, जडाऊ जेवर, हाथी और घोडे प्रदान किये और सुलेमान शिकोह का मनसव दस हजारी जात—6000 सवार का हो गया।

राजा जसवतसिंह को महाराजा का खिताव मिला और मनसव मे भी इजाफा हुआ।

1 रवी-उस्-सानी (फागुन सुदि 2=गुरुवार, फरवरी 9, 1654 ई०) को चान्द्र-मास के हिसाव से जन्म-दिन का तुलादान हुआ। उसके दरवार मे शाहजादा दारा शिकोह के पिछले इनाम के 20 लाख रुपये के अतिरिक्त

50,000 रुपये और इनाम के निश्चित हुए।

शाहजादा मुराद बख्श अपने बेटे एजद बख्श को लेकर उपस्थित हुआ। उसी समय अहमदाबाद की सूबेदारी शायस्ता खा से उतर कर उसको मिली और 5 लाख रुपये इनाम के भी मिले। उसका मनसब भी इजाफा होकर 15 हजारी जात—12,000 सवारो का हो गया, जिसमे 5000 सवार दो-अस्पा और से-अस्पा थे। उस दिन और अमीरो के मनसवो मे भी वृद्धि हुई थी।

जसरूप मेड़तिया, जो बादशाही नौकर था, तलवार निकाल कर चादी के कटघरे के बाहर से बादशाह की तरफ दौडा और तख्त की पहिली पैंडी पर पहुचा था कि नौबत खा कोटवाल, वगैरह तीन आदमियो के हाथ से मारा गया।

22 रबी-उस्-सानी (चैत वदि 9=गुरुवार, मार्च 2, 1654 ई०) को बादशाह बड़े शाहजादे के मकान पर गये और 4 लाख रुपये की पेशकश स्वीकार की।

मुहम्मद जाफर ने कधार के घेरे मे बहुत मेहनत की थी, अत शाहजादे की सिफारिश पर उसे मीर आतिश का खिताब मिला।

दूसरे दिन शाहजादा दारा शिकोह के तुलादान का मुहूर्त था। बादशाह ने उसके इनाम के दाम असल और इजाफे से 12 करोड वार्षिक पजाब और मुलतान के परगनो से नियत कर दिये। 12 करोड दाम के 30 लाख रुपये होते थे।

सूरत बदर के मुत्सद्दी की अर्जी पहुची कि रूम के सुलतान मुहम्मद खा का राजदूत, जुल्फिकार आका, खत और सौगातें लेकर आता है। बादशाह ने गुर्जबरदार के साथ आदेश भेजा कि उसको खर्च के वास्ते 12000) रुपये सूरत का मुत्सद्दी, 5000) रुपये नजरबार (नन्दुरबार) तथा सुलतानपुर के फौजदार, और 12000) रुपये बुरहानपुर का दीवान देवें। 5000) रुपये उज्जैन के और 12000) रुपये आगरे के खजाने से उसे मिलें। इसके अतिरिक्त सब ही सूबेदार अपने-अपने इलाको मे अपनी तरफ से उसका आदर-सत्कार करें।

जुलूसी सन् अट्ठाईसवां

(अप्रेल 9, 1654 ई० से मार्च 29, 1655 ई० तक)

1 जमादि-उस्-सानी (वैसाख सुदि 3=रविवार, अप्रेल 9, 1654 ई०) को 28वा जुलूसी सन् शुरू हुआ। उस दिन कैसर रूम के वकील जुल्फिकार आका को लशकर खा वख्शी और ताहिर खा पेशवाई करके दरबार मे लाये। उसने कैसर का खत दिया और सोने और मोती के साज के 2 घोडे, जडाऊ तलवार, और उस मुल्क के वादशाहो का खास हथियार, जडाऊ गुर्ज, पेश किया। उसने 29 घोडे अपनी तरफ से भी नजर किये।

वादशाह ने खत बडी इज्जत से लेकर वकील को खिलअत, जडाऊ तलवार, .0000 रुपये नकद, 400 तोले की एक मोहर तथा इतना ही भारी 1 रुपया, सोने का एक पानदान, और अरगजा (इत्र विशेष) के 3 प्याले इनायत किये, और जहा कि सब आवश्यक सामान सुसज्जित करा दिये गये थे, ऐसे एक वादशाही महल मे ठहरने का उसे आदेश दिया।

फिर सुलतान सुलेमान शिकोह की शादी मे 30,000) रुपये बादशाही सरकार से, 15,000 रुपये मलिका दौरान नवाव कुदसिया की सरकार से, और 5000 रुपये सुलेमान शिकोह की सरकार से उसको (जुल्फिकार आका) मिले, और 30,000 रुपये के जवाहरात इसके अतिरिक्त थे। सादुल्ला खा वजीर ने घोडे और खिलअत वगैरह के साथ 15000 रुपये भी अपनी ओर से दिए। वह आया था उस दिन से लेकर विदा होने के वक्त तक कुल 2,75,000 रुपये उसको मिले थे। कायम वेग अरबी और तुरकी भाषाए अच्छी तरह से वोल सकता था, अत उसे उसके साथ रूम के कैसर के दरवार मे जाने का हुक्म हुआ। खत का जवाव सादुल्ला खा वजीर ने अरबी मे लिखा। कैसर के वास्ते 1,00,000 रुपये कीमत की 1 तलवार, जिसमे मोती और पन्ने की लडिया लगी हुई थी, 40,000 रुपये कीमत की 1 पेटी, बगाल, अहमदाबाद और बुरहानपुर के सादा और जरी के कपडों के 1000 थान, जो 1,00,000 रुपये के थे, और 4000 रुपये कीमत का 50 तोला जहागीरी इत्र, जो 1 शीशी मे था, कायम वेग के हवाले किया गया। वकील को विदा करते वक्त उसकी (वकील की) जवानी इस्तवोल मे हैजा फैलने की चर्चा सुन कर वादशाह ने जवाहरात के 100 दानो की 1 माला भी, जिसकी सुमरनी जहर मोहरे की की थी और जो हमेशा वादशाह की भुजा पर वधी रहती थी, उन सौगातो मे शामिल कर दी। कायम वेग को भी वहुत सा माल और रुपया दिया गया।

15 जमादि-उस्-सानी (जेठ वदि 1=शनिवार, अप्रेल 22, 1654 ई०) को

सध्या समय बादशाह अपने पोते सुलतान सुलेमान शिकोह के मकान पर गये। उसने 1 लाख रुपये की पेशकश बादशाह के नजर की और जो अमीर साथ गये थे, उनमे से अधिकाश को बादशाह के हुक्म से खिलअत दिये।

26 शव्वाल (दूसरे भादो वदि 13 = मगलवार अगस्त 29, 1654 ई०) को शेख अब्दुल हमीद, जिसने 'बादशाह-नामा' लिखा था, मर गया।

बादशाह ने मक्का मे नाज की महगाई सुन कर 1,00,000 की जिन्स अहमदाबाद और बदर सूरत से दिला कर ख्वाजा जावित को मक्का भेजा, और आदेश दिया कि तीसरे हिस्से की जिन्स तो मक्का के शरीफ महत) को देवे और बाकी गरीबो को बाट दे। मदीने की मसजिद की लम्बाई-चौडाई के बराबर मुलतान मे बुनी हुई कबल की एक उमदा जानमाज (नमाज पढने की दरी) भी ख्वाजा के साथ भेजी।

2 जिल्हिज (आसोज सुदि 4 = बुधवार, अक्तूबर 4, 1654 ई०) को बादशाह ख्वाजा पीर की जियारत के लिए अजमेर को रवाना हुए। उस वक्त यह अर्ज हुई कि "जहागीर बादशाह के जमाने मे चित्तौड दुर्ग की मरम्मत नही करने का हुक्म जारी हो चुका था, मगर राणा जगतसिंह ने उस आदेश का उल्लघन कर उस दुर्ग की मरम्मत कर ली है।" यह सुन कर बादशाह ने अब्दाल बेग को वास्तविकता का पता लगाने के लिए वहा भेजा। उसने वापस आकर अर्ज की कि "पश्चिम की तरफ 7 दरवाजे एक के ऊपर एक हैं, उनमे कुछ पुराने गिरे पडे थे, जिन्हें सुधारा गया है, और कुछ नये भी बने हैं, तथा बहुत सी जगहो पर जहा से पहाड के ऊपर चढना कठिन न था वहा दीवारें बना दी हैं।" इस पर बादशाह ने सादुल्ला खा वजीर को हुक्म दिया कि 30,000 सवार से जाकर किले को गिरा दे। राणा ने खबर पाकर अपने वकील भेजे और शाहजादा दारा शिकोह की सिफारिश के साथ क्षमा के लिए अर्ज कराई। बादशाह ने फरमाया कि "जो राणा अपने टीकाई लडके को हुजूर मे भेजे और परपरागत दस्तूर के माफिक 1000 सवार दक्षिण मे हाजिर रखे, तो उसके कुसूर माफ कर दिए जावेंगे।" राणा ने जवाब मे अर्ज कराई कि "यदि सरकार का दीवान शेख अब्दुल करीम आ जावे तो मैं अपने बेटे को उसके साथ दरबार मे भेज दूगा और 1000 सवार पूर्व नियमानुसार दक्षिण को भेजूंगा।"

25 जिल्हिज (कार्तिक वदि 13 = शुक्रवार, अक्तूबर 27, 1654 ई०) को बादशाह अजमेर पहुच कर अना सागर तालाब के ऊपर दौलतखाना मे उतरे और उसी दिन शाम को जियारत करने गये। इसी दिन सादुल्ला खा चित्तौड दुर्ग के पास पहुचा और 14 दिन मे वहा के बुर्ज और कगूरे गिरा कर पीछा लौटा।

राणा ने अपने 6 वर्षीय बडे लडके को कई बडे-बडे सरदारो सहित अब्दुल करीम और सरकारी मुशी चद्रभान के साथ दरबार मे भेजा।

हाजी अहमद सईद रूम से वापस आया।

आखिरी जिल्हिज (कार्तिक सुदि 1=मगलवार, अक्तूबर 31, 1654 ई०) को अमीरुल्-उमरा अलीमरदान खा ने अपने बेटो सहित काश्मीर से आकर मुजरा किया।

श्रीनगर का जमीदार अपने विकट पहाडो के भरोसे पर भूल कर अब तक दरगाह मे उपस्थित नही हुआ था, इसलिए बादशाह ने खलीलुल्लाह खा को 8000 सवारो से उसके ऊपर रवाना किया।

9 मुहर्रम (कार्तिक सुदि 10=गुरुवार, नवम्बर 9, 1654 ई०) को बादशाह ने ख्वाजा साहिब (मुइनुद्दीन चिश्ति) की दरगाह मे जाकर पुन जियारत की।

14 मुहर्रम (कार्तिक सुदि 15=मगलवार, नवम्बर 14, 1654 ई०) को बादशाह ने अजमेर से कूच किया।

21 मुहर्रम (मगसिर वदि 8=मगलवार, नवम्बर 21, 1654 ई०) को मालपुरे मे मुकाम हुआ। वहा अब्दुल करीम राणा के बेटे को लेकर उपस्थित हुआ। उस लडके का अब तक नाम नही रखा गया था, इसलिए बादशाह ने उसका नाम सौभाग्यसिह रखा और मोतियो का सरपेच, जडाऊ उर्वसी, वगैरह प्रदान किए। उसके साथियो मे से रामचन्द्र वगरह 8 आदमियो को घोडे और खिलअत प्रदान किये।

22 मुहर्रम (मगसिर वदि 9=गुरुवार, नवम्बर 22, 1654 ई०) को सादुल्ला खा सेना सहित चित्तौड से आकर उपस्थित हुआ।

26 मुहर्रम (मगसिर वदि 13=रविवार, नवम्बर 26, 1654 ई०) को राणा के बेटे को हाथी तथा घोडा मिले, और घर जाने को उसे विदाई दी गई।

1 सफर (मगसिर सुदि दूसरी 2=शुक्रवार, दिसम्बर 1, 1654 ई०) को शाहजादा औरगजेब के बेटे मुहम्मद सुल्तान ने दक्षिण से घाटी चादा के रास्ते आकर अपने बाप के भेजे हुए 3 लाख रुपये की कीमत के हाथी और जडाऊ जेवर नजर किये। बादशाह ने घोडा और खिलअत देकर उसका रोजीना असल इजाफे से 200 रुपये का कर दिया।

14 सफर (पौष वदि 14=गुरुवार, दिसम्बर 14, 1654 ई०) को बादशाह रूपवास मे शिकार खेल कर फतहपुर पहुचे।

17 सफर (पौष वदि 1=रविवार, दिसम्बर 17, 1654 ई०) को बादशाह आगरा दुर्ग में प्रविष्ट होकर शाहजादा दारा शिकोह के मकान

पर लौट आये। शाम के वक्त बहादुरपुर को रवाना हुए, क्योंकि दिल्ली जाने के लिए वहा छावनी डाली गई थी।

19 सफर (पौष वदि 6=मगलवार, दिसम्बर 19, 1654 ई०) को बादशाह ने दिल्ली जाते हुए घाट स्वामी से मुहम्मद सुल्तान को 50,000 रुपये देकर बुरहानपुर जाने को विदाई दी, और 1 लाख रुपये शाहजादा औरगजेब को बुरहानपुर के खजाने से इनायत किये।

शाह ईरान के वजीर खलीफा सुल्तान का भानजा मीर जाफर नौकरी की आशा से अपने वतन से आया। बादशाह ने उसको 10,000 रुपये इनाम के देकर डेढ हजारी जात—1000 सवार के मनसब पर नौकर रख लिया।

9 रबी-उल्-अव्वल (पौष सुदि 11=सोमवार, जनवरी 8, 1655 ई०) को बादशाह ख्वाजा खिज्र के घाट मे नाव मे बैठ कर शाहजहानाबाद के किले मे प्रविष्ट हुए।

चान्द्र-मास के हिसाब से 66वा बरस बादशाह को लगा। उसके उपलक्ष्य मे 8 रबी-उस्-सानी (माह सुदि 10=मगलवार, फरवरी 6, 1655 ई०) को तुलादान की महफिल मे शाहजादा दारा शिकोह को ढाई लाख रुपये का खासा खिलअत सोने के काम की नादिरी (एक प्रकार की बडी) समेत, जिसके फूलों मे हीरे और किनारो पर मोती टके हुए थे, 1 लाख रुपये का जडाऊ सरपेच, और 30 लाख रुपये इनायत फरमाये। तदनन्तर तख्त के पास सोने की एक चौकी पर बैठने का हुक्म और 'शाह बुलद इकबाल' का खिताब बख्शा। शाहजादा सुलेमान शिकोह का मनसब दो हजारी जात—1000 सवारो के इजाफे से 12 हजारी जात—7 हजार सवारो का हो गया।

शायस्ता खा को मालवा की सूबेदारी प्रदान की। इसी तरह से दूसरे अमीरो को भी इनाम, खिताब और इजाफो से सम्मानित किया गया। अमीरल्-उमरा को काश्मीर जाने को बिदा किया गया।

बुयूतात के दीवान मुहम्मद सालेह को मोतमद खा का खिताब, 2 हजारी—2 हजार सवारो का मनसब, सोने का कलमदान और शाह बुलद इकबाल की दीवानी का पद मिला, और शेख अब्दुल करीम, जो पहिले दीवान था, उसको 5 लाख दाम परगने थानेश्वर से इनायत हुए।

25 रबी-उस्-सानी (फागुन वदि दूसरी 12=शुक्रवार, फरवरी 23, 1655 ई०) को बादशाह ने शाह बुलद इकबाल दारा शिकोह के मकान पर जा कर 2 लाख रुपये की पेशकश स्वीकार की। सादुल्ला खा और महाराजा जसवतसिह वगैरह 59 बडे-बडे अमीरो को पदानुसार इनाम और खिलअत चार कुब्ब और फरजी वगैरह समेत शाह बुलद इकबाल की सरकार से इनायत हुए। इसी मजलिस मे सिरोही के राव अखैराज ने उपस्थित होकर मुजरा

किया। वादशाह ने उसको सरपेच, जडाऊ कडे और घोडे इनायत किये।

हरजी वोहरे के 4 अरवी घोडे वादशाह की नजर से गुजरे और उसको वादशाह की तरफ से हाथी इनायत हुआ। सूरत मे इसके वरावर कोई धन-वान् नहीं था।

जुलूसी सन् उनतीसवां

(मार्च 30, 1655 ई० से मार्च 17, 1656 ई० तक)

21 शव्वाल (भादो वदि 7=मगलवार, अगस्त 14, 1655 ई०) को शाह शुजा के भेजे हुए 52 घोडे वादशाह की नजर से गुजरे।

औरगजेव के वेटे सुल्तान मुहम्मद को वगाल और उडीसा के सूवे से 1 करोड दाम मिले।

मुल्ला शफीआ को दानिशमद खा का खिताव और लशकर खा के स्थान पर दूसरे वख्शी का पद मिला।

4 जीकाद (भादो सुदि 5=रविवार, अगस्त 26, 1655 ई०) को तमाम जरेजेव हकीम सालेह को इनायत हुआ। जरेजेव नाम का यह खोचा हमेशा और हर जगह हुजूर मे मौजूद रहता था, इसमे तिरयाक, दवा-उल्-मुश्क, नौशदारु, कमूनी, जहर मोहरा, मुमयाई, और जद्वार खताई, जैसी दवाइया, 100 रुपये और 100 मोहरें रखी रहती थी।

14 जीकाद (भादो सुदि 15=बुधवार, सितम्वर 5, 1655 ई०) को मूसवी खा के वेटे नूरुद्दीन कुली को हुक्म हुआ कि सोने की तख्ती, जिस पर आदिल खा की अर्ज से वादशाही फरमान खोदा गया था, कुछ सौगात और जडाऊ खजर के साथ ले जाकर वीजापुर मे पहुचा आवे।

10 जिल्हिज, सोमवार (आसोज सुदि 11=अक्तूवर 1, 1655 ई०) को वादशाह ईद की नमाज पढने के वास्ते शाहजहानावाद की शहरपनाह के वाहर ईदगाह मे गये, जो डेढ वरस मे 50,000 रुपये के खर्च से तैयार हुई थी।

कायम वेग की अर्जी जद्दा से पहुची। उसमे लिखा था कि "रूम का वकील जुल्फिकार आका, सूरत से जहाज 'रजाई' पर सवार होकर जव कन-फजे के वदर मे पहुचा, जहा से मक्का 12 मजिल रह जाता है, तव उसने अपना और असवाव तो जहाज मे ही रहने दिया, तथा 30 हजार इब्राहिमी (रुपया) और जवाहरात का अपना सदूकचा लेकर आप खुश्की के मार्ग से

6 दिन मे जद्दा पहुच गया। परतु वह जहाज नही पहुचा, क्योकि वह रास्ते मे ही डूब गया था। जुल्फिकार आका बीमार तो पहले से ही था, अब जो जहाज के डूबने का समाचार सुना तो असबाब के खो जाने के दुःख से वह मर गया।

23 मुहर्रम (मगसिर वदि 9=सोमवार, नवम्बर 12, 1655 ई०) को 6 लाख रुपये दक्षिण के खजाने से शाहजादा औरगजेब को प्रदान किये गये।

कुतुबुल्मुल्क के नौकर मीर जुमला ने कर्नाटक का मुल्क, जो 150 कोस लबा और 30 कोस चौडा था, जिसमे हीरे वगैरह की बहुत सी खाने थी, और हासिल भी 40 लाख रुपये से कम न थी, फतह कर लिया था, अत तदनन्तर वह बहुत शक्तिशाली हो गया था। इस कारण से उसके दुश्मनो ने कुतुबुल्मुल्क का दिल उसकी तरफ से फेर दिया था, जिससे घबरा कर उसने शाहजादा औरगजेब का आश्रय लिया, और शाहजादे के लिखने से बादशाह ने उसके वास्ते 5 हजारी जात—5 हजार सवार का मनसब, और उसके बेटे मुहम्मद अमीन के वास्ते 2 हजारी—1000 सवार का मनसब काजी मुहम्मद आरिफ के साथ भेजा।

7 सफर (मगसिर सुदि 8=सोमवार, नवम्बर 26, 1655 ई०) को शाहजादा शुजा का बेटा, सुल्तान जेनुल-आबदीन, बगाल से आकर उपस्थित हुआ।

सौर-गणना से 24 रबी-उल्-अव्वल (माह वदि 11=शनिवार, जनवरी 12, 1656 ई०) को बादशाह की उमर का 65वा बरस शुरू हुआ, जिसके तुलादान की मजलिस मे बादशाह ने शाह बुलद इकबाल दारा शिकोह को 1 लाख रुपये के जवाहर और 50,000 रुपये नकद इनायत करके 10 हजारी जात के इजाफे से 40 हजारी जात—20 हजार सवार का मनसब इनायत फरमाया। उसके छोटे बेटे सिपहर शिकोह को 8 हजारी जात—2000 सवार का मनसब और थट्टा का सूबा दिया। सुल्तान जेनुल-आबदीन को 7 हजारी जात- 2000 सवार का मनसब दिया। अमीरुल्-उमरा और सादुल्ला खा से लेकर हजारी जात के मनसब तक के अमीरो को पदानुसार खिलअतें मिली।

चाद्र-मास के हिसाब से 1 रबी-उस्-सानी (माह सुदि 3=शनिवार, जनवरी 19, 1656 ई०) को बादशाह की उमर का 67वा वर्ष शुरू हुआ। उस दिन के दरबार मे 6 लाख रुपये बिहार के खजाने से शाह शुजा को और 1 लाख रुपये दक्षिण के खजाने से शाहजादा औरगजेब के बेटो को इनायत हुए। रामसिह को खिलअत मिली।

इन दोनो तुलादानो के दरबार मे 26 लाख के जवाहरात और जडाऊ चीजें वगैरह की पेशकश स्वीकृत हुई।

काशगर के मालिक अब्दुल्ला-खा के वकील हाजी फौलाद ने उपस्थित

होकर आठ घोडे नजर किये । उसको 6000) रुपये इनाम मे मिले ।

7 रवी-उस्-सानी (माह सुदि 9=शुक्रवार, जनवरी 25, 1656 ई०) को सुल्तान जेनुल-आवदीन को वगाल जाने की विदाई दी गई । उसको उपस्थित होने के दिन से अब तक हाथी, घोडो के अतिरिक्त 1 लाख रुपये के जवाहर इनायत हो चुके थे, और 100 घोडे उसके वाप शाह शुजा के वास्ते भी उसको दिये गये ।

जव्हार की जमीदारी की उत्तरी सीमा वगलाना से और दक्षिणी सीमा कोकण से मिली हुई थी । चौल का वदर भी वहा के जमींदार, श्रीपत के अधिकार मे था, और वह आदेश भी नही माना करता था । इसलिए वहा की जमींदारी शाहजादा औरगजेव की अर्ज से राव करण को मिली ।

जुलूसी सन तीसवाँ

(मार्च 18, 1656 ई० से मार्च 6, 1657 ई० तक)

1 जमादि-उस्-सानी (चैत सुदि 2=मगलवार, मार्च 18, 1656 ई०) को 30वा जुलूसी सन् शुरू हुआ और परम्परानुसार उसके दरवार हुए ।

सादुल्ला खा वजीर का मरना

22 जमादि-उस्-सानी (वैसाख वदि 9=मगलवार, अप्रेल 8, 1656 ई०) को सादुल्ला खा वजीर, जो वुद्धि, चातुर्य और शासन-प्रवन्ध मे अपने समय मे अद्वितीय था, कूलज (उदर-शूल) की वीमारी से मर गया । इसमे वादशाह को इतना रज हुआ कि आखो से आसू निकल पडे । उसका वडा वेटा, लुत्फुल्लाह, 15 वरस का था । उसको तो 7 सदी जात—100 सवार का मनसव मिला, वाकी 3 वेटो 2 वेटियो और 4 औरतो के लिए मुनासिव रोजीना निश्चित कर दिये गये । उसके नौकर अव्दुल नवी को हजारी जात—400 सवार का मनसव और शमशावाद की फौजदारी मिली । इसी तरह से उसके दूसरे नौकरो की भी सहायता की गई । उसकी जागीर मे से 4 करोड दाम शाह वुलद इकवाल दारा शिकोह को प्रदान किये, जो मथुरा वगैरह परगनो के थे और उन परगनो की फौजदारी और राहदारी भी शाह वुलद इकवाल के नौकर, शेख दाऊद को सौंपी गई ।

रघुनाथ, जो तन-दफ्तर का अधिकारी था और सादुल्ला खा का वनाया हुआ था, उसको वादशाह ने हजारी जात—400 सवार का मनसव और

रायराया का खिताब देकर यह आदेश दिया कि दीवान-आला के नियुक्त होने तक वह दीवानगी का काम सभाले और कामो का खुलासा अर्ज करता रहे। खुद बादशाह भी तब इन कामो की जाच करने लगे।

चन्द्रभान अफजल खा का बढाया हुआ एक योग्य मुशी था, जिसे दारा शिकोह ने बादशाह से माग लिया था, अब उसे फिर दारा शिकोह से लेकर बादशाह ने मुशीगीरी पर नियुक्त किया और राय चद्रभान का खिताब देकर उसे हिन्दू मुशियो का अधिकारी बनाया।

सादुल्ला खा बहुत नेक आदमी था। ईश्वर से डर कर ईमानदारी से काम करता था। उसने अपने वजारत-काल मे रैयत पर कोई नई लाग लगाने की बदनामी नही ली। गरीबो का हित देख कर ही वह मुकदमो और हिसाबी झगडो का फैसला करता था। पहिले यह नियम था कि आमिलो यानी तहसीलदारो को तहसील के रुपयो मे से 5) रुपये सैकडा मुजरा दिया जाता था (यानी 100) रुपये मे से 95 रुपये सरकार मे जमा होकर 5 रुपये छूट मे आमिल को मिल जाते थे)। सादुल्ला खा ने एक दिन किसी आमिल के हिसाब का फैसला करते समय सरकार के लाभ को देखते हुए यह हुक्म जारी कराया कि आमिल लोग 105) तहसील (भूमि-कर की वसूली) करके 100) सरकार मे जमा करें और 5) अपने हक्क के ले लेवें। मगर बाद मे उसने बहुत पश्चात्ताप किया, और कई वर्षों तक अफसोस कर-कर के कहता था कि "जिस दिन मैंने इस जुल्म का हुक्म लिखा मेरा हाथ क्यो नही सूख गया।"

शाहजादा दारा शिकोह सादुल्ला खा से नाराज रहा करता था। एक दिन उसने बादशाह से अर्ज की कि सादुल्ला खा ने वीरान और कम हासिल वाले परगने तो हमारी जागीर मे दिये हैं और अधिक पैदावार के खुद ले लिये हैं। सादुल्ला खा ने यह सुन कर शाहजादे के वकील को बुलाया और जो परगने शाहजादे के आमिलो के जुल्म से उजड गये थे, वे तो अपनी जागीर मे ले लिये और उनके बदले अपनी जागीर मे से, जो परगने वकील ने मागे शाहजादे के वेतन मे लिख दिये। मगर दो-एक साल मे ही ये नये परगने भी पहिले के परगनो से कही ज्यादा वीरान हो गये।

सादुल्ला खा के दस्तखतो (अपने हाथ से लिखे अनुलेखो) मे से वे दो आदेश यहा दिये जाते हैं, जो उसने मुस्तौफी (लेखा-परीक्षक) की बदर-नवीसी (हिसाबी जाच-पडताल) की फर्दों (वहियो) पर लिखे थे —

(1) राजा टोडरमल ने अकबर बादशाह के शासन-काल मे यह नियम बना दिया था कि आमिलो और करोडियो की फाजिल (अतिरिक्त) रकम यदि 100 रुपयो से कम हो तो मुस्तौफी उसे हिसाब मे मुजरा नही देवें, किन्तु यदि वह रकम उससे अधिक हो तो उसे मुजरा दे देवें। मगर शाहजहा के

जमाने मे मुस्तौफी लोग लालचवश आमिलो की यह फाजिल मुजरा देने मे वाधाए डालते थे। जव ऐसे एक हिसाव की फर्द सादुल्ला के सामने पेश हुई तो उसने यह दस्तखत (अनुलेख) किया—"ए मुस्तौफी! हिन्दी मसल (लोकोक्ति) सर्वज्ञात है कि 'लेना-लना और देना-देना'। अत जव सरकार का नियम बन चुका ह कि सौ रुपये से अधिक की फाजिल रकम मुजरा दी जावे, तव तू क्यो यह नई लाग लगा कर अपने और मेरे वास्ते परलोक खराव होने के शाप लेता है?"

(2) एक दिन खालसे के करोडियो से वदर-नवीसी (अतिरिक्त) की रकम जमा कराने के वास्ते फर्द पेश हुई, तो उसने यह दस्तखत (अनुलेख) किया कि—"वर्फ के इस मीनार को धूप मे रख दो, और पिघल जाने के वाद जो (रकम) वाकी रहे वह जमा करवा लेवे।"

'मुन्तखव-उल् लुवाव' मे लिखा है कि "सादुल्ला खा की इसी ईमानदारी के कारण उसकी मृत्यु के 74 वर्ष वाद अव भी उसकी सतान की खुशहाली और प्रतिष्ठा वनी हुई है, जहा दूसरे अमीरो के नाम-निशान भी नही रहे, और यदि किसी के वशज हैं तो उन्हे न तो खाने को मिलता है न उनकी कुछ भी प्रतिष्ठा है।"

दरबार का हाल

आदिल खा की पेशकश वादशाह की नजर से गुजरी। उसमे सोने के साज समत एक वडा हाथी था, जिसकी कीमत 60,000 रुपये हुई। वादशाह ने भी आदिल खा के लिए 30,000 रुपये की एक जडाऊ पेटी भेजी।

इसी तरह कुतुवुल्मुल्क की पेशकश मे 4 हाथी 2 हथनी और कुछ जवाहर अब्दुल समद खा के माध्यम से पेश हुए। अब्दुल समद खा को 15,000) इनायत हुए और कुतुवुलमुल्क के नाम मेहरवानी का फरमान लिखा गया।

कुमाऊ के जमीदार वहादुरचद ने खलीलुल्ला खा के साथ दरगाह मे उपस्थित होकर दो हाथी और अपने मुल्क की अन्य चीजें नजर की। वादशाह ने 100 तुर्की अथवा कच्छी घोडे, जमधर, तलवार, ढाल, मीनाकार जडाऊ सरपेच, मोतियो की माला और कडे वगैरह प्रदान करके कुमाऊ का प्रदेश भी उसको प्रदान कर दिया। साथ ही 12 लाख दाम की जमा के दो परगने और भी इनायत किए और घर जाने को विदा किया।

हयात खा को, जिसकी उमर 70 वरस की हो गई थी, लकवे की वीमारी हो जाने से गुसलखाने की दारोगाई नामदार खा को मिली। हयात खा के वास्ते 20 लाख दाम आगरा हवेली से जागीर के तौर पर निश्चित हुए।

दक्षिण का प्रवंध

वालाघाट का दीवान मुर्शिद कुली खा दक्षिण के चारो सूवो का स्थायी दीवान नियुक्त हुआ, और उसको उस मुल्क को आवाद करने की वहुत ताकीद की गई ।

दक्षिण मे तव तक जमीन की पैमायश और वीघे के ऊपर जमा वाध कर हासिल लेने का दस्तूर नही था । किसान एक हल और दो बैलो से जो जिन्स पैदा करता था, उसके ऊपर थोडा सा हासिल ले लिया जाता था । कम-ज्यादा पैदावार होने की कुछ भी पूछ-ताछ नही की जाती थी । जव उस मुल्क मे मुगलो का अमल हुआ तव प्रजा को अनेक प्रकार के कष्ट उठाने पडे, जिससे वह तवाह होकर वहा से निकल भागी । गाव और परगने सव उजड गये । मुर्शिद कुली खा तुर्क था, तथापि वह मुत्सद्दी पेशा और समझदार था, वह हिसाब-किताव जानता था । जिस तरह अकवर वादशाह के शासन-काल मे राजा टोडरमल ने हिंदुस्तान के इतजाम का दस्तूर-उल्-अमल (कानून) वनाया था, उसी तरह इसने भी रैयत को जगह-जगह से बुला कर मुल्क मे ईमानदार अमीन भेजे । पहिले जमीन माप कर रकवा निकाला और खेती के उपयुक्त जमीन को अनुपयुक्त जमीन से अलग करके रैयत को खेती-बाडी पर लगाया । जहा मुकद्दम (पटेल) नही थे, वहा योग्य आदमियो को मुकद्दम वनाया । किसानो को बैलो वगैरह के लिए तकावी[1] देकर उसकी किस्तें कर ली, और जमा निश्चित करने के वास्ते निम्नलिखित तीन तरीके जारी किए गये —

1 सरवस्ता (मुकाता), जो कदीम जमाने मे जारी था,

2 वटाई या हासिल, और

3 बीघा के आधार पर निश्चित लगान अथवा जमाबदी ।

बटाई मे वारानी (बरसात पर निर्भर) जमीन का आधा और चाही (कुए की) जमीन का तीसरा वाटा निश्चित किया । मगर अगूर, गन्ना, केला, खसखस, हल्दी और जीरा, वगैरह का हिस्सा चौथे से नवें तक रक्खा, क्यो कि इन चीजो पर खर्च अधिक और पैदा कम होती थी । नहर की सिचाई (पीत) से जो पैदावार होती उसका हिस्सा जैसा उचित होता वैसा लिया जाता था ।

जमावदी के वास्ते खुद मुर्शिद कुली खा जरीव पकड कर खेतो को अपने हाथ से नापता था और वीघे पीछे जमा नियत करता था, जिसमे कोई कुछ भी गवन नही कर सकता था । इस वदोवस्त से आवादी और आमदनी दिनो-दिन वढती जाती हैं ।

---

1 तकावी—वह ऋण, जो गरीब किसान खेती के औजार वनवाने, वीज या खाद खरीदने, कुआ आदि बनवाने के लिए लेता है । (स०) ।

पठानों का विद्रोह

पेशावर के फसादी आदमियों ने उस इलाके के जागीरदार अजीज वदख्शी को 15 मनसवदारो और उसके 234 नौकरो सहित मार डाला था। इसलिए वादशाह ने पेशावर के हाकिम वहादुर खा को वहा के फसादियो को मजा देने का हुक्म लिखा। उसने 2000 सवार भेजे। फसादियो ने भी चार-पाच महीने तक सामना किया। वहुत से वादशाही आदमी मारे गये। 500 फसादी भी कतल हुए और कुछ पकडे गये। उनके घर जला दिये गये। उनकी वहुत सी वकरिया और ऊट लूट मे प्राप्त हुए।

गोलकुंडा की मुहिम

कुतुवुल्मुल्क ने नासमझी से मीर जुमला के वेटे मुहम्मद अमीन को उसके आदमियो समेत कैद कर दिया। उसका घर-वार भी जव्त कर लिया था। इसलिए वादशाह ने शाहजादा मुहम्मद औरगजेव को लिखा कि वह स्वय गोलकुडा जाकर जैसे भी हो मुहम्मद अमीन को कैद से छुडावे। मालवा के सूवेदार शायस्ता खा, इफ्तखार खा और नसरत खा वगैरह को भी आदेश पहुचा कि जल्दी ही शाहजादा के पास उपस्थित हो जावें।

औरगजेव ने अपने वेटे मुहम्मद सुल्तान को शाहजादा शुजा की वेटी के साथ शादी करने के वहाने से 8 रवी-उल्-अव्वल (पौष सुदि 9=गुरुवार, दिसम्वर 27, 1655 ई०) को अपने वहुत से आदमियो और वादशाही वदो के साथ रवाना किया और शिकार का वहाना करके पीछे से आप भी 3 रवी-उस्-सानी (माह सुदि 5=सोमवार, जनवरी 21, 1656 ई०) को रवाना हुआ।

जव मुहम्मद सुल्तान गोलकुडा के पास पहुचा तो अव्दुल्ला कुतुवशाह मिजमानी की तैयारी करने लगा। मगर जव उसने सुना कि मिजमान तो लडाई के सामान से सुसज्जित होकर आया है, तो उसने अजीज वेग गुर्जवरदार के हाथ शिष्टाचारी की अर्जी भेज कर पीछे से मुहम्मद अमीन को उसकी मा के साथ रवाना कर दिया। वह हैदरावाद से 12 कोस पर मुहम्मद सुल्तान के पास पहुचा। उसने कुतुवुलमुल्क की और ज्यादा शिकायतें की। कुतुवुल्मुल्क ने उसका माल-असवाव भी नही भेजा था, इसलिए मुहम्मद सुल्तान हैदरावाद की ओर वढा, जो गोलकुडा से 3 कोस इधर मुहम्मद कुली कुतुवशाह का वसाया हुआ है। वादशाही फौज ने कुतुवुल्मुल्क का मुल्क भी लूटना शुरू किया।

यह सुन कर 5 रवी-उस्-सानी, वुधवार, (माह सुदि 6=मगलवार,

जनवरी, 22, 1656 ई०) को रात्रि मे कुतुबुल्मुल्क हैदराबाद से गोलकुडा मे भाग गया। जितना खजाना और जवाहरात साथ ले जा सका ले गया। शेष माल और व्यापारियो के असवाव की सुरक्षा के लिए मूसा महलदार और तोलकची वेग को पाच-छ हजार सवारो और वहुत से पैदलो सहित वहा छोड गया।

दूसरे दिन मुहम्मद सुल्तान हैदराबाद पहुच कर हुसैन सागर तालाव पर उतरा। कुतुबुल्मुल्क ने मुहम्मद नासिर के हाथ जवाहरात से भरा हुआ एक सदूकचा नजर के वास्ते भेजा। मगर उसके पहुचने से पहिले ही वादशाही आदमी शहर मे घुसने लगे, तव कुतुबुल्मुल्क के आदमियो ने रोका, जिस पर लडाई हुई। शाहजादे ने हुसैन सागर से, जहा वह ठहरा हुआ था, मुहम्मद वेग को कुछ आदमियो के साथ लूट-मार वद करने के लिए भेजा और मुहम्मद नासिर को जो इसके वाद ही पहुचा था, कैद कर लिया। मगर मुहम्मद वेग के पहुचने से पहिले ही शहर लुट गया था। और औरगजेव का ड्योढीदार जो गोलकुडा मे रहता था, मूसा के हाथी और उसका दूसरा असवाव लेकर आया। जवाहर का एक सदूकचा, दो हाथी और सोने के साजो समेत दो घोडे उसने अपनी तरफ से नजर किये।

दूसरे दिन शाहजादा मुहम्मद सुल्तान ने शहर मे अमल करके हादीदाद खा वगैरह को आदेश दिया कि शहर की इमारतो को, जो सव ही लकडी की हैं, सैनिको की लूट-मार और आग से वचावें, और जो माल-असवाव कुतुबुल्मुल्क अपनी हवेली मे छोड गया है, उसकी सुरक्षा करें। इसी दिन कुतुबुल्मुल्क के वकील हकीम निजामुद्दीन अहमद ने उपस्थित होकर जवाहरात और जडाऊ चीजो की 2 सदूकें, 2 हाथी और चार घोडे, जो सोने-चादी के गहनो से सजे हुए थे, मुहम्मद सुल्तान के नजर किये। मीर जुमला के भी 11 हाथी और 60 घोडे उसके कुछ दूसरे असवाव सहित लाकर दिये।

कुतुबुल्मुल्क प्रकट मे तो इस तरह शिष्टाचारी करता था और अदर ही अदर लडाई की तैयारी करके आदिल खा और दक्षिण के अन्य जमीदारो के पास मदद मगाने के वास्ते खत भेजता था। यह सुन कर शाहजादा औरगजेव 16 दिन मे हैदराबाद पहुचा। मगर वह वहा नही ठहरा, किन्तु सीधा गोलकुडा गया। उसको देखते ही कुतुबुल्मुल्क की फौज ने भी लडाई की तैयारी की।

औरगजेव ने मुहम्मद सुल्तान को भी अपनी फौज सहित सवार होने के लिए कहलाया। उस दिन शाम तक लडाई हुई।

दूसरे दिन शाहजादा ने किले को घेर लिया और मिरजा खा व केसरसिंह वगैरह ने सुरगें लगा कर कुतुबुल्मुल्क को इस तरह तग किया कि उसने 22 रवी-उस्-सानी (फागुन वदि 10=शनिवार, फरवरी 9, 1656 ई०) को

4 सदूकचे जवाहर और जडाऊ चीजो से भरे हुए मीर फसीह के साथ भेज कर अर्ज कराई कि "मैं अपनी मा को अपने कुसूर माफ कराने के वास्ते नजराने समेत भेजता हू।" मगर अप्रसन्नता के कारण शाहजादे ने मीर फसीह को आमने-सामने नही बुलाया और जवाहरात भी नही लिये, लेकिन अपनी फौज को गोलदाजी करने से मना कर दिया।

कुतुवुल्मुल्क को जव शाहजादा के इस रूखेपन की वात मालूम हुई, तव उसने अपने वहुत से आदमियो को वरगीगरी (घुड-सवार सैनिको की विशेप युद्ध-प्रणाली) के तरीके से युद्ध करने को भेजा, जो दक्षिणियो का पेशा था। लडने को उनका आना, कुछ देर लड कर भाग जाना और फिर आकर लडना वरगीगरी कहलाता था। वे लोग मिरजा खा के मोरचे पर आये, इधर से मालूजी दक्षिणी फौज लेकर सहायतार्थ गया। लडाई में दोनो तरफ के आदमी मारे गये और एक हाथी वादशाही सेना मे पकडा आया।

मीर जुमला तव कर्नाटक मे था, अत शाहजादा ने उसको लाने के लिए आदमी भेजे। इतने मे कर्नाटकी सेना के 7–8 हजार सवार और 20,000 वरकदाज लडने को आये। औरगजेव उनका मुकावला करने के लिए स्वय गया। एक वडी भारी लडाई लड कर दक्षिणी पीछे हटे। दूसरे दिन चादा का जमीदार मदद के लिए उपस्थित हुआ।

कुतुवुलमुल्क का दामाद मिरजा अहमद भी कुसूर माफ कराने के लिए मुहम्मद मुल्तान के पास उपस्थित हो गया।

शायस्ता खा, इफ्तखार खा और नसीर खा भी पहुच कर शाहजादा के साथ शामिल हुए और अव नये सिरे से मोरचे लगाये गये।

खिलअत और जडाऊ जमधर सहित वादशाह का फरमान, 1 जमादि-उल्-अव्वल (फागुन सुदि 10 = सोमवार, फरवरी 25, 1656 ई०) को शाहजादा के पास पहुचा। मुहम्मद मुल्तान के लिए 7 हजारी जात—2000 सवार का मनसव आया। दूसरा फरमान कुतुवुल्मुल्क की अर्जी के जवाव मे उसके कुसूरो की माफी का था, परन्तु शाहजादा ने फरमान कुतुवुलमुल्क को नही भेजा, और अपने पास गुप्त रख कर फिर कुतुवुलमुल्क को तग किया। तव उसने लाचार होकर मीर अहमद और मीर फसीह को वहुत सी पेशकश देकर भेजा और पिछले वरसो की वाकी पेशकश भेजने का इकरार करके कुसूरो की माफी चाही। मुहम्मद सुलतान के लिए अपनी वेटी की सगाई स्वीकार करने की भी अर्ज कराई। दूसरे दिन वाकी पेशकश, मुहम्मद अमीन का माल-असवाव, 10 हाथी, और मीर जुमला के सोने-चादी के वर्तन, और मुहम्मद सुल्तान के मनसव की मुवारकवाद की अर्जी भेजी। चादी-सोने के गहनो मे सजे हुए 2 हाथी और 4 घोडे भी औरगजेव के वेटे मुहम्मद सुल्तान के वास्ते भेजे और दिल जमई

का परवाना मगवाया, जो शाहजादा ने मुहम्मद सुल्तान और शायस्ता खा की तरफ से लिखा भेजा। उसके पहुचते ही कुतुबुल्मुल्क ने अपनी मा को कुसूरो की माफी के वास्ते भेजा। शाहजादे की तरफ से पेशवाई करके मीर अबुल फजल उस को लिवा लाया और शायस्ता खा के डेरे मे ठहराया। दूसरे दिन वह मुहम्मद सुलतान के डेरे मे जाकर बेगमो के माध्यम से मुहम्मद सुलतान से मिली, दो घोडे, 2 हाथी जडाऊ साज-सामान से सुसज्जित नजर किये। फिर शाहजादा के हुजूर मे पहुच कर 1000 मोहरें, जडाऊ जीन के पाच घोडे, चादी की सजाई के पाच हाथी नजर हुए। पिछली बाकी और तब की एक करोड की पेशकश दो किश्तो मे कुल जमा कराने के इकरार पर कुतुबुल्मुल्क के कसूर माफ किये गये, और बहुत सी दलीलो के बाद शादी की तारीख भी निश्चित हुई।

कर्नाटक से भेजी गई मीर जुमला की पेशकश से भी एक लाख रुपये स्वीकार किये गये।

ये सब बातें तय करके जब कुतुबुल्मुल्क की मा वापस गई, तब दक्षिणियो तथा घास-चारे के वास्ते जगल मे गये बादशाही आदमियों मे लडाई हो गई। बादशाही सेना भी मदद को आ पहुची। दो दिन तक लडाई होती रही, जिसमे दोनो तरफ के बहुत से आदमी मारे गये।

कर्नाटक से लौटते ही शाहजादा के ड्योढीदार मीर अब्दुल लतीफ के साथ हुसैन सागर तालाब पर शाहजादा की सेवा मे 12 जमादि-उस्-सानी (चैत सुदि 14=शनिवार, मार्च 29, 1656 ई०) को उपस्थित होकर मीर जुमला ने उसको 3,000 सोने की इब्राहीमी (मोहर) और दूसरी चीजें नजर की। शाहजादा ने उसको खिलअत, जडाऊ जीगा (सरपेच), जडाऊ जमधर, 2 घोडे और 2 हाथी, जिनके साज चादी-सोने के थे, प्रदान करके बैठने का हुक्म फरमाया और एकात में कुछ सलाह करके उसे विदा किया।

दूसरे दिन किले से मोरचे उठा लिए गये। शादी का मुहूर्त निश्चित होने पर काजी और मीर अदल निकाह के लिये किले मे गये। उनके साथ शाहजादे ने कुतुबुल्मुल्क के लिए खिलअत, जडाऊ जीगा (सरपेच), मोतियो की माला और सोने-चादी के साज और जरी की झूल के दो हाथी भेजे।

खिलअत लेने को कुतुबुल्मुल्क किले के दरवाजे तक आया और इन लोगो को वही एक हवेली मे ठहरा कर गया।

18 जमादि-उस्-सानी (बैसाख वदि पहिली 6=शुक्रवार, अप्रेल 4, 1656 ई०) को सुबह के वक्त मुहूर्त पर निकाह पढा गया। कुतुबुल्मुल्क ने 14 लाख रुपये के जवाहरात वगैरह और रामगढ का इलाका, जो बरार और बीदर की सरहद पर है, अपनी लडकी को दहेज मे दिया।

25 जमादि-उस्-सानी (बैसाख वदि 12=शुक्रवार, अप्रेल 11, 1656 ई०)

को मीर शमसुद्दीन और मीर ताहर वगैरह कुतुबुल्मुल्क की वेटी का डोला वडे मान-सम्मान से लाये। जो 10 लाख रुपये नकद दहेज मे आये थे, वे शाहजादा ने मुहम्मद सुल्तान को प्रदान कर दिये।

आखिरी जमादि-उस्-सानी (वैसाख सुदि 2=वुधवार, अप्रेल 16, 1656 ई०) को शाहजादा औरगजेव मीर जुमला के मकान पर गया। उसने विना तराशा हुआ 1 हीरा, 2 लाल, 9 पन्ने, 60 मोती, 1 नीलम, 5 हाथी, 5 घोडे, जिनके साज सोने-चादी के थे, शाहजादा के नजर किये। इनके अतिरिक्त शाहजादा के वेटे मुहम्मद मुअज्जम और मुहम्मद सुल्तान को भी वहुत-कुछ दिया।

8 रजव (वैसाख सुदि 11=गुरुवार, अप्रेल 24, 1656 ई०) को शाहजादा ने गोलकुडा से औरगावाद की तरफ कूच करके शायस्ता खा वगैरह अमीरो को खिलअत, जवाहर और हाथी-घोडे प्रदान करने के वाद उन्हे अपनी-अपनी जगह जाने को विदा दी।

मीर जुमला के लिए वादशाह का फरमान, खासा खिलअत, जडाऊ जमधर, फूल-कटारा, नक्कारा, निशान, मुअज्जम खा के खिताव के साथ ही हुजूर मे वुलाने का हुक्म भी गुर्जवरदार के साथ पहुचा। तव वह शाहजादा के साथ था। शाहजादा ने उसको वे सव चीजें देकर 19 रजव (जेठ वदि 7=सोमवार, मई 5, 1656 ई०) को काजी आरफ के साथ उसे हुजूर मे रवाना किया।

कधार और ऊदगिर के किलो को देखता हुआ शाहजादा औरगजेव 3 शावान (जेठ सुदि 5=रविवार, मई 18, 1656 ई०) को औरगावाद पहुचा।

जव यह खवर वादशाह को पहुची, तव वादशाह ने उसके और उसके साथ के लगभग सभी अमीरो के लिए खिलअत और इनाम भेजे। कुछ के मनसव भी वढाये, जैसे शायस्ता खा का मनसव असल और इजाफे से 6 हजारी जात — 5000 सवारो का हो गया और उसको खानजहा वहादुर का खिताव भी मिला।

कुतुवुल्मुल्क की अर्जी वादशाह के हुजूर मे पहुची, जिसमे उसने अपनी गरीवी और परेशानी का हाल लिखा था। उस पर वादशाह ने भाव मे अन्तर आदि सवधी 20 लाख रुपये माफ फरमाये।

वाघोगढ का जमीदार अनूपसिंह इलाहावाद के सूवेदार के साथ वादशाह के दरवार मे उपस्थित हुआ और वादशाह ने उसको तीन हजारी जात — 2000 सवार का मनसव प्रदान किया।

बादशाह का इसाफ

सूरत बदर का मुत्सद्दी, मुहम्मद अमीन, रैयत पर जुल्म करता था। इस कारण बादशाह ने उसको मनसब और जागीर से च्युत करके हुजूर मे बुलाया। जब गुर्जबरदार उसको पकड कर लाया, तब हुक्म हुआ कि "दरबार के वक्त उसकी आस्तीनो मे साप छोड देवें।" उसके वकील बचाव के लिए बहुत दौडे, मगर निराशा ही मिली। अत मे बेगम साहिब के मुत्सद्दियो से मिल कर बेगम साहिब का रुक्का उसकी जान-बख्शी के वास्ते लाये, क्यो कि सूरत बदर बेगम साहिब की जागीर मे था। बादशाह ने रुक्का पढ कर कैद का आदेश दिया, और अप्रसन्न होकर महल मे गए, बेगम को बुलाया और फरमाया कि "सूरत बदर तुम्हारी जागीर मे है। मुल्क की आबादी रैयत से होती है, खजाना भी उसकी मालगुजारी से भरता है, और सेना भी उसी से बढती है। फिर तुम किस तरह उस मुत्सद्दी के जुल्म की बदनामी से राजी होती हो, जिसने जमा बढाने के नाम से ऐसे अत्याचार किए हैं कि रैयत ने अपने बाल-बच्चे ईसाइयों को बेच कर हासिल भरा है। सूरत का बदर सातो विलायतो के आदमियो के चलने-फिरने की जगह है। अगर यह खबर दूसरे बादशाहो को पहुची तो इसमे हमारे वास्ते कितनी बदनामी होगी। साथ ही खुदा की जो खफगी होगी, वह तो अलग रही।"

बेगम को जब मुहम्मद अमीन के जुल्मो का यह हाल मालूम हुआ तो उसकी सिफारिश करना छोड दी। दूसरे दिन बादशाह ने फिर मुहम्मद अमीन और साप वाले को उपस्थित करने का हुक्म दिया। अब मुहम्मद अमीन के वकील बेगम साहिब की सिफारिश से निराश होकर राजा रघुनाथ के पास गये, जो वजीरायत का काम करता था। इस आपत्ति को टालने के वास्ते उससे बहुत अर्ज-विनती की। राजा रघुनाथ ने अवसर देख कर बादशाह से अर्ज किया कि "ऐसे अभागे और अत्याचारी के लिए जो सिफारिश करे तो वह पहिले सजा पाने योग्य है, लेकिन इसके ऊपर रैयत का बहुत सा रुपया बाकी निकलता है, जिसकी शिकायत हो रही है। इसी तरह बहुत सा बादशाही लेना भी है। अत जब तक रैयत का और सरकार का रुपया वसूल न हो जावे, उसको मारने मे देर करना उचित है। अगर आदेश हो तो दोनो रकमो के वसूल हो जाने के बाद उसको सजा दी जावे।" बादशाह ने यह प्रार्थना स्वीकार करके आदेश दिया कि इसको कठोर कारावास मे रख कर राजा रघुनाथ को सौप देवें कि तहकीकात के बाद रैयत के दावे की रकमे उससे दिला देवें। इस तरह बडी कठिनाई से उस जालिम की जान बची और दूसरे जालिम दिल मे डर गये।

मीर जुमला का वजीर होना

जव मुअज्जम खा मीर जुमला दिल्ली के करीव पहुचा, तव वादशाह के हुक्म से कासिम खा और दानिशमद खा पेशवाई करके उसको शहर के वाहर से हुजूर मे ले गये। वादशाह ने उसी वक्त उसको 6 हजारी जात—6000 सवार का मनसव और विजारत का (वजीर के पद का सूचक) जडाऊ कलमदान देकर 200 घोडे, खासा हाथी और 5 लाख रुपये नकद प्रदान किये।

शाहजादा मुराद वख्श को शाहनवाज खा की वेटी से औलाद नही हुई। इसलिए वादशाह ने मीर खा की वेटी से शादी ठहरा कर 1 लाख रुपये दहेज के सरकार से दिलाये और उसको अहमदावाद भेजा, जहा शाहजादे से निकाह हुआ। तव शाहजादा को भी इनाम के 2 लाख रुपये सूरत वदर के खजाने से दिलाये। उसका मनसव भी असल और इजाफे से 15 हजारी जात—12000 सवार दो-अस्पा और तीन-अस्पा का कर दिया।

17 मुहर्रम (मगसिर वदि 3=रविवार, अक्तूवर 26, 1656 ई०) को शाहजादा दारा शिकोह के वेटे सुलेमान शिकोह की शादी जाफर खा के भाई वहराम खा की वेटी से हुई। 2 लाख रुपये का महर ठहरा। काजी खुशहाल ने निकाह पढाया।

14 सफर (मगसिर सुदि 15=शुक्रवार, नवम्वर 21, 1656 ई०) को मुअज्जम मीर जुमला का वेटा मुहम्मद अमीन भी उपस्थित होकर आदाव वजा लाया। वादशाह ने उसको खान का खिताव दिया।

18 सफर (पौप वदि 4=मगलवार, नवम्वर 25, 1656 ई०) को मुअज्जम खा ने कुछ कीमती जवाहर और 6 हाथी वादशाह के नजर किये, जिनमे 9 टाक यानी 216 रत्ती का 1 हीरा था। उसकी कीमत 2,16,000 रुपये की हुई।

वीजापुर की मुहिम

शाहजादा औरगजेव की अर्जी पहुची कि "वीजापुर का शाह आदिल खा मर गया। उसके नौकरो ने जो प्राय गुलाम है, अली नामक एक आदमी को उसका वेटा वता कर गद्दी पर वैठा दिया है।" इसलिए 18 रवी-उल्-अव्वल (माह वदि 4=गुरुवार, दिसम्वर 25, 1656 ई०) को उसके नाम आदेश लिखा गया कि "जो सेना दक्षिण मे तैनात है, उसको लेकर वह जावे और उस मुल्क और किले को जीत लेवे।" खानजहा को हुक्म हुआ कि दौलतावाद पहुच कर शाहजादा के वीजापुर से वापस आने तक वह औरगावाद मे रहे।

मुअज्जम खा, निजावत खा, मिरजा सुल्तान और एरच खा, वगैरह को

भी घोडे, खिलअत, तलवारें और तुर्रे देकर बहुत सी फौज से इस मुहिम पर रवाना किया।

मुअज्जम खा को इस तारीख तक 5 लाख रुपये नकद और दो लाख के जवाहर मिल चुके थे। बिदा होते समय बादशाह ने उससे फरमाया कि विजारत की मोहर अपने बेटे मुहम्मद अमीन खा को दे जावे और उससे कह दे कि रायराया की शामिलात मे मुल्क और माल का काम करे। मुहम्मद अमीन खा का मनसब भी असल और इजाफे से तीन हजारी जात—3000 सवार का कर दिया।

महाबत खा, राजा रायसिंह, इफ्तखार खा इखलास खा, नसरत खा, दिलेर खा और राजा सुजानसिंह बुंदेला, वगैरह कई सुप्रसिद्ध अमीरो को भी हुक्म लिखा गया कि अपनी-अपनी जागीरों से जाकर शाहजादा के पास उपस्थित हो जावे कुल 20,000 सवार और बहुत से बरकदाज शाहजादा के साथ तैनात हुए।

दो क्रूर ग्रहो के एक राशि पर आ जाने से दिल्ली मे मरी का रोग फैला, जिससे प्रति दिन बहुत से आदमी मरते थे। बादशाह ने बाहर जाने के लिए मौलवियो से पूछा तो उनकी राय मिली नही। इस पर थोडे दिनो के लिए शिकार के नाम से गगा के किनारे पर जाने की सलाह ठहरी। इसलिए 4 रबी-उल्-अव्वल (पौष सुदि 5=गुरुवार, दिसम्बर 11, 1656 ई०) को बादशाह शाहजहानाबाद की किलेदारी सियादत खा को देकर गगा की तरफ रवाना हुए। लगातार चार कूचो मे गढमुक्तेश्वर पहुचे। 9 रबी-उल्-अव्वल (पौष सुदि 10=मगलवार, दिसम्बर 16, 1656 ई०) को नूरपुर लौट आये। वहा यह खबर पहुची कि ताज बीबी के रोजे का मुतवल्ली (देख-रेख करने वाला अधिकारी) और आगरा की तलहटी का फौजदार, आगाह खा, मर गया है। इसलिए बादशाह ने गिरधर गौड को 2 हजारी जात—2000 सवार का मनसब, आगरा की किलेदारी और फौजदारी देकर विदा किया और महरम खा को मुतवल्ली बनाकर भेजा।

17 रबी-उल्-अव्वल (माह वदि 3=बुधवार, दिसम्बर 24, 1656 ई०) को बादशाह नूरपुर से कूच करके 5 दिन मे जमुना के किनारे पहुचे। वहा से नाव मे बैठकर 25 रबी-उल्-अव्वल (माह बदि 12=गुरुवार, जनवरी 1, 1657 ई०) को किले मे प्रविष्ट हुए।

4 रबी-उस्-सानी (माह सुदि 6=शनिवार, जनवरी 10, 1657 ई०) को दे महीने की तीन तारीख थी। बादशाह का 66वा बरस शुरू होने के उपलक्ष मे तुलादान का दरबार हुआ, जिसमे 5 करोड दाम हवेली कौल से शाहजादा दारा शिकोह को प्रदान किये गये। अब उसका कुल वेतन 60 करोड दाम का हो गया था, जिसके डेढ करोड रुपये होते थे।

सुल्तान सिपहर शिकोह का मनसव 8 हजारी—4000 सवार का और मुहम्मद अमीन खा का तीन हजारी—3000 सवार का हो गया, और उसको आदेश हुआ कि अपने वाप की नायवी मे दीवानगी का काम करे।

कावुल की सूवेदारी वहादुर खा से उतर कर रुस्तम खा को शाहजादा दारा शिकोह की अर्ज से इनायत हुई। शाहजादा को कावुल की जागीरो के वदले लाहोर के परगने इनायत हुए। वहादुर खा लाहोर का सूवेदार हुआ।

चान्द्र-मास के हिसाव से वादशाह का 68वा वर्ष शुरू हुआ, जिसके तुलादान के दरवार मे भी 19 रवी-उस्-सानी (फागुन वदि 6=रविवार, जनवरी 25, 1657 ई०) को वहुत से इनाम दिये गये। इन दोनो तुलादानो के दरवारो मे, जो 9 दिन तक वरावर होते रहे थे। आठ लाख रुपये की पेशकश जवाहरात और कपडो के रूप मे स्वीकार हुई। कई अमीरो के मनसव वढे और कुछ को इनाम और खिताव भी मिले।

इसी समयान्तर मे मरी वहुत फैल गई थी। इसलिए वादशाह फिर 2 जमादि-उल्-अव्वल (फागुन सुदि 3=शुक्रवार, फरवरी 6, 1657 ई०) को मुखलिसपुर को रवाना हुए और 26 जमादि-उल्-अव्वल (चैत वदि 13=सोमवार, मार्च 2, 1657 ई०) को वहा पहुचे। यह गाव शाहजहानावाद से 47 कोस जमुना के किनारे पर हिमालय पहाड के नीचे सिरमौर के पास सहारनपुर के गावो मे से था। आव-हवा यहा की अच्छी थी और दूसरा आराम यह था कि दिल्ली से वहा तक नावें एक सप्ताह मे आती-जाती थी। वादशाह ने पिछले वर्ष से इस जगह एक वडी इमारत वनाना प्रारभ की थी और वह अव तैयार हो चुकी थी।

वादशाह ने इस जगह की आव-हवा अपनी इच्छा के अनुकूल देख कर मुखलिसपुर का नाम फैजावाद रखा, और आस-पास के परगनो से 30 लाख दाम की जमा के गाव अलग करके उसके नीचे डाल दिये। दिल्ली और दूसरे वडे-वडे शहरो मे जैसे वादशाही दौलतखाने थे, वैसा ही दौलतखाना भी यहा जमुना के किनारे वनवाया, जिसमें ख्वावगाह, महल, गुसलखाना, खास-आम, वगैरह सव कुछ थे। दौलतखाने के पश्चिम मे एक सुहावना पहाड पेड-पौधो मे छाया हुआ था। छ गज चौडी एक नहर जमुना मे काट कर इस तमाम इमारत और उसके वगीचो मे जारी की गई थी, जो हर तरफ वनाये गये थे। दो वर्ष और दो महीनो की अवधि मे अव तक इनमे पाच लाख रुपये व्यय हो चुके थे, और एक लाख रुपये का काम और शेप था।

वादशाह ने यहा पहुच कर दो लाख रुपये दारा शिकोह को और 50,000 रुपये सुलेमान शिकोह को दिये कि वे भी इस जगह अपने मकान वनावें।

नई दिल्ली (शाहजहानावाद) का कोट 8 वर्ष पहले मिट्टी और **पत्थर**

वेटो को किले की च बि ो सहित शाहजादा के पास भेजा। दूसरे दिन वह तो मर गया और शाहजादा ने वीदर शहर और किले पर अधिकार करके सारे माल-असवाव पर भी कब्जा कर लिया। यो 20,00,000 रुपये नकद, और जिन्स तथा 230 तोपें सरकार को प्राप्त हुईं।

वीदर बहुत आबाद और सुदर शहर था। सारे क्षेत्र की सीमा तिलगाना से मिली हुई थी। हिन्दी किताबो मे लिखा है कि वीदर दक्षिण के राजाओ का पाय-तख्त (राजधानी) था, दूसरे राजा लोग वीदर के राजाओ की सेवा करते थे। मालवा के राजा नल की रानी दमयती इसी वीदर के राजा भीमसेन की वेटी थी।

अव यह खबर पहुची कि आदिल खा वहुत सी सेना के साथ लडाई के विचार से गुलवर्गा पहुचा है। अत महावत खा को आदेश हुआ कि 15,000 सवारो से वह उनके मुकाबले के लिए जावे। वह वहुत ही मेहनत और कोशिश से कल्याणी के जिले मे लूट-मार करके आगे वढा। शत्रु प्रतिदिन दिखलाई देता था, मगर 8 रजब (वैसाख सुदि 10=सोमवार, अप्रेल 13, 1657 ई०) को खान मुहम्मद अफजल और रणदौला का बेटा, रुस्तम, वगैरह 20,000 सवारो से चढ कर आये। सुजानसिंह वुदेले को डेरो की सुरक्षा के लिए वही छोड कर राव शत्रुसाल और दिलेर खा वगैरह के साथ महावत खा उनसे लडने को गया। दक्षिणियो ने हर तरफ से बाणो और बदूको की लडाई शुरू की। इखलास खा और दिलेर खा को शत्रुओ ने दवा लिया। तव तो महावत खा ने हमला करके शत्रुओ को भगा दिया और दो कोस तक उनका पीछा करके वहुत से आदमियो को मारा। तव लौट कर एक दिन तो वह वहा रहा और दूसरे दिन पीछा लौटा।

बीजापुर वालो ने शिवाजी और मीनाजी भोसले को अहमदनगर के जिले मे लूट-मार करने को भेजा। उन्होंने रायसेन (रासिन) और चमारगोडा मे पहुच कर लूट-मार शुरू की। शाहजादा ने नसरत खा, कारतलव खा और राव करण वगैरह को तीन हजार सवारो से उनके ऊपर बिदा किया। शाहजादा मुहम्मद मुअज्जम को इफ्तार खा सहित वीदर के किले मे छोडकर 23 रजब (जेठ वदि दूसरी 10 मगलवार, अप्रेल 28, 1657 ई०) को कल्याणी का किला विजय करने के लिए उसने स्वय कूच किया। 29 रजब (जेठ सुदि 1= सोमवार, मई 4, 1657 ई०) को वहा पहुच कर उसने किले का घेरा डाला। किले वालो ने तोप, बदूक और बाण वरसा कर वहुत से बादशाही सैनिको को मार दिया, तो भी मुअज्जम खा ने 8 शावान (जेठ सुदि 10=मगलवार, मई 12, 1657 ई०) को खाई तक मोरचे पहुचा कर किले वालो को तग किया। दुश्मनो की फौज बहुत अधिक थी, इसलिए महावत खा और निजावत खा

्दस हजार सवारो से बारी-बारी जाकर सेना मे घास-चारा लाते थे और
र दिन बडी-बडी लडाइया होती थी, जिनमे उदयपुर के राणा की फौज का
दार, शिवराम, मारा गया। राजा रायसिंह और सुजानसिंह वगैरह भी
हत हुए और उनके लगभग सभी आदमी काम आये। परंतु शाहजादा को
ला विजय करने की धुन लगी हुई थी। इसलिए शत्रु निश्चितता से हर रोज
म बढाये चले आते थे। यहा तक हुआ कि 30,000 सवार एकत्रित होकर
दशाही सेना से दो कोस पर आ ठहरे। तब तो शाहजादा ने 25 शाबान
ासाढ वदि 12=शुक्रवार, मई 29, 1657 ई०) को कुछ फौज मोरचो मे
ड कर शत्रु के ऊपर चढाई की। उधर शत्रु भी 30,000 सवारो से सामने
ये। बहलोल के बेटो ने, जो हरावल मे थे, खूब लडाई की। इसी तरह
रे दक्षिणी सरदारो ने भी हर तरफ से उमड कर अपने घोडे डाले। मगर
दशाही सेना ने बडी मजबूती से उनका सामना किया और फिर एकबारगी
हमला करके बहुत से दुश्मनो को मारा और शेष को भगा दिया। इस लडाई मे
अनेक बादशाही आदमी काम आये, और दिलेर खा भी घायल हुआ।
शाहजादा ने कुछ दूरी तक तो उनका पीछा किया, और तदनन्तर उनके डेरे
जला कर शाम को वह अपनी सेना मे वापस लौट आया।

नसरत खा वगैरह अहमदनगर की तरफ गये थे, सो वहा पहुच कर
उन्होंने शिवाजी भोसले के ऊपर हमला किया और लडाई मे उसको भगा कर
परेंडा किले के पास डेरा किया, क्योकि रैयत के बचाव के लिए जुनेर और
चमारगोडा के जिले मे इस फौज के ठहरे रहने का आदेश था।

मलिक हुसेन और फतेह रुहेला, वगैरह शाहजादा के आदेश से 2000
सवार लेकर तिलगाना पर गये थे। उस किले को फतह करके वे किलेदार को
शाहजादा के पास पकड लाये।

ऐसे ही शेख मीर ने जाकर जस्रोली (? चचोली) के किले पर अधिकार
किया, जिसको वहा का किलेदार डर कर छोड गया था।

कल्याणी दुर्ग की खाई थूहर की लकडियो से पाटी गई थी, उस पर किले
वालो ने घास और बारूद डाल कर आग लगा दी, जिसने बादशाही आदमियो
ने पत्थर और मिट्टी डाल कर फिर उसको भरा और निसेनिया लगा कर
किले की दीवार गिराने लगे। किले वालो ने ऊपर से आग जला-जला कर
बहुत से बारूद के हुक्के (टोकरिया) और नुफ्त के तेल (घासलेट) मे भीगे
हुए गूदडे वगैरह फेंके। मगर ये शाही सैनिक तो कुछ परवा न करके 27
शव्वाल (द्वितीय सावन बदि 4=बुधवार, जुलाई 29, 1657 ई०) को अदर
कूद पडे। तब दिलावर हब्शी, जो आदिल खा की तरफ से ढाई हजार फौज
के साथ किले मे था, 29 शव्वाल (द्वितीय सावन सुदि 1=शुक्रवार, जुलाई

31, 1657 ई०) को शाहजादा से जान और माल की सुरक्षा का वचन लेकर 1 जीकाद (द्वितीय सावन सुदि 3=रविवार, अगस्त 2, 1657 ई०) को उपस्थित हो गया और किले की चाबिया देकर बीजापुर को चलता बना। तब कल्याणी किले मे भी बादशाही किलेदार जा बैठा।

जब इन किलो के फतह होने की खबर बादशाह को पहुची तो उन्होंने 16 जीकाद (भादो बदि दूसरी 3=सोमवार, अगस्त 17, 1657 ई०) को शाहजादा औरगजेब के लिए कुछ भेंटो के साथ खिलअत भेजा, और बीदर का देश भी कल्याणी और रामगढ के किलो समेत इनाम के तौर पर उसको प्रदान किया। यो अब कुल इनाम 12 करोड दाम का हो गया।

बीदर का नाम जफरबाद रखा गया और कर्नाटक देश, जिसकी जमा 14 करोड दाम की थी, मुअज्जम खा को दिया गया, यह देश उसने वहा के जमीदार से लिया था और बीच मे बादशाही अमलदारी मे शामिल हो गया था।

शाहनवाज खा, महाबत खा और निजाबत खा, वगैरह ने भी इस मुहिम मे अच्छी सेवा की और योग्यता का परिचय दिया था, अत अपने-अपने पदानुसार इनाम और इजाफो से वे सम्मानित किये गये।

आदिल खा ने शाहजादा को अर्जी लिख कर नकद और जवाहर के रूप मे 1 करोड 50 लाख रुपये की पेशकश तथा परेंडा किले और कोकण मुल्क भी साथ मे देना स्वीकार किया।

शाहजादा ने वह अर्जी बादशाह के पास भेजी। बादशाह ने 50 लाख रुपयो की छूट दे करके शेष पेशकश लाने के लिए काजी निजाम को भेजा। शाहजादा को वापस आने का हुक्म जारी करके मुअज्जम खा के लिए लिखा कि परेंडा और कोकण के किलो मे किलेदार बैठा कर हुजूर मे चला आवे।

17 जीकाद (भादो बदि 4=मगलवार, अगस्त 18, 1657 ई०) को शुजाअत खा काबुल की किलेदारी पर भेजा गया।

बादशाह का बीमार होना

7 जिल्हिज (भादो सुदि 9=रविवार, सितम्बर 6, 1657 ई०) को अचानक बादशाह का पेशाब बद होकर बुखार आना शुरू हुआ। 7 दिन तक बीमारी दिन-दिन बढती रही। खाना कुछ नही खाया गया, जिससे कमजोरी ज्यादा हो गई। मगर तब तकर्रुब खा की सलाह से पोदीने और शीरखिश्त (विशेष किस्म का गोद) का शोरबा दिया गया। उससे स्वास्थ्य मे कुछ सुधार हुआ, और 15 जिल्हिज (आसोज बदि 2=सोमवार, सितम्बर 14, 1657 ई०) को बादशाह ने लोगो की तसल्ली के लिए ख्वाबगाह के झरोखे मे बैठ कर सभी

नौकरो का सलाम लिया। शाह बुलद इकबाल दारा शिकोह का मनसब 10,000 दो-अस्पा सवारो के इजाफे से 50 हजारी – 40 हजार सवारो का कर दिया गया, जिसमे 30,000 सवार दो-अस्पा थे, और 1 करोड दाम और वढा कर इनाम के कुल 20 करोड दाम कर दिये और 7,50,000 रुपये जकात के शाहजहानावाद की सायर (चुगी का महसूल) से माफ करके यह आदेश दिया कि जहा हम हो वहा जकात माफ रहे।

इसी समयान्तर मे 11 जिल्हिज (भादो सुदि 13=गुरुवार, सितम्बर 10, 1657 ई०) को उसके वेटा पैदा होने की खुशी मे शाहजादा औरगजेव की अर्जी पहुची। वादशाह ने उसका नाम सुलतान मुहम्मद अकवर रक्खा। मुअज्जम खा को विजारत से दूर करके उसको और महाबत खा वगैरह अमीरो को, जो बीजापुर की मुहिम मे तैनात हुए थे, जल्दी उपस्थित होने का आदेश लिखा। दूसरा वजीर नियुक्त होने तक रायराया को दीवानी के काम करने का आदेश दिया।

सूरत के अखबार मे वादशाह के समक्ष अर्ज हुई कि कायम वेग, जो शाही वकील होकर इस्तवोल को गया था, वहा से लौट कर हलव आया, और हलव के हाकिम मुर्तजा पाशा से दोस्ती पैदा करके उसकी एक गायिनी से फस गया। मुर्तजा पाशा ने अपनी लौडियो (दासियो) की मारफत कायम वेग के सेवको को मिला कर उसके खाने मे जहर मिलवा दिया, जिससे अपने दामाद मुहम्मद हुसैन सहित वह मर गया।

17 मुहर्रम (कार्तिक वदि 3=गुरुवार, अक्तूवर 15, 1657 ई०) और 19 मुहर्रम (कार्तिक वदि 5=शनिवार, अक्तूवर 17, 1657 ई०) को वाद-शाह ने दर्शन के झरोखे मे वैठ कर लोगो को दर्शन दिये। 20 मुहर्रम (कार्तिक वदि 6=रविवार, अक्तूवर 18, 1657 ई०) को हवा वदलने के लिए आगरा की तरफ कूच किया। शाहजहानावाद की सूवेदारी और वहा के किले की सुरक्षा खलीलुल्लाह खा को सौंपी गई।

वीजापुर की मुहिम

दक्षिण के अखवार मे मालूम हुआ कि शाहजादा औरगजेव वहादुर आदेश पहुचने पर 26 मुहर्रम (कार्तिक वदि 12=शनिवार, अक्तूवर 24, 1657 ई०) को वापस रवाना होकर पाचवें दिन वीदर पहुचा। 9 दिन वहा रह कर 10 सफर (कार्तिक सुदि 12=शनिवार, नवम्वर 7, 1657 ई०) को औरगावाद को रवाना हुआ। 14 सफर (कार्तिक सुदि 15=वुधवार, नवम्वर 11, 1657 ई०) को वहा पहुचा। उसी दिन उसकी वेगम, जो शाहनवाज खा की वेटी थी, मर गई। इसलिए 5 दिन वाहर रह कर 19 सफर (मगसिर वदि 5=

सोमवार, नवम्बर 16, 1657 ई०) को उसने औरगाबाद मे प्रवेश किया।

दरबार का हाल

बादशाह 8 सफर (कार्तिक सुदि 10=गुरुवार, नवम्बर 5, 1657 ई०) को घाट स्वामी पर पहुच कर 10 दिन तक वही ठहरे रहे, जो आगरा से 3 कोस है। यहा माउलूलहम (दवाइयो सहित गोश्त का पौष्टिक अर्क) और ताकत की दवाइयो के खाने से स्वास्थ्य ठीक हो गया और दिन-दिन तन्दुरुस्ती बढने लगी। 19 सफर (मगसिर बदि 5=सोमवार, नवम्बर 16, 1657 ई०) को शाह बुलद इकबाल की हवेली मे प्रविष्ट हुए। 9 दिन वहा रह कर 28 सफर (मगसिर बदि 30=बुधवार, नवम्बर 25, 1657 ई०) को बादशाह किले मे गये।

14 रबी-उल्-अव्वल (मगसिर सुदि 15=गुरुवार, दिसम्बर 10, 1657 ई०) को चाद्र-मास के हिसाब मे 69वा बरस लगा। उसकी खुशी के अतिरिक्त स्वस्थ होने की भी खुशी थी। इसलिए उस दिन बडी ही धूम-धाम मे दरबार हुआ, जिसमे बीमारी के दिनो मे बराबर सेवा मे उपस्थित रहने और अच्छी सेवा करने के पुरस्कार मे शाह बुलद इकबाल दारा शिकोह को 1 करोड रुपया, 20 लाख की 1 कठी मोतियो की और 14 लाख रुपये के दूसरे जवाहर—सरपेच, कलगी, बाजू-बद और जडाऊ तलवार प्रदान किये, और मनसब मे 10 हजारी जात का इजाफा होकर बाकी के 10,000 सवार भी दो-अस्पा हो गये, जिससे उसका मनसब 60 हजारी जात 40,000 दो-अस्पा सवारो का हो गया। इस मनसब के इनाम सहित वेतन 83 करोड दाम निश्चित हुआ (जिसके 2 करोड साढे सात लाख रुपये सालाना होते थे)। इसके अतिरिक्त बिहार का सूबा और 100 घोडे भी उसको दिये गये।

सुलतान सुलेमान शिकोह का मनसब 2 हजारी —1000 सवार के इजाफे से 12 हजारी—10,000 सवार का हो गया और इतना ही इजाफा सुलतान सिपहर शिकोह को भी मिला, जिससे उसका मनसब 10 हजारी जात —5000 सवार का हो गया।

जाफर खा को वजारत-कुल का पद दिया गया और रायराया के लिए आदेश हुआ कि हिसाबो के ऊपर अपने हस्ताक्षर किया करे, और परवानो पर भी उसकी मोहर जाफर खा की मोहर के नीचे हुआ करे।

महाबत खा और एरच खा, वगैरह दक्षिण से आकर उपस्थित हुए।

13 रबी-उस्-सानी (पौष सुदि 14=शुक्रवार, जनवरी 8, 1658 ई०) को अर्ज हुई कि मुल्ला अब्दुल हकीम स्यालकोटी, जो बडा मौलवी था, 12 रबी-उस-सानी (पौष सुदि 13=गुरुवार, जनवरी 7, 1658 ई०) को मर गया।

11 जमादि-उल्-अव्वल (माह सुदि 11=गुरुवार, फरवरी 4, 1658 ई०) को महावत खा को काबुल की सूबेदारी पर भेजा गया।

बादशाह का छत्र भंग होना

बादशाह ने मोह-जाल से अपने चारो बेटो को अलग-अलग सूबे देकर राज-काज के अधिकार भी दे दिये थे, और बड़े शाहजादे के अतिरिक्त बाकी तीनो को पूर्व, पश्चिम और दक्षिण मे हुकूमत करने को भेज दिया था। दारा शिकोह बड़ा था। उसके प्रति उनका प्यार भी ज्यादा था। इसलिए उसको जुदा नही किया और हर वक्त अपने पास रख कर भाइयो से मेल-मिलाप रखने और नेक व्यवहार करने की ताकीद किया करते थे। मगर होनहार कुछ और ही थी। इसलिए मेल तो दूर रहा, लोगो के बहकाने से इसके विपरीत उनके दिलो मे ईर्ष्या बढ रही थी, जो अब एकदम से उघड गई। बादशाह की बीमारी के दिनो मे शाह बुलद इकबाल ने कागजो का आना-जाना बन्द कर दिया था। इससे बादशाह के मरने की खबर सम्पूर्ण हिन्दुस्तान में उड गई। शाह बुलद इकबाल के भाई, जिनकी ईर्ष्या उसकी बढती के साथ दिनो-दिन बढती जाती थी, ताज और तख्त के लिए लडने को तैयार हुए। इसकी शुरुआत शाहजादा मुराद बख्श ने की। उसने बादशाही दीवान, मीर अली नकी को, जो उसे समझाया करता था, अपने हाथ से मार कर गुजरात मे अपनी आन-दुहाई फेरी (अपने नाम का खुतबा पढा)। उधर शाह शुजा बगाल से फौज लेकर बनारस तक चला आया और खालसा के प्राय सभी परगनो को दबा बैठा।

बादशाह ने मुराद बख्श की तरफ ज्यादा ध्यान न देकर बडे शाहजादा के कहने से पहिले शाह शुजा के ऊपर सुलतान सुलेमान शिकोह को राजा जयसिंह की देख-रेख मे राजा अनिरुद्ध, शेख फरीद और दिलेर खा, वगैरह को 20,000 सवारो के साथ विदा किया। इस अवसर पर शाह बुलद इकबाल ने भी अपने नायब बहादुर खा को 4 हजारी जात—3000 सवारो का मनसब दिला कर बिहार की सूबेदारी पर भेजा। इसी तरह गलती मे अपने सभी काम के आदमियो को शाह बुलद इकबाल ने अपने बेटे के साथ भेज दिया।

जब यह सेना बनारस मे पहुची और लडाई शुरू हुई तो शाह शुजा अपना डेरा-डाडा और तोशाखाना, आदि छोड कर भाग गया। नदी के रास्ते मे पटना पहुच कर अपना कुसूर माफ कराने के वास्ते उसने बादशाह को अर्जी भेजी। बादशाह ने भी गुनाह माफ करके बहुत सी नसीहतें लिखी, और बगाल की हुकूमत उसके पास पूर्ववत् रखी, तथा सुलतान सुलेमान शिकोह को वापसी का हुक्म लिखा।

26 जमादि-उल्-अव्वल (फागुन बदि 12=शुक्रवार, फरवरी 19, 1658

चिंता और व्याकुलता के सागर में डूबे हुए लकड़ी के सहारे खड़े-खड़े उसकी तरफ देखते रहे।

उसी समय बेगम साहिब ने एक पत्र लिख कर औरंगजेब के पास अपने बख्शी मुहम्मद फर्रुख के साथ भेजा जिसमे लिखा था कि "बड़े भाई से, जो उत्तराधिकारी भी है, लड़ना प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष मे बाप से कुश्ती करना है। यह बात सच्चे धर्म को मानने और खुदा को पहिचानने वाले को नहीं करनी चाहिये। अपने मालिक का सामना करने और इस रमजान के महीने में दोनो तरफ के मुसलमानो को मरवाने से डर कर जहां यह खत पहुंचे वही ठहर जाओ, और अपनी अर्ज लिख भेजो। उन्हे स्वीकृत करवा दी जावेगी।"

जब यह खत औरंगजेब के पास पहुंचा, तब इसके साथ ही यह खबर भी पहुंची कि शाहजादा दारा शिकोह ने धौलपुर पहुंच कर चंबल के सभी घाट रोक लिये हैं। औरंगजेब उसी समय सवार होकर कुछ जमींदारो के द्वारा बताये गये रास्ते से नदी को उतर गया और बख्शी को विदाई देकर बादशाह की खिदमत मे अर्जी भेजी, जिसमे लिखा था कि "बड़े शाहजादा ने आपको अधिकारहीन करके मेरे विनाश पर कमर बांध ली है। जब कि बीजापुर की मुहिम मनचाही खतम होने वाली थी, ठीक उसी समय सेना को वापस बुलाने की सख्त ताकीद लिखी और बिना किसी अपराध के बरार का सूबा मुझ जैसे आज्ञापालक बेटे से उतार कर उस कपूत को दिलाया, जो बहुत सी धृष्टताएं और आज्ञाओ का उल्लंघन कर चुका था। इस पर भी धैर्य न करके जसवंतसिंह को मेरे मुकाबले पर भेजा और यह चाहा कि एक हथेली भर भी जमीन मेरे पास न रहे। आप तो अधिकारहीन हैं, जो वह कहता है, वही करते हैं। उसकी खातिर दूसरे बेटो को दुश्मन समझ कर, जैसा वह चाहता है आदेश लिख देते हैं। यह हाल देख कर मैंने यह बात ठानी है कि स्वयं उपस्थित होकर वस्तु-स्थिति आपको समझाऊ। मेरा विचार आपकी कदम-बोसी के अतिरिक्त और कुछ नही है। यदि ऐसा होता तो राजा और उसके साथियो को पकड़ लेना कितना बड़ा काम था। अब सुना जाता है कि शाह बुलंद इकबाल मुकाबले के इरादे से धौलपुर में पहुंचे हैं। लेकिन मुझ जैसे सयाने दुश्मन पर उनकी जीत होने वाली नही है। इसलिए उचित यही है कि वे टाला दे कर पंजाब को, जो उनकी जागीर मे है, चले जावें, और शाही कार्यों को मेरी राय पर छोड़ देवें ताकि आगे सारा काम आपकी राय के अनुसार ही किया जाता रहे।"

औरंगजेब ने यह अर्जी रवाना करके लड़ने के लिए कूच किया। उधर दारा शिकोह ने भी बादशाह के आदेशानुसार सेना को सजा कर, लड़ाई मे बहुत कुछ मजबूती और बहादुरी दिखाई, परंतु भाग्य तो उसके साथ बिलकुल

नही था, इसलिए सबके दिल उससे फिर गये थे और दोस्त भी दुश्मन हो गये थे। फिर भी रुस्तम खा, राव शत्रुसाल हाडा, राजा रूपसिह राठौड, रामसिह और राजा शिवराम गौड, वगैरह राजपूत सरदार बडी बहादुरी से लड कर काम आये। औरगजेब के हाथी के पास थोडे से ही आदमी रह गये थे, तो भी वह अपनी जगह जमा रहा। उधर दारा शिकोह जल्दी करके अपने तोपखाने से आगे बढा, तो बहुत लोग उसको छोड कर भाग गये, तीस-चालीस आदमियो से अधिक उसके हाथी के आगे-पीछे न रहे। तब लाचारी से भाग कर शाम के करीब वह आगरा पहुचा और एक पहर से ज्यादा वहा न ठहर कर लाहोर की तरफ चल दिया।

विजयी होकर औरगजेब उस दिन तो दारा शिकोह की सेना की जगह ठहरा। दूसरे दिन कूच करके तीसरे दिन आगरा के पास बाग नूरमहल मे आ उतरा। सब अमीर और वजीर बादशाह को छोड कर इजाफो के लालच से उसके पास उपस्थित हो गये। इस बात से दु खित होकर बादशाह ने फाजिल खा के साथ औरंगजेब के पास फरमान भेजा और कुछ बातें जबानी भी कहलाई जिनका खुलासा यह था कि "बहुत दिनो से हमारा दिल तुम्हे देखने को समुत्सुक है। मगर तुम्हारा यहा तक पहुच कर भी अपने बाप के देखने को न आना, जिसने कि अभी एक घातक बीमारी से मुक्त हो कर नया जीवन पाया है, सिवाय कठोरपन के और क्या समझा जावे ?" कृतज्ञता प्रकट करने के बाद औरगजेब ने लिखा कि "कदमबोसी के इच्छा से ही मैं दरे-दौलत तक तो पहुच ही गया हू। किसी अच्छे मुहूर्त पर दरबार मे भी उपस्थित हो जाऊगा।" बादशाह ने प्रसन्न होकर दूसरे दिन फिर बहुत से जवाहरात देकर शाहजादा को लाने के लिए अफजल खा को भेजा। मगर अब तो शाहजादा बिलकुल बदल गया था, क्योकि लोगो ने उसको बादशाह की तरफ से बहका दिया था। इसलिए फाजिल खा ने वापस आकर जो देखा था वह अर्ज कर दिया। बादशाह ने तो भी खलीलुल्ला खा को फाजिल खा के साथ भेज कर फिर लिखा कि "यह पुत्र तो हमेशा से अपने बाप का आज्ञाकारी रहा है, फिर अब इतने कठोरपन का क्यो कारण है ?" फाजिल खा तो बाहर खडा रहा और खलीलुल्ला खा ने एकात स्थल मे बादशाह को कैद करने और उनसे किला और खजाना छीन लेने की सलाह दी। औरगजेब ने उसी की सलाह से उसको (खलीलुल्ला खा को) तो कैद कर दिया और फाजिल खा से कहा कि "मुझ को हजरत की तरफ से विश्वास नहीं है। क्यो कि कहीं ऐसा न हो कि मेरे उपस्थित होने पर क्रोधवश कुछ और ही व्यवहार नहीं कर बैठें। इसी वास्ते मैं नही आ सकता हू।"

फाजिल खा ने लौट कर सारा हाल अर्ज किया। तब तो बादशाह ने दुर्ग

के द्वार बद कर लिये। साथ ही अपने शुभेच्छुको को जगह-जगह पहरे-चौकी पर बैठाया। औरगजेब ने रात को किला घेर लिया और तोपें मारना शुरू कर दिया। अदर वाले एक रात-दिन के घेरे से ही घबरा उठे और नमक-हरामी करके बहुत से बाहर निकल गये। जो शेष रहे वे भी औरगजेब की तरफ मिल गये। बादशाह ने यह हाल देख कर फिर फाजिल खा को औरगजेब के पास भेजा और लिखा कि "खुदा जिसको चाहता है उसको मुल्क और विजय प्रदान करता है। किसी ने अपनी शक्ति से कुछ नही किया है। हमारे ऊपर बहुत बडा आघात हुआ है। जमाने ने हमे सताने मे कोई कमी नही रक्खी है। बाप की ममता और बहन का प्यार तेरे पत्थर जैसे कठोर दिल पर कुछ असर नही करता है। अब हमने बादशाही छोडी और एक कोने मे बैठ कर खुदा को याद करते हैं। जो चाहे वह इस राज्य को ले। तुम स्वार्थी लोगो के बहकाने से क्यो स्वय को बदनाम और हमको लज्जित करते हो। यह ससार 'दारुलमुकाफात' है (यानि कोई जैसा करता है वैसा ही पाता है)। अगर तुम इस ससार पर विश्वास न करके खुदा और रसूल के आदेशानुसार अपने बाप की सेवा करोगे, तो खुदा और खुदा की इस दुनिया की नजरो मे तुम्हे यश ही मिलेगा।"

इसके जवाब मे औरगजेब ने अर्जी लिखी कि "आपकी अप्रसन्नता के डर से मुझको मिथ्या सदेह हो गया है। हा! यदि आप कृपा करके किले के दरवाजे की चाबिया मेरे आदमियो को सौंपा देवें तो मैं पूरी तसल्ली से उपस्थित होकर अपने दोषो का प्रायश्चित्त करूगा, और आपको राजी रख कर, आपको कभी किसी तरह की तकलीफ नही होने दूगा।"

बादशाह ने इस अर्जी के पहुचते ही बाध्य होकर सम्पूर्ण किला खाली कर दिया। उसी समय औरगजेब के आदमी जगह-जगह बैठ गये। खजानो और कारखानो पर उसकी मोहरें लग गईं। बादशाह के पास लोगो का आना-जाना बद हो गया, और तब वह किला उनके लिए कैदखाना बन गया। तद-नतर वे वही बडी तगी से अपना जीवन व्यतीत करने लगे।

कैसे खेद की बात है कि शाहजहा बादशाह, जिनको जमाने ने हर तरह से मदद देकर हरा-भरा कर रखा था, और जो बेटो के मोह-जाल मे फस कर उसके नतीजे को भूले हुए थे, एकदम भाग्य के पलट जाने से किसी लायक नही रहे। जिनका हुक्म हजारो कोसो मे चलता था और जिनकी फौज 4,00,000, से अधिक थी, वे ही ऐसे लाचार ओर पराधीन हुए कि अपने घर की भी सुरक्षा नही कर सके। जिस सल्तनत के लिए उन्होंने अपने निरपराध भाइयो के प्राण लिये थे, वही यो बेवफाई करके उनको इन बुरे हालो छोड गई। इनके प्रपितामह हुमायू बादशाह को भाइयों के साथ हद से

ज्यादा महरबानी करने का जो परिणाम भुगतना पडा था, उससे वेखवर रह कर इन्होंने अपने वेटो को अपरिमित प्यार दिया था, उसका परिणाम उसमे भी वुरा मिला। जव उन्होंने अपने वेटे (औरगजेव) को लिखा था कि 'यह दुनिया दारुलमुकाफात है' तो उस वक्त उनके दिल ने जरूर उनसे पुकार-पुकार कर कहा होगा कि "यह वदला उसी वर्ताव का है कि जो तुमने अपने बाप के साथ किया था।" वाप से वागी होना इन वादशाहो के खानदान मे कई पीढियो तक वश-परपरागत दाय-भाग था। पहिले जहागीर ने अपने वाप अकवर से वगावत की मगर एक परदे के साथ। फिर शाहजहा ने वगावत इस धडल्ले से की कि वाप के ऊपर चढ़ कर गये। हजरत औरगजेव सव मे सपूत निकले कि तख्त और ताज छीन कर वाप को कैद ही कर दिया।

शेष-संग्रह

अब शाहजहां के राज्य का कुछ फुटकर हाल यहा लिखा जाता है, जो बहुत आवश्यक और उपयोगी है।

अमलदारी (राज्य-विस्तार)

शाहजहा की अमलदारी अकबर और जहांगीर से बहुत बढ गई थी। उनकी सल्तनत की लम्बाई[1] लाहुरी बदर से, जो थट्टा के पास है, सिलहट तक 2000 कोस के करीब थी, और चौडाई बिस्त के किले की सरहद से, जो ईरान की अमलदारी से मिली हुई थी, औसा के किले तक, जो कुतुब-उल्-मुल्क की अमलदारी के पास था, 1500 कोस के करीब थी। एक शाहजहानी कोस 5000 गज का था, और गज 42 अगुल का होता था। पश्चिम मे ईरान और तूरान से, उत्तर मे काश्मीर और तिब्बत से, दक्षिण मे गोलकुण्डा और बीजापुर से, पूर्व मे मग और खग यानी ब्रह्मा और अराकान से सीमाए मिलती थी। फेनी नदी सूबा बगाल और मुल्क मग को अलग करती थी। कुतुबुल्मुल्क की अमलदारी से आगे बीजापुर के शाह शाह आदिल खा की सल्तनत थी, और ये दोनो ही हर साल पेशकश भेजा करते थे।

इतना लबा-चौडा यह राज्य 22 सूबो में बटा हुआ था। एक-एक सूबे मे कई-कई सरकारें थी और प्रत्येक सरकार के नीचे अनेको परगने थे। 22 सूबो मे कुल 4350 परगने थे। दिल्ली और लाहोर के सूबो मे कुछ परगनो की आमदनी दस-दस लाख रुपये तक की थी।

सूबेदार और अमला (कर्मचारी वर्ग)

हर सूबे मे एक सूबेदार रहता था। उसके पास दीवान, बख्शी और वाकिया-

1 बल्ख और बदख्शा के क्षेत्र इस लबाई में शामिल नहीं हैं। ये क्षेत्र दो-तीन बरस तक इस साम्राज्य में रहे थे। शाहजहां के राज्य की जो लबाई चौडाई यहां दी गई हैं, वे मोटे तौर पर अनुमानित तखमीने ही हैं, उनका सही परिमाण आगे दिया है।

नवीस बादशाह द्वारा नियुक्त होकर भेजे जाते थे, जो अपना-अपना काम बाद-शाही जाब्ते के अनुसार उसके आदेश से करते थे।

सरकारों में फौजदार, अमीन, कोतवाल और परगनों में करोडी रहते थे। फौजदार पुलिस का, अमीन माल का और करोडी तहसील का काम करता था।

जमाबंदी

तहसील जमा का बदोबस्त प्राय स्थायी था। पैमायश से जमीन की किस्म के आधार पर जमा निश्चित होती थी। अतिवृष्टि और अनावृष्टि होने के मौसमों में जमा भी कम कर दी जाती थी।

आमदनी

कुल सूबों की जमीन की जमा 8 अरब 80 करोड दाम की थी, जिसका विवरण नीचे लिखा जाता है —

1 सूबा दिल्ली 100 करोड दाम
2. सूबा आगरा 90 करोड दाम
3 सूबा लाहौर 90 करोड दाम
4 सूबा अजमेर 60 करोड दाम
5 सूबा दौलताबाद 55 करोड दाम
6 सूबा बरार 55 करोड दाम
7 सूबा गुजरात 53 करोड दाम
8 सूबा बंगाल 50 करोड दाम
9 सूबा इलाहाबाद 40 करोड दाम
10. सूबा मालवा 40 करोड दाम
11 सूबा खानदेश 40 करोड दाम
12 सूबा अवध 30 करोड दाम
13 सूबा तेलंगाना 30 करोड दाम
14 सूबा मुलतान 30 करोड दाम
15 सूबा उडीसा 20 करोड दाम
16 सूबा काबुल 16 करोड दाम
17 सूबा काश्मीर 15 करोड दाम
18 सूबा थट्टा 8 करोड दाम
19 सूबा बल्ख 6 करोड दाम
20 सूबा कंधार 6 करोड दाम

21. सूबा वदख्शा 4 करोड दाम

22 विलायत वगलाना 2 करोड दाम

यह जमा साल 20 जुलूसी मे थी। 40 दाम का 1 रुपया गिना जाता था, जिससे 8 अरव 80 करोड दाम के 22 करोड रुपये होते थे।

पहिले जब बादशाह तख्त पर वैठे थे, तब 7 अरव दाम का ही मुल्क था। और 80 करोड दाम की आमदनी के 6 सूवे वादशाह के समय मे फतह हुए जिनके नाम निम्न हैं —

1 सूवा दौलतावाद के जिले 29 करोड दाम

2 सूवा तिलगाना 30 करोड दाम

3. सूवा बल्ख 6 करोड दाम

4 सूवा कधार 7 करोड दाम

5 सूबा वदख्शा 4 करोड दाम

6 विलायत वगलाना 2 करोड दाम

एक अरव दाम की यह जमा वादशाह के-नियम-कायदो और सुव्यवस्था से 20 वर्षों मे बढी। इस तरह कुल राज्य की जमा 8 अरव 80 करोड दाम की हो गई थी, जिसमे बादशाही खालसा 1 अरव 20 करोड दाम का था। उसकी जमा 12 महीने मे वैठती थी। इतना खालसा पहिले कभी नही था।

खजाना

जितना खजाना अकबर बादशाह ने 50 वर्ष मे जमा किया था, उतना किसी बादशाह ने नही किया था। अपने 22 वर्ष के राज्य-काल मे जहागीर ने उसमे से बहुत सा खर्च किया। शाहजहा के युग मे बेहिसाब रुपया फौज-वदी, इनाम और बडी-बडी इमारतो को वनाने मे खर्च हुआ, तो भी मुल्क की आवादी और रैयत की खुशहाली से वहुत सा रुपया खजाने मे जमा था, और जवाहर तो इतने थे कि कुल ससार के वादशाहो के पास नही होगे।

7 करोड के जवाहर खासा थे, जिनमे से दो करोड के तो शाहजादो को प्रदान किये गये थे और 5 करोड के वादशाह के पास ही थे, जिनमे 2 करोड के तो वादशाह के पहनने के थे, जो तदर्थ उनके सेवको के पास रहते थे, और 3 करोड के चेलो के हवाले थे। ये सव जवाहर कोई 100 वरस मे इकट्ठा हुए थे।

वादशाह के पास लालो का 1 सरपेच 12 लाख रुपयो का, मोतियो का 1 हार 16 लाख रुपये का, तथा 20 लाख रुपये के दो और हार थे। ये चीजें अकवर वादशाह की वनवाई हुई थी। जहागीर और शाहजहा ने भी इनमें कुछ वृद्धि की थी।

सिक्के

बादशाही टकसालें राजधानी के अतिरिक्त अधिकतर सूबो मे भी थी, जिनमे सोने और चादी के सिक्के ढला करते थे, और उनके नाम भी अलग-अलग थे।

मोहर—अशरफी आधी मोहर—धन

पाव मोहर —चरण

आधा रुपया—दरब पाव रुपया—निसार

इनके अतिरिक्त हजार-हजार और पाच-पाच सौ तोले की भी मोहरें और रुपये होते थे और वे इनामो मे दिये जाते थे।

खर्च

खर्च भी शाहजहा के समय मे बहुत हुआ। फौज खर्च के अतिरिक्त 20 बरस मे इनाम और दान 9 करोड 50 लाख के हुए थे। 2 करोड 50 लाख रुपया उन इमारतो मे खर्च हुआ था, जो सर्वथा अद्वितीय ही थी। उनमे से खास-खास नीचे लिखी जाती हैं —

1 आगरा की इमारतें—1 करोड 10 लाख रुपये,
2 आगरा के-किले मे संगमरमर की मसजिद और दौलतखाना—60 लाख रुपये,
3 ताज बीबी का रोजा—50 लाख रुपये,
4. दिल्ली की इमारतें, मसजिद के अतिरिक्त—50 लाख रुपये,
5 लाहोर के बाग और इमारतें—50 लाख रुपये,
6 काबुल की इमारतें- 12 लाख रुपये,
7 अजमेर और अहमदाबाद की इमारतें—12 लाख रुपये,
8 काश्मीर की इमारतें—8 लाख रुपये,
9 कंधार, बिस्त और जमीनदावर के कोट वगैरह—8 लाख रुपये।

इनाम और खैरात

इनाम भी बहुत अधिक दिये जाते थे। पहिले जुलूसी बरस मे 1 करोड 80 लाख रुपया यो प्रदान किया गया था, और 11वें बरस मे 19 लाख। इसी तरह इनाम हमेशा दिये जाते थे, जो मौके-मौके पर लिखे जा चुके हैं। नकद के अतिरिक्त जमीन भी बख्शी जाती थी। पहिले वर्ष मे 4 लाख बीघा जमीन और 120 गाव खैरात किये गये थे और खैरात का यह तरीका हिन्दुओ के तरीके से बहुत मिलता था।

इनाम देने का एक अजीब ढग यह भी था कि जिनसे बादशाह खुश होते थे, उसको रुपयो के बराबर तोल कर वह रुपया उसी को दिला देते थे।

कई इनाम पाने वालो का तोल नीचे लिखे अनुसार था —

1 तालबाय किलीम (शायर)—5000 रुपये,
2 मोहम्मद जान कुदसी (शायर)—5500 रुपये,
3 जगन्नाथराय महाकवि (त्रिशूली)—4000 रुपये,
4 जमाल खा किरावल, मीर शिकार—8000 रुपये,
5 मुल्ला अब्दुल हमीद, 'बादशाह-नामा' को लिखने वाला—3000 रुपये,
6 मुल्ला अब्दुल हकीम स्यालकोटी—6000 रुपये,
7 काजी मुहम्मद अफजल—6000 रुपये,
8 आरिफ खिदमतगार—7000 रुपये,

इन सब मे सर्वाधिक भारी जमाल खा और सबसे हल्का मुल्ला अब्दुल हमीद था।

रुपया लुटाने का भी रिवाज था। जब बादशाह यात्रा करके आते थे, या लाहोर, काबुल और अजमेर, वगैरह के दौलतखानो मे प्रवेश करते थे, तब भी रुपया लुटाया जाता था। ईद की सवारियो मे भी ऐसा होता था। खैरात भी बहुत होती थी। उसमे और नौरोज वगैरह के उत्सवो मे जो रुपया खर्च होता था, उससे सबको लाभ पहुचता था। खास-खास खैरातो का मामूली खर्च साल भर मे नीचे लिखे अनुसार होता था —

1 बादशाह के शमसी वजन यानी संक्रांत के हिसाब से साल-गिरह के तुलादान में—40,000 रुपये,
2 बादशाह के कमरी वजन यानी चान्द्र-मास के हिसाब की साल-गिरह मे—40,000 रुपये,
3 चारो शाहजादो की साल-गिरहो के तुलादानो मे—1,00,000 रुपये,
4 27 रजब की रात को—10,000 रुपये,
5 शबरात को—10,000 रुपये;
6 रमजान के रोजो की बाबत—30,000 रुपये;
7 ताज बीबी के उर्स यानी सवत्सरी मे—50,000 रुपये;
8 मुहर्रम में—10,000 रुपये;
9 तारीख 12 रबी-उल्-अव्वल की रात मे पैगम्बर साहिब का जन्म हुआ था, उसके लिए—10,000 रुपये, और
10 ता० 12 जमादि-उल्-अव्वल की रात मे अकबर बादशाह का देहान्त हुआ था, उसके वास्ते—10,000 रुपये।

बादशाही जश्न (उत्सव)

सबसे बड़ा उत्सव नौरोज का होता था, जिस दिन सूरज मेष राशि का होता था। उस दिन से मेष संक्रांति तक के 19 दिनों तक बराबर खुशी के जलसे होते थे। दौलतखाना तरह-तरह से सजाया जाता था। शाहजादे और बड़े अमीर लाखों रुपये की अनोखी और कीमती जड़ाऊ चीजें और जवाहरात वगैरह बादशाह को नजर करते थे। बादशाह भी भारी-भारी खिलअतें, जड़ाऊ जेवर, हथियार और हाथी-घोड़े इनायत फरमाते थे। ऐसे ही जलसे जनानखाने (अंतःपुर) में भी होते थे। तब मीना बाजार भी लगता था।

नौरोज के दिन पान और इत्र सोने के जड़ाऊ थालों में अमीरों, वजीरों और दरबारियों को इनायत होते थे।

इससे उतर कर साल-गिरहों के उत्सव थे, जिनमें बादशाह तो साल भर में दो बार सोने और चांदी और दूसरी चीजों में तुलते थे, और शाहजादे एक बार। ये सब तुलादान मुहूर्त से होते थे। तुलादानों की कुल चीजें गरीबों और मोहताजों को खैरात कर दी जाती थी।

लश्कर

कुल फौज 4 लाख 30,000 व्यक्तियों की थी, जिनमें 3 लाख 75,000 सवार, 8000 मनसबदार, 7000 अहदी अथवा बरकदाज और 40,000 पैदल, बंदूकची, गोलंदाज, अथवा बाण चलाने वाले थे। इनमें से 10,000 तो हमेशा बादशाह की सेवा में उपस्थित रहते थे, और 30,000 किलों में और सूबों में तैनात थे।

सवारों में 2,00,000 तो बादशाही नौकर थे, और 1,75,000 शाहजादों, अमीरों और मनसबदारों के नौकर थे, जिनका वेतन वे अपने-अपने मनसब के वेतन में से देते थे।

मनसबदार

8000 मनसबदारों में बड़े-बड़े अमीर, राजा, महाराजा ही नहीं, बल्कि शाहजादे भी शामिल थे, क्योंकि मनसब के बिना शाहजादों का भी वेतन निश्चित नहीं होता था। मनसब के पूर्व शाहजादे रोजीना ही पाया करते थे, और किसी सेवा पर नियुक्त हुए बिना उन्हें मनसब नहीं मिलता था। मगर शाहजादा दारा शिकोह को किसी सेवा पर नियुक्त हुए बिना ही मनसब मिल गया था, जिसका कारण यह था कि बादशाह को उससे बहुत प्रेम था और इसीलिए वे उन्हें अपने पास से जुदा नहीं करते थे। जब शाहजादा शुजा को

तैनाती पहिली बार दक्षिण की मुहिम पर हुई और वह मनसब पाकर सलाम करने को उपस्थित हुआ, तब सबसे बड़ा शाहजादा दारा शिकोह था, लज्जा के मारे रोता दीवानखाना से उठ गया। तब उसके किसी सेवा पर नियुक्त हुए विना ही बादशाह ने उसको भी मनसब दे दिया।

सन् 20 जुलूसी के अंत तक जो मनसबदार थे, उनका व्योरा इस प्रकार है —

1	बीस हजारी	1	2	पंद्रह हजारी	2
3	बारह हजारी	1	4	नौ हजारी	1
5	सात हजारी	6	6	छ हजारी	5
7	पाच हजारी	20	8	चार हजारी	20
9	तीन हजारी	44	10	ढाई हजारी	11
11	दो हजारी	51	12	डेढ हजारी	52
13	हजारी	97	14	नौ सदी	23
15	आठ सदी	40	16	सात सदी	61
17	छ सदी	20	18	पाच सदी	14

पाच सदी से नीचे की तफसील 'बादशाह-नामा' मे नही है।

बड़े-बड़े मनसबदारो के नाम

ऊपर लिखे मनसबदारो मे से 5 हजारी तक के नाम ये हैं —

	नाम	मनसब	सवार	दो-अस्पा तीन-अस्पा
1	शाहजादा दारा शिकोह	20 हजारी	20,000	10,000
2	शाहजादा शुजा	15 हजारी	15,000	8,000
3	शाहजादा औरगजेब	15 हजारी	15,000	8,000
4	शाहजादा मुराद बख्श	12 हजारी	9,000	—
5	आसफ खा वजीर खानखाना	9 हजारी	9,000	9,000
6	खानदौरा नसरत जग	7 हजारी	7,000	5,000
7	अलीमरदान खा अमीरुल-उमरा	7 हजारी	7,000	5,000
8	सईद खा जफरजग	7 हजारी	7,000	5,000
9	इस्लाम खा	7 हजारी	7,000	5,000
10	सादुल्ला खा वजीर	7 हजारी	7,000	—
11	अफजल खा	7 हजारी	4,000	—
12	सैयद खानजहा	6 हजारी	6,000	6,000

13	आजम खां	6 हजारी	6,000	—
14	अब्दुल्ला खां बहादुर			—
	फीरोज जंग	6 हजारी	6,000	—
15	सैयद जलाल बुखारी	6 हजारी	6,000	—
16	नजर मुहम्मद खां का बेटा,			
	खुसरो	6 हजारी	6,000	—
17	शायस्ता खां	5 हजारी	5,000	5,000
18	बहादुर खां रुहेला	5 हजारी	5,000	5,000
19.	मिरजा ईसा तरखान	5 हजारी	5,000	—
20	राजा जसवंतसिंह	5 हजारी	5,000	2,500
21	रुस्तम खां	5 हजारी	5,000	2,000
22.	राजा जयसिंह	5 हजारी	5,000	2,000
23.	कुलीच खां	5 हजारी	5,000	2,000
24.	वजीर खां	5 हजारी	5,000	2,000
25	राजा गजसिंह	5 हजारी	5,000	—
26	शाहनवाज खां सफवी	5 हजारी	5,000	—
27	राणा जगतसिंह	5 हजारी	5,000	—
28	ऐतकाद खां	5 हजारी	5,000	—
29.	सफदर खां	5 हजारी	5,000	—
30	राजा विट्ठलदास	5 हजारी	5,000	—
31	सिपहदार खां	5 हजारी	5,000	—
32	अलावर्दी खां	5 हजारी	5,000	—
33	खवास खां	5 हजारी	5,000	—
34	मालूजी दक्खिनी	5 हजारी	5,000	—
35	जाफर खां	5 हजारी	5,000	—
36	अमालत खां	5 हजारी	5,000	—

शाहजादों और बड़े-बड़े अमीरों को मनसब का जो वेतन मिलता था, उसमें 7 आसामियों का वेतन 'बादशाह-नामा' में लिखा था, वह यहां लिखा जाता है। यह वेतन दामों के हिसाब से मिलता था, 1 रुपये के 40 दाम काटे जाते थे।

	नाम	दाम	रुपया
1	शाहजादा दारा शिकोह	40 करोड़	1 करोड़
2	शुजा	24 करोड़	60 लाख
3.	औरंगजेब	24 करोड़	60 लाख

4	मुराद बख्श	12 करोड	30 लाख
5	आसफ खा	20 करोड	50 लाख
6	सादुल्ला खा	12 करोड	30 लाख
7	अलीमरदान खा	12 करोड	30 लाख

मनसबदारो की अतिम सूची

साल 20 के पीछे साल 30 तक शाहजादो और अमीरो का बहुत-कुछ इजाफा हो गया था।

मुल्ला ताहिर ने अपनी किताब मे, जिसका खुलासा हमने इस तीसरे भाग मे लिखा है, बादशाह की सल्तनत के अतिम समय तक के मनसवदारो की जो सूची लिखी है उसका ब्यौरा नीचे लिखे अनुसार है —

शाहजादे

1	60 हजारी	1	2	20 हजारी	2
3	15 हजारी	2	4	7 हजारी	3

उमराव

1	नौ हजारी	1	2	सात हजारी	10
3	छ हजारी	16	4	पाच हजारी	32
5	चार हजारी	34	6	साढे तीन हजारी	1
7	तीन हजारी	57	8	ढाई हजारी	24
9	दो हजारी	68	10	डेढ हजारी	75
11	हजारी	138	12	नौ सदी	29
13	आठ सदी	81	14	सात सदी	72
15.	छ सदी	51			

पाच सदी मनसब वाले अमीर नही लिखे हैं।

शाहजादो के आठ आसामियो की तफसील

1 शाहजादा दारा शिकोह—60 हजारी जात—40,000 सवार दो-अस्पा तीन-अस्पा,
2 शाहजादा शुजा—20 हजारी जात—15,000 सवार दो-अस्पा,
3 शाहजादा औरगजेब—20 हजारी जात—15,000 सवार दो-अस्पा,
4 शाहजादा मुराद बख्श—15 हजारी जात—12,000 सवार इसमे 8,000 दो-अस्पा,

5 शाहजादा दारा शिकोह का बडा बेटा, सुलेमान शिकोह—15 हजारी जात—8,000 सवार,
6 शाहजादा दारा शिकोह का दूसरा बेटा, सिपहर शिकोह —7 हजारी जात —2,000 सवार,
7 शाहजादा शुजा का बेटा, सुलतान जेनुल-आबदीन—7 हजारी जात —2,000 सवार,
8 शाहजादा औरंगजेब का बडा बेटा, सुलतान मुहम्मद—7 हजारी जात—2000 सवार।

शुजा के बेटे, बुलद अख्तर, और औरंगजेब के बेटो, मुअज्जम, आजम, अकबर और कामबख्श, के मनसब नही हुए थे।

मुसलमान अमीर

मुसलमान अमीरो मे जो 9 हजारी के एक और 7 हजारी के छ अमीर पहिले लिख आये हैं, वे सातो ही अमीर बादशाह की सल्तनत बिगडने से पहिले-पहिले मर चुके थे।

6 हजारियो मे 1 मुअज्जम खा मीर जुमला और बढा था।

5 हजारियो मे 5 और बढे थे—1 मअमत खा, 2 खलीलुल्ला खा, 3 महाबत खा, 4 निजाबत खा, और 5 बल्ख के अमीर नजर मुहम्मद खा का बेटा, बहराम खा।

हिन्दू अमीर

हिन्दू अमीरो के भी इजाफे हुए थे, और कुछ नये बढे थे। कुल हिन्दू अमीरों और उनके मनसबो की तफसील, जो बादशाह के अंतिम समय मे थे, यह है—

सात हजारी

1 महाराजा जसवंतसिह राठोड—7000 हजारी जात—6000 सवार[1]। और
2 राजा जयसिह कछवाहा—7 हजारी जात—6000 सवार[2]।

पाच हजारी

3 राजा विट्ठलदास गौड—5 हजारी जात—5000 सवार;
4 राजा गजसिह राठोड—5 हजारी जात—5000 सवार,

1 '7000 सवार' होना चाहिये (अम्दू०, 3, पृ० 284)। (स०)
2 यहा मनसब—'छ हजारी—5000 सवार' (अम्दू०, 3, पृ० 277)। (स०)

5 राव रतन हाडा—5 हजारी जात—5000 सवार,

6 जुझारसिंह बुंदेला, राजा बीरसिंह देव का बेटा - 5 हजारी जात—5000 सवार,

7 ऊदाजीराम दक्षिणी—5 हजारी जात—5000 सवार,

8. बहादुरजी दक्षिणी, जादोराय का बेटा - 5 हजारी जात—5000 सवार,

9 राणा जगतसिंह—5 हजारी जात—5000 सवार,

10 राणा राजसिंह—5 हजारी जात—5000 सवार,

11. मालूजी भोसला—5 हजारी जात—5000 सवार, और

12 राजा रायसिंह सीसोदिया—5 हजारी जात—2500 सवार।

चार हजारी

13 राव शत्रुसाल हाडा— 4 हजारी जात—4000 सवार,

14 राजा भारत बुंदेला—4 हजारी जात—3500 सवार,

15 राजा पहाड़सिंह बुंदेला—4 हजारी जात—3500 सवार[1],

16 राव अमरसिंह राठौड—4 हजारी जात—3000 सवार,

17 राव सूर भुरटिया—4 हजारी जात—2500 सवार[2],

18 राजा रूपसिंह राठौड—4 हजारी जात—2500 सवार[3], और

19 हमीरराय दक्षिणी—4 हजारी जात—2500 सवार।

तीन हजारी

20 राजा अनूपसिंह, अमरसिंह बाघेल का बेटा—3 हजारी जात—3000 सवार[4],

21 राजा अनिरुद्ध गौड 3 हजारी जात—3000 सवार,

22 राजा माधोसिंह हाडा—3 हजारी जात—2500 सवार[5],

23 राजा राजरूप 3 हजारी जात—2500 सवार,

24 कुवर रामसिंह, राजा जयसिंह का बेटा 3 हजारी जात—2000 सवार,

25 मुकदसिंह हाडा—3 हजारी जात—2000 सवार,

---

1 '3,000 सवार' होना चाहिये (वारिस०, 2, पृ० 198)। (स०)

2 '3,000 सवार' होना चाहिये (पा० ना०, 1-ब, पृ० 297)। (स०)

3 '3,000 सवार' होना चाहिये (वारिस०, 2, पृ० 198)। (स०)

4 '2,000 सवार' होना चाहिये (वारिस०, 2, पृ० 199)। (स०)

5 '3,000 सवार' होना चाहिये (वारिस०, 2, पृ० 198)। (स०)

26 राव करण भुरटिया—3 हजारी जात—2000 सवार,
27 ऊदाजीराम दक्षिणी—3 हजारी जात—2000 सवार,
28 परसूजी दक्षिणी—3 हजारी जात 2000 सवार,
29 जादोराय दक्षिणी—3 हजारी जात—1500 सवार,
30 रामसिंह राठौड, करमसी का बेटा—3 हजारी जात—1500 सवार;
31. मगूजी दक्षिणी—3 हजारी जात—1500 सवार,
32 राजा अनूपसिंह 3 हजारी जात 1500 सवार,
33 राजा मनरूप—3 हजारी जात—1000 सवार,
34 वीरमदेव—3 हजारी जात 1000 सवार, और
35 दत्ताजी दक्षिणी—3 हजारी जात—1000 सवार।

ढाई हजारी

36 सबलसिंह सीसोदिया—ढाई हजारी जात—1250 सवार[1],

दो हजारी

37 राजा सुजानसिंह बुंदेला—2 हजारी जात—2000 सवार,
38 राजा देवीसिंह बुंदेला—2 हजारी जात—500 सवार[2],
39 राजा टोडरमल—2 हजारी जात—500 सवार[3],
40 गिरधरदास गौड—2 हजारी जात—500 सवार[4],
41. पृथ्वीराज (राठौड)—2 हजारी जात—500 सवार[5],
42 जुगराज बुंदेला—2 हजारी जात—500 सवार[6],
43 राव रतन, महेशदास राठौड का बेटा—2 हजारी जात—600 सवार[7],
44 राव दूदा, राव चादा का पोता—2 हजारी जात—500 सवार[8],
45 अर्जुन गौड, राजा विट्ठलदास का बेटा—2 हजारी जात—500 सवार[9],

1 '1,500 सवार' होना चाहिये (वारिस०, 2, पृ० 200)। (स०)
2 '2,000 सवार' होना चाहिये (कम्बू० 3, पृ० 457, वहीं०, पृ० 11)। (स०)
3 '2,000 सवार' होना चाहिये (वारिस०, 2, पृ० 201)। (स०)
4 '2,000 सवार' होना चाहिये (वारिस०, 2, पृ० 201)। (स०)
5 '2,000 सवार' होना चाहिये (वारिस०, 2, पृ० 201)। (स०)
6 '2,000 सवार' होना चाहिये (पा० ना०, 1-ब, पृ० 301)। (स०)
7 '2,000 सवार' होना चाहिये (कम्बू०, 3, पृ० 458, वहीं०, पृ० 22)। (स०)
8 '1,500 सवार' होना चाहिये (पा० ना०, 1-ब, पृ० 302)। (स०)
9 '1,500 सवार' होना चाहिये (वारिस०, 2, पृ० 201)। (स०)

46 राजा शिवराम गौड—2 हजारी जात—500 सवार[1],

47 राजा जयराम गौड—2 हजारी जात—500 सवार[2],

48 बिहारी दास कछवाहा—2 हजारी जात—200 सवार[3],

49 राव रूपसिंह चद्रावत—2 हजारी जात—200 सवार[4],

50 राव अमरसिंह —2 हजारी जात— 800 सवार[5];

51 पीथूजी—2 हजारी जात—800 सवार[6],

52 सुजानसिंह सीसोदिया—2 हजारी जात—800 सवार, और

53 हाबाजी दक्षिणी—2 हजारी जात—800 सवार।

डेढ़ हजारी

54 चतुरभुज चौहान—डेढ हजारी जात—1500 सवार दो-अस्पा तीन-अस्पा,

55. रावल पूजा—डेढ हजारी जात—1500 सवार,

56 राजा बदनसिंह भदौरिया—डेढ हजारी जात—1400 सवार;

57 रायसिंह, राजा गजसिंह राठौड का पोता—डेढ हजारी जात—1400 सवार[7],

58 हरदेराम, बाका कछवाहा का बेटा— डेढ हजारी जात—1400 सवार[8],

59 राजा द्वारकादास, राजा गिरधर का बेटा डेढ हजारी जात—1400 सवार[9],

60 शत्रुसाल कछवाहा— डेढ हजारी जात— 1400 सवार[10],

61 राजा प्रताप उज्जैनिया— डेढ हजारी जात- -1400 सवार[11],

---

1 '1,500 सवार' होना चाहिये (वारिस०, 2, पृ० 201)। (स०)

2 '1,500 सवार' होना चाहिये (वारिस०, 2, पृ० 201)। (स०)

3 '1,200 सवार' होना चाहिये (पा० ना०, 1-ब, पृ० 302)। (स०)

4 '1,200 सवार' होना चाहिये (वारिस०, 2, पृ० 202)। (स०)

5 '1,000 सवार' होना चाहिये (वारिस०, 2, पृ० 202)। (स०)

6 '1,000 सवार' होना चाहिये (वारिस०, 2, पृ० 202) कम्बू०, 3, पृ० 460)। (स०)

7 '1,500 सवार' होना चाहिये (वारिस०, 2, पृ० 203)। (स०)

8 '1,000 सवार' होना चाहिये (पा० ना०, 1-ब, पृ० 305)। (स०)

9 '1,000 सवार' होना चाहिये (पा० ना०, 1-ब, पृ० 305)। (स०)

10 '1,000 सवार' होना चाहिये (पा० ना०, 1-ब, पृ० 305)। (स०)

11 '1,000 सवार होना चाहिये (पा० ना०, 1-ब, पृ० 305)। (स०)

62 राजा अमरसिंह नरवरी—डेढ़ हजारी जात—1400 सवार[1],
63 करमसी राठौड—डेढ़ हजारी जात—700 सवार[2],
64. चन्द्रमन बुंदेला—डेढ़ हजारी जात—700 सवार[3],
65 गरीबदास, राणा करण सीसोदिया का बेटा—डेढ़ हजारी जात—600 सवार[4];
66 जगमाल राठौड, किशनसिंह का बेटा—डेढ़ हजारी - 600 सवार,
67 श्यामसिंह, करमसी राठौड का बेटा—डेढ़ हजारी जात—600 सवार, और
68 गिरधर—डेढ़ हजारी जात—100 सवार[5]।

हजारी

69 गोपालसिंह, राजा मनरूप कछवाहा का बेटा—हजारी जात—1000 सवार,
70 रावल समरसी—हजारी जात—1000 सवार,
71 प्रताप, जमींदार पालामऊ—हजारी जात—1000 सवार,
72 कीरतसिंह राजा जयसिंह का बेटा हजारी जात—900 सवार,
73 जगराम कछवाहा—हजारी जात - 900 सवार[6],
74 राजा महासिंह, राजा बदनसिंह का बेटा—हजारी जात—800 सवार,
75 रायसिंह झाला—हजारी जात—700 सवार,
76 रावल सबलसिंह जैसलमेरी—हजारी जात—700 सवार,
77 बलभद्र शेखावत—हजारी जात 600 सवार,
78 राजा हरनारायण[7] बड़गूजर- हजारी जात - 600 सवार,
79 रूपचंद गुलेरी—हजारी जात—600 सवार,
80 भोजराज दक्षिणी—हजारी जात 500 सवार,
81 भारमल किशनसिंह राठौड का बेटा हजारी जात 500 सवार,
82 राजा गिरधर जैमल मेड़तिया का पोता हजारी जात—500 सवार,

---

1 '1,000 सवार' होना चाहिये (वारिस०, 2, पृ० 204)। (स०)
2 '800 सवार' होना चाहिये (पा० ना०, 1-ब पृ० 306)। (स०)
3 '800 सवार' होना चाहिये (वारिस०, 2, पृ० 204)। (स०)
4 '700 सवार' होना चाहिये (वारिस०, 2, पृ० 204)। (स०)
5 '200 सवार' होना चाहिये (मआ०, 3, पृ० 464)। (स०)
6 '800 सवार' होना चाहिये (वारिस०, 2, पृ० 206)। (स०)
7 सही नाम 'वीरनारायण' (पा० ना०, 1-ब, पृ० 309)। (स०)

83 जैतसिंह राठौड—हजारी जात—500 सवार,
84 मित्रसेन, राजा श्यामसिंह का भाई—हजारी जात—500 सवार;
85 सुजानसिंह, मोहकमसिंह का बेटा[1]—हजारी जात—500 सवार,
86 उदयभान, श्यामसिंह राठौड का बेटा—हजारी जात—500 सवार,
87 राजा किशनसिंह तवर—हजारी जात 500 सवार,
88 गोरधनदास राठौड—हजारी जात—500 सवार,
89 भोजराज—हजारी जात 500 सवार,
90 भीम, राजा विट्ठलदास का बेटा—हजारी जात 400 सवार,
91 रायराया (राय रघुनाथ)—हजारी जात—400 सवार,
92 राजा कुवरसेन किश्तवारी—हजारी जात—400 सवार,
93 राजा पृथ्वीचद, जमीदार चवा—हजारी जात—400 सवार,
94 राय कासीदास—हजारी जात—250 सवार,
95 राय मानीदास—हजारी जात—250 सवार[2],
96 रायराया दयानतराय—हजारी जात—250 सवार[3],
97 भारमल—हजारी जात—150 सवार[4], और
98 राय बनमालीदास—हजारी जात—150 सवार[5],

9 सदी

99 राजा मान, रूपचद गुलेरी का बेटा—9 सदी जात—850 सवार,
100 रावत दयालदास झाला—9 सदी जात—500 सवार,
101 राव हरचद कछवाहा 9 सदी जात—400 सवार, और
102 नाहर, राजसिंह का बेटा—9 सदी जात—400 सवार।

8 सदी

103 राय मकरद—8 सदी जात 800 सवार,
104 बरसिंहदास 8 सदी जात—775 सवार[6],
105 हमीरसिंह—8 सदी जात—800 सवार,

1 'बेटा' के स्थान पर 'भाई' होना चाहिये। ये दोनो केसरीसिंह (पीसागन) के पुत्र थे। (ख्यात०, 1, पृ० 108, वही०, पृ० 250, 257)। (स०)
2 '150 सवार' होना चाहिये (पा० ना०, 1-ब, पृ० 312)। (स०)
3 '150 सवार' होना चाहिये (वारिस०, 2, पृ० 208)। (स०)
4 '500 सवार' होना चाहिये (पा० ना०, 1-ब, पृ० 310)। (स०)
5 '100 सवार' होना चाहिये (पा० ना०, 1-ब, पृ० 312)। (स०)
6 '800 सवार' होना चाहिये (वारिस०, 2, पृ० 210)। (स०)

83 जैतसिंह राठौड़— हजारी जात—500 सवार,
84 मित्रसेन, राजा श्यामसिंह का भाई— हजारी जात—500 सवार;
85 सुजानसिंह, मोहकमसिंह का वेटा[1]—हजारी जात – 500 सवार,
86 उदयभान, श्यामसिंह राठौड़ का वेटा—हजारी जात—500 सवार,
87 राजा किशनसिंह तवर— हजारी जात 500 सवार,
88 गोरधनदास राठौड़ —हजारी जात —500 सवार,
89 भोजराज – हजारी जात 500 सवार,
90 भीम, राजा बिट्ठलदास का बेटा— हजारी जात 400 सवार,
91 रायराया (राय रघुनाथ)—हजारी जात --400 सवार,
92 राजा कुवरसेन किश्तवारी— हजारी जात—400 सवार,
93 राजा पृथ्वीचद, जमीदार चवा - हजारी जात—400 सवार,
94 राय कासीदास—हजारी जात—250 सवार,
95 राय मानीदास— हजारी जात—250 सवार[2],
96 रायराया दयानतराय— हजारी जात—250 सवार[3],
97 भारमल—हजारी जात—150 सवार[4], और
98 राय बनमालीदास—हजारी जात—150 सवार[5],

9 सदी

99 राजा मान, रूपचद गुलेरी का बेटा- 9 सदी जात— 850 सवार,
100 रावत दयालदास झाला— 9 सदी जात—500 सवार,
101 राव हरचद कछवाहा 9 सदी जात— 400 सवार, और
102 नाहर, राजसिंह का बेटा —9 सदी जात—400 सवार ।

8 सदी

103 राय मकरद—8 सदी जात 800 सवार,
104 बरसिंहदास 8 सदी जात - 775 सवार[6],
105 हमीरसिंह—8 सदी जात— 800 सवार,

---

1 'वेटा' के स्थान पर 'भाई' होना चाहिये । ये दोनो केसरीसिंह (पीसागन) के पुत्र थे। (ख्यात०, 1, पृ० 108, वही०, पृ० 250, 257) । (स०)
2 '150 सवार' होना चाहिये (पा० ना०, 1-ब, पृ० 312) । (स०)
3 '150 सवार' होना चाहिये (वारिस०, 2, पृ० 208) । (स०)
4 '500 सवार' होना चाहिये (पा० ना०, 1-ब, पृ० 310) । (स०)
5 '100 सवार' होना चाहिये (पा० ना०, 1-ब, पृ० 312) । (स०)
6 '800 सवार' होना चाहिये (वारिस०, 2, पृ० 210) । (स०)

106 कृपाराम गौड—8 सदी जात—750 सवार,

107. उग्रसेन कछवाहा—8 सदी—750 सवार[1],

108 राजा उदयभान—8 सदी—500 सवार,

109. राय जगन्नाथ राठौड—8 सदी—400 सवार,

110 राजा उदयसिंह, राजा श्यामसिंह का बेटा—800 सदी जात—400 सवार,

111 मनोहरदास, राजा विट्ठलदास का भतीजा[2]—8 सदी जात—400 सवार,

112 राय तिलोकचद—8 सदी जात—400 सवार,

113. मोहनसिंह, माधोसिंह हाडा का बेटा—8 सदी जात—400 सवार;

114 इद्रसाल हाडा—8 सदी जात—400 सवार,

115 राजा मान[3], राजा कुवरसेन का बेटा—8 सदी जात—400 सवार,

116 अजवसिंह - 8 सदी जात—400 सवार,

117. शेरसिंह, रामसिंह राठौड का बेटा—8 सदी जात—300 सवार;

118 फतेहसिंह सीसोदिया—8 सदी जात—300 सवार, और

119 राय मुकुन्ददास—8 सदी जात—200 सवार,

7 सदी

120 श्यामसिंह, राजा मानसिंह का पोता[4]—7 सदी जात—500 सवार,

121 चद्रभान नरूका 7 सदी जात—500 सवार,

122 सारगधर—7 सदी जात—500 सवार,

123 राजा सग्राम (कछवाहा) 7 सदी जात— 500 सवार,

124 पृथ्वीराज चौहान—7 सदी जात 400 सवार,

125 मथुरादास कछवाहा—7 सदी जात—400 सवार,

---

1 '600 सवार' होना चाहिये (वारिस० 2, पृ० 210)। (स०)

2 'भतीजा' के स्थान पर 'भाई' होना चाहिये (पा० ना०, 2, पृ० 749, वारिस०, 2, पृ० 210)। (स०)

3 सही नाम 'राजा महासिंह' (वारिस०, 2, पृ० 211, कम्बू० 3, पृ० 67, 473)। (स०)

4 सही उल्लेख 'सग्राम, राजा मानसिंह का पडपोता' (वारिस० 2, पृ० 212, नैणसी०, 2, पृ० 13-14)। उसका केवल नाम आगे क्र० 123 के अन्तर्गत दुहराया है। स्पष्टतया कम्बू० (3, पृ० 475) के भ्रात उल्लेख के ही आधार पर यह आलेख यहा सम्मिलित किया गया है। (स०)

83 जैतसिंह राठौड– हजारी जात—500 सवार,
84 मित्रसेन, राजा श्यामसिंह का भाई— हजारी जात—500 सवार,
85 सुजानसिंह, मोहकमसिंह का बेटा[1]—हजारी जात – 500 सवार,
86 उदयभान, श्यामसिंह राठौड़ का बेटा—हजारी जात—500 सवार,
87 राजा किशनसिंह तवर— हजारी जात 500 सवार,
88 गोरधनदास राठौड—हजारी जात —500 सवार,
89 भोजराज – हजारी जात 500 सवार,
90 भीम, राजा विट्ठलदास का बेटा— हजारी जात 400 सवार,
91 रायराया (राय रघुनाथ)—हजारी जात –400 सवार,
92 राजा कुवरसेन किश्तवारी— हजारी जात—400 सवार,
93 राजा पृथ्वीचद, जमीदार चबा - हजारी जात—400 सवार,
94 राय कासीदास—हजारी जात—250 सवार,
95 राय मानीदास— हजारी जात—250 सवार[2],
96 रायराया दयानतराय— हजारी जात—250 सवार[3],
97 भारमल—हजारी जात—150 सवार[4], और
98 राय वनमालीदास—हजारी जात—150 सवार[5],

9 सदी

99 राजा मान, रूपचद गुलेरी का बेटा- 9 सदी जात— 850 सवार,
100 रावत दयालदास झाला—9 सदी जात—500 सवार,
101 राव हरचद कछवाहा 9 सदी जात-- 400 सवार, और
102 नाहर, राजसिंह का बेटा—9 सदी जात—400 सवार।

8 सदी

103 राय मकरद—8 सदी जात 800 सवार,
104 वरसिंहदास 8 सदी जात – 775 सवार[6],
105 हमीरसिंह—8 सदी जात— 800 सवार,

---

1 'बेटा' के स्थान पर 'भाई' होना चाहिये। ये दोनो केसरीसिंह (पीसागन) के पुत्र थे। (ख्यात०, 1, पृ० 108, वही०, पृ० 250, 257)। (स०)
2 '150 सवार' होना चाहिये (पा० ना०, 1-ब, पृ० 312)। (स०)
3 '150 सवार' होना चाहिये (वारिस० 2, पृ० 208)। (स०)
4 '500 सवार' होना चाहिये (पा० ना०, 1-ब, पृ० 310)। (स०)
5 '100 सवार' होना चाहिये (पा० ना०, 1-ब, पृ० 312)। (स०)
6 '800 सवार' होना चाहिये (वारिस०, 2, पृ० 210)। (स०)

106 कृपाराम गौड—8 सदी जात—750 सवार,
107. उग्रसेन कछवाहा—8 सदी— 750 सवार[1],
108 राजा उदयभान—8 सदी—500 सवार,
109 राय जगन्नाथ राठौड—8 सदी—400 सवार,
110 राजा उदयसिंह, राजा श्यामसिंह का बेटा—800 सदी जात—400 सवार,
111 मनोहरदास, राजा विट्ठलदास का भतीजा[2]—8 सदी जात—400 सवार,
112 राय तिलोकचंद—8 सदी जात—400 सवार,
113. मोहनसिंह, माधोसिंह हाडा का बेटा—8 सदी जात—400 सवार;
114 इंद्रसाल हाडा—8 सदी जात—400 सवार,
115 राजा मान[3], राजा कुंवरसेन का बेटा—8 सदी जात—400 सवार,
116 अजबसिंह - 8 सदी जात—400 सवार,
117. शेरसिंह, रामसिंह राठौड का बेटा—8 सदी जात—300 सवार;
118 फतेहसिंह सीसोदिया—8 सदी जात—300 सवार, और
119 राय मुकुन्ददास—8 सदी जात—200 सवार,

7 सदी

120 श्यामसिंह, राजा मानसिंह का पोता[4]—7 सदी जात—500 सवार,
121 चंद्रभान नरुका 7 सदी जात—500 सवार,
122 सारंगधर—7 सदी जात—500 सवार,
123 राजा संग्राम (कछवाहा) 7 सदी जात— 500 सवार,
124 पृथ्वीराज चौहान—7 सदी जात 400 सवार,
125 मथुरादास कछवाहा—7 सदी जात—400 सवार;

---

1 '600 सवार' होना चाहिये (वारिस० 2, पृ० 210)। (स०)

2 'भतीजा' के स्थान पर 'भाई' होना चाहिये (पा० ना०, 2, पृ० 749, वारिस०, 2, पृ० 210)। (स०)

3 सही नाम 'राजा महासिंह' (वारिस०, 2, पृ० 211, कम्बू० 3, पृ० 67, 473)। (स०)

4 सही उल्लेख 'संग्राम, राजा मानसिंह का पड़पोता' (वारिस० 2, पृ० 212, नैणसी०, 2, पृ० 13-14)। उसका केवल नाम आगे क्र० 123 के अन्तर्गत दुहराया है। स्पष्टतया कम्बू० (3, पृ० 475) के प्राप्त उल्लेख के ही आधार पर यह आलेख यहां सम्मिलित किया गया है। (स०)

126 पृथ्वीराज भाटी — 7 सदी जात—300 सवार,
127 बल्लू चौहान—7 सदी जात —300 सवार,
128 सुदरदास सीसोदिया—7 सदी जात— 300 सवार,
129 जगतसिंह, पृथ्वीराज राठौड का बेटा—7 सदी जात— 300 सवार,
130 रावत नारायणदास सीसोदिया— 7 सदी जात— 300 सवार,
131 फतेहसिंह कछवाहा—7 सदी जात—250 सवार, और
132 बाला कछवाहा, जगन्नाथ का बेटा— 7 सदी जात—200 सवार।

6 सदी

133 चतुरभुज सोनगरा 6 सदी जात 600 सवार,
134 गिरधरदास, रावल पूजा का बेटा—6 सदी जात 600 सवार,
135 प्रेमचद, राय मनोहर का बेटा—6 सदी जात 400 सवार,
136 जीवाजी, मालूजी दक्षिणी का भतीजा – 6 सदी जात - 400 सवार,
137 प्रद्युम्न, राजा विट्ठलदास का भतीजा[1]—6 सदी जात 300 सवार,
138 ईश्वरसिंह, अमरसिंह का बेटा— 6 सदी जात—200 सवार,
139 किशोरसिंह, माधोसिंह का बेटा—6 सदी जात—200 सवार,
140 केसरीसिंह, पृथ्वीराज राठौड का बेटा—6 सदी जात- 200 सवार, और
141 मुकुन्ददास राठौड—6 सदी जात—150 सवार।

दक्षिण की सल्तनतें

दक्षिण की तीन सल्तनतो, अहमदनगर, गोलकुडा, और बीजापुर, मे से अहमदनगर तो अकबर बादशाह के समय मे विजय कर लिया गया था। लेकिन मलिक अबर ने, जो अहमदनगर के निजामशाह का वजीर और मुख्तार था, अहमदनगर का किला सन् 1019 हि० (स० 1667 वि०= सन् 1610 ई०) मे कई महीने तक घेरा रख कर जहांगीर बादशाह के किलेदार ख्वाजा बेग सफवी से वापस ले लिया था। फिर मलिक-मैदान तोप को वहा से ले जाकर शोलापुर का किला 10 रमजान, 1034 हि० (आसाढ बदि 6= बुधवार, जून 15, 1625 ई०) को आदिल खा से फतह किया। बाद मे उस बडी तोप

1 'भतीजा' के स्थान पर 'भाई' होना चाहिये (वारिस०, 2, पृ० 214, वही०, पृ० 205)। (स०)

को परेंडे के किले मे रक्खा । अंवर बहुत सुयोग्य और बहादुर सरदार था। उसने कई वार दिल्ली की फौजो पर फतह पाई थी, और निजामशाह की सल्तनत पुन कायम की। जब तक वह जीवित रहा उसने निजाम की इज्जत और प्रतिष्ठा मे कुछ फर्क नही पडने दिया। मगर उसके मरने के बाद शाहजहा बादशाह ने फिर अहमदनगर फतह करके निजामशाही सल्तनत को खतम कर दिया, तथा उसका सम्पूर्ण क्षेत्र अपनी अमलदारी मे शामिल कर लिया। अब बादशाही सीमाए सीधी गोलकुडा और बीजापुर से जा मिली थी। इन दोनो सल्तनतो मे भी फौजें भेज-भेज कर बादशाह ने उनसे भी करोडो रुपये वसूल किये, जिससे उनका भी मुल्क उजड गया और उनके खजाने खाली हो गये। अगर बल्ख और कधार की चढाइया तब शुरू नही हो जाती, तो ये दोनो सल्तनतें भी बाकी न रहती। गोलकुडा मे तो स्वय बादशाह को गद्दी पर बैठने के पूर्व पनाह मिली थी, जब वे अपने बाप जहागीर से लड कर निर्वासित हो गये थे। दो-तीन वरस तक जुनेर रह कर उन्होंने अपना सकट-काल वहा व्यतीत किया था, जो गोलकुडा के कुतुबशाह का ही क्षेत्र था।

दस्तकारी और कारीगरी

शाहजहा के समय मे हिन्दुस्तान की कारीगरी बहुत चमक गई थी। इमारत के नमूने तो अब भी आगरा मे ताज बीबी का रोजा, दिल्ली का किला, मसजिद, महल, लाहोर, काबुल और काश्मीर, वगैरह मे दौलतखाने मौजूद हैं, जो खूबसूरती और कारीगरी मे अपना जवाब नही रखते है। खास करके ताज बीबी का रोजा तो आप ही अपना जवाब है।

इसी तरह जेवर के जडने और मीनाकारी के कामो मे भी दिन-दिन कारीगरी बढती जाती थी। स्वय बादशाह को जडाऊ चीजो का बहुत शौक था। क्या जेवर, क्या हथियार और क्या हाथी-घोडो के साज, अधिकतर वे जडाऊ और मीनाकारी के ही होते थे। उस युग मे जडाई के जो भी काम हुए थे, उनमे सर्वोत्तम तख्त ताऊस था, जिसमे निहायत कीमती जवाहरो को जडा गया था।

फिर वस्त्र बुनने की कारीगरी थी। बगाल, गुजरात और बुरहानपुर मे ऐसा अनोखा बारीक और चिकना कपडा सादा और जरी का बुना जाता था कि जिसके सैकडो थान सौगात मे ईरान, तूरान और रूम के बादशाहो को भेजे जाया करते थे।

दुदामी (सूती कपडे) के थान मालवा मे पहिले भी बनते थे, मगर शाहजहा बादशाह की कदरदानी से बहुत बढिया बनने लगे थे। एक सादा जामेवार (छींट) की कीमत 40 रुपये और रगीन बूटेदार की 80 रुपये तक पहुच गई थी। उसकी बारीकी और चिकनाहट को हिन्दुस्तान का और

कोई कपडा नही पहुचता था । गर्मियो मे बादशाह की पोशाक इसी की बनती थी ।

इसके बाद कालीनो की बुनावट थी । 'बादशाह-नामा' मे जहा सन् 6 जुलूसी का हाल लिखा गया है, वहा यह बात भी लिखी है कि "इस मुबारक अहद (समय) मे काश्मीर और लाहोर मे शाल-दुशालो की ऊन से बुने जाने वाले खालसा सरकार के कालीनो का काम यहा तक बढ गया है, कि एक गज कालीन 100 रुपये मे तैयार होता है, और उसकी उत्तमता इस हद तक होती है कि किरमान के कालीन, जो शाह ईरान के कारखाने मे बुने जाते हैं, उसके आगे खद्दर मालूम होते हैं। बादशाही दौलतखाने की सभी बैठको के लिए इसी ऊन के कालीन बनाये गये हैं ।"

कागज की कारीगरी भी किसी प्रकार कम नही थी । दौलताबादी कागज मजबूती और उत्तमता मे प्रसिद्ध था, जो दौलताबाद के क्षेत्र मे हौज कतलू के पास कागजपुरा नामक एक गाव मे बनता था ।

शाहजहा के गुण

मुल्ला अब्दुल हमीद ने 'बादशाह-नामा' मे लिखा है कि "बादशाह रात-दिन 'वजू'[1] किये हुए पाक और पवित्र रहते हैं । आवश्यक स्नान करने मे वे पल भर की भी देरी नही करते है । नमाज-रोजे का बर्ताव सुन्नी मुसलमानो के अनुसार है। पवित्र रातो (शबरात, वगैरह) को आधी से ज्यादा नमाजो और ईश्वरीय प्रार्थनाओ मे व्यतीत करते हैं ।

"तबीअत मे यहा तक स्वच्छता है कि दूसरो की छुई हुई चीजें नही छूते हैं । यदि ऐसे जवाहरात के भी उनका हाथ लग जावे तो उसी समय वे उसे धो डालते हैं ।

"खुशबू का निहायत शौक है । सभी महफिलें तरह-तरह के कीमती इत्रो और खुशबूदार धूनियो से महकी हुई रहती हैं । खासी पोशाक तो बिलकुल इत्र मे ही बसी हुई होती है। गुलाब का जहागीरी इत्र सर्वाधिक काम मे आता है, जो जहागीर बादशाह के समय मे निकला है, और जिसने सभी इत्रो को रद्द कर दिया है ।

"क्षमा करने का उनका स्वभाव है। जिन लोगो ने शाहजादगी के दिनो मे बहुत से गुनाह किये थे, और बहुत से उनमे से इनके ही बढाये हुए थे और तब नासमझी से उनसे बदल गये थे, उन सबके अपराधो को सिंहासनारूढ होने के बाद उन्होंने माफ कर दिया ।

"सभी सजाए (दड) शरीअत (मुसलमानी धर्म-शास्त्र) के अनुसार दी

1 नमाज पढ़ने से पूव शारीरिक शुद्धि के लिए हाथ-पांव धोना । (स०)

जाती हैं। इतनी वडी सल्तनत मे, जो कि 3 तरफ से समुद्रो से मिलती हुई है, कोई वलवान् किसी निर्वल को नही सता सकता है। अगर कोई किमी को मार दे या अगहीन कर डाले, तो उसकी सजा वादशाह के सामने शरीअत के ही आदेश से दी जाती है। यदि किसी सूवे मे कोई आदमी सजा पाने के लायक होता है, तो वहा का नाजिम वादशाह से अर्ज किये विना उसको कुछ भी सजा नही दे सकता।

"न्याय मे अमीर-गरीव वरावर रखे जाते हैं। अगर कभी किसी प्रसग से रूम, ईरान और तूरान के तुर्क, कजलवाश, और उजवक वादशाहो की सख्ती का, जो वे तरह-तरह की सजाए देने मे करते हैं, दरवार मे जिक्र आ जाता है, तो उसी समय वादशाह की तवीअत घवरा उठती है। वहुत वार कह चुके हैं कि 'खुदा ने वादशाहो को हाकिम किया है। उनको चाहिये कि हमेशा न्याय का ध्यान रखें और दड उतना ही दें कि जिसमे सताने वाले का हाथ सताये हुए पर न पड सके और गरीवो के साथ नरमी और हसमुखपना वरतें, जुलमो को मिटावें, थोडे-थोडे अपराधो मे आदमियो के प्राण न लेवें। प्रजा को जरा-जरा से शक और सदेह पर पीडा न देवें। अपने पास वालो के कामो को देखते रहे और दूर वालो की करतूतो की खवर रखें ताकि जो कुछ अच्छे-वुरे काम दरवार मे उपस्थित रहने वालो और सूवो के हाकिमो और उनके पेशकारो से हो, उनकी शावासी और सजा उनको पहुच जावे।'

"दान और दातारगी का कुछ ठिकाना नही है। दूसरे वादशाह जो कुछ उमर भर मे वख्शा करते हैं, वैसी वख्शिशें यहा एक उत्सव मे ही हो जाती हैं।

"लाज और लिहाज यहा तक कि कभी किसी के लिए एक भी वुरा शब्द जवान से नही निकालते और न किसी के मुह पर ऐसी वात कहते है, जिससे कि उसको लज्जित होना पडे, हतक इज्जत करना तो कहा रहा।

"वोलने और लिखने की तो कुछ तारीफ नही हो सकती। जव किसी मुकदमे या किस्से का जिक्र करते हैं तो वह ऐसा साफ और सुदर होता है कि वडे-वडे पडित उसको सुन कर कान पकडते हैं। जो वातें वे दरवारियो मे फरमाया करते हैं वे तो ऐसी कीमती होती हैं कि यदि सव लिख ली जावें तो वादशाहो के वास्ते तर्क-युक्त न्याय सीखने का, और वजीरो के लिए मुल्को के वदोवस्त करने का एक अच्छा कानून वन जावे।

"अक्षर वहुत अच्छे लिखते हैं। वहुत वार शाहजादो और वडे-वडे अमीरो को अपने हाथ से ही फरमान लिखा करते है। कभी-कभी मुशियो के लिखे हुए आदेशो पर अपनी कलम से भी कुछ-न-कुछ लिख दिया करते हैं।

"इस तरह कुछ समय ईश्वर-सेवा मे, कुछ वादशाही कामो मे, कुछ

आराम करने मे और कुछ सैर-शिकार मे व्यतीत होता है।'

दिन-चर्या

रात-दिन का वक्त इस तरह से बाट रखा है कि सुबह होने से 2 घटे पहिले उठ कर नमाज और दुआ मे लीन होते हैं। सूरज निकलने से दो-तीन घडी पीछे दर्शन के झरोखे से सिर निकाल कर लोगो को दर्शन देते हैं। इसमे अधिकाशत तो 2 घडी और कभी कम ज्यादा भी लग जाते हैं। यह दस्तूर अकबर बादशाह का चलाया हुआ है, ताकि सब लोग एक चौडे मैदान मे बिना रोक-टोक बादशाह के दर्शन करलें, और फरयादी स्वय अपना हाल अर्ज कर दें जिनकी असली हकीकत अदालत के पदाधिकारी पूछ कर आम खास दौलतखाने मे या गुसलखाने में अर्ज करें, और बादशाह स्वय जाच करके उनका न्याय करें।

हाथी भी इसी मैदान मे लडाये जाते हैं। क्यो कि खास व आम दौलतखाने मे उनको लाना कठिन होता है। कभी हाथियो को घोडो पर दौडाते हैं कि जिससे वे लडाई मे सवारो को दबा सकें।

बादशाही फौज और अमीरो के घोडे भी इसी लबे-चौडे मैदान मे देखे जाते हैं।

फिर यहा से दौलतखाना खास व आम मे चले जाते हैं, जिसके ऊपर धूप और मेह के बचाव की दृष्टि से कपडे का सायबान खडा हो जाता है और नीचे कालीन बिछ जाते हैं। इसके तीन तरफ लकडी का कठघरा 50 गज लबा और 15 गज चौडा लगा हुआ है, और हर तरफ एक दरवाजा है। यहा बादशाही सेवको का सलाम होता है। बादशाहजादे दायें-बायें खडे हो जाते हैं और जब बैठने का आदेश होता है तो बैठते है। शेष लोग कठघरे की तरफ पीठ करके सायबान के नीचे खडे हो जाते हैं। जिनको अदर आने की इज्जत मिली हुई है, वे झरोखे के दायें-बायें अपने-अपने दर्जे से खडे रहते हैं।

पदाधिकारी अपनी-अपनी जगह खडे होकर मुल्क और माल के कामो की अर्ज करते हैं। मनसबदारो की प्रार्थनाए बख्शियो के माध्यम से अर्ज होती है, जिनमे से बहुतो को काम और इजाफे मिलते हैं। जो लोग सूबो और दूसरी तरफो से आते हैं, वे सलाम और मुजरा करते है। जो व्यक्ति सूबो और अन्यत्र सेवा मे नियुक्त किये जाकर भेजे जाते हैं, उनको जाने की विदाई मिलती है।

बरकदाजो को मीर आतिश और अहदियो को उनके बख्शी दरबार मे लाते हैं, और जिसका कुछ हक समझते है, उसके लिए कृपा करने की अर्ज करते हैं।

फिर मीर सामान और दीवान वुयूतात वगैरह तरह-तरह की अर्जिया पढते हैं। वादशाह उनके ऊपर ऐसे उचित और ठीक आदेश चढाते हैं कि जिसको देख कर वडे-वडे वजीर भी आश्चर्य-चकित हो जाते हैं।

शाहजादो, सूवेदारो, फौजदारो, और सूवे के दीवानो, वख्शियो की अर्जिया दरवारियो के हाथो से गुजरती है, जिनमे से शाहजादो और वडे-वडे अमीरो की अर्जियो को तो वादशाह पढते हैं, और दूसरो की अर्जियो का हाल वादशाही नौकर अर्ज करने वालो के माध्यम से अर्ज कराते है।

सदर लोगो की अर्जियो मे जितना कुछ हिस्सा अर्ज करने के योग्य होता है, वह सदर-इ-कुल अर्ज करता है। उसके यो अर्ज करने पर सैयदो, शेखो, आलिमो, पीरो और फकीरो की इच्छाए भी पूरी होती हैं। हरेक को दरवार मे उसकी पात्रता के अनुसार नकद रुपया इनायत होता है।

अर्ज-मुकर्रर का मुत्सद्दी जागीर, मनसव, नकदी, और हर तरह के मामलो की याददाश्तो को और सभी आदेशों को दुवारा अर्ज करता है।

तवेले और फीलखाने के अधिकारी घोडो-हाथियो और उनकी रस्म-मोतद मे जाच की हुई उनकी पूरी खुराक वगैरह को वादशाह की नजर से गुजराते हैं। यदि कोई जानवर दुवले या खराव हो तो यो मोतद को गुजराने तथा उन जानवरो की खुराक के लिए मुकर्रर रुपयो को वापस लेने का यह जाब्ता अकवर वादशाह का वाधा हुआ है।

फिर दाग और फौज की उपस्थिति के मुत्सद्दी, जिन अमीरो के घोडो के ताजा दाग लगे हो, उन्हे उनके ऐसे घोडो के साथ पेश करते है, ताकि कभी कोई आदमी और घोडा ठीक न हो, तो तावीनवाशी (मनसवदार स्वय अथवा उसके वख्शी, जो अमीरो के सवारो पर तैनात होता था) को उस आपत्ति की सूचना दे दी जावे, जिससे आगे वह पुन अपने काम मे वैसी त्रुटि नही करें।

यहा से कभी 4 और कभी 5 घडी के वाद, कामो के कम और ज्यादा होने से जैसा मौका होता है, उठ कर दौलतखाने खास मे जाते हैं और तख्त पर वैठते हैं।

अकवर वादशाह के समय मे दीवानखाने और महल के वीच एक जगह थी, जहा वे स्नान किया करते थे। वहा कुछ मुसाहिव और दीवान, वख्शी भी उपस्थित होकर आवश्यक कामो की अर्ज कर लिया करते थे। यह जगह हम्माम के करीव होने से कुछ दिनों वाद गुसलखाना कहलाने लगी थी, अव इसका नाम दौलतखाना खास है।

यहा वादशाह कुछ आवश्यक अर्जियों का जवाव अपनी कलम से स्वय लिखते हैं। सूवेदारो की अर्जियो का मतलव, जो वकीलो या वजीरो, या अर्ज करने की खिदमत के मुत्सद्दियो की मारफत अर्ज होता है, सुन कर उनके

उत्तर मे जो कुछ फरमाते हैं, उसके अनुसार मुशी लोग फरमान लिखते हैं। लिखने के बाद बादशाह को दिखाते है, उनमे अगर कही गलती रह गई हो या मतलब अस्पष्ट या अधूरा हो तो बादशाह उसको ठीक कर देते है। बादशाह-जादो मे से जो कोई साहिब रिसाला होता है, यानी जिसके आदेश पहुचाने से वे फरमान लिखे जाते हैं, वह अपना नाम उन फरमानो की पीठ पर लिख कर मोहर करता है। उसके नीचे दीवान अपनी मारफत (पहिचान) लिखता है। फिर ये फरमान महल मे चले जाते है। वहा मोहर 'उजक' (बडी मोहर), जो मुमताज जमानी बेगम के पास रहती है, उनके ऊपर लगाई जाती है।

इसी जगह दीवान लोग खालसा के कामो और मनसबदारो के वेतन के बारे मे निवेदन करके स्वीकृति लेते हैं, और सदर-कुल (पुण्यार्थ पाने के) हकदारो की अभिलाषाओ के बारे मे निवेदन करता है। जैसी-जैसी जिसकी पात्रता होती है बादशाह किसी को जमीन, किसी को नकद, और किसी को रोजीना इनायत फरमाते हैं। बहुत सो को तुलादान और खैरात के खजानो से रुपया दिलाते है।

बहुत समय तक वे जडाऊ और मीना के काम की चीजें देखा करते है।

खासा इमारतो के दरोगा और सिलावट इमारतो के नक्शे बादशाह को दिखाते है। अपना नाम कायम रखने के लिए बडी-बडी इमारतो को बनाने का बादशाह को बहुत शौक है। इसलिए प्राय मकानो के नक्शे आप ही बनाते हैं, और जो नकशे गजधर लोग खेंच कर लाते हैं, उनको भी सुधारते हैं। जब कोई नकशा स्वीकृत हो जाता है, तब आसफ खा वजीर बादशाह के आदेशो को खोल कर उस पर लिख देता है कि जिसमे बनाने और बनवाने वाले भूल-चूक न कर सकें। इस जमाने मे इमारत की कारीगरी इतनी बढ गई है कि जिसे देख कर यात्रियो को आश्चर्य होता है।

फिर यहा कभी तो भाति-भाति के शिकारी जानवर दरबार मे लाये जाते हैं, और कभी चाबुक सवार दौलतखाने के चौक मे घोडो को फिराते हैं।

चार या पाच घडी दिन इन्ही कामो मे बीत जाता है।

बादशाह ने वयोवृद्ध, बुद्धिमान् और ईश्वर से डरने वाले लोगो को काजी और मीर अदल बना रखा है, तो भी फर्यादियो की पुकार सुनने के लिए बुधवार के दिन झरोखा दर्शन से उठ कर वे दौलतखाने खास मे न्याय करने के लिए बैठते हैं। उस दिन काजियो, मुफ्तियो, और अदालत के पदाधिका-रियो कुछ दीनदार लोगो, और हमेशा उपस्थित रहने वाले अमीरो के अति-रिक्त और कोई आदमी वहा नही आने पाते हैं। अदालत के पदाधिकारी एक-एक फर्यादी को दरबार मे लाकर उसका मुकदमा अर्ज करते हैं। बादशाह नरमी और हसमुखपने से हरेक मुकदमे को समझ कर आलिमो के फतवे

(धर्म-व्यवस्था) के अनुसार हुक्म देते हैं। जो किसी को दण्ड देना होता है, तो वह भी शरीअत (धार्मिक कानून) के अनुसार ही दिया जाता है। बाहर के न्याय चाहने वालो के लिए, जिनके कि मुकदमो का निर्णय मौके की जाच किये विना नही हो सकता है, वहा के हाकिमो को आदेश लिख देते हैं कि यथार्थ देख कर फैसला कर दें, नही तो मुकदमे वालो को राजधानी आगरा भेज देवें।

दौलतखाने के कामो से निवृत होकर शाह वुर्ज मे तशरीफ ले जाते हैं। वहा शाहजादो और कई खास मुसाहिवो के अतिरिक्त और कोई विना आदेश के नही जा सकता है, यहा तक कि खिदमतगार भी विना वुलाये नही आ सकते। यहा राज्य के कुछ ऐसे कामो के सबघ मे, जिनको कि प्रकट करना उचित नही होता है, और दूर के सूबो के हाकिमो को लिखे जाने वाले फरमानो के मसौदो के वारे मे वजीर से सलाह होती है। तव खालसा और मनसवदारो की तलब, वेतन आदि के उन कामो को, जो दौलतखाने खास मे पेश करने से रह गये हो, अर्ज करके वजीर उन्हें पूरा करता है। फिर दोपहर के करीव महल मे पधार कर 'जुह' (दोपहर) की नमाज पढते हैं और खाना खाकर घटे भर आराम करते हैं। महल मे भी दूसरे गाफिल भोगी पुरुपो की तरह भोग-विलास मे न पड कर, गरीवो के काम निकालते रहते हैं, जिनकी अर्ज सित्ती खानम (विशिष्ट महिला) वेगम साहिव से और वेगम साहिव वादशाह से करती है। गरीव औरतो को जमीन, रोजीना और नकद रुपया इनायत होता है। कगाल और अनाथ कुवारी लडकियो के लिए शादी का दहेज मिलता है। इस तरह महल मे भी प्रतिदिन वहुत सा रुपया और गहना खर्च हुआ करता है।

फिर 'अस्र' (अपराह्ण) की नमाज पढ कर कभी-कभी दौलतखाने खास और आम के झरोखे मे आ वैठते हैं। लोगो का सलाम होकर कुछ काम भी हो जाता है, और चौकीदार अपने हथियारो से सलामी देते हैं।

शाम की नमाज वे जमाअत (वहुत से आदमियो) के साथ पढते हैं। नमाज के वाद चार-पाच घडी तक दौलतखाने खास मे, जो वहुत से जडाऊ शमादानो की रोशनी से जगमगाने लगता है, वैठ कर सल्तनत के काम करते है, और कभी गाना सुनते है। गाने की विद्या और खास कर के हिन्दुस्तानी रागो की वादशाह को वडी जानकारी है। हिन्दुस्तानी गाने मे जो मजा और रगीनी है, वह दूसरी जवान के गाने मे नही है। वहुत से सूफी वादशाही मजलिस मे आवेश मे आकर मर चुके हैं, जिनके किस्से प्रसिद्ध है, अतएव यहा लिखने की आवश्यकता नही।

इन कामो से निवृत होने के उपरान्त 'इशा' (रात्रि) की नमाज पढ कर

वे शाह बुर्ज मे जाते हैं। कोई काम, जो दौलतखाने मे न हुआ हो, तो वजीर-कुल और बख्शियो को बुला कर उसको पूरा करते हैं। आज का काम कल पर नही छोडते, बल्कि कल का काम आज ही करके महल मे चले जाते है। और वहा दो-तीन घडी तक गाना सुन कर आराम करते है। जब तक नीद न आवे मजलिसी लोग पर्दे के पीछे से नवियो, वलियो, वादशाहो की तवारीख सुनाते है। 'जफर-नामा' जिसमे अमीर तैमूर का हाल है, और 'वाकेआत-इ-बाबरी' जो स्वय बाबर बादशाह की बनाई हुई है,—ये दो किताबें ज्यादा पढी जाती हैं।

सोने का समय सब मिल कर दो पहर के लगभग है। फरमाया करते हैं कि "जो वक्त मुल्क के बदोबस्त, रैयत के न्याय, गरीबो के काम निकालने और खुदा की बदगी मे लगना चाहिए, अफसोस की बात है कि वह खाने-पीने-सोने और बदन को आराम देने मे व्यतीत हो।"

बादशाह की सूरत शकल

'बादशाह-नामा' मे लिखा है कि बादशाह का कद न तो बहुत ऊचा है और न छोटा। रग गेहुआ है। दाहिनी कनपटी पर बालो के पास एक तिल है और एक तिल दाईं पलक पर है। बाईं आख के नीचे नाक के ऊपर मस्सा है। दोनो हथेलियो मे दीर्घायु की रेखाए हैं।

बादशाह होने से कई वर्ष पहिले एक दिन अजमेर की तलहटी मे शिकार को गये थे। जब दोपहर हुआ, तब एक मठ मे जाकर ठहरे। वहा एक तपस्वी था। उसने हाथो और पैरो की रेखाए देख कर कहा था कि "आप बादशाह होगे और बडी उमर पाओगे। आपकी दाईं पगथली मे तिल है, इससे कुल हिन्दुस्तान की बादशाही बेखटके आपके नीचे रहेगी।"

बादशाह की भाषा

मुल्ला अब्दुल हमीद लिखता है कि "बादशाह अधिकतर फारसी बोलते है, और बहुत अच्छी तरह से बोलते हैं। जो लोग फारसी नही जानते, उनसे हिन्दुस्तानी बोली मे बातें करते हैं। कुछ तुर्की बोली भी समझते है, मगर बोलते कम हैं। बोलने का ज्यादा अभ्यास नही है, क्योकि बचपन मे इस भाषा की तरफ कोई रुचि नही थी। मिर्जा हिन्दाल की बेटी, रुक्किया बेगम, बादशाह की बाल्यावस्था मे उनका लालन-पालन करती थी। उसकी बोली तुर्की थी, वह महल मे भी तुर्की ही बोला करती थी, और बादशाह को भी यही बोली सिखाती थी, मगर बादशाह दिल से इसको नही सीखना चाहते थे, इस कारण बहुत से शब्द समझ मे तो आ गये, परतु अच्छी तरह बोलना

नही आया।

"एक दिन जहागीर वादशाह ने प्यार से कहा कि 'जो कोई मुझसे पूछे कि वह क्या अच्छा गुण है जो वावा खुर्रम मे नही है, तो मैं कहूगा कि तुर्की वोलना'। वादशाह ने वडे अदव से अपने वाप को जवाव दिया कि 'हजरत की वरकत से यह भी आ जावेगा'। लेकिन वे अपने को विलकुल सर्व-गुण-सपन्न नही वनाना चाहते थे। कही नजर नही लग जावे, इसलिये उन्होंने इस कमी को पूरा नही किया।"

किला आगरा

'वादशाह-नामा' मे लिखा है कि अकवर वादशाह ने सवत् 1622 वि० (सन् 1565 ई०) मे पुराने किले की जगह, जो ईंटें और चूने का वना हुआ था, नया किला लाल पत्थर का 300 गज के घेरे मे वनाया। उसकी नींव की चौडाई 30 गज, दीवार की 15 गज और ऊचाई कगूरे तक 60 गज की थी। उसमे अपने रहने के लिए मकान और महल लाल और सफेद पत्थर के वनाये, जिनमे 35,00 000 रुपया खर्च हुआ था। जमुना के किनारे शहर आगरा भी वसाया, जिसका नाम शाहजहा वादशाह ने वदल कर 'अकवरावाद' रखा।

नजूमियो (खगोल-विद्या जानने वालो) ने इसको दूसरी विलायत के अत मे माना है। इसकी लम्वाई 115 अश, चौडाई 26 अश और 3 कला है।

सूवा आगरा के पूर्व मे विहार और वगाल, पश्चिम मे अजमेर और ठट्टा, उत्तर मे दिल्ली, पजाव और कावुल, तथा दक्षिण मे मालवा और दक्षिण देश हैं।

जमुना आगरा के वीच मे होकर वहती है। दोनो तरफ से आदमियो और माल-असवाव का आना-जाना नावो मे होता है।

शहर वगदाद का घेरा, जिसमे सैकडो वर्ष तक खलीफो की वादशाही रही थी, 'जफरनामा' मे 6 कोस का लिखा है, और आगरा का घेरा 15 कोस का है। शाहजादो और अमीरो की वडी-वडी इमारतें किले सहित जमुना से पश्चिम मे हैं। इस वस्ती का घेरा आठ कोस, लम्वाई ढाई कोस और चौडाई एक कोस है। वहुत सी इमारतें तो 1 लाख से लेकर 5 लाख रुपये तक की लागत की हैं। इससे कम कीमत की इमारतो का कुछ हिसाव नही है।

पूर्व की तरफ वाग ज्यादा है, जिनमे वडे-वडे महल और मकान हैं। इस वस्ती का घेरा दो कोस लम्वाई और चौडाई एक कोस है।

हिन्दी कितावो मे जमुना के वहुत से नाम हैं, उनमे एक नाम कालिन्दी भी है। कालिंद एक पहाड है, जहा से यह निकलती है।

शाहजहा बादशाह के राज्य का माप

यह माप शाहजहानी कोसो मे हुआ था। एक शाहजहानी कोस 5,000 शाह-जहानी गजो का होता था, और ऐसे एक कोस के मामूली पौणे दो कोस होते थे।

इस राज्य की लम्बाई* पूर्व मे बगाल की अतिम सीमा पर बदर अमल से पश्चिम मे कावुल के सूबे मे ईरानी अमलदारी से मिले हुए करबाग तक की 1199 कोसो की थी।

चौडाई* उत्तर मे काश्मीर सूबे की हद पर छोटी तिब्बत की सरहद से दक्षिण मे बीजापुर और गोलकुडा की अमलदारी से लगे हुए शोलापुर के किले तक की 652 कोस थी।

अत मे इस विशाल राज्य की राजधानी शाहजहा की बसाई हुई नई दिल्ली थी, जिसको शाहजहानाबाद कहते है। वहा से बदर अमल का थाना 893 कोस करबाग 306 कोस, छोटी तिब्बत 330 कोस, और शोलापुर का किला 322 कोस था।

इस विस्तृत राज्य मे जो बडे-बडे शहर दिल्ली से जितनी दूरी पर थे, वे नीचे लिखे जाते हैं—

दिल्ली से लाहोर 105 कोस।

दिल्ली से सरहिंद 52 कोस, सरहिन्द से लाहोर 53 कोस, सरहिन्द से कागडा 49 कोस, बिजविआडा 25 कोस।

दिल्ली से खिजराबाद 52 कोस।

दिल्ली से नूरनगर 43 कोस, नूरनगर से मुखलिसपुर 21 कोस, मुखलिसपुर से कागडा 68 कोस।

दिल्ली से करनाल 26 कोस, करनाल से अवाला 18 कोम, अवाला से सरहिंद 20 कास, सरहिंद से लुधियाना (सतलज का घाट) 19 कोस, लुधियाना से गोविन्दवाल 19 कोस, गोविन्दवाल से लाहोर 37 कोस।

दिल्ली से हसन अब्दाल 176 कोस, हसन अब्दाल से कोहाट 37 कोस।

दिल्ली से छोटी रोहतास 220 कोस, खैरावाद 116 कोस।

दिल्ली से सरहिंद होकर तारागढ 102 कोस।

दिल्ली से लाहोर 105 कोस, लाहोर से अटक 62 कोस, अटक से पेशावर 35 कोस, पेशावर से काबुल 78 कोस, झेलम से अटक होकर काबुल 116 कोस।

दिल्ली से लाहोर 105 कोस, लाहोर से मुलतान 70 कोस, मुलतान से भक्कर 106 कोस, भक्कर से कधार 177 कोस।

---

* इसमे वल्ख और वदख्शा के सूबो की लम्बाई और चौडाई शामिल नहीं है, जो दो-तीन बरस तक ही इस राज्य में रहे थे।

दिल्ली से कावुल 260 कोस, कावुल से वल्ख 197 कोस, वल्ख से वुखारा 91 कोस।

दिल्ली से वल्ख 334 कोस, वुखारा 447 कोस।

दिल्ली से कावुल 260 कोस, कावुल से गजनी 30 कोस, गजनी से करवाग 11 कोस, कधार 30 कोस, कावुल से कधार 106 कोस।

दिल्ली से कधार 368 कोस, कधार से विस्त 31 कोस, विस्त से हेरात 109 कोस, हेरात से मेशहद 75 कोस, मेशहद से इस्फहान 249 कोस, कधार से इस्फहान 463 कोस।

दिल्ली से इस्फहान (ईरान की राजधानी) 831 कोस।

दिल्ली से लाहोर 105 कोस, लाहोर से पीर पजाल होकर काश्मीर 173-189 कोस, लाहोर से शमसावाद 165 कोस।

दिल्ली से पूच होकर काश्मीर 200 कोस, काश्मीर से छोटी तिब्वत 60 कोस।

दिल्ली से आगरा 44 कोस, वुरहानपुर 170 कोस, वुरहानपुर से सूरत 50 कोस, दौलतावाद 64 कोस, दौलतावाद से चौल वदर 81 कोस।

दिल्ली से अजमेर 81 कोस, अहमदावाद 253 कोस, सूरत 304 कोस।

दिल्ली से वुरहानपुर होकर सूरत 311 कोस।

दिल्ली से अहमदावाद 244 कोस, अहमदावाद से सूरत 125 कोस।

दिल्ली से गढमुक्तेश्वर होकर इलाहावाद 136 कोस, इलाहावाद से वनारस 28 कोस, वनारस से सहसराम 26 कोस, सहसराम से पटना 41 कोस, पटना से मुगेर 37 कोस, मुगेर से गढी (तेलियागढी) 31 कोस, गढी से अकवरनगर (राजमहल) 22 कोस, अकवरनगर से ढाका 116 कोस, और उडीसा 130 कोस।

दिल्ली से मथुरा 31 कोस, धामोनी 128 कोस।

दिल्ली से सहारनपुर 34 कोस, हरिद्वार 44 कोस, मुरादावाद 40 कोस।

दिल्ली से रणथम्भोर 94 कोस।

दिल्ली से हिसार 44 कोस।

दिल्ली से आगरा होकर इलाहावाद 155 कोस, इलाहावाद से जौनपुर 21 कोस।

दिल्ली से आगरा 44 कोस, आगरा से लखनऊ 68 कोस, लखनऊ से अवध (अयोध्या) 27 कोस, अवध से गोरखपुर 21 कोस।

दिल्ली से कन्नौज 86 कोस, लखनऊ 122 कोस, अयोध्या 139 कोस, अयोध्या से कावुल 350 कोस।

दिल्ली से आसेर का किला 217 कोस।

दिल्ली से औरगाबाद 265 कोस, औरगावाद से हैदरावाद 106 कोस, बीजापुर 92 कोस, शोलापुर 72 कोस, बीदर 105 कोस, ऊदगढ (उदगिर) 62 कोस, कल्याणी 120 कोस, गुलशनावाद (वर्धा) 64 कोस ।

दिल्ली से हैदरावाद 371 कोस, हैदरावाद से गोलकुडा 3 कोस ।

दिल्ली से बीजापुर 357 कोस ।

दिल्ली से बीदर 370 कोस ।

आगरा से

आगरा से ग्वालियर 28 कोस, ग्वालियर से सिरोज 58 कोस, सिरोज से नर्मदा (नदी) 51 कोस, नर्मदा (नदी) से बुरहानपुर 40 कोस, बुरहानपुर से औरगाबाद 44 कोस ।

आगरा से अजमेर 84 कोस ।

आगरा से हिंडौन 27 कोस, हिंडौन से टोक 32 कोस ।

आगरा से बाडी 20 कोस, बाडी से रूपवास 11 कोस ।

आगरा से फतेहपुर (सीकरी) 8 कोस ।

आगरा से सूकर (क्षेत्र) 13 कोस, सौरो (बूढी गगा पर तीर्थ) 24 कोस, इटावा 28 कोस ।

आगरा से उज्जैन 126 कोस, आसेर (असीरगढ) 173 कोस ।

समकालीन बादशाह

तूरान

शाहजहा के समय मे इमाम कुली खा समरकद और बुखारा का, और नजर मुहम्मद खा वल्ख और बदख्शा का मालिक था । अकबर बादशाह के युग मे, जो अब्दुल्ला खा उजबक तूरान का बादशाह था, वह असल मे शाही खानदान से नही था । वह यार मुहम्मद खा का दामाद था और उसके बाद तूरान का हाकिम हुआ । उसका बेटा अब्दुल मोमिन खा था, जो बाप के मरने पर तख्त पर बैठा, और सरदारो के हाथ से मारा गया । तब यार मुहम्मद खा का पोता और जानी मुहम्मद खा का बेटा, बाकी मुहम्मद खा, अपने पैतृक राज्य का मालिक हो गया । उसके बाद उसका भाई वली मुहम्मद खा तूरान का हाकिम हुआ, मगर अमीरो ने उससे नाराज होकर इमाम कुली खा और नजर मुहम्मद खा को वल्ख मे बुलवाया, जो वली मुहम्मद खा को निकाल कर उसके मुल्को के मालिक हो गये। इमाम कुली खा ने बुखारा और समरकद मे अपना राज्य जमाया, और नजर मुहम्मद खा ने बल्ख और बदख्शा मे ।

सन् 1051 हि० (स० 1698 वि०=1641 ई०) मे इमाम कुली अधा हो गया। नजर मुहम्मद खा ने वल्ख से समरकद पर चढाई की। इमाम कुली खा लाचारी से अपना सम्पूर्ण अधिकार-क्षेत्र 8 शावान (का सुदि 10=मगलवार, नवम्वर 2, 1641 ई०) को नजर मुहम्मद खा को करके स्वय ईरान के मार्ग से मक्का और मदीना को चला गया।

उस समय किलमाक और करगेज जाति के लोग तुर्किस्तान मे लूट- करते थे। इसलिए नजर मुहम्मद खा ने अब्दुल रहमान दीवान वेगी समरकद भेज कर जहागीर कज्जाक से मेल कर लिया। लेकिन अब्दुल रह ने करगेजो के सरदार कतलक सैयद को धोखे से मार डाला।

सन् 1053 हि० (स० 1700 वि०=1643 ई०) मे लशकर कज्जा जहागीर कज्जाक पर हमला किया, मगर नजर मुहम्मद खा के अमीर जाकर उसको भगा दिया।

सन् 1054 हि० (स० 1701 वि०=1644 ई०) मे तुर्किस्तान के लोग न मुहम्मद खा के दुर्व्यवहारो के कारण विद्रोही हो गये, और खुजद के किले उन्होने अधिकार कर लिया। नजर मुहम्मद खा का वेटा, अब्दुल अजीज उन पर चढ कर गया, लेकिन फतह किये विना ही वापस आ गया।

सन् 1055 हि० (स० 1702 वि०=1645 ई०) मे इक्के (विशिष्ट व जवानो की जिद से मावर-उल्-नहर (तुर्किस्तान) मे अब्दुल अजीज खा थान दुहाई फिरी (खुतवा पढा गया), और वाकी यूजवाशी अपने वेटो स नजर मुहम्मद खा के पास उपस्थित हो गया। मगर फसाद जगह-जगह रहे, और हिन्दुस्तान की फौज ने धावा करके कहमर्द के किले पर अधि कर लिया। राजा जगतसिंह ने सुराव और इद्राव तक वढ कर मोरचे लिये।

सन् 1055 हि० (स० 1702 वि०=1645 ई०) मे अलमानो ने नदी मे उतर कर अदखूद को और शावान (आसोज सुदि=कार्तिक व सितम्वर, 1645 ई०) मे आकचा के जिले को लूटा। मगर त्रिमिज के हा ने पीछा करके उनको जेहू नदी से उतरते हुए जा मारा। ये अलमान मुसलमान थे तो भी वल्ख और वदख्शा मे मुसलमानो को वहुत ही स करते थे। यही नही, वे तो कुरानो, मसजिदो, और मुल्लाओ को भी देते थे। जव ये लोग जोरजान के ऊपर, जो वल्ख से एक मजिल है, आ तव वहा का एक प्रसिद्ध मौलवी, सैयद इब्राहीम, 400 लडको को, जिन गले मे कुरान लटके हुए थे, साथ लेकर उनकी पेशवाई को गया था। उन्होने सभी लडको के साथ उसको एक मसजिद मे ले जाकर आग मे दिया।

फिर अब्दुल अजीज खा और नजर मुहम्मद खा मे मनमुटाव होकर लडाई की नौबत आ पहुची, और जब अब्दुल अजीज खा समरकद से त्रिमिज तक चढ आया, तब नजर मुहम्मद खा ने सुलह करके यह बात ठहराई कि इमाम कुली खा की ही तरह अब्दुल अजीज खा मावर-उल्-नहर का मालिक हो जावे, और वल्ख-वदख्शा नजर मुहम्मद खा के पास ही रहे।

जब नजर मुहम्मद खा हिन्दुस्तानी फौज के आगे से भाग कर मर्व होता हुआ इस्फहान पहुचा, तब वहा ईरान के वादशाह ने पेशवाई करके वडी कृपा के साथ उससे भेंट की। मार्ग मे एक कोस तक रगीन और रेशमी कपडे विछा दिये गये थे। मुलाकात के बाद मकान पर आकर दोनो एक गद्दी पर वैठे। 15 दिन के वाद खान वहा से कजलबाशो की कुछ फौज लेकर, जो शाह ने उसके साथ कर दी थी, मेशहद आया। इस अर्से मे शाह ने नकद और जिन्स करके उसको 4,00,000 रुपये दिये थे और अपनी फौज को हेरात से आगे न बढने को कह दिया था। फौज की चाल-ढाल से यह बात मालूम करके खान ने उसको वही छोडा और कहा कि "मैं आगे जाता हू। तुम हेरात मे ठहरो। जब मैं वुलाऊ, तब आ जाना।" परन्तु वह स्वय मर्व होकर चेचकतू आया, और मेमना पर चढाई की। मगर हिन्दुस्तानी किलेदार शाद खा के मुकावला करने पर वह वापस चला गया, और फिर अपने बेटे कतलक सुलतान को वल्ख फतह करने के लिये भेजा। मगर कतलक सुलतान अपने भाई अब्दुल अजीज खा की फौज से जा मिला, जो बुखारा से वल्ख के ऊपर आ रही थी। इसके आगे जो कुछ हुआ, वह इस पुस्तक मे पहिले ही लिखा जा चुका है।

ईरान

ईरान मे पहिले तो शाह अब्बास सफवी वादशाह था। वह 1 रमजान, 988 हि० (कार्तिक सुदि 3, 1637 वि० मगलवार, अक्तूबर 11, 1580 ई०) को पैदा हुआ था, और सन् 1006 हि० (स० 1655 वि०=1598 ई०) मे ईरान के सिहासन पर वैठा। 6 जमादि-उल्-अव्वल, 1038 हि० (माह वदि 13, 1685 वि० = सोमवार, जनवरी 12, 1629 ई०) को माजिंद्रा मे मर गया। तूरान के स्वामी अव्दुल मोमिन खा ने मेशहद पर अधिकार करके पिछले वादशाह तहमास्प की कब्र की वहुत खरावी की थी। इसलिये ईरान के वजीरो ने 3 सदूक वना कर मेशहद, नजफ, और करवला को भेजे और तीनो ही जगह कब्रें वनाई। लेकिन शाह अव्वास की लाश एक ही सदूक मे थी, जिसकी सही जानकारी वहुत ही कम व्यक्तियो को मालूम थी।

शाह अव्वास का वडा वेटा तो सफी मिर्जा था, जिसको शाह ने आखिरी मुहर्रम, 1023 हि० (चैत सुदि 1, स० 1671 वि०=मगलवार, मार्च 1,

1614 ई०) को अपने गुलाम के हाथ से मरवा डाला था। शेप 2 वेटो को उसने अघा करवा दिया था। सफी मिर्जा का वेटा साम मिर्जा शाह के डर से जनाने मे ही रहा करता था। वजीरो ने शाह के बाद उसी को जमादि-उस्-सानी, 1038 हि० (माह सुदि, स० 1685 वि० = जनवरी, 1629 ई०) मे इस्फहान के तख्त पर वैठा कर ईरान का वादशाह वनाया और शाह सफी नाम रखा।

शाह सफी ने सन् 1042 हि० (स० 1690 वि० = 1633 ई०) मे वान के हाकिम की इच्छा मे रुस्तम खा गुरजी (गुरदी) को गुर्दस्तान की सेना सहित वान के ऊपर अधिकार करने को भेजा, लेकिन रूम के सुलतान मुराद खा ने 40,000 सवारो से वहा पहुच कर ईरान की सेना को भगा दिया। फिर एरवान, तवरेज और वगदाद को फतह करने के लिए रूम से रवाना होकर उसने एरवान फतह कर लिया। ये वे मुल्क थे, जिनको शाह अव्वास ने रूमियो से फतह कर लिया था। मगर उसी समयान्तर मे फरगियो के इस्तवोल पर हमला करने की खवर मशहूर हुई, इसलिए मुराद खा तो रूम को लौट गया और शाह सफी ने तवरेज पहुच कर 3 महीने की लडाई और घेरे के वाद, जिसमे 20,000 कजलवाश मारे गये थे, एरवान रूमियो से छीन लिया। फिर गुर्दस्तान (कुर्दिस्तान) के ईरानी हाकिम खान अहमद ने सुलतान मुराद खा से मिलावट कर ली जिसके हुक्म से मोसल का हाकिम, कोचक अहमद, गुर्दस्तान पर चढ कर आया। लेकिन शाह अव्वास के गुलाम सियावश ने शाह सफी के आदेश से वहा पहुच कर कोचक अहमद और उसके साथ के दूसरे रूमी सरदारो को मार डाला और खान अहमद को निकाल कर गुर्दस्तान मे दूसरा हाकिम नियुक्त किया।

2 रजव, 1048 हि० (कार्तिक सुदि 4, 1695 वि० = मगलवार, अक्तूवर 30, 1638 ई०) को मुराद खा ने आक्रमण करके वगदाद को फतह कर लिया। तव शाह सफी ने वरतग का क्षेत्र उसको देकर उससे सुलह कर ली।

इस सुलह के वाद शाह सफी ने कधार वापस लेने का इरादा किया और इस चढाई का सारा सामान दो वरस मे तैयार करके सन् 1052 हि० (स० 1699 वि० = 1642 ई०) मे वह रवाना हुआ लेकिन काशान पहुच कर 12 सफर (वैसाख सुदि 14 = मगलवार, मई 3, 1642 ई०) को वह मर गया। उसके अमीरो ने कजवीन जाकर उसके वेटे मुहम्मद मिर्जा को शाह अव्वास नाम रख कर तख्त पर वैठाया। इसने चढाई करके कधार का किला शाहजहा के अमीरो से ले लिया।

खातिमा

ईश्वर कृपा से आज यह तीसरा हिस्सा 'शाहजहा-नामे' का पूरा हुआ। हमने अगले दो विभागों मे तो मुल्ला अब्दुल हमीद के बनाये हुए 'बादशाह-नामों' की दोनो जिल्दो का साराश लिया और इस पिछले हिस्से मे मुल्ला जाहिद (ताहिर) के लिखे हुए पिछले 10 बरसो के हाल का खुलासा दर्ज किया है और कही-कही खाफी खा की किताब 'मुन्ताखिब-उल्-लुबाब' से कुछ हाल ले लिया है, जो इस जमाने मे मोतबर समझी जाती है।

मुल्ला अब्दुल हमीद के 'बादशाह-नामों' का विस्तार जियादा है और यह बादशाह के हुक्म से इस काम पर मुकर्रर भी था। बादशाह इसके लेख को पसद भी करते थे, क्योकि 'अकबर-नामे' के करता, सुविख्यात शेख अबुल फजल का शागिर्द था और मुल्ला जाहिद के 'बादशाह-नामे'[1] मे इतना विस्तार नही है और न हिन्दू राजाओ और हिन्दू मनसबदारो के कामो का पूरा ब्योरा है, जो मुख्य उद्देश्य हमारे इस परिश्रम का है। तो भी जो हाल मुल्ला अब्दुल हमीद के लिखने से रह गया था, उसके जानने के लिए यह बहुत काम की चीज है। एक 'बादशाह-नामा' मुल्ला सालह का भी लिखा हुआ है मगर वह भी मुल्ला अबदुल हमीद की लिखावट के बराबर नही है।

गरज अब यह तवारीख शाहजहा बादशाह की पूरी हो गई है, इसमे जो कुछ भूल चूक रह गई हो उसको सज्जनजन माफ फरमावें। फक्त।

देवीप्रशाद   चैत सुदि 1, स० 1955[2]

---

1 मुल्ला जाहिद का 'बादशाह-नामा' भी किसी 'शाहजहां-नामे' का खुलासा है, जो उसने औरगजेब के बादशाह होने के पीछे हिजरी सन् 1080 (सवत् 1726) मे किया था।

2 1 जीकाद, 1315 हि० = बुधवार, मार्च 23, 1898 ई०। (सं०)

अनुक्रमणिका

स

ह

□□□